First Edition developed under DEC development grant.
© २०११ यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ
❑ प्रथम प्रकाशन : नोव्हेंबर २०११
अक्षर जुळणी : ओम कॉम्प्युटर्स, नाशिक
प्रकाशक : डॉ. प्रकाश अतकरे, कुलसचिव, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ, नाशिक

NB10-11-69

यशवंतराव चव्हाण
महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ

आधुनिक महाराष्ट्र के शिल्पकार : यशवंतराव चव्हाण

आधुनिक महाराष्ट्र के शिल्पकार : यशवंतराव चव्हाण

लेखक : प्रा. डॉ. के. जी. कदम

१.	युगीन परिवेश और यशवंतराव चव्हाण	१
२.	यशवंतराव चव्हाण का जीवन वृत्त	६
३.	भारतीय राजनीति में यशवंतरावजीका प्रवेश	६२
४.	विशाल द्विभाषिक और संयुक्त महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री	६९
५.	यशवंतरावजी के निर्णय और कार्य	८९
६.	शासकीय पद और कार्य	११२
७.	विविध विषयोंपर यशवंतरावजी के विचार	१२४
८.	महाराष्ट्र और भारतीय राजनीति में यशवंतरावजीका स्थान	१४६
९.	आधार ग्रंथों की सूची	१६७

प्राक्कथन

यशवंतराव पं. नेहरू को राजी कर के बम्बईसह संयुक्त महाराष्ट्र का मंगल कलश ले आये। १ मई १९६० को महाराष्ट्र स्वतंत्र हुआ। यशवंतराव महाराष्ट्र के नये मुख्यमंत्री बने। उन्होंने नये महाराष्ट्र के विकास की नीव डाली। उनके कार्यकाल में अनेक उद्योग स्थापित हुए। उनके कार्यकाल में सभी क्षेत्रों में विकास हुआ। उनके कार्य काल में शिक्षा, स्वास्थ्य, भूमिहिनों को जमीन का बँटवारा, सिलींग अॅक्ट, बैकों का राष्ट्रीयीकरण, सहकार योजना की स्थापना, पंचायत राज्य व्यवस्था, किसानों को पानी, बिजली, खाद, बीज व्यवस्था, गरीब विद्यार्थियों को ई.बी.सी. की सहूलियत ऐसे अनेक कार्य किये। इसलिए तो उन्हें महाराष्ट्र का शिल्पकार कहते हैं। यशवंतराव राष्ट्रीय नेता थे। उनपर अबतक मराठी में १५० से १७५ तक पुस्तकें लिखी गयी है। उनके विषय में हिंदी में एक भी पुस्तक नहीं लिखी गयी। इसलिए यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विद्यापीठ के मा. कुलगुरू के आदेश के अनुसार प्रस्तुत हिंदी पुस्तक लिखी है।

१ मई २०१० को महाराष्ट्र राज्य स्थापना को ५० वर्षं पूर्ण हो रहे हैं। इसलिए सुवर्ण महोत्सव मनाया जा रहा है। लेकिन दुर्दैव की बात यह है कि महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री, महाराष्ट्र के निर्माता, तत्त्वज्ञानी और मार्गदर्शक यशवंतराव चव्हाण यह समारोह देखने के लिए नहीं है। यशवंतराव की स्मृति प्रित्यर्थ उनके प्रति आदरांजली प्रकट करने के लिए यह हिंदी पुस्तक प्रकाशित हो रही है।

यशवंतराव केवल महाराष्ट्र के शिल्पकार ही नहीं थे। उनके जनतंत्र समाजवाद ने भारत के जनतंत्र और समाजवाद का उचित मार्ग दिखाया। मानवेंद्रनाथ रॉय, बारटॅन्ड रसेल, म. गांधी और पं. नेहरू के विचार, व्यक्तिमत्त्व और कार्य से यशवंतराव के विचारों को दिशा मिल गयी। परंतु उनका समाजवाद भारत के ग्रामीण भागों में लाखो लोगों के दारिद्र्य और दुःख में से निर्माण हुआ है। उनका जन्म सामान्य परिवार में हुआ था।

यशवंतराव ने भारत देश का सुंदर और संपन्न ऐसा सपना अपने हृदय में रखा था। आर्थिक और राजनैतिक स्थैर्य में सामाजिक विषमता को बिलकुल स्थान नहीं है। स्वराज्य और सार्वभौमत्व का रक्षण करने के लिये भारत समर्थ हुआ है। जहाँ सभी क्षेत्रों में जनता की प्रगति के विकास को अवसर मिलना चाहिए ऐसे भारत का सपना वे देख रहे थे। उनके सपने में भारत का भविष्यकाल उज्ज्वल था। उनका जनतंत्र वादी, समाजवादी, शांतिप्रिय राष्ट्र के रूप में सुलौकिक था। जागतिक शांति स्थापना का कार्य भारत कर सकेगा और उसके लिए भारत को अगुआई करनी चाहिए ऐसी उनके मन सें इच्छा थी।

ग्रामीण भाग के आधुनिकीकरण का महत्त्व उन्हें उचित लगता था। ग्रामीण भाग के विकास के लिए, कृषि–औद्योगिक समाज स्थापन करने के लिए प्रयत्न करनेवाले यशवंतराव शायद एक ही नेता थे। उन्होंने महाराष्ट्र में सहकारी आंदोलन का प्रारंभ किया और यही आंदोलन आज संपूर्ण देश में भूषणावह हो गया और सर्वत्र वह सहकारी आंदोलन चलाया जा रहा है। इस सहकार से समाजवाद निर्माण हो जायेगा ऐसी उनकी नीति थी। इसके सिवाय जनतंत्र का विकेंद्रीकरण, जिला परिषद, बैंकों का राष्ट्रीयकरण, संस्थानिकों के तनखे रद्द करने के काम में उन्होने नेतृत्व किया। इससे उनकी दूरदृष्टि की कल्पना आती है।

यशवंतराव बहुत अनुभवी और कुशल प्रशासक थे। उन्होंने जिस जिस स्थान पर जिम्मेदारी के काम किये उस उस हर एक स्थान पर अपने कार्य कर्तृत्व की छाप डाली। स्वातंत्र्य सैनिक, पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी, मंत्री, मुख्यमंत्री, विविध विभाग के केंद्रीय मंत्री और उपप्रधानमंत्री ऐसे चढते क्रम से उनका मार्गक्रमण हुआ। उन्होंने हर समय अपनी बुद्धिमत्ता का, कार्यकुशलता का और लोकप्रियता का प्रत्यय ला दिया। उनकी इच्छा थी कि गरीबो में से गरीब और निचले स्तर के लोगों को विकास का फल मिलना चाहिए। वे जहाँ जहाँ गये वहाँ वहाँ वे अपने कर्तृत्व से जनता के मन में दृढ विश्वास और श्रद्धा निर्माण करने में सफल हुए। उनका राजनैतिक, सामाजिक और सावधान का, उनके शांत, संयमी दृढ नेतृत्व का लाभ केवल महाराष्ट्र को नहीं तो संपूर्ण देश को मिला। संपूर्ण देश में जनता के मन में उनके बारे में आदर, आत्मीयता और प्रतिष्ठा थी।

प्रा. डॉ. के. जी. कदम
एम.ए., पीएच.डी., साहित्य मार्तण्ड
प्लॉट नं. ११७/५९, उमा नगरी
मुरारजी पेठ, सोलापूर-१ (महाराष्ट्र)
मो. ९४२०६५९६५८

१. युगीन परिवेश और यशवंतराव चव्हाण

युगीन परिवेश से हमारा तात्पर्य तत्कालीन वातावरण अर्थात उन राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियों से है, जो नेता के जन्म के समय, शैशवकाल, किशोरावस्था, यौवनावस्था और यौवनोत्तर काल में विद्यमान थी। कोई भी नेता अपने परिवेश से नितान्त कटकर, अस्पृश्य रहकर, अप्रभावित रहकर अपने नेतृत्त्व के उत्तरदायित्त्व का निर्वाह करने में समर्थ नहीं हो सकता। नेता शून्य में कार्य नहीं कर सकता, क्योंकि किसी भी नेता का नेतृत्व और कार्य अपने काल का दर्पण होता है। अतः युगीन परिवेश को अलग अलग रखकर किसी भी नेता के कार्य का मूल्यांकन संभव नहीं होता।

(क) राजनैतिक परिस्थिति

ई.स. १८८५ में राष्ट्रीय महासभा की स्थापना के बाद राष्ट्रीय एकता तथा बौद्धिक, नैतिक, आर्थिक, व्यावसायिक संगठन एवं विकास का सुयोग देश को प्राप्त हुआ। अब 'विविधता में एकता' राष्ट्रवादियोंका मूलमंत्र हो गया था। राष्ट्रीय नेता गण नवीन करों, सैनिक व्यय वृद्धि, शासन की अनुदार और स्वार्थपूर्ण नीति से असन्तुष्ट थे, किन्तु उन्होंने किसी प्रकार का प्रत्यक्ष विरोध प्रकट नहीं किया था। निश्चय ही कतिपय प्रस्ताव कृषकों की दयनीय अवस्था के सुधार के लिए प्रस्तुत किए गए। फिर भी प्रमुख माँगों का स्वरूप शिक्षित उच्च मध्यवर्गीय स्वार्थों के अनुकूल था। डॉ. गुरुमुख निहाल सिंह के मत से ई.स. १८८५-१९०७ के युग में इंडियन नेशनल काँग्रेस ने भारतवासियों में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करने, उन्हें एक सूत्र में बाँधने और राष्ट्रीय एवं राजनैतिक जागृति फैलाने के लिए महत्त्वपूर्ण मौलिक कार्य किया था। डॉ. सीतारामैय्याका भी यही विचार है।

ई. स. १८९७ में सुरेन्द्रनाथ बैनर्जीने 'स्वराज्य' अथवा 'स्वशासन' का अस्पष्ट चित्र हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया। साथ ही लोकमान्य तिलक के रूप में राष्ट्रीयता मूर्तिमान हो उठी। लोकमान्य तिलक भारतीय जीवनदर्शन, आध्यात्मिकता और राजनीति की ठोस आधार भूमि पर राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे। ई.स. १९०३ में एडवर्ड सप्तम के राज्याभिषेक के समय जनता का असंतोष फूट पडा। ई.स. १९०५ में बंग-भंग हुआ। इस बंग-भंग के विरुद्ध व्यापक आंदोलन हुए। पं. जवाहरलाल नेहरू के मत से १८५७ के विद्रोह के बाद पहली बार भारत लडने की क्षमता दिखा रहा था। विदेशी राज्य के सम्मुख पालतु पशु की तरह पराजित होकर दब नहीं रहा था। लॉर्ड मॅकडोनिल के मत

से बंग-भंग अंग्रेजों की बडी भूल थी। ई.स. १९०५ में पहली बार रूस पर जापान की सामारिक विजय के फलस्वरूप भारत में चेतना, ई.स. १९०६ में मुस्लिम लीग का जन्म, ई.स. १९०७ में हरिवंशराय बच्चन का जन्म तथा ई.स. १९०८ में क्रांतिकारी पत्रों पर प्रतिबंध आदि घटनाएँ प्रमुख हैं। बारह वर्षीय बच्चन ने जालियाँवाला कांड की घटना देखी थी, जो उसे अभी तक याद है।

ई.स. १९२० में गांधीजी असहयोग के दृढ़ समर्थक हो गये। उनके असहयोग का तात्पर्य था – आत्मबल द्वारा विदेशी सत्ता से असहयोग, सरकारी उपाधियों और सम्मानों का त्याग। डॉ. बक के मत से– स्वातंत्र्य आंदोलन के इतिहास में प्रथम बार किसी राष्ट्रीय नेता के लिए सदस्यों की संख्या में सांप्रदायिक भेद-भाव भुलाकर जनता एकत्रित हुई। ई.स. १९२८-२९ में पुनः देश में छात्र वर्ग एवं युवक समूह में राष्ट्रीय भावना प्रमुख हुई। 'देश में युवक आंदोलन का प्रादुर्भाव होना इस वर्ष (१९२८) की विशेषता थी। ई.स. १९२८ में साइमन कमीशन भारत आया। साइमन का विरोध करने के लिए लाहोर में लाला लजपत के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकाला गया। आतंकवादी सरकार ने इस जुलूस को कुचलने के लिए लाठी चार्ज कराया। फलतः घटना स्थल पर लाला लजपतराय की मृत्यु हो गयी।

२६ जनवरी १९३० को पूर्ण स्वराज्य दिवस मनाया गया। इसी वर्ष १२ मार्च, १९३० को गांधीजी ने दण्डीग्राम की ओर प्रस्थान किया। ६ अप्रैल, १९३० को गांधीजी ने नमक कानून तोडा। ५ मई को गांधीजी को बन्दी बना लिया गया, फलतः देश में हडतालें हुई। यशवंतरावजी इन घटनाओं से अछूते न रहे। इसके बाद गांधी-इर्विन समझौता और गोलमेज सम्मेलन की ब्रिटिश कूटनीतिक चालों ने न केवल इस प्रवाह को रोक दिया, लेकिन बाद में विलिंग्डन के शासन काल के प्रारंभ (१९३१) में तीव्र दमन चक्र शुरू हो गया। द्वितीय गोलमेज सम्मेलन से गांधीजी को निराश लौटना पडा, उनके सहित सारे नेताओं की गिरफ्तारियाँ, फिर सांप्रदायिक निर्णय, और तीव्र से तीव्रतर होता ब्रिटिश सता का दमन चक्र। फलतः आंदोलन में कुछ ठण्डापन आ गया। समाजवादी विचारधारा के स्वरूप ई.स. १९३४ में काँग्रेस में समाजवादी दल की स्थापना हुई।

ई.स. १९३५ के बाद भारतीय राष्ट्रवाद समाजवाद के प्रगतिशील तत्त्वों से अनुप्रेरित हुआ। काँग्रेसने ई.स. १९३७ के चुनावों में भाग लिया और ग्यारह में से छः राज्यों में उसकी विजय हुई। अब कोई हलचल न थी।

१ सितंबर १९३९ को द्वितीय विश्वयुद्ध छिड गया और ३ सितम्बर को भारत को भी उस में सम्मिलित कर लिया गया। मार्च १९४० में मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की

माँग प्रस्तुत की। जुलाई १९४० में सुभाष बोस को बन्दी बना लिया गया। ई.स. १९४२ तक भारत में रक्त-रंजित क्रांति हुई, जो कि असफल रही। १९४२ के अन्त तक लगभग ५३८ बार देश में गोली चली। ३ जून १९४७ को गांधीजी ने विभाजन स्वीकार कर लिया। हाँ, स्वयं गांधीजी इससे संतुष्ट नहीं थे।

विभाजन के बाद गांधीजी की मृत्यु, गणराज्य की स्थापना, ई.स. १९६२ का चीनी आक्रमण, ई.स. १९६५ का पाकिस्तानी आक्रमण, नेहरू-शास्त्री की मृत्यु आदि प्रमुख घटनाओं के साथ दिसंबर १९७१ में भारत-पाकिस्तान युद्ध और 'बांगला देश' का उदय हुआ। इन सब घटनाओं से यशवंतरावजी अछूते न रहे। इन सब राजनीतिक घटनाओं का यशवंतरावजी पर परिणाम हुआ। इसलिए उन्होंने स्वातंत्र्य आंदोलन में हिस्सा लिया। इसके लिए उन्हें जेल में जाना पडा। देश स्वतंत्र होने के बाद वे राजनीति में ही रहे और विविध शासकीय पदोंपर आसनस्थ होकर देश की प्रगति करने के काम में जुट गये।

(ख) सामाजिक और धार्मिक परिस्थिति

सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ भी विषम एवं जटिल थी। भारतीय समाज तो सदैव से ही रूढिवादी और परंपरानुगामी रहा है। धर्म तो भारतीय समाज की रीढ़ की हड्डी है। अतः किसी भी क्रान्तिकारी परिवर्तन और सुधार के लिये वहाँ आकस्मिक अवकाश न था। स्त्रियों और शूद्रों का स्थान दासी और गुलामों के समान था। मनुद्वारा निर्धारित वर्णाश्रम धर्म, संयुक्त कुटुंब प्रथा, बालविवाह, बहुविवाह, सतीप्रथा, बालहत्या, पर्दा, श्राद्ध, स्त्रियों की अशिक्षा आदि का प्रचार था।

ई.स. १९३७ तक भी इस स्थिति में कोई सुधार नहीं हुआ था। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पनपती चली गयी। भूमि कर की समाप्ति से कृषि योग्य भूमि जमीनदारों की निजी सम्पत्ति बन गई थी। न्याय का शासनसूत्र जो अब तक पंचायतों के हाथों में था, निकल कर जमीनदारों और न्यायालयों के हाथों में चला गया था। भूमि-स्वामित्व को लेकर पारस्परिक स्नेहसूत्र टूटने लगे। जनसंख्या वृद्धि किसानों के खेतों को विभाजित और विखण्डित करने लगी थी। अर्थाभाव, अशिक्षा, अज्ञान और नवीन साधनों की अनुपलब्धि में किसान समय से लडता रहा। परिणामतः भारतीय समाज की अवस्था दयनीय हो गयी।

ग्रामीण की भाँति नागरी जीवन भी अस्त-व्यस्त था। नगरों की हस्तकला और उद्योगों को विदेशी पूंजी चाट गयी। जमीनदार कृषक, उद्योगपति-श्रमिक आदि वर्ग स्पष्ट देखे जा सकते थे। संपूर्ण भारत का ढाँचा चरमरा कर टूट रहा था। पश्चिमी शिक्षा

के आगमन ने भारत में पश्चिमी शिक्षा का आरोपण किया। अंग्रेजी भाषा तथा रहन-सहन पर अधिक बल दिये जाने के कारण शिक्षित और सामान्य जनता के बीच खाईं बढ़ती चली गयी और 'सामाजिक सन्तुलन' विनष्ट हो गया। १९३१ तक भारत की ९२ प्रतिशत जनता अशिक्षित बनी रही।

औद्योगिक विकास के कारण भी सामाजिक संबंध बडी तीव्रता से बदल रहे थे। संयुक्त परिवार टूटने लगे थे और विभक्त परिवारों का शिक्षित समुदाय सहज ही 'स्व' की ओर चेतन होने लगा था। गांधीजी के प्रभाव से छुआछूत और वर्णभेद दूर करने के काफी प्रयास हुए। नारी चेतना पर्याप्त प्रगतिशील थी। ई.स. १९२९ में प्रसिद्ध 'शारदा ॲक्ट' द्वारा शादी के लिए न्यूनतम आयु सीमा बढ़ा दी गई। राष्ट्रीय आन्दोलन और देश की गतिविधियों में नारियाँ खुल कर भाग लेने लगीं, अतः ई.स. १९३०-३१ के अवज्ञा आंदोलन में नारियोंने प्रमुख भाग अदा किया था।

(ग) आर्थिक परिस्थिति

राजनैतिक, सामाजिक-धार्मिक परिस्थितियों के साथ ही आर्थिक परिस्थिति भी चिन्तनीय थी। 'मानसून की दया पर जीवित रहनेवाला भारत अकालों में जीवित रहने का जैसे अभ्यस्त हो चुका था। यशवंतराव के जन्म से पूर्व १८५० और १९०० के मध्य २४ अकाल पडे थे, जिन में से १८ तो १८७५ और १९०० के बीच के ही थे। अवश्य ही १९०० से १९५० के मध्य अनेक उद्योगों की नींव भारत में डाली गयी। लोहा, कपडा, चीनी आदि सभी उद्योग प्रगति करने लगे, परन्तु साथ ही उनकी शोषण-विधियों ने भी कम प्रगति नहीं की। भारतीय जनता ने १९०५ में सर्व प्रथम स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से साम्राज्यवादी सरकार की आर्थिक नीति के विरुद्ध क्रान्ति की भावना व्यक्त की। सम्पूर्ण देश ने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। बंग-भंग के बाद आंदोलन की गति और भी तीव्र हो गई। कर्जन के शासन का राजनीतिक और आर्थिक फल बहिष्कार है। ऐसा निष्कर्ष सहजही निकाल लिया गया। बडे उद्योगों के मूक लघु उद्योग कुचल कर रह गये। बकनन के मत से 'थोडे से औद्योगिक केंद्र जरूर है, लेकिन दस्तकारी से जितने लोगों की रोटी चलती है, कारखानों से उससे अधिक लोगों की रोजी नहीं चलती। देश के प्रति वर्ष के आयात से निर्यात कम है। शोषण के विरुद्ध बार-बार प्रदर्शन होते रहे, पर उसे किसी भी मूल्य पर रोका नहीं जा सका।

ई.स. १९४७ में भारत विभाजन के फलस्वरूप, देश में आर्थिक अव्यवस्था बढ़ गई। विभाजन ने गेहूँ, कपास, चावल, जूट आदि के उपभोक्ता क्षेत्र भारत को दिये और उत्पादन क्षेत्र पाकिस्तान को। फलतः जनताने आर्थिक दशा सुधारने के लिए नई सरकार

के आगे जोरदार माँगे प्रस्तुत की। डॉ. व्ही. के. आर. वी. राव के मत से 'भारत की नई सरकारने अगम अपार कठिनाइयों के बीच जीवन की राह पर कदम उठाया था। और जो आस्थावान थे, उनके अतिरिक्त किसी को भी यह स्पष्ट न था कि परिणाम क्या होगा।

ई. स. १९६५ से पूर्व तक योजनाओं पर जिस प्रकार हाथ खोलकर व्यय किया, उससे लाभ एक विशेष वर्ग को ही हुआ। इससे आर्थिक विषमता बढ़ रही है। खाद्य की कमी के कारण हमने केवल खाद्य पदार्थों का ही आयात नहीं किया; हमारे देश ने विदेशों से केवल धन ही ऋण पर नहीं लिया, बल्कि विचारों का भी खुले आम बड़ी शान से आयात किया। भारतीय मनीषा विदेशों से विचारों का बड़ी मात्रा में ऋण ले रही थी। फ्रायड, मार्क्स, इलियट, ईट्स, आदि इस क्षेत्र में भारतीय मनीषा को ऋण देनेवाले रहे।

यशवंतरावजी के मन पर इन सब राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पड़ा। परिणाम यह हुआ कि देश स्वतंत्र होनेपर उन्होंने ये सब बातें ध्यान में रखी और जब शासक बने तब ये बाते ध्यान में रखकर अपना राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक कार्य शुरू किया। यह कार्य शुरू करते समय उन्होंने हमेशा अपने सामने म. जोतीराव फुले, राजर्षि छत्रपती शाहू महाराज और डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के विचारों को सामने रखा।

निष्कर्षतः युगीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, आदि की दृष्टि से इनका नेतृत्व भारतीय राजनीति में अपना पृथक महत्त्व रखता है।

इस प्रकार के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक परिवेश में स्व. यशवंतराव चव्हाण का आविर्भाव और उनके नेतृत्व का विकास भारत के राजनैतिक इतिहास की एक अनिवार्य और महत्त्वपूर्ण घटना है।

२. यशवंतराव चव्हाण का जीवन वृत्त

राजनीति में राजनैतिक नेता का संपूर्ण व्यक्तित्त्व अभिव्यक्त होता है। नैतिक नेता की जीवनी और उनके जीवन दर्शन का नेता के राजनैतिक कार्य में विशिष्ट महत्त्व है। अतः जीवनी, व्यक्तित्त्व और जीवन दर्शन एक दूसरे से सम्बन्ध है और इन तीनों का राजनैतिक साधना में महत्त्वपूर्ण योग है। इसलिए नेता के व्यक्तित्त्व और कार्य को समझने के लिए उसके क्रियात्मक जीवन, सुख, दुःख, संकल्प, विकल्प तथा स्वभाव आदि का अध्ययन आवश्यक है।

राजनैतिक नेता भी सामाजिक जीव है, अतः बहिर्जगत की घटनाएँ उसे प्रभावित करती रहती है। इसी तरह से नेता के जीवन के क्रमिक उतार-चढ़ाव देख विशिष्ट सम्बन्धों और क्रिया-कलापोंद्वारा हम उसके पूर्व पीठिका तथा मनोदशा से भली भाँति परिचित हो सकते हैं। जीवनी के द्वारा हमें नेता के वय, विकास तथा कार्य निर्माण की सम्यक् रूप रेखा और आधार भूमिका ज्ञान होता है।

(१) वंश वृत्त

यशवंतराव के दादा का नाम वाघोजी चव्हाण और उनके पिता का अर्थात उनके परदादा का नाम राणोजी चव्हाण। परदादा के पिता का नाम बालोजी चव्हाण था।

वाघोजी चव्हाण के दो पुत्र हुए (१) रामचंद्र (२) बलवंतराव. रामचंद्र यशवंतराव के चाचा थे। बलवंतराव की चार संताने हुई - (१) ज्ञानोबा (२) राधाबाई (३) गणपतराव (४) यशवंतराव

ज्ञानोबा की पत्नी का नाम था सोनाबाई। राधाबाई (यशवंतराव की बहन) रामचंद्र कोतवाल के साथ ब्याही गई थी। गणपतराव चव्हाण की पत्नी का नाम था भागीरथीबाई। यशवंतराव का वेणूताई के साथ विवाह हुआ था।

ज्ञानोबा की तीन संताने हुई - (१) प्रताप (२) सुधीजाई (३) शिवाजी। प्रताप और शिवाजी ये दोनों यशवंतराव के भतीजे थे। सुधीजाई यशवंतराव की भतीजी थी। सुधीजाई का फलटण के दत्ताजीराव बेडके के साथ विवाह हुआ था।

प्रताप की पत्नी का नाम मथुराबाई था और शिवाजी की पत्नी का नाम विमल था।

राधाबाई रामचंद्र कोतवाल की तीन संताने हुई - (१) बाबूराव (२) दिनकर (३) हौसाबाई ।

बाबूराव और दिनकर ये दोनों यशवंतरावजी के भांजे थे। हौसाबाई उनकी भांजी थी। हौसाबाई कृष्णाजी घाडगे के साथ ब्याही गई थी।

गणपतराव चव्हाण की चार संताने हुई - (१) लिलाताई (२) दादा (३) अशोक (४) डॉ. विक्रम उर्फ राजा ।

दादा, अशोक और डॉ. विक्रम ये तीनों यशवंतरावजी के भतीजे थे और लिलाताई उसकी भतीजी थी।

बाबूराव काले के साथ लिलाताई का विवाह हुआ था। उन्हें तीन संताने हुई। उनके पुत्र का नाम संजय काले था। शेष दोनों के नाम याद नहीं।

चारूलता दादा की पत्नी थी। उनकी तीन संताने थी । (१) अभिजीत चव्हाण (२) राहुल चव्हाण (३) चेतन चव्हाण, चेतन की पत्नी का नाम वैशाली था। मंदाकिनी अशोक की पत्नी थी। स्मिता दलवी, बेलगाँव, तेजस्विनी पाटील, महेश, रोहित। रोहित की पत्नी का नाम था कल्पना। शंतनु उनका पुत्र। मंगल डॉ. विक्रम उर्फ राजा की पत्नी। सिद्धार्थ और लिणा। अनुष्क सिद्धार्थ की संतान।

(२) मूलगाँव

यशवंतराव चव्हाण का मूल गाँव ढवलेश्वर है। वह गाँव खानापूर तहसील में है। यह गाँव बहुत छोटा है। उनकी माँ ने उनसे यह वस्तुस्थिति बतायी है। ढवलेश्वर में चव्हाण परिवार कुशल था। यह चव्हाण परिवार किसी साहूकार को दूसरे एक ऋण के लिए जमानत रहा। वह साहूकार कर्जदार की ओर से ठगा गया। इसलिए जमानतवाले चव्हाण परिवार का जमीन जुमला साहूकारने अपने कब्जे में लिया। इसलिए ढवलेश्वर में चव्हाण परिवार का कुछ नहीं रहा। ढवलेश्वर से विटा नजदीक था। इसलिए चव्हाण परिवार ने पहले वहाँ निवास किया। यह घटना शायद यशवंतराव के परदादा के पहले के होगी। विटा आने के बाद कम उपजाऊ थोड़ी जमीन उन्होंने खरीद ली और उस पर अपना उदार निर्वाह चलाया था और ऐसी हालत में वे विटा में रहते थे।

रामचंद्र चव्हाण यशवंतरावजी के चाचा थे। वे चौथी कक्षा तक पढ़े थे। उन्होंने खेती करना छोड़ दिया और सरकारी नौकरी करने लगे।

आगे कुछ दिनों के बाद खेती के उत्पादन पर परिवार का खर्च नहीं चल सकता था। इसलिए उन्होंने अपने छोटे भाई के लिए अर्थात यशवंतरावजी के पिताजी के लिए प्रयत्न किया और उन्हे नाज़िर की नौकरी मिलवा दी। उनकी नियुक्ति विटा, दहिवडी,

कराड ऐसे स्थानोंपर अदल-बदलकर होती रहती थी। जब यशवंतरावजी का जन्म हुआ था, उस समय उनकी नियुक्ति कराड में हुई थी। वे कराड में बहुत वर्ष रहे। इस प्रकार दोनों भाई भी नाज़िर के रूप में काम कर रहे थे।

परिवार की पार्श्वभूमि ध्यान में आये इसलिए यशवंतराव ने यह हकीकत दर्ज कर ली है। इससे कल्पना आती है कि यह साधारण छोटे किसान का घर था, चाहे वह दादा का घर हो या पिता का घर हो। साधारण किसान के जीवन के हिस्से में आनेवाली जो बातें होती है, वही सब बातें यशवंतराव के परिवार के हिस्से में आयी थी। गाँव छोडकर नौकरी के लिए भटकना, बीच-बीच में खेती की ओर ध्यान देने के लिए गाँव की ओर जाना, खेती का उत्पादन हाथ में आता कि नहीं, यह देखने के लिए जाना, यह उनके पिता का तरीका था।

यशवंतरावजी का बचपन यह अन्य लाखों घरों में होनेवाले बच्चों की तरह बीत गया। देहात में रहनेवाले छोटे और गरीब किसानों की संख्या उस समय चारोंओर बहुत थी। इसी प्रकार के एक परिवार में यशवंतरावजी का जन्म हुआ था, पले-पोसे थे। इसलिए यशवंतरावजी के जीवन में अन्यों की अपेक्षा बहुत कुछ था, ऐसा नहीं। सर्वसाधारणतः अड़चने और गरीबी को ही जीवन ऐसा नाम था ऐसा कहा जाय तो चलेगा। ये सब कहने का हेतु इतना ही है कि वे भोगी हुई गरीबी का अतिरंजित वर्णन करना नहीं चाहते। ग्रामीण जीवन में उस समय का यह सर्वसाधारण अनुभव था।

अच्छी खेतीवाले दस-पाँच परिवार और व्यापार, साहूकारी करनेवाले दस-पाँच परिवार छोड़ दिये तो शेष सभी लोगों के जीवन का और रहन-सहन का स्तर एक ही था। यहाँ तेली, कंबल बुननेवाले, कोई गड़रिया रहते थे। लेकिन दिनभर कष्ट करना और अपना जीवन बिताना, यही चित्र यशवंतरावजी की कल्पना के अनुसार उस समय सभी गाँवों में था, ऐसा कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी।

यशवंतरावजी के बचपन के अनुभव की यह पार्श्वभूमि है। इसलिए यशवंतरावजी को ऐसे स्तर में और अहाते में होनेवाले बाल-बच्चे-मनुष्य के बारे में एक प्रकार का कुतूहल और आत्मीयता है। फिर वे किसी भी जाति के क्यों न हो, वे और यशवंतरावजी एक दूसरे में घुलमिल जाते। यह अनुभव उन्हें अपने ननिहाल में आया। और यही अनुभव जब वे कराड में शिक्षा के लिए स्थिर हुए, वहाँ ही आया। ननिहाल के घर के पडोस में रहनेवाले छोटी-छोटी जमाति में रहनेवाले लोगों के साथ उनका सम्बन्ध था। कंबल बुननेवाले, गडरिया, मुसलमान, पिछडी जाति का पडोस यह उनके जीवन की विशेष धरोहर है, ऐसा वे हमेशा मानते आ रहे हैं। इसलिए उनके घर, उनकी रहन-सहन, उनकी चालचलन ये अपने आप उन्हें अपनी ही लगती थी। उनकी कल्पना के अनुसार,

उनका उस समय का अनुभव और उस में से निर्माण हुई भावनात्मक स्थिति यह उनके अगले जीवन में उपयुक्त हुई।

(३) देवराष्ट्र

सातारा जिले की सीमापर एक पहाडी है। उस पहाडी के करवट में देवराष्ट्र नामक एक छोटासा गाँव बसा हुआ है। गाँव का आसमंत ऐतिहासिक अवशेषों से भरा हुआ है। यहाँ गुफाएँ हैं, देवालय हैं। गाँव की नैऋत्य दिशा की ओर महादेव के पुराणे मंदिर खडे हैं। सब में पुराना मंदिर समुद्रेश्वर का अर्थात महादेव का। गाँव उसे 'सागरोबा' कहते है। यह गाँव का दैवत। पहाडी भी सागरोबा की आसपास के टीलों में ऋषि मुनियों की गुहाएँ हैं। ऐसे कहा जाता है कि देवराष्ट्र यह एक राज्य का स्थान था। सातवाहन के राज्य के बाद महाराष्ट्र में जो अनेक छोटे-बडे राज्यों का उदय हुआ, उन में से एक देवराष्ट्र भी है। इस राज्य की राजधानी कौंडिण्यपूर, अर्थात आज का कुंडल गाँव है। ऐसा कहा जाता है कि देवराष्ट्र के राजा का नाम कुबेर था, ऐसी यह कथा है। कुबेरेश्वर का मंदिर भी यहाँ है।

देवराष्ट्र की नैऋत्य दिशा की ओर होनेवाले सागरेश्वर का मंदिर पार कर के डेढ-दो मील की सागरेश्वर की घाटी लाँघकर नीचे आने पर कृष्णा की घाटी लगती है। आज के स्वातंत्र्योत्तर काल में वहाँ की समृद्धि महसूस होती है। पहले भी वहाँ समृद्धि थी। इसकी कल्पना उस प्रदेश में बसे हुए गाँवों के नाम पर से आती है। दही, दूध, घी को पूर्व काल में समृद्धि के लक्षणों की कसौटी मानी गयी है। फिर कल्पना आती है कि एक ही कतार में कृष्णा नदी के किनारे पर बसे हुए दुधारी, दह्यारी, ताकारी, तुपारी इन नामों के गाँव है।

सम्पूर्ण कृष्णाकाठ यशवंतरावजी के प्रेम का, दिलचस्पी का और आत्मीयता का विषय है। महाबलेश्वर में उद्‌गमसे निकल पडी और कृष्णामाई किनारे किनारे सीधे राजमहेंद्री से लेकर उसके मुख तक जाऊँ ऐसा यशवंतरावजी को हमेशा लगता था। किनारे पर बसे हुए गाँवों से भेंट दे दूँ, लोगों से जान-पहचान करा लूँ, फसल से डोलनेवाले खेत देख लूँ, ऐसा उन्हें लगता था।

यशवंतरावजी के प्रदेश में बहनेवाली प्रमुख नदी कृष्णा नदी है। इस कृष्णा नदी के किनारे पर वाई, कराड और सांगली जैसे शहर भी हैं। उत्तम खेती के कारण प्रसिद्ध हुए अनेक देहात हैं। ऐतिहासिक काल में इस प्रदेश में अनेक कर्तृत्वसंपन्न व्यक्ति निर्माण हुए हैं। कृष्णा के किनारे पर स्थित मेणवली से नाना फडणविस का संबंध है। वैसे ही उंब्रज से धनाजी जाधव का संबंध है। सहवास से, भावना से यशवंतरावजी और उनके संगी-

साथी कृष्णामाई से संबंधित हैं। कृष्णा नदी की याद होने पर, अर्थात बचपन की और यौवनकालीन जीवन का निर्माण करनेवाले काल की याद आने पर उनका मन गद् गद् हो उठता है।

देवराष्ट्र यह उनका गाँव और ननिहाल होने के कारण उनकी बचपन की यादे ये सब देवराष्ट्र की यादे हैं। उनके पहले चार पाँच वर्षों की जो यादे हैं, ये सब देवराष्ट्र, वड़गाँव, कुंडल, ताकारी इन गाँवों सें संबंधित हैं। यह तो ग्रामीण जीवन की पार्श्वभूमि उनके जीवन का श्रीगणेशा है। आगे वे राजनीतिक काम के निमित्त और सरकारी काम के निमित्त देश में और विदेशों में बहुत घूमे-फिरे। फिर भी इस प्रदेश का आकर्षण उनके मन में हमेशा के लिए रहा है। यह ऐसा क्यों होता है। यह उन्हें मालूम नहीं है। लेकिन वस्तुस्थिति ऐसी है।

कुतूहल और आत्मीयता लगे ऐसा यह प्रदेश है। देवत्व लेकर जन्म लिया हुआ यह गाँव है। लेकिन इस में राष्ट्र यह कल्पना समायी है। सागरोबा के चारों तरफ आनंदबन ही आनंदबन है। धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष ये चार पुरुषार्थ यहाँ विचरते हैं। उपजाऊ जमीन में बीज बोया तो तेजी से बढता है। वैसे यहाँ के मनुष्य और मन। इस मिट्टी का गुण और मनुष्य का मूल्य घूमते-फिरते दिखाई देने लगता है।

समुद्र में स्नान किया तो त्रिलोक में तीर्थक्षेत्र का पुण्य मिलता है, ऐसे पुराने लोग कहते हैं। उसी तरह अमृत सेवन से सभी जीवन रसों का सेवना मिलता है ऐसे ही कहा जाता है। यहाँ तो समुद्रेश्वर ही कुंड में खडा है और उसके प्रेमामृत से 'सोनहिरा' बहता है। इस छोटी-सी नदी को लोग नाला कहते हैं। वहाँ तैरने में ही उनका बचपन बीत गया। उसका अमृतमय पानी उनके पेट में है। सोनहिरा की यह अमृतभूमि अर्थात उनका यह ननिहाल। उनका अंकुर अवतरित हुआ तो यहाँ ही।

उस समय देवराष्ट्र गाँव की आबादी डेढ-दो हजार की होगी। इस छोटी सी आबादी में सभी जाति-जमाति के लोग रहते थे। पाटील लोगों के दो खानदान वहाँ थे, एक मोरे पाटील का और दूसरा महिंद्र पाटील का। इसके अतिरिक्त यशवंतराव के ननिहाल के घाडगे, म्हस्के, मुलीक, भोसले ऐसे और पाँच-पचीस मराठों के घर थे। गडरिया लोगों की बस्ती भी। उनके दस-पंद्रह परिवार थे। संख्या की दृष्टी से दो बड़े समाज थे - एक मुसलमान और दूसरा पिछड़ी जाति का। इनके अतिरिक्त व्यापार करनेवाले कुछ लिंगायत और दो-तीन गुजराती परिवार थे। ये गुजराती परिवार सधन और सुखी थे। लिंगायत लोगों की परिस्थिति भी अच्छी थी। दोंनों पाटील परिवार में केवल दो-चार परिवार सुस्थिति में थे। क्योंकि उनके खेतों में कुएँ थे। कुएँ में पानी था। इसलिए उनके खेतों में अच्छी फसले आती थी। शेष सब लोग सर्वसाधारण स्थिति में थे।

मुसलमान समाज प्रायः खेती में नहीं था। लेकिन दूसरे कुछ छोटे-बड़े उद्योग करके अपना जीवन बिताते थे। गाँव में दस-पाँच मंदिर थे और एक दो मस्जिदें थी।

पिछडी जाति का समाज यह संख्या की दृष्टि से बहुत था और गाँव में उनका दबदबा था। यह समाज पिछड़ा हुआ था, लेकिन उसे अस्पृश्य नहीं माना जाता था। पास-पडोस में उनका आना-जाना था। उनका कोई निश्चित ऐसा व्यवसाय नहीं था। लेकिन बीज-बीच में खेती पर काम करने के लिए जाते थे और गरीब परिस्थिति में वे अपनी गृहस्थी चलाते थे। एक-दो घरों को छोड़कर शेष लोगों को रहनेके लिए बाँधे हुए घर न थे। एक दूसरे पर पत्थर रखकर खडी की हुई दीवारे और उनकी ऊँचाई भी कम। बरसात में किसी तरह रहने के लिए की गई व्यवस्था। ऐसी हालत में ये लोग रहते थे। यह बस्ती यशवंतराव के ननिहाल के पास थी। इसलिए उस समाज में अनेक लोगों से यशवंतराव की जान पहचान हो गयी थी और वहाँ जाने पर उनके बीच में खेलने के लिए आनेवाले लड़कों में जैसे मराठा और मुसलमानों के लड़के होते थे वैसे पिछडी जाति के लडके भी आते रहते थे। कभी-कभी उनकी बस्ती में जानेका प्रसंग आता रहता था। यशवंतरावजी वहाँ उनके साथ खेले है, घूमे-फिरे है। बचपन से उनके साथ रहने से और सहवास का यह अनुभव होने के कारण यशवंतरावजी के मन में उस समाज के विषय में हमेशा के लिए अपना घर कर गयी है।

गाँव में मध्यम स्थिति से लेकर उत्तम स्थिति में रहनेवाले दस-पंद्रह ब्राह्मण परिवार थे। उनमें से कुछ लोगों की जमीनदारी थी। उनके लडके शिक्षा के लिए बाहर के गाँव जाते रहते थे। लेकिन यशवंतराव के बचपन में इन लोगों के बारे में गाँव में एक प्रकार का आदर था, यह उन्होंने देखा था। लेकिन इस आदर के तहत ढँका हुआ एक अंतर था। लेकिन उस अंतर का ज्ञान उन्हें भविष्य में होने लगे।

अनेक प्रकार से, अलग-अलग स्तर पर जीवन बितानेवाला और अलग-अलग संस्कृति में रहनेवाला छोटासा समाज उस गाँव में रहता था।

इस गाँव का भौगोलिक प्रदेश एक अर्थ से महत्त्वपूर्ण था। इसका मुख्य कारण है कि इस प्रदेश में होनेवाले देवालय। इस गाँव की नैऋत्य दिशा की ओर सागरेश्वर का मंदिर है। यह मंदिर इस प्रदेश में रहनेवाले लोगों के मन को आकर्षित करनेवाला स्थान था। इसी तरहका लिंगोबा का दूसरा स्थान हैं। छोटी-बड़ी पहाडी के करवट में बसे हुए देवस्थान मन को प्रसन्न करनेवाले चैतन्यस्थान हैं। कराड से लेकर ताकारी तक आनेवाले जानेवाले लोग कृष्णा नदी की घाटी में से ऊपर आने पर सागरेश्वर की घाटी और सागरेश्वर के मंदिर में जाकर दर्शन किये बिना आगे नहीं जाते। इसलिए सागरोबा और देवराष्ट्र इन दोनों में एक प्रकारका अटूट नाता निर्माण हुआ हैं।

इस गाँव की उत्तर की तरफ दो तीन मील पर एक छोटासा नाला बहता हैं। वह नाला उस गाँव की खेती के बहुत से भाग को स्पर्श करके बहता जाता है। इसलिए उसका महत्त्व है। उसका नाम है सोनहिरा। यशवंतरावके मन में इस सोनहिरा का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्हे उनकी माँ की याद आनेपर देवराष्ट्र की याद आती है और फिर सागरेश्वर, सोनहिरा इन दोनों की याद आती हैं और सोनहिरा का नाम लिया तो यशवंतरावजी को माँ की याद आती है। बचपन में ऐसे जो कुछ स्थान है वे भावनाओं को स्पर्श करते रहते है। वे सब कभी कभी अपने मन में हमेशा के लिए महत्त्वपूर्ण प्रतीक बन जाते हैं। वैसेही इन स्थानों का हुआ है।

वैसे देखा जाय तो देवराष्ट्र में उपजाऊ जमीन थोड़ी है। उस समय सिर्फ चार-पाँच स्थानों पर पानी के कुएँ और उसके आसपास होनेवाले हरे-हरे बाग़ान। इतनेही कुछ समृद्धि के स्थान थे। शेष सभी खेती सूखी थी। और इस सूखी खेती पर बहुत कष्ट करनेवाले किसान देखे जाते थे।

यशवंतरावजी की उम्र जैसे बढ़ती गयी वैसे गाँव की इस आर्थिक और सामाजिक पार्श्वभूमि पर गाँवके प्रश्नों की ओर देखने का दृष्टिकोन बदलता गया। आगे वे अनेक वर्षोंतक इस गाँव में आते थे और उन्होंने समय समय पर जो-जो बाते देखी थी वे सब बातें गाँव की सीमातक मर्यादित थी, ऐसा नहीं था। इस गरीबी में रहनेवाले लोग मानवता से वंचित नहीं हुए थे। यह उसमें से एक अच्छी बात थी।

यशवंतराव ने अपने बचपन में देखे हुए मनुष्य और उनकी लोभनीय यादे याद आती है। उनके नाना के घर के पडोस में रहनेवाले मुस्लिम परिवार से उनकी मित्रता थी। उसी तरह पडोस में रहनेवाले कंबल बुननेवाले और गड़रिया लोगों से उनकी बड़ी आत्मीयता थी। उन्हें उस समय का सब याद आता है। फिर भी जाति-जाति में आपस में शत्रुता कब कैसे निर्माण हुई, यह समझ में नहीं आता। उस समय एक दूसरे के साथ मानवता के रिश्ते की प्रतिबद्धता थी।

एक बात बताना आवश्यक है कि इन सब समाज से दूर और गाँव के बाहर रहनेवाले हरिजन, मातंग और चमार इन लोगों का गाँव से कम संपर्क आता था, और जो कुछ था, वह जिस मनुष्यता का यशवंतरावजी ने ऊपर वर्णन किया था, उसका उससे उचित संबंध था, ऐसा नहीं कहा जा सकता। आज यशवंतरावजी दलितों के प्रश्नों की ओर देख रहे हैं, वह दलित समाज उस समय गाँव के बाहर अलग तरीके से अपना जीवन बिता रहा था, उसे जीवन यह नाम देना है कि नहीं, यह एक अलग प्रश्न था।

लेकिन यशवंतरावजी यहाँ जो उल्लेख कर रहे थे वह छोटी-छोटी जाति-जमातियों का। गाँव में पाटील लोगों के परिवार मान-सम्मानके थे। उन में भी इज्जतदार बुजुर्ग लोग

सबको सँभालकर लेनेका प्रयत्न करते थे। लेकिन उसके पीछे एक सूत्र था। आगे चलकर यशवंतरावजी को इसका अनुभव आया। राज्य शासन से मिलजुलकर नम्रता से रहना यह इस सूत्र का नाम था। छोटे-बड़े लोग गाँव के पाटील को मान दे, गाँव के पाटील पास-पड़ोस के पुलिसों को मान दे, ऐसी प्रथा थी। गाँव का पटवारी यह कर्ता मनुष्य माना जाता था। और इन सब में बडी आसामी अर्थात तहसील का तहसीलदार। तहसीलदार जब गाँव में आता, तब उनकी बहुत बड़ी खातिरदारी की जाती। इसलिए गाँव में बड़ी हलचल मच जाती।

शासन से डरकर नम्र होकर बर्ताव करने की यह प्रवृत्ति उस समय के जीवन का एक गृहीत कृत्य था। उस समय उनकी जानकारी वहाँ तक पहुँचीही नहीं थी। शिक्षा कम, बाहर के संसार से संपर्क कम, जो है उस में समाधान मानने की प्रवृत्ति, किसी के बीच में न पड़ना, सिर्फ तटस्थ रहना, यही उस समय की नीति थी। यही वहाँ के जीवन की नीति थी। इसलिए उस में गति भी नहीं थी और प्रगति भी नहीं थी। इस गाँव का आया हुआ यह अनुभव आगे यशवंतराव कार्यकर्ता के रूप में जब जिले में अन्यत्र घूमने-फिरने लगे तब भी थोडे बहुत अंतर से उन्हें वही अनुभव फिरसे आये। कुछ स्थानों पर समृद्धि अधिक थी। वहाँ के धनिक लोगों की आक्रमता गरीब लोगों के संबंध में अधिक थी। यही फ़र्क कुछ स्थानों पर अवश्य महसूस हुआ। लेकिन शासन के विरोध में कुछ नहीं बोलना चाहिए यह उस समय के किसान समाजका और किसान समाज के ऊपर निर्भर रहनेवाले ग्रामीण समाज का स्वभाव बन गया था।

खेती से संबंध होनेवाला मनुष्य निकट की राजनैतिक सत्ता को बहुत उच्च मानता है। यह अनुभव उन्हें आगे भी आता रहा। देवराष्ट्र का यह अनुभव उनके मन को एक प्रकार की शिक्षा दे रहा था। कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने के लिए मन की जो तैयारी होनी चाहिए और सामाजिक जानकारी आवश्यक होनी चाहिए यह जानकारी उन्हें इसमें से मिलती गयी।

उत्तर की तरफ से आनेवाली कृष्णा और दक्षिण की तरफ से आनेवाली कोयना इन दो नदियों का आमने-सामने आकर प्रीतिसंगम होता है। और फिर इन दो नदियों का प्रवाह पूर्व की तरफ बहता है। इन दो नदियों के संगम से होनेवाले काटकोन में कराड नामका गाँव बसा हुआ है। यह बहुत प्राचीन गाँव है, वैसे इस गाँव का इतिहास भी है। वैसे उस समय तक यह शहर बड़ा नहीं था। पचपन से लेकर साठ हजार तक उस शहर की आबादी थी। लेकिन यशवंतराव उस गाँव में बढ़ रहे थे, तब उस गाँव की आबादी पंद्रह-सोलह हजारों की थी। इसलिए सभी लोग एक दूसरे को पहचान सकते थे। आज भी वैसी स्थिति है।

यदि यह छोटा कसबा हो तो उसे अपना एक व्यक्तिमत्त्व था। व्यापार का महत्त्वपूर्ण केंद्र, विद्याव्यासंग की और ज्ञानोपासना की पुरानी परंपरा। कृष्णा के किनारे पर ब्राह्मण बस्ती। कोयना के किनारे पर मराठा और अन्य जमाती की बस्ती। गाँव की मध्य बस्ती में व्यापारी मुहल्ला, सब्जी-मंडी और ऊँचाई पर मुस्लिम मुहल्ला। गाँव की पूर्व तरफ हरिजनों की बस्ती। इस गाँव में एक दूसरे के साथ संबंध रखने की नीति थी। यशवंतराव की विद्यार्थी अवस्था में इस गाँव में एक हाइस्कूल और किसी तरह चलनेवाला एक सार्वजनिक वाचनालय था। लेकिन यह वाचनालय व्याख्यान और चर्चा का महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया था। इस गाँव को राजनैतिक परंपरा थी। राष्ट्रीय विचारों की अच्छी जानकारी रखनेवाले अनेक व्यक्ति यहाँ थे। आलतेकर पिता-पुत्र, श्री. पांडुअण्णा शिरालकर, बाबूराव गोखले, गणपतराव बटाणे, किसनलाल प्रेमराज ये लोग उक्त विचारों के थे। इस गाँव में प्रमुख लोगों ने यहाँ लोकमान्य तिलक के स्मारक के रूप में एक इंग्रजी शाला शुरू की। सांस्कृतिक और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण घठना थी। आज कराड यह एक महत्त्वपूर्ण शिक्षा का केंद्र बन गया है। उसका यह प्रारंभ था। इस छोटे से गाँव को राजनीति का बडा आकर्षण था। देश में सभी महत्त्वपूर्ण राजनैतिक आंदोलन के प्रतिनिधि यहाँ थे, और वे सभी क्रियाशील थे। ऐसे गाँव के संस्कार में यशवंतरावजी बढ़ रहे थे।

कराड के वातावरण में यशवंतरावजी जब बढ़ रहे थे तब महाराष्ट्र के सामाजिक जीवन में कुछ नये प्रवाह और कुछ नयी शक्तियाँ काम कर रही थी। संयोग से जिस भाग में और जिस जगह में यशवंतरावजी किराया देकर रहते थे। वहाँ कराड में खानदानी मराठा कुटुंब की महत्त्वपूर्ण बस्ती थी। कराड में उसे डुबल गली कहते थे। वहाँ वे रहते थे। ये सब मराठा परिवार समाज में प्रतिष्ठित थे। कराड यह एक महत्त्वपूर्ण स्थान था। इसलिए यहाँ बहुत से बडे बडे लोग आते-जाते थे। वे लोग यहाँ आकर बातचीत करते थे, वह सब यशवंतरावजी सुनते थे। इसलिए आनेवाले लोगों के विचारों की कल्पना आने लगी। यशवंतरावजी की समझ में आया कि उस समय बहुजन समाज की उन्नति के लिए सत्यशोधक आंदोलन चल रहा था। आगे उसे राजनीति में ब्राह्मणेतर आंदोलन का स्वरूप प्राप्त हुआ। इसलिए बहुजन समाज में लड़के-लडकियों को शिक्षा लेनी चाहिए, पठन करना चाहिए, सार्वजनिक काम में शामिल चाहिए। उस समय इस प्रकार का मानसिक और वैचारिक वातावरण वहाँ था।

(४) यशवंतराव का जन्म, जन्मतिथि और जन्मस्थान

देवराष्ट्र के दाजीबा घाडगे की बहन विठाबाई का बलवंतराव चव्हाण के साथ

विवाह हुआ था। एक किसान की लड़की दूसरे किसान के घर में गयी थी। बलवंतराव चव्हाण ढवलेश्वर गाँव के मूल निवासी थे। लेकिन श्री. रामभाऊ जोशी ने चव्हाण का मूल गाँव भालवणी बताया है। लेकिन यशवंतरावने 'कृष्णकाठ' में अपना मूल गाँव 'ढवलेश्वर' बताया है। उनकी माँ ने उनसे यह बात बतायी थी। इसलिए इस बात को सच मानना ही पडेगा। ढवलेश्वर नाम का गाँव विटा गाँव से पाँच-छः मील दूर है। उसके आसपास भालवणी, कलंबी, आलसुंद नाम के गाँव हैं।

विठाई अब तीन बच्चों की माँ बन गयी थी। पहला ज्ञानोबा, दूसरी लड़की राधाबाई और उसके बाद गणपत । विठाई अब चौथे बालक को जन्म देनेवाली थी। स्वयं यशवंतराव ने अपनी आत्मकथा 'कृष्णाकाठ' में लिखा है - ''मैं मेरी माँ का पाँचवा या छटवाँ अपत्य था।'' प्रसूति के लिए वह देवराष्ट्र में आयी थी। आक्का की प्रसूति अपने घर में होती है यह देखकर घाडगे के घर में सब को आनंद हुआ। विठाई की माँ की बहुत गड़बड़ चल रही थी।

आक्का की पहली प्रसूतियाँ अच्छी हुई थी। अब की प्रसूति। लेकिन इस समय एकाएक परिस्थिति अलग बन गयी। उस दिन शाम से गड़बड़ शुरू हुई थी। विठाई की माँ साहसी। मन में चिंता रखकर विठाई को धीरज देने का काम करना था। यह तो काम शुरू था। लेकिन समय बीत रहा था। तब माँ का धैर्य टूट रहा था। आक्का को पीड़ा हो रही थी। प्रसूति जोखिम की थी। गाँव छोटासा देहात। दवापानी की कुछ सुविधा नहीं थी। तहसील के गाँव पहुँचने के लिए बैलगाडी के सिवा दूसरी कोई सवारी नहीं थी। भोजन का समय टल गया था तब तक आक्का बेहोश हो गयी थी। माँ की चिन्ता बढ़ गयी। आक्का पर आनेवाला संकट टलना चाहिए था। क्षण-क्षण बेचैनी बढ़ रही थी। हमेशा का दवापानी किया। गाँव में अनुभवी बूढ़ी स्त्रियाँ एकत्र हुई। उनमें से किसी के पास प्रसूति के निश्चित उपाय थे। सभी उपाय हो गये। लेकिन प्रसूति का चिह्न दिख नहीं पडता था। ऐसे समय देहात में एक ही उपाय शेष रहता है। वह है देव को गुहार लगाना, मनौती मनाना तथा भस्म लगाना। देव से गिड़गिड़ाकर गुहार लगाकर कहना कि, 'इसे जिंदा रखो।' घाडगे के घर में यही कठिण समय आया था। तभी माँ के हाथ ढीले पड़ गये। थरकनेवाले हाथ फिर एकत्र हुए। माँ ने सागरोबा से हाथ जोडे और उसने अपने मन से सागरोबा की प्रार्थना की - ''आक्का को जिंदा रखो, मेरे हाथ को यश दे। तुम्हारा स्मरण हमेशा करती रहूँगी।''

१२ मार्च १९१४। नियति का अनुग्रह विचित्र होता है। अव्यक्त रूप से वह कृपा करती है। माँ के मन में सागरोबाके प्रति अपार प्रेम। निष्ठा बहुत। रात के समय में उस अंधकार में, बड़ी शांति से सागरोबा को लगायी गयी गुहार सागरोबा तक पहुँच गयी।

सागरोबा ने माँ की बात सुन ली। उसने माँ के हाथ को यश दिया। उस समय घाडगे के घर में एक बालक का जन्म हुआ। आक्का का कठिण हालत में से छुटकारा हुआ। माँ की आँखों में आँसू भर आये। आक्का अधखुले नेत्रों से आसपास देखने लगी। ढिबरी के प्रकाश में उसे कुछ नहीं दिख रहा था। लेकिन बालक की आवाज कान में आने लगी। उसे अच्छा लग रहा था। बच्चा और आक्का भी अच्छी थी। यह सब देखकर दाजीबा को भी अच्छा लगा। उनके घर में एक बच्चे का आगमन हुआ है। इससे उन्हें बहुत बडा आनंद हुआ।

श्री. रामभाऊ जोशी ने यशवंतराव के जन्म की तारीख १२ मार्च १९१४ लिखी है। लेखक यशवंतराव ने कृष्णाकाठ में लिखा है - ''ऐसे देवराष्ट्र'' गाँव में मेरा जन्म १२ मार्च १९१३ को हुआ है।' शाला का सर्टिफिकेट इतना ही इसका सबूत हुआ है। मैं मेरी माँ का पाँचवाँ अथवा छटवाँ अपत्य होने के कारण मेरे जन्म की तारीख किसी ने नहीं लिखी। मेरा जन्म अर्थात् महत्त्वपूर्ण सुवर्णक्षण है ऐसी कोई परिस्थिति नहीं थी। आज अनेक लोग मुझसे कहते हैं - 'तुम्हारी निश्चित जन्मतारीख कहिए।' और इसी जन्मतारीख को मैं मेरी सालगिरह मनाता हूँ। लेकिन शत-प्रतिशत यही मेरी जन्मतारीख है, यह मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। परंतु मेरी माँ ने और नानी ने मुझे मेरे जन्म-समय की विस्तृत जानकारी मेरे बचपन में कही थी। आगे माँ से पूछ कर मैने वह तारीख निश्चित की थी। (यशवंतराव चव्हाण - 'कृष्णाकाठ', पृ.१३) इससे स्पष्ट है कि यशवंतरावजी की जन्मतारीख १२ मार्च १९१४ न होकर १२ मार्च १९१३ ही है। इस में दो मत नहीं हो सकते।

ननिहाल में मेरी माँ को सभी 'आक्का' कहते थे। वह घर में सब में बड़ी थी। इसलिए आने-जानेवाला मनुष्य भी उसे 'आक्का' ही कहता था। एक बार यशवंतराव ननिहाल में थे तब उसने नानी से पूछा था, तब उसने कहा था - 'आक्का का नाम देव का है। विठाई अपना देव है।'

नानी क्या कहती है, वह मेरी समझ में नहीं आया। लेकिन उसने कुछ अच्छा कहा है ऐसे मुझे लगा।

इस समय बोलते बोलते उसने मेरे नाम के पीछे जो कथा थी वह उसे कही। उसने कहा - 'तुम्हारे जन्म के समय बड़ी पीड़ा हुई थी। वह बेहोश हो गयी थी। अपना गाँव एक छोटासा देहात था। वहाँ दवापानी की सुविधा नहीं थी। घरेलू औषधपानी किया, पर उसका कुछ उपयोग नहीं हुआ। मुझे चिंता लगी। आखिर सागरोबा को गुहार लगायी। उसने अंतःकरण से देव की प्रार्थना की। आक्का को जिंदा रखने में मेरे हाथ को यश दे। तुम्हारे स्मरण के रूप में लड़के का नाम यशवंत रखूँगी। सागरोबा ने मेरी प्रार्थना

सुन ली। इसलिए तुम्हारा नाम 'यशवंत' रखा है।'

नानी ने संकट दूर हो जाए इसलिए अपने गाल पर से उसने उंगलियाँ घुमायी और अपनी उंगलियों की कड़कड़ आवाज कर दी। रात में नानीने 'यशवंतराव' को भस्म लगाया। 'विठाई' और 'यशवंत' दो नामों के पीछे का इतिहास पहलेपहल मुझे मालूम हुआ।

माँ के प्राण की साक्ष - यशवंत का नाम 'यशवंत' है। यह समझने के बाद 'माँ' ही यशवंतराव का प्राण बन गयी।

(५) पिताजी का निधन और उनके भाई

ई. स. १९१७-१८ का वह समय। युद्ध समाप्त हो रहा था। और उस समय हिंदुस्तान में जनता प्लेग जैसे महाभयंकर बीमारी से संघर्ष कर रही थी। प्लेग ने चारों ओर क़हर ढा दिया था। परिवार के परिवार नष्ट हुए थे। कराड में भी प्लेग का कुहराम मच गया था। वे दिन थे अनाज की कटाई करने के। प्लेग ने गाँव में प्रवेश किया। तब गाँव में लोग बाहर पडने लगे। बलवंतराव को भी गाँव के बाहर पडना आवश्यक था। इसलिए विठाई और बच्चों को देवराष्ट्र को भेज दिया। परंतु मामा के छोटे से घर में ये सब लोग नहीं रह सकेंगे। इसलिए महिंद घर के पास होनेवाले बड़े घर में दो कमरे में यशवंतराव के परिवार की व्यवस्था कर दी थी। वैसे उनके मामा के घर से उनका घर नजदीक था। इसलिए दिनभर वे मामा के घर के सामने रास्ते पर खेलते रहते थे। उस समय यशवंतराव चार वर्षों के होंगे।

बलवंतराव अकेले ही कराड में रहे। नौकरी का बंधन था। उसके लिए उन्हें गाँव में ही रहना पड़ा। दिन बीत रहे थे। किसी न किसी परिवार पर हर दिन आक्रमण होता था। हाहाकार मच गया था। बलवंतराव अपनी आँखों से वह दुःख देख रहे थे। नौकरी कर रहे थे। बीच-बीच में देवराष्ट्र जाकर पत्नी बाल-बच्चों को देखकर वापस आते थे।

ऐसे ही एक दिन समय निकालकर पत्नी और बच्चों को देखने के लिए देवराष्ट्र गये थे। उस समय उन्हें ज्वर आया था। उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। यशवंतराव ने खेलते समय पिताजी को सामने से आते हुए देखा। और भागते भागते वे अपने पिताजी से चिपक गये। लेकिन हमेशा की तरह उन्होंने यशवंत को अपनी गोद में नहीं लिया। उन्होंने यशवंतराव का हाथ अपने हाथ में लिया और यशवंत से कहा - 'हम घर जायेंगे। मेरी तबीयत ठीक नहीं है। '

यशवंत उनकी उंगली पकडकर घर ले आया। माँ-पिता की क्या बातचीत हुई वह यशवंत की समझ में नहीं आयी। लेकिन माँ ने पिताजी के लिए बिछौना डाल दिया

और उस पर वे सो गये। यशवंतराव को इसकी कल्पना नहीं थी कि उनकी यह अंतिम शय्या होगी।

इसके बाद तीन चार दिन होने पर भी उनका ज्वर कम नहीं हुआ। माँ घबरा गयी। वह दुःख करने लगी। यशवंत की समझ में कुछ नहीं आया था। गाँव में लोगों का आना जाना शुरू हुआ। उससे कल्पना आयी कि कुछ तो गंभीर प्रसंग है। उसके परिणामों की यशवंत को कोई कल्पना नहीं थी। मृत्यु क्या होती है यह यशवंतराव को मालूम नहीं था। एक दो दिन में पिताजी का स्वास्थ्य बहुत गंभीर हुआ। उनके अंतिम समय में यशवंत के साथ सभी बच्चों को घर के बाहर लाया गया। और तुलसी के चबूतरे पर कंबल बिछाकर बिठाया गया। थोडी देर के बाद यशवंतने माँ के दुःख की दहाड़ सुनी। हक्का-बक्का होकर सब भाई तुलसी का चबूतरा छोड़कर घर की ओर जाने लगे। लेकिन दूसरे लोगों ने उन्हें रोक लिया और कहा कि - 'बच्चों, यहाँ ही ठहरो। घर में मत जाओ।'

यह याद उन्हें आज भी व्यथित करती है। इसलिए माँ का प्रेम बढ़ गया होगा ऐसा यशवंतराव का मत बन गया। माँ ने सब बच्चों को दिलासा दिया, आत्मीयता दिखायी। लडकों की ओर देखकर उसने अपना दुःख निकल डाला। सच्चे अर्थों में पिताजी के निधन के बाद वे सभी अक्षरशः अनाथ हो गये थे। नानी और मामा का सहारा था। लेकिन उसके लिए भी कुछ सीमा थी। यशवंतराव ने अपनी माँ की ओर से भविष्यकालीन गृहस्थी की जो हकीकत सुनी है। इसलिए अगला सब उसे अकेला ही करना पडा।

माँ पीहर में बहुत दिन नहीं रह सकती थी। प्लेग के दिन समाप्त हो गए। फिर वे कराड आये। कराड में जिस किराये के घर में वे रहते थे। उस घर में वे रहने लगे। लेकिन आगे क्या? यही प्रश्न था। उनकी माँ ने कष्ट कर के उन्हें जिन्दा रखा और साहसी बनाया।

इस समय यशवंतरावजी के बड़े भाई ज्ञानदेव सत्रह-अठारह वर्षों के थे। यशवंतरावजी के पिताजी के अनेक बेलीफ मित्र उनकी माँ की सांत्वना के लिए आते और हम कुछ तो प्रयत्न करेंगे ऐसे कहकर चले जाते। यशवंतराव के पिताजी बड़े प्रामाणिक और निष्ठा से काम करनेवाले गृहस्थ थे। इसलिए उनके बारे में समव्यवसाय में होनेवाले लोगों को सहानुभूति थी। विशेषतः कराड के उस समय के मुन्सफ़ को भी सहानुभूति थी। उन्होंने यशवंतराव की माँ को बुलाकर धैर्य दिया और कहा कि - 'मैं तुम्हारे लड़के को नौकरी देने की सिफारिश करता हूँ।' परंतु यह बात उनके हाथ में नहीं थी। जिला न्यायाधीश के हाथ में थी।

बेलीफ श्री. शिंगटे उनके पिताजी के अच्छे मित्र थे। उन्होंने उनके बंधु की नौकरी के लिए बहुत प्रयत्न किये। श्री. शिंगटे के मतानुसार उनकी माँ अपने दो बच्चों

को लेकर सातारा के न्यायाधीश से मिले। उनके कहने के अनुसार माँ अपने बच्चों को लेकर सातारा चली गयी। श्री. शिंगटे भी साथ थे। वे सब सातारा कोर्ट में पहुँचे। वहाँ जानेपर शिंगटे ने कहा – 'चलो, तुम्हे साहब के सामने खडा करना है।' वे हम सबको लेकर उनके ऑफिस में दूसरे एक अधिकारी की ओर लेकर गये।

हम वहाँ से वापस निकल पडे तब यशवंतराव की माँ की आँखों में आनंद के आँसू थे। क्योंकि जिला न्यायाधीशने यशवंतराव के पिताजी के रिक्त स्थान पर बडे बंधु को बेलीफ के रूप में नौकरी पर लेना कबूल किया था और वैसा आदेश भी तैयार कर रखा था।

यशवंतराव कहते हैं कि एक अंग्रेज अधिकारी ने हमारे परिवार के साथ मानवता का बर्ताव किया था। (परतंत्र प्रशासन में ऐसा नहीं हो सकता था।) हुआ वह भी मानवता के नाते।

यशवंतराव अपनी माँ के साथ कराड वापस आये। एक दो सप्ताह में यशवंतरावजी के बंधु को नौकरीपर हाजिर होने का आदेश मिल गया। उनका घर स्थिर हुआ और कष्टप्रद क्यों न हो, लेकिन जीवन की अगली सफर शुरू हुआी। यशवंतरावजी के पिताजी के एकाएक निधन से परिवार पर आया हुआ संकट कुछ कम हुआ था। फिर भी उन्हें उनके ननिहाल का सहारा लेकर चलने की जरूरत थी। इसलिए हर वर्ष दिवाली की छुट्टी में या अप्रैल और मई महिने में छुट्टी में कराड से देवराष्ट्र जाने का उनका कार्यक्रम हमेशा का कार्यक्रम बना था। इसी कारण से यशवंतरावजी की माध्यमिक शिक्षा पूरी होने तक देवराष्ट्र गाँव से उनका संबंध हमेशा बना रहा। इसलिए उस गाँव में सामाजिक परिस्थिति, वहाँ देखे हुए मनुष्य, वहाँ आए हुए अनुभव ये सब उनके भावनाशील जीवन के अंग बन गए है।

यशवंतराव के बड़े भाई उस समय विटा (खानापूर तहसील) में नौकरी के लिए रहते थे। यशवंतराव और उनकी माँ दोनों कराड में थे। कराड में प्लेग की बीमारी होने के कारण कराड की शाला बंद थी। इसलिए मँझले भाई गणपतराव कुछ महिनों के लिए पढ़ने के लिए तासगाँव की शाला में चले गये थे। कम से कम अभ्यास तो होगा। वे लगभग चार महिने तासगाँव में थे और यशवंतराव तथा माँ कराड में।

इस बंधु का यशवंतराव पर बड़ा प्रेम था। ऊँचाई से मध्यम, काला-साँवला वर्ण, चेहरे का ढंग थोडा-बहुत यशवंतरावजी जैसा, सिरपर रंगाया हुआ साफा, हाथ में छाता, डोलते-डोलते चलने की आदत यह उनकी विद्यार्थी अवस्था से नजर के सामने होनेवाला चित्र आखिर तक यशवंतरावजी के मन में रहा। मनुष्य की पहचान करने में और मित्रता करने में वे बहुत होशियार थे। लोगों के प्रश्न समझकर उनकी मदद करने के

लिए उन में बड़ी उमंग थी। इसलिए उनकी अपेक्षा उम्र से बड़े होनेवाले लोगों में वे लोकप्रिय थे। उन्हें खेलने का आकर्षण था। उनके समवयस्क विद्यार्थियों के साथ वे उत्तम कुश्ती खेलते थे। तिलक हाइस्कूल में एक कुश्ती की स्पर्धा में उत्तम कुश्ती करके पुरस्कार प्राप्त किया था। यह कुश्ती देखने के लिए यशवंतराव गये थे। और वह कुश्ती तथा उस में उनकी निपुणता देखकर यशवंतराव को अपने भाई के बारे में बहुत आदर लगा। उनके समान उन्हें अच्छी कुश्ती नहीं आती थी। वे उनके साथ व्यायाम शाला में जाते थे। बीच-बीच में उनके आग्रह से वे साफा भी बांधते थे। उनका स्वास्थ्य उनकी अपेक्षा उत्तम था।

गणपतराव स्वयं बहुत बुद्धिमान थे। परंतु हमारे घर की आपत्ति से और परिस्थिति से वे अपनी शिक्षा पूरी नहीं कर सके। यशवंतराव के अनुभव से वे उत्तम खिलाड़ी और लोकप्रिय विद्यार्थी थे। यदि वे सब समय राजनीति में पड जाते तो उन्होंने अच्छा नाम कमाया होता, ऐसा उनका अनुमान है। लेकिन उन्हें स्वयं परिवार के प्रश्नों में उलझना पडा। यशवंतराव के लिए उन्होंने अपनी शिक्षा का भी त्याग किया और उनकी शिक्षा पूरी करने के लिए भी प्रयत्न किया।

परिवार के मार्गदर्शन का सभी बोझ माँ पर था और वह अपने काम सँभालकर ये सब कर रही थी। यशवंतराव की माँ निरक्षर थी। लेकिन वह अपने मन से बहुत सुसंस्कृत थी। गणपतराव इंदौर से वापस आने पर उसने उसे कहा – 'इंदूर जाने में तू गलती की है। अब दूसरों को दोष मत दो। क्योंकि उसके बिना कारण कटुता पैदा होगी। अपनी गलती आपको ही सुधारनी चाहिए। तू फिर से शाला में जाने के लिए शुरुवात कर।'

गणपतराव ने माँ की सलाह मान ली और उस वर्ष में होनेवाली परीक्षा को बैठने का प्रयत्न किया। परंतु उनका मन शाला में नहीं लगा। उसने निश्चित तय किया कि अब मैं माँ को कष्ट नहीं करने दूँगा। शाला छोडकर एक स्थानिक नौकरी स्वीकार कर उन्होंने अपना जीवनक्रम शुरू करना तय किया। उसने उस समय यशवंतरावजी से कहा – 'माँ काम नहीं करेगी और तू अपना शिक्षा-क्रम पूरा कर। परिवार चलाने की जिम्मेदारी अब मुझ पर है।'

और वह जिम्मेदारी उन्होंने आखिर तक निभायी। इसलिए परिवार में सभी सदस्यों ने गणपतराव के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की है।

(६) यशवंतराव की माता विठाई

खानापूर तहसील के अन्तर्गत देवराष्ट्र नाम का गाँव है। रावजी घाडगे किसान थे।

उनके लडके का नाम दाजीबा है। उनकी बहन विठाई बलवंतराव चव्हाण के साथ ब्याही गयी थी। उनके घर की परिस्थिति गरीबी की थी। फिर भी इसी हालत में विठाईने दिन बिताये। उसने रातदिन कष्ट किया और बाल-बच्चों को शिक्षा दी। ऐसी कष्टप्रद हालत होनेपर भी उसने किसी के सामने हाथ नहीं फैलाये। वह बड़ी स्वाभिमानी थी।

बलवंतराव के दादा विटा में स्थायिक हुए थे। विटा में उनकी तीन-चार एकड़ खेती थी। जमीन सूखी। किसी तरह दो-पाँच बोरे अनाज आता था। बलवंतराव और विठाई ऐसे वैसे दिन बिता रहे थे।

मेरे बडे बंधु को नौकरी मिलने के बाद वे कुछ दिन कराड में थे। उसके बाद उनका तबादला विटा में हुआ। परंतु यशवंतराव की माँ ने निर्णय लिया कि दोनों छोटों को लेकर वह कराड में रहेगी और उनकी शिक्षा पूरी करनी चाहिए। इस दृष्टि से उसने लिया हुआ निर्णय उनके जीवन को दिशा देने के लिए फायदेमंद हुआ, यह उन्हें स्पष्ट दिखाई दे रहा है और उसके निर्णय से यशवंतराव और उनका परिवार कराडवासी हुआ। उसके बाद कराड से जो संपर्क आया, वह हमेशा का। वह गाँव उनका हो गया और वहाँ उनका कार्यक्षेत्र बन गया।

यशवंत की माँ शाला में पढ़ी नहीं थी। लेकिन शिक्षा का मोल (मूल्य) अपने मन में जानती थी। वैसे देखा जाय तो यशवंतराव के घर की गरीबी थी। फिर भी वह संस्कार से श्रीमंत थी। यही श्रीमंती हम बच्चों तक पहुँचाने का उसका हमेशा का प्रयास होता था। 'देव अपने पीछे है।' यही उसकी निष्ठा थी। इसलिए वह संकट काल में कभी डगमगायी नहीं। वह हमे हमेशा धैर्य देती रही। बड़ी भोर में पिसाई पीसते समय -

''नहीं बच्चों डगमगाओ,
चंद्र सूर्य पर के जायेंगे मेघ...''

यह दिलासा देनेवाली ओवी उसके गोद पर सोकर यशवंतराव ने कितनी ही बार सुनी है।

यशवंतराव की माँ उनके घर के सब लोगों की शक्ति थी। हम क्या पढते हैं और क्या बोलते है, यह वह सुनती थी। परंतु उसे उस में भाग लेना संभव नहीं था। लेकिन उसे लगता था कि अपने बच्चे कुछ अच्छी बाते बोलते हैं, कुछ नयी बाते करते हैं। परंतु उसने हमारे कामों में या विचारों में कहीं भी रुकावट नहीं डाली। लेकिन एक बात सच है कि वह हमारे लिए बहुत मुसीबतें उठा रही थी। बड़े भाई की तनख्वाह कम। उस तनख्वाह से थोडा-बहुत हमारे लिए भेज देते थे। शेष बातों के लिए यशवंतराव की माँ ने अपने बच्चों के लिए बहुत कष्ट उठाये। गणपतराव ने जब माँ के कष्टों की याद दिलायी, तब यशवंतरावजी का मन भर आया।

माँ ने यशवंतराव से कहा - 'बाबा, तू पढता है, घूमता है, फिरता है - ये सब अच्छा है। लेकिन किसी बुरी बातों में न उलझना। हम गरीब हो तो अपने घर की श्रीमंती अपने बोलने-बर्ताव करने में है, प्रथाओं में है। यह बात हमेशा के लिए ध्यान में रख। तुम्हे किसी की नौकरी करना है तो मेरा कोई हर्ज नहीं। मैं कष्ट करके तुम्हारी शिक्षा पूरी करूँगी। लेकिन तू इस शिक्षा में लापरवाही होगी, ऐसा मत कर। तुम पढ़ गये, तो तुम्हारा दैव बडा होगा।'

माँ ने एक अर्थ से - हमे उसके विचार से एक तत्त्वज्ञान दिया था। वह गृहस्थी चलाती थी। उस में क्या अडचने होती हैं यह उसे मालूम थी। पर वह धैर्य देती थी हमे।

यशवंतराव ने कहा कि - 'मेरी माँ सुसंस्कृत थी। यह उसके बर्ताव और बोलने से दिखाई देता था। हमारे घर की गरीबी क्यों न हो, लेकिन हमारे घर कोई आये गये तो उनका यथाशक्ति उचित आदरातिथ्य करने में उसने कभी गलती नहीं की। कभी कभी रिश्तेदार और देवराष्ट्र के आठ-आठ, दस-दस लोग मेहमान होकर आये, तो भी उसने सब की व्यवस्था की। वह कहती थी कि, हमे फाका पडेगा तो चलेगा पर आने जानेवालों को पेटभर भोजन दिलाना चाहिए।'

देव धर्म पर उसकी श्रद्धा थी। रामायण के कथा के बारे में उसे बहुत आदर था। कराड के एक मंदिर में रामायण की कथा पढी जाती थी। वहाँ जाकर वह अनेक महिनों तक वह कथा सुनती थी। बीच बीच में वह मुझे भी ले जाती थी। उसके साथ जाकर मैंने भी राम कथा सुनी और मेरे मन में भी रामकथा के बारे में रस निर्माण हुआ। माँ को रामायण की कथा प्रसंगोसहित मालूम थी। फिर मैं उसे उलटे-सुलटे प्रश्न पूछता था।

तब माँ कहती है - 'तू पढ़ा लिखा है, वह पढ़कर देख ले। मैंने जो सुना है वह भक्तिभावना से सच मानती हूँ। (राम कथा तब से मेरी प्रिय कथा बन गयी है।)'

माँ बीच बीच में साखरेबुवा की 'सार्थ ज्ञानेश्वरी' पढ़कर लेती थी। ज्ञानेश्वरी समझने के लिए थोडी कठिन। पुरानी भाषा होने के कारण वह यशवंतरावजी को जैसा समझना चाहिए था वैसे समझ में नहीं आता था। लेकिन मैं पढता और वह उसे भक्तिपूर्वक सुनती थी। एक सप्ताह में यशवंतरावजी ने उसे दो अध्याय पढ़ाकर दिखाए, तब उसे पूछा - 'तुमने यह सब सुन लिया, उसका सारांश तुम्हारे मन में क्या आया ?'

उसने यशवंतरावजी से एक वाक्य में कहा - 'कृष्णदेव अर्जुन से कहते हैं कि, तू अपना 'अहं' छोड़ और तुम्हें जो काम करना चाहिए, वह काम तू करते रहना। सब ऐसा कहते हैं और वह उचित है।'

गीता का इतना सरल, सीधा और आसान आशय मैं दूसरे पंडित से सुना नहीं है। उसकी समझ अच्छी थी। मन धैर्यशील था और उदार था। यशवंतराव के अनुसार -

''हमारी सच्ची शाला हमारी माँ थी।''

बचपन में एक बार यशवंतराव नानी और माँ के साथ पंढरपूर जाकर विठ्ठल के दर्शन करके आये थे। उसके बाद यशवंतराव अनेक बार पंढरपूर गये हैं। लेकिन वे पहले या पूर्व दर्शन की याद भूलते नहीं है। प्रसिद्धि प्राप्त होने पर, सत्ताधारी होने पर यशवंतराव ने विठ्ठल का आराम से दर्शन किया है। लेकिन बिगडनेवाले बडवे की ओर ध्यान न देकर माँ ने छोटे यशवंतराव को उठाकर विठ्ठल के पैरोंपर उन्हें रखकर विठ्ठल का दर्शन करवाया। उसकी अपूर्वाई यशवंतराव को हमेशा याद रहती है। भीड़ में से वे चार-दो दिन, चंद्रभागा की रेती में होनेवाले भजनों के समूह (फड) और वहाँ चले हुए अच्छे भजन, उनकी वह मीठी आवाज आदि सब घटनाएँ और चित्र आज भी यशवंतरावजी की आँखों के सामने आते हैं। जब यशवंतराव पंढरपूर जाकर विठ्ठल के दर्शन लेते हैं, इसमें श्रद्धा का भाग कितना?

लोग मुझसे पूछते हैं। फिर यशवंतराव उत्तर देते है - 'पत्थर की मूर्ति में ईश्वर है, ऐसा कभी भी नहीं मानता। परमेश्वर रूप में कोई व्यक्ति कहीं बैठी है और वह सब दुनिया चलाती है, ऐसा मेरा मत नहीं है। परंतु हमारी समझ में न आनेवाली एक शक्ति है। इसलिए उसका अस्तित्व मानना आवश्यक है। उसके बिना अनेक बातें सुलझायी नहीं जा सकती।'

ईश्वर है यह बुद्धिवाद से सिद्ध नहीं किया जा सकता, वैसे वह नहीं है, यह भी सिद्ध नहीं किया जा सकता। इसलिए जिस स्थानपर सैकडो वर्षो समाज पुरुष नतमस्तक होता आया है, वहाँ नतमस्तक होना मैं श्रेयस्कर मानता हूँ। मंदिर में जाने के पीछे मेरी यही भावना है। इसी भावना से मैं तुलजापूर जाता हूँ, प्रतापगड जाता हूँ। इस में कोई अंधश्रद्धा नहीं है। परंतु यह करने से मेरे मन को एक प्रकार का समाधान मिलता है। यह बात मुझे स्वीकार करनी चाहिए।

जिन्दगी में बहुत वर्षो दुःख की साथ करने पर दिलासा और दिलदार रहना यह ईश्वर की देन है। मेरी माँ का जीवन दीप ज्योति के समान मुझे हमेशा लगता है। दीया जलता है उसके प्रकाश में मनुष्य घूमते-फिरते हैं। लेकिन अपना उपयोग लोगों को होता है। यह उस ज्योति को, उस प्रकाश को मालूम नहीं होता। वह दीप ज्योति का जलना माँ का था।

गणपतराव को यह आंदोलन महत्त्वपूर्ण लगता है, यह बात उन्हें पसंद आती थी। परंतु उन्होंने उससे परावृत्त करने का प्रयत्न नहीं किया। मुझ से कहा कि - 'तुम यह जो करते हो, क्या यह माँ को पसंद है? इस विषय में तुम उससे बात कर लो।'

यशवंतराव तो इस आंदोलन के संबंध में माँ से हर बात बोलते थे।

'तुम्हारी शिक्षा में बाधा आयेगी, यह तो मुझे चिंता है।' यह माँ ने यशवंतराव से जरूर कहा था। परंतु यशवंतराव जो करते हैं, उससे पीछे मोड लेने का प्रयत्न नहीं किया।

उसने कहा - 'तुम गांधीजी का काम करते हो, तुम्हे 'ना' कैसे कहूँ। लेकिन तुम्हारा बडा भाई सरकारी नौकरी में है, वह नाराज नहीं होगा, इसका विचार कर।'

उसका कहना सच था। यशवंतराव के बडे भाई जो सरकारी नौकरी में थे, उन्हें यशवंतराव का यह राजनैतिक काम बिलकुल पसंद नहीं था। उन्होंने यशवंतरावजी से स्पष्ट कहा था कि - 'तुम्हारे इस उद्योग से कभी भी मेरी नौकरी छूट सकती हैं। और हम सब अनाथ बन जायेंगे।'

लेकिन यशवंतरावने उनके बोलने की चिंता नहीं की और उन्होंने उनका काम जारी रखा।

इससे स्पष्ट है कि यशवंतराव देशप्रेमी थे और उनका अंतिम ध्येय था देश को स्वतंत्र करना।

(७) यशवंतराव की शिक्षा दीक्षा

यशवंतराव की पहली पाठशाला देवराष्ट्र की। गाँव की पश्चिम की तरफ ऊँची पहाडी पर एक तालाब के किनारे पर होनेवाले दो-तीन कमरों में शाला भरती थी। यशवंतराव की शिक्षा का श्रीगणेशा यहाँ ही हुआ था। वे केवल शाला में जाते-आते थे। उनका नाम शाला में दाखिल नहीं किया था। श्री. रामभाऊ जोशी ने 'यशवंतराव : इतिहासाचे एक पान' पृ. ११ पर लिखा है - 'यशवंतराव देवराष्ट्रा पहुँच गये। फिर दाजिबाने वहाँ की शाला में यशवंतराव को दाखिल किया। यशवंतराव की चौथी तक की शिक्षा ननिहाल में देवराष्ट्रा में हुई। कराड में यशवंतराव को तिलक हाईस्कूल में दाखिल किया गया।'

सच बात यह है कि, यशवंतराव की मैट्रीक तक की सारी शिक्षा कराड में हुई। स्वातंत्र्य पूर्व काल में पहली इयत्ता को इन्फन्ट्री कहते थे। उस समय नगर परिषद की शाला को स्कूल बोर्ड की शाला कहते थे। घरवालों ने स्कूल बोर्ड की शाला क्र. १; ४ में यशवंतराव का नाम दाखिल किया। उनकी १२-३-१९१३ जन्म तारीख लिखी है। १५-५-१९१८ उनका नाम इन्फन्ट्री में दाखिल हुआ है। उनका नाम यशवंत बाला चव्हाण लिखा गया है। उनकी जात मराठा लिखी गई है। यशवंतराव नये रूप में स्कूल में दाखिल हुए थे। वे उस स्कूल में छठवी कक्षा तक पढे और उन्होंने ३१-५-२४ को वह स्कूल छोड़ दिया और स्कूल नं. २ में सातवी कक्षा में पढने के लिए गए और वे इसी

स्कूल में से सातवी कक्षा उत्तीर्ण हुए और इस कक्षा को पहले व्ह.फा. भी कहा जाता था। स्कूल नं. २ में उनका रजि. नं. १८७ था। इस स्कूल के रजिस्टर में यशवंत बलवंत चव्हाण नाम लिखा है। वे ई.स. १९२७ में सातवी परीक्षा उत्तीर्ण हुए।

इसके बाद वे ई.स. १९२७ में टिलक हाइस्कूल में दाखिल हुए। कराड के तिलक हाइस्कूल में एक वर्ष में तीन इयत्ता का कोर्स पास करने के बाद वे तिलक हाइस्कूल के विद्यार्थी बन गये। उस समय शाला की फीस मामूली थी। उस समय लाल पैसे को बड़ी कीमत थी। धनिक लोगोंके लडकों के लिए फीस का प्रश्न उपस्थित नहीं होता। क्योंकि उनके पास पैसे थे। पर इन दो बंधुओं को शाला की एक महिने की फीस देने के लिए घर में पैसा शेष नहीं रहता था। गरीबोंके लडके ढोरडंगर की रखवाली कर, गोबर एकत्र करे, गौशाला साफ करे, खेती की रखवाली करे, ऐसी ही सुखवस्तु समझे जानेवाले लोगों की भावना थी। इन लडकों के कष्ट के मुआवजे के रूप में शेष रहा हुआ बासी अन्न उन्हें देने का बडप्पन वे दिखाते थे। तिरस्कार तो उन लडकों को सुनना ही पडता था। गरीब का कोई लडका पढता है तो उसे फीस की मामूली मदद करने की बात तो दूर, फीस माफी के लिए कोई गरीब समाज में किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से गरीबी का सिफारिश पत्र माँगा तो उसकी बिदाई तिरस्कार से होती थी।

तिलक हाइस्कूल में पढ़नेवाला यशवंत भी इस प्रकार के तिरस्कार में से छूटा नहीं। उस समय शाला में फीस माफी मिलाने के लिए किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से 'विद्यार्थी गरीब है' का शिफारिस पत्र लेना पडता था। ऐसे ही एक दिन यशवंत गाँव में एक खानदानी श्रीमंत के पास शिफारिस पत्र माँगने गया। चव्हाण परिवार गरीबी में दिन बिता रहा है यह बात उस प्रतिष्ठित व्यक्ति को मालूम थी। परंतु उसने गरीबीका शिफारिस पत्र देना इन्कार कर दिया और तिरस्कार के शब्द भी सुनाए। यह एक छोटीसी घटना, परंतु इस छोटी-सी घटना से यशवंता के मन को ठेंस पहुँची। गरीबों को स्वाभिमान नहीं होता, ऐसी ही उस प्रतिष्ठित व्यक्ति की भावना होगी। उन्हें शिफारिस पत्र नहीं मिला इसका उन्हें दुःख नहीं था, पर उन्हें दुःख था उस तुच्छ शब्द का। यशवंतराव के मन में इस घटना से टीस पैदा हुई। परंतु यह शल्य यशवंतराव ने अपने मन के एक कोने में रख दिया और वहाँ से निकल पडा। लेकिन उसने अपने मन में प्रतिज्ञा की शिक्षा की मदद के किसी बडे आदमी के पास जाना नहीं चाहिए। जैसी भी परिस्थिति होगी वैसी परिस्थिति में शिक्षा लेनी चाहिए। उनके भाईबंद थे। लेकिन वे दूर खडे रहकर देख रहे थे। महाविद्यालयीन शिक्षा के समय भी उसने किसी के पास याचना नहीं की। लेकिन मित्र उनकी मदद के लिए तैयार थे। यशवंत पढ़े ऐसे कुछ मित्रों की इच्छा थी। उन में से सुखी-संपन्न एक मित्र ने यशवंत के उच्च शिक्षा की जिम्मेदारी स्वयं स्वीकार ली।

प्रारंभिक काल में शिक्षा में अडचने आयी गरीबी की। इसके सिवाय उस समय हिंदुस्थान में जो राजनैतिक परिस्थिति थी और आंदोलन थे उस में भाग लेने की इच्छा होने पर भी उनके मार्ग में अनेक अडचने थी।

वे अप्रैल १९३४ में मॅट्रीक की परीक्षा पास हुए। अगली शिक्षा के लिए उन्होंने कोल्हापूर के राजाराम कॉलेज में प्रवेश लिया। वहाँ से वे बी.ए. हुए। वे कोल्हापूर आकर स्थिर हुए थे। बीच बीच में अडचने आती रही। उनके बंधु गणपतराव और मित्रों ने सारी अडचने दूर की। सातारा जिले में उनके जो कार्यकर्ता और मित्र थे, उनके काम से वे अलग रहना नहीं चाहते थे। वे तो सातारा जिले में काँग्रेस आंदोलन का एक अटूट भाग बन गये थे। उनसे मिलने के लिए वे कभी सातारा जाते और उनके मित्र उनसे मिलने के लिए कोल्हापूर आते। आंदोलन के काम की अपेक्षा वे पढने के लिए अधिक समय देते थे। पढाई के साधन बहुत होने के कारण बौद्धिक और वैचारिक शक्ति प्राप्त करने के काम में यशवंतराव मग्न हो गये थे।

बी.ए. की परीक्षा के लिए यशवंतरावने राजनीति, इतिहास और अर्थशास्त्र ये विषय लिये थे। ई. स. १९३८ में उन्होंने बी.ए. परीक्षा दी। उनके सामने प्रश्न उपस्थित हुआ कि कानून का अध्ययन कहाँ करना चाहिए। वे उपाधि धारक तो हुए थे और आगे क्या करना चाहिए। अभी आगे क्या करना है। इस संबंध में एल.एल.बी. करूँगा ऐसा उन्होंने विचार किया। एल.एल.बी. करने के पूर्व आर्थिक तैयारी करनी आवश्यक होगी। विटा में उनकी तीन चार एकड़ खेती थी। वह भी वडिलोपार्जित। उन्हें उसका अच्छा उत्पादन नहीं आता था। उनके दो भाईयोंने सुझाया। उस खेती को बेच डालने से यशवंतराव उन पैसों में एल.एल.बी. हो सकते हैं।

सबने मिलकर विटा में जाकर जमीन का बिक्रीखत कर दिया। यशवंतराव के लॉ कॉलेज के दो वर्षो के खर्च की सुविधा हो गयी।

एल.एल.बी. के लिए उन्होंने पूना चुन लिया। अभ्यास के लिए उत्तम वातावरण था। पहले पहले उन्हौंने लॉ कॉलेज देखा। उसकी इमारत हाल ही में बांधी गयी थी। इमारत को देखते ही उनका मन प्रसन्न हुआ। जब उन्होंने कॉलेज की लायब्ररी देखी तब वे बहुत आश्चर्यचकित हो गये। इतना उत्तम वातावरण उसने अन्यत्र क्वचित देखा होगा। वाचन के लिए और ज्ञानार्जन के लिए वहाँ बड़ा विशाल क्षेत्र था।

१९३८ साल कैसे बीत गया वह समझ में नहीं आया। फिर कानून की अपेक्षा उन्होंने अन्य बातों का अधिक अभ्यास किया था। उसका परिणाम यह हुआ कि वे १९३९ की कानून की परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुए। बहुत अध्ययन करके अगले छः महिनों में वे यह परीक्षा उत्तीर्ण हुए।

१९४० का वर्ष समाप्त होते आ रहा था। उसने कमरा बदलकर कानून के दूसरे वर्ष की परीक्षा की तैयारी शुरू की। उनकी माँ का उनसे हमेशा संदेश आता था 'अब तुम्हारी परीक्षा होने तक कृपा करके कम से कम जेल में मत जाओ। परीक्षा होने के बाद तुम्हे जो कुछ करना है वह कर।' माँ की बात यशवंतरावने सुन ली और अध्ययन किया। अप्रैल में उनकी परीक्षा हुई। फिर पूना छोडकर कराड आये। उन पर जिला काँग्रेस के अध्यक्षपद की जिम्मेदारी थी। इसलिए वे हमेशा जिले में घूम रहे थे। परीक्षा का फल अब घोषित होनेवाला था।

एक-दो महिनों के बाद उनकी परीक्षा का रिझल्ट आया और यशवंतराव उत्तीर्ण हुए। उनकी माँ को बहुत आनंद हुआ। यशवंतरावने जो योजना बनायी थी, उसके अनुसार उसने अपनी शिक्षा पूरी की। उनके राजनैतिक कार्य के कारण उनके तीन-चार वर्षं व्यर्थ बीत गये। उसके कारण थोडीसी बढ़ती उम्र में उसने वकील का अभ्यास पूरा किया था। यह बात वे समझ गये थे।

अब वकिली करने का प्रश्न निर्माण हुआ। सातारा कि कराड। यशवंतराव ने निर्णय किया कि - 'वकिली करने के लिए मेरा जीवन है ऐसा मुझे नहीं लगता। हुआ है तो वकील, तो कराड में वकिली करने का प्रयत्न करेंगे। उसके साथ राष्ट्रीय आंदोलन कार्य भी किया जा सकता है।' उसने कराड में गुरुवार पेठ में देशपांडे का घर किराये पर लिया और उसने वहाँ वकिली शुरू की। उसने वर्षभर वकिली की। उनका वकिलीका अनुभव बहुत कुछ अच्छा नहीं था। सातारा जिले में जो कार्यकर्ता लोग थे हमेशा उनकी भीड़ रहती थी। ऐसी हालत में वकिली संभव नहीं थी। आगे चलकर यशवंतरावने आंदोलन करना, काँग्रेस का प्रचार प्रसार करना इस कार्य को प्रधानता दी।

यशवंतराव की शिक्षा-दीक्षा इन्फन्ट्री से लेकर मॅट्रीक तक कराड में हुई थी, न कि देवराष्ट्र में। ये सारे प्रमाण मेरे पास है। मेरे पास कराड में शाला नं. १, ४ और शाला नं. २ का दाखिला लिव्हिंग सर्टिफिकेट है। यशवंतराव तिलक हाइस्कूल में से मॅट्रीक पास हुए अप्रैल १९३४। उनका लिव्हिंग सर्टिफिकेट मेरे पास है।

(८) यशवंतरावजीके आदरणीय अध्यापक

यशवंतरावजी कि शिक्षा का श्री गणेशा देवराष्ट्र में हुआ था। बंडू गोवंडे यशवंतराव को पढानेवाले पहले शिक्षक थे। मन लगाकर पढानेवाले प्रेमी शिक्षक थे।

उस समय यशवंतराव की शाला में शेणीलीकर नाम के अध्यापक थे। उन्हें शौक था पढ़ाने का और क्रिकेट का। उन्होंने यशवंतराव को क्रिकेट सिखाने का प्रयत्न किया, पर उन्होंने उस में रुचि नहीं दिखलायी।

यशवंतराव जेल की बराकी में थे। वहाँ 'शाकुंतल' के वर्ग शुरु हुए थे। कुछ दिनों के बाद आचार्य भागवतने यशवंतराव और उनके मित्रों को शेक्सपियर का नाटक सिखाने की बात कबूल की थी। फिर उन्होंने यशवंता को 'ज्यूलिअर सीझर' नाटक पढाया।

यशवंतराव ने राजाराम कॉलेज में विद्यार्थी की हैसियत से प्रवेश किया था। उस समय डॉक्टर बालकृष्ण कॉलेज के प्राचार्य थे। वृत्ति से राष्ट्रीय, इतिहास के विद्वान प्राध्यापक, वक्तृत्व संपन्न आदि कारणों से उन्हें राजाराम कॉलेज में और कोल्हापूर में बहुत मान-सम्मान था। उन्होंने यशवंतराव को उपदेश किया कि - 'तुम कृपा करके संस्थान की राजनीति में भाग न लो और अभ्यास करके सीखते रहो।' यशवंतरावने उसकी आज्ञा का पालन किया।

यशवंतराव को संस्कृत पढना था। परंतु शास्त्री बुआने कहा - 'मैं अब्राह्मणों को देववाणी संस्कृत नहीं पढाऊँगा।' उसके बाद यशवंतराव ने अर्धमागधी विषय लिया। डॉक्टर उपाध्ये नाम के प्राध्यापक उन्हें अर्धमागधी पढ़ाते थे। वे बहुत उत्तम शिक्षक थे। थोडे श्रम करने के बाद अर्धमागधी विषय में अच्छे गुण मिलते हैं। इसका यशवंतराव को अनुभव आया।

उस समय लोकप्रिय उपन्यासकार श्री. ना. सी. फडके राजाराम कॉलेज में प्राध्यापक थे। जब यशवंतराव इंटरमीजिएट में थे तब वे उन्हें तर्कशास्त्र पढाते थे। ना. सी. फडके बाहर जैसे लोकप्रिय थे वैसे वे विद्यार्थियों में बहुत प्रिय थे। विषय आसान और मनोरंजक करने में फडके उत्तम थे। यह तो उनके अध्यापक होने का उत्तम सबूत था। इसलिए मराठी, इतिहास के साथ ही तर्कशास्त्र भी उनके पसंद के विषय थे।

उसी राजाराम कॉलेज में 'माधव ज्युलियन' पटवर्धन नाम के प्राध्यापक थे। वे उत्तम कवि के रूप में महाराष्ट्र में प्रसिद्ध थे। इंटरमीजिएट वर्ग में वे यशवंतरावजी को अंग्रेजी पढ़ाते थे। वे विद्वान और प्रकृति से गंभीर थे। शिक्षक और विद्यार्थी इन दोनों के बीच में जो आत्मीयता स्थापित करने की आवश्यकता होती है वह कभी उन में दिखाई नहीं दी। ये दोनों भी अपनी अपनी दृष्टि से बडे आदमी थे। इन दोनों के प्रति यशवंतरावजी के मन में बड़ा आदर था। पर उसका कारण क्या था उनकी समझ में यह बात नहीं आती।

उसी राजाराम कॉलेज में डॉ. बोस नाम के इंग्रजी के प्रोफेसर थे। यशवंतरावजी जब बी.ए. के वर्ग में थे वे उन्हें अंग्रेजी पढ़ाते थे। यशवंतरावजी हाइस्कूल से लेकर कॉलेज तक की अवस्था में यशवंतरावजी अनेक शिक्षकों से कविता सीखे हैं। परंतु प्रोफेसर बोस की शैली किसी को साध्य नहीं हुई जब वे हाइस्कूल में पढ़ते थे तब उनके शिक्षक श्री. दंतोपंत पाठक में उन्हें बोस की शैली दिखायी दी।

यशवंतराव जब कोल्हापूर में चार वर्षों तक सीखने के लिए थे तब उन्हें उन सबकी याद आती है।

शिक्षा विषयक जीवन में ऐसे महान व्यक्तियों का प्रभाव बहुत दिन टिका रहता है और एक दृष्टि से वह अविस्मरणीय भी है। क्योंकि उनकी ओर से मिले हुए संस्कार ये हमेशा के लिए टिकनेवाले संस्कार होते हैं।

यशवंतरावजी के जीवन में कोल्हापूर में शिक्षा के चार वर्षं नीव स्थापित करनेवाले और गतिमान बनानेवाले चार वर्षं थे। इन वर्षों में यशवंतराव के जीवन में बहुत कुछ परिवर्तन हुए।

यशवंतरावजी १९३८ में बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण हुए

मित्रों ने उनसे कहा – 'तुम्हे अध्यापक या संपादक होना है तो कानून का ज्ञान तुम्हारे काम में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होगा। कानून की परीक्षा देकर भी तुम आगे जा सकते हो। सिर्फ उपाधिधारी तो बीच में ही लटकते रहोगे।'

यशवंतरावने विचार किया कि उन्हें अन्त में स्वातंत्र्य आंदोलन की राजनीति करनी है। राजनीति और वकिली दोनों हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं यह भी वे देख रहे थे।

और बहुत विचार के बाद कानून का अध्ययन करना चाहिए ऐसा निर्णय उन्होंने लिया।

१९४० वर्ष समाप्त हो रहा था। यशवंतराव की माँ हमेशा उन्हें संदेश भेजती रही कि – 'अब तुम्हारी परीक्षा होने तक कृपा करके कम से कम जेल में मत जाओ। परीक्षा होने के बाद तुम्हे जो कुछ करना है वह जरूर कर।' उसके बाद यशवंतरावने तीन महिने अभ्यास किया। अप्रैल में परीक्षा हुई और पूना छोडकर वे वापस आये। उन पर जिला काँग्रेस के अध्यक्ष पद की जिम्मेदारी थी। काँग्रेस कार्य करने के लिए वे हमेशा जिले में घूमते फिरते थे। परीक्षा फल जाहिर होनेवाला था। इसलिए घर में कोई जरूरी काम नहीं था।

एक दो महिनों के बाद यशवंतराव के एल.एल.बी. का परीक्षा फल जाहिर हुआ और वे पूना लॉ कॉलेज से एल.एल.बी. उत्तीर्ण हुए। उनकी माँ को बहुत आनंद हुआ। उन्होंने जो योजना बनायी थी, उसके अनुसार उनकी शिक्षा उन्होंने पूरी की। उनकी राजनीति के कारण उनके तीन-चार वर्ष व्यर्थ बीत गये। थोडीसी बढ़ती उम्र में उन्होंने वकिली का अभ्यास किया था। यह बात भी उन्हें महसूस हुई थी।

राष्ट्रीय आंदोलन करने के लिए कराड सुविधाजनक है। इसलिए उन्होंने कराड में वकिली शुरू की। लगभग एक वर्ष उन्होंने वकिली की। हर महिने मे चार-पाँच सौ रुपये

मिलते थे। घर के लोगों को भी मदद होने लगी। वे स्वयं पैसे कमाने लगे, इसका भी उन्हें समाधान था। उनका एक वर्ष की वकिली करने का जो अनुभव आया था, वह अच्छा नहीं था। उनके घर में भीड़ रहती थी। परंतु यह भीड़ तहसील में और जिले में कार्यकर्ताओं की थी। अन्य कार्यकर्ताओं को अभिमान था कि – 'हम में से हमारे एक मित्र यशवंतराव ने वकिली के पेशे में प्रवेश किया है।' इसी एक बात का उन्हें आनंद था। इसलिए यशवंतराव कोर्ट जाने तक ये लोग उनके पास भीड़ करके बैठे रहते थे।

(९) यशवंतरावजी का विवाह और दाम्पत्य जीवन

एलएल.बी. होने के बाद विठाईने कहा कि – 'बाबा, विवाह कर ले।'

यशवंतरावने कहा – 'हाँ, ठीक है। अच्छी लड़की देखने मैं आयी तो मै जरूर विवाह करूँगा।'

फिर वह लड़की देखने के उद्योग में लग गयी। उसने वह काम गणपतराव पर सौंप दिया और कह दिया – 'और अब छोटे भाई की ओर ध्यान दे।'

यशवंतरावने कुछ लडकियाँ देखी, पर उन्हें उन में बहुतसा आकर्षण दिख नहीं पडा। इसलिए उन्होंने उसे नजरअंदाज कर दिया।

१ मार्च १९८५ को महाराष्ट्र शासन की जो 'लोकराज्य' की पुस्तिका प्रकाशित हुई थी, उस पुस्तिका के पेज क्र. २२ पर लिखा है कि यशवंतराव का विवाह १९४२ के मई महिने में फलटण में हुआ था। यह बात गलत है।

मेरे पास यशवंतराव के विवाह की जो निमंत्रण पत्रिका है। उसके अनुसार यशवंतराव का विवाह वेणू के साथ २ जून १९४२ में कराड में हुआ है।

उनके विवाह की निमंत्रण पत्रिका राष्ट्रीय भावों से परिपूर्ण है। इसलिए उस पत्रिका का अपना स्वतंत्र अस्तित्व है। विवाह पत्रिका इस प्रकार है –

प्रिय महाशय,
हमारे कनिष्ठ बंधु
रा. यशवंतराव
बी.ए., एलएल.बी.
उनका विवाह स्व. रा. रघुनाथराव मोरे मु. फलटण की कन्या
सौ. कां. वेणू

इसके साथ ज्येष्ठ कृ ४ ता. २ जून १९४२ के मंगलवार शाम के गोरज महूरत पर (स्टँ.टा. ७।१०) वैदिक पद्धति से संपन्न होगा। इस सुमंगल अवसर पर आप उपस्थित रहकर वधुवरों को आशीर्वाद दे ऐसी प्रार्थना है।

विवाह स्थल	आपके नम्र
मराठा बोर्डिंग	ज्ञानोबा बलवंत चव्हाण
कराड	गणपत बलवंत चव्हाण

पत्रिका पर तिरंगा झण्डा छपा है। यह भारत का मान चिह्न है। इससे यशवंतराव का राष्ट्र प्रेम प्रकट होता है। उनकी अपने देश भारत पर अटूट निष्ठा दिखाई देती है। उसके बाद लिखा है - 'कुर्यात सदा मंगलम्' इसका अर्थ है -'हमेशा के लिए मंगल हो।'

यह निमंत्रण पत्रिका व्यापारी प्रेस कराड में छपी गयी थी।

माँ की इच्छानुसार १९४२ में यशवंतराव विवाहबद्ध हो गए। फलटण के मोरे की कन्या वेणू यशवंतराव की सहचारिणी (पत्नी) बनकर उनके घर में आयी। देश के स्वातंत्र्य के लिए सतत काम करनेवाले यशवंतराव को घर-गृहस्थी की अपेक्षा देश के गृहस्थी की अधिक चिंता लगी थी। विवाह होनेपर भी यशवंतराव गृहस्थी बनने का प्रश्न निर्माण नहीं हुआ था। विठाई घर गृहस्थी देखती थी। विवाह के बाद पहली संक्रांत थी सौ. वेणूताई की। इसी दिन पुलिसोंने सौ. वेणूताई को गिरफ्तार किया और भूमिगत यशवंतराव की खोज लगाने का प्रयत्न किया। इधर गणपतराव को भी विसापूर जेल में रख दिया। उसके बाद कुछ दिनों में चव्हाण परिवार पर आपत्ति ढह गयी। उनके बड़े भाई ज्ञानदेव की बीमारी में मृत्यु हुई। भूमिगत हुए यशवंतराव को पंद्रह दिनोंके बाद यह वार्ता समझ गयी। यशवंतराव को बहुत बडा दुःख हुआ। उन्हें माँ से मिलने की तीव्र इच्छा हुई। पर कोई इलाज नहीं था। ''भावना की अपेक्षा कर्तव्य श्रेष्ठ होता है'' यही विचार कार्यकर्ताओं ने यशवंतराव को समझाया। यशवंतराव अपने विचार के अनुसार माँ से मिलने के लिए चले जाते तो सरकार उन्हें पकडने में सफल हो जाती। आखिर यशवंतराव माँ से बिना मिले पूना में ही रह गये।

इसी समय सातारा जिले में भूमिगत आंदोलन गनिमी साज़िस की तरह सशस्र होने की तैयारी कर रहा था। इस आंदोलन को आगे पत्री सरकार ऐसा नाम मिला। इसी संक्रमण अवस्था में वे परिवार की समस्याओं से घिर गये थे। बड़े भाई की मृत्यु के पूर्व सौ. वेणूताई की रिहाई हुई थी। उनकी बीमारी में वेणूताई उनके पास बैठी रही थी। वेणूताईने उनकी मृत्यु को नजदीक से देखा था। इसलिए वे मानसिक दृष्टि से त्रस्त हुई थी। यशवंतराव को यह समझने पर उनकी मानसिक अस्वस्थता बढ़ गयी। उस समय वे बम्बई में भूमिगत थे। वे बम्बई से पूना आये। उन्होंने वेणूताई को पूना बुलाकर डॉक्टर को दिखाया। वेणूताई की निश्चित बीमारी क्या है यह समझ में नहीं आया। उनकी तबीयत तो खराब हुई थी। वे चार छः घंटोंमे बेहोश हो जाती थी। उनकी तबीयत की

व्यवस्था हो इसलिए यशवंतरावने वेणूताई को पीहर फलटण को भेज दिया। और इधर यशवंतराव की तबीयत खराब हो गयी। हवामान बदलने के लिए वे पूना के पास घोडनदी के स्थान पर रह गये। उसके बाद वे पूना आये। पूना आने पर उन्हें सातारा की परिस्थिति की जानकारी मिल गयी। शिरवडे स्टेशन जलानेवाले उनके सभी साथीदार पकडे गये। उसी मुकदमें सभी मुलजिमों को अभियुक्तों को सज़ा हुई। यशवंतराव ने पुणे शहर और जिले के ग्रामीण भाग में रहकर काम करना तय किया।

और एकाएक सौ. वेणूताई की तबीयत बिगड़ गयी है ऐसा संदेश फलटण से आया। यशवंतराव को परिवारिक जिम्मेदारी महसूस हुई। इसलिए उनकी अस्वस्थता बढ़ गयी। वे टॅक्सी से फलटण आये। मन की द्विधा अवस्था में बीमार वेणूताई को धैर्य देते समय वैद्यकीय उपचारों का विचार विनिमय हो रहा था। परंतु तब तक यशवंतराव फलटण में आये हैं यह खबर पुलिस को मिल जाती है और फिर पुलिस आकर यशवंतराव को गिरफ्तार करती हैं।

फलटण के कारागृह में जाने पर दस महिनों का उनका भूमिगत आंदोलन समाप्त हो जाता है। सौभाग्य से कारागृह में भूमिगत आंदोलन आदि के बारे में विस्तृत जानकारी पूछी नहीं जाती, यह देखकर यशवंतराव को आनंद हुआ। वे आठ-दस दिन फलटण, उसके बाद उन्हें सातारा के जेल में भेज दिया।

सातारा से यशवंतराव को कराड ले गये। वहाँ उन पर मुकादमा दायर करने का निर्णय किया गया। यशवंतराव ने तांबवे गाँव में जो सभा की थी, उस में उन्होंने जो भाषण दिया था उसके लिए उनपर इलज़ाम लगाया और उन्हें छः महिनों की कड़ी कैद दी गयी। उसके बाद उन्हें येरवडा के जेल में भेज दिया। सजा पूरी होने पर उनकी रिहाई हुई। इ.स. १९४४ में जनवरी महिने में वे कराड वापस आये और उनके भाई गणपतराव भी रिहाई होने के बाद कराड वापस आये थे।

सलाह-मशविरा जारी था। दरमियान दो सप्ताह बीत गये। वेणूताई का संदेश आने पर वे दोनों भाई फलटण गए और प्रतिबंधक स्थानबद्धता के आदेश के अनुसार पुलिस ने उन दोनों को गिरफ्तार किया। उसके बाद उन्हें येरवडा जेल में भेज दिया। वे वहाँ तीन महिने थे। इन तीन महिनों में उनका विशेष पठन नहीं हुआ। कार्यकर्ताओं के सहवास में पठन की अपेक्षा अनुभवों की और विचारों की लेन-देन अच्छी हुई। उनकी तबीयत भी अच्छी नहीं रही। केवल पारिवारिक व्यथा से यशवंतराव बहुत व्यथित हुए लगते हैं। वे अपने निवेदन में कहते हैं - 'इन तीन महिनों में मेरी तबीयत अच्छी नहीं रही। मकान की ओर से गणपतराव की तबीयत का समाचार आता था। डॉक्टर से वे औषध पानी लेते थे और गृहस्थी चलाने का प्रयत्न कर रहे थे। मेरे मन में विचारों का

संघर्ष शुरू हुआ था कि मैं मेरे परिवार को कितनी यातना दे रहा हूँ। दादा गये। गणपतराव गंभीर बीमारी से त्रस्त है। सौ. वेणूताई की तबीयत ठीक नहीं है। माँ बिना बोले सब सह रही थी। पर वह दुःखी थी। उसने मुझसे बहुत अपेक्षाएँ की होगी। परंतु मैंने उसकी कोई भी अपेक्षाएँ पूर्ण नहीं की। मेरे मन में यह जो विचार था वह मेने मेरे मित्रों से जेल में कह दिया था।' यशवंतराव के विचार सुनकर उन्हें भी बुरा लगा था। वे भी क्या कर सकते थे। पारतंत्र्य था। सबकी अवस्था यशवंतराव जैसी थी। एक दूसरे के प्रति सहानुभूति दिखाना यही उनके हाथ में था।

(१०) पठन और वैचारिक विकास

यशवंतरावजी को पढन की बड़ी आदत थी। पहले पहली दिनकरराव जवलकर ने चलाया हुआ (कैवारी) वृत्तपत्र पढा था। उसके बाद भाऊसाहब कलंबेने यह वृत्तपत्र कराड में प्रकाशित करके चलाया। उस में वे अपना विचार प्रकट करते थे कि – 'बहुजन समाज में जो युवा पीढ़ी है, उन्हें सत्यशोधकीय विचार और संस्कार देने के उद्देश्य से उन्हें नयी पद्धति से शिक्षा देने की आवश्यकता है।' उसके लिए उन्होंने एक कोठी किराये पर ली और वहाँ उन्होंने 'विजयाश्रम' नाम की संस्था शुरू की थी। यशवंतराव के बंधु गणपतराव विद्यार्थी की हैसियत से उस आश्रम में रहने के लिए। उन पर उस आश्रम के संस्कार हुए थे। उनके भाई यशवंतरावजी से बातचीत करते थे। इसलिए उनके मन पर सत्यशोधकीय और ब्राह्मणेतर आंदोलन के संस्कार होते रहते थे।

दिनकरराव जवलकर ने एक सभा में भाषण किया था। उस भाषण में उन्होंने ब्राह्मण समाज पर आलोचना की थी। उसी सभा में 'देशाचे दुश्मन' (देश के दुश्मन) पुस्तक बाँटा जा रहा था। उसकी एक प्रत यशवंतरावने प्राप्त की और उसने वह पढ़ ली। इसलिए वे मन से और विचार से पूर्ण बदल गए।

यशवंतराव सातवी कक्षा में पढ़ रहे थे तब से उन्हें वृत्तपत्र पठने की आदत लगी थी। परंतु उस समय यशवंतरावजी को जो वृत्तपत्र पढ़ने के लिए मिलते थे वे थे – 'विजयी मराठा' और दूसरा 'राष्ट्रवीर'। विजयी मराठा बेलगाँव से प्रसिद्ध होता था। राष्ट्रवीर पूना से प्रसिद्ध होता था। ये दोनो वृत्तपत्र ब्राह्मणेतर आंदोलन का पुरस्कार करनेवाले थे। यशवंतराव पूना से प्रसिद्ध होनेवाला 'मजूर' और बम्बई से प्रसिद्ध होनेवाला 'श्रद्धानंद' वृत्तपत्र पढ़ते थे। इसलिए उनके मन पर व्यापक संस्कार होने लगे। वे उस समय पूना का 'स्वराज्य' वृत्तपत्र पढ़ते थे। वे 'हरिजन' भी पढ़ते थे।

जब उन्होंने तिलक हाइस्कूल में प्रवेश किया तब उनकी पठन की आदत पक्की हुई। वहाँ उन्होंने हरिभाऊ आपटे के उपन्यास पढने की शुरूवात की। जहाँ से पुस्तक

मिलती, वहाँ से वे लेते और पढते। उन्हें जो अच्छा लगता था वे उसे पढते थे। श्री केलुसकर द्वारा लिखा गया 'छत्रपती शिवाजी महाराज का चरित्र' यशवंतराव ने मन लगाकर पढ़ा। वैसे उन्होंने शिवराम परांजपे कृत 'काल' में प्रसिद्ध होनेवाले 'निबंध' पढ़ने का प्रयत्न किया। केलुसकर की मराठी भाषा सरल और साधी थी। उनकी भाषा यशवंतराव की समझ में आती थी। लेकिन शिवराम पंत की मराठी भाषा कठिन थी। उनकी मराठी संस्कृतमय थी। उन्हें संस्कृत नहीं आती थी। उस में जो सौंदर्य स्थल थे वे उनकी समझ में नहीं आते थे लेकिन विचारों का सूत्र ध्यान में लेकर उन्होंने अपना पठन शुरू रखा।

इस पठन के बाद यशवंतराव के मन पर और विचारों पर अलग संस्कार हुए थे। यशवंतराव ने अपने भाई गणपतराव से पूछा कि – 'बहुजन समाज को पढना चाहिए, यह तो सच है। लेकिन वह किसलिए? केवल नौकरी के लिए कि देश के लिए विशेष कुछ करने के लिए?' यशवंतराव के ये सरल, सीधे प्रश्न थे। इस पर गणपतरावने कहा कि – 'केवल ब्राह्मणों का द्वेष किया जाना चाहिए ऐसा आग्रह नहीं है। लेकिन सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक क्षेत्र में इन लोगों ने अन्य समाज के लोगों को बहुत बड़ी यंत्रणाएँ दी है। इससे मुक्ति चाहिए कि नहीं?'एक दिन गणपतराव ने यशवंतराव को महात्मा फुले का चरित्र पढने के लिए दिया। शायद यह मराठीमें पहला चरित्र होगा।

महात्मा फुले का चरित्र पढ़नेपर उन्हें महसूस हुआ कि महात्मा फुले के विचार मूलगामी है और वे कुछ नयी दिशा दिखाते है ऐसा उन्हें लगा। किसान समाज का होनेवाला शोषण, दलित समाजपर होनेवाला अन्याय और शिक्षा से वंचित रखा हुआ समाज और स्त्रियों के प्रश्न सुलझाये बिना देश का कार्य नहीं होगा, यही फुले के विचारों का सारांश यशवंतराव के मन में अंकित हो गया। लेकिन उसके लिए किसी एक जाति का द्वेष किया जाना चाहिए, यह बात यशवंतरावजी को बिलकुल पसंद नहीं थी। जो समाज पीछे पड़े है उन्हें जागृत करना, उन में एक नवीन विचार निर्माण करना यही एक उत्तम मार्ग है यही उनका विचार था।

तिलक के संबंध में जो साहित्य था वह साहित्य यशवंतरावने पढ़ लिया। उनके मन पर तिलक के व्यक्तिमत्त्व का बडा परिणाम हुआ। जाति–जमाती के जो प्रश्न है, उनके बाहर रहकर कुछ राष्ट्रीय स्वरूप के जो प्रश्न हैं, उनके लिए तो कुछ करना चाहिए यही विचार उनके मन में आया। उनके मन में तिलक और जोतिराव फुले की तुलना हो गयी। उन दोनों के विचारों में यशवंतरावको कोई साम्य दिखाई नहीं दिया। इसलिए उनके मन में थोडासा खेद था। फिर भी ये दोनों बड़े व्यक्ति हैं। यशवंतराव ने दोनों की तुलना करने का विचार छोड़ दिया । लेकिन दोनों के द्वारा कहे गए विचार बड़े महत्त्वपूर्ण

हैं। तिलक ने 'स्वराज्य' का विचार कह दिया। शिक्षा से गरीबों की उन्नति होनी चाहिए और समाज में समानता निर्माण होनी चाहिए, यह विचार महात्मा जोतिबा फुले ने कहा। ये दोनों विचार भी महत्त्वपूर्ण है। इसलिए ये दोनों व्यक्ति भी अपनी-अपनी दृष्टि से बडे है। इस प्रकार यशवंतराव का निर्णय हुआ।

कराड में दिवाकर वैद्य का दवाखाना था। यह दवाखाना मानो एक वाचनालय था। वे बम्बई से आनेवाले श्रद्धानंद, नवाकाल, विविध वृत्तपत्र पढ़ते थे। यशवंतराव पूना के ज्ञानप्रकाश और केसरी नियतकालिक पढते थे। वाचनालय की बैठक में विविध विषयोंपर चर्चा होती थी। वहाँ होनेवाली चर्चाएँ बड़ी बोधप्रद थी। पर ये चर्चाएँ यशवंतराव के विचारों से मिलती जुलती नहीं थी।

आगे चलकर माँ ने साखरेबुवा की 'ज्ञानेश्वरी' पढने के लिए यशवंतराव से कहा, यशवंतराव ने 'ज्ञानेश्वरी' पढी, पर समझने के लिए कठिन। पुरानी भाषा होने के कारण माँ यशवंतराव से ज्ञानेश्वरी पढवा लेती थी। इस प्रकार इस पठन से यशवंतराव के विचारों का विकास हुआ। आगे चलकर ये विचार यशवंतराव के व्यक्तित्त्व को समृद्ध करते चले गए।

और एक बात - एक सभा में दिनकरराव जवलकर ने एक सभा में भाषण किया था। उसने उस भाषण में लोकमान्य तिलक की आलोचना की थी। लोकमान्य तिलक तो अंग्रेजों के विरुद्ध लड़नेवाले सेनापति थे। ऐसी यशवंतराव की भावना हुई थी। इसलिए बडे व्यक्ति पर आलोचना करनेवाले व्यक्ति अंग्रेजों के मित्र नहीं है क्या? इस प्रकार का शक और विचार यशवंतराव के मन में आया। इतनीसी छोटी उम्र में उनके मन में यह विचार आया इसका उन्हें आश्चर्य लगता है।

आगे वे काँग्रेस के कार्यकर्ता बने, वे काँग्रेस का प्रचार करने लगे। फिर स्वतंत्रता के नेता बने और अनेक शासकीय पदोंपर विराजमान बने। इन पदों पर रहकर उन्होंने अनेक सामाजिक कार्य किये। उसके बाद विदेशमंत्री, रक्षामंत्री और अर्थमंत्री की हैसियत से कार्य करके राष्ट्रीय उन्नति में योगदान दिया और भारत के आधुनिक इतिहास पर नाम अंकित किया।

(११) यशवंतराव के छंद

यशवंतराव अपने भाई के साथ व्यायाम शाला में जाते थे। बीच-बीच में उनके आग्रह से वे साफा भी बाँधते थे। उन्हें गीतों का और भजनों का बहुत शौक था। परंतु उन्होंने चलने का बहुत व्यायाम किया था। बीच बीच में वे व्यायाम शाला में जाने का भी प्रयत्न करते थे। पर उस में नित्यक्रम नहीं था। परंतु उन्होंने तैरने का खूब व्यायाम

किया।

यशवंतराव का मकान कोयना नदी के किनारेपर था। स्नान के लिए वे कृष्णा और कोयना नदी पर जाते थे। आगे उन्होंने तैरने में अच्छी प्रगति की। उनका उन्हें बड़ा फायदा भी हुआ।

यशवंतराव को नाटक देखने का छंद था। वे लगभग तीन चार वर्षं नाटक देखते रहे। नाटकों में जो कुछ भला बुरा होता है वह भी समझ में आने लगा। नाटकों में काम करनेवाले लोगों की जानपहचान हो गई। उनके साथ यशवंतरावजी के स्नेह संबंध बढ़ गये। इसलिए गाँव के सब लोग यशवंतराव को पहचानने लगे। श्री. औंधकर लिखित 'बेबंदशाही' नाटक उन्होंने दो-तीन बार देखा।

नाटक कंपनी के नाटक वे बडी उत्सुकता से देखते थे। 'आनंद-विलास मंडली' एक वर्ष या डेढ वर्ष के बाद कराड आती थी। मास्टर दीनानाथ मंगेशकर और रघुवीर सावरकर इन प्रसिद्ध नटों के नाटक भी कराड में होते थे। यशवंतरावने ये सभी नाटक उत्साह से देखे थे।

किर्लोसवाडी में 'माइसाहब' नाम का नाटक हुआ था। इसी नाटक में यशवंतराव ने काम किया था।

यशवंतराव ने बालगंधर्व और केशवराव दाते इन प्रसिद्ध नटों के नाम सुने थे। पर प्रयत्न करके भी उनका काम देखने को नहीं मिला था। केशवराव दाते की महाराष्ट्र कंपनी का नाटक कोल्हापूर आ रहा है। यशवंतरावने उनके 'प्रेमसंन्यास' का समाचार 'नवा काल' वृत्तपत्र में पढा था। इसलिए यशवंतरावने कोल्हापूर जाकर प्रेमसंन्यास नाटक देखा। जयंता की भूमिका में केशवराव दाते ने काम किया था। उनका अभिनय और शब्द उच्चारण की पद्धत यशवंतरावजी को आकर्षक लगी। जिसके लिए वे आये थे, उसका उपयोग हुआ और समाधान भी।

शाला में संमेलन था। इसलिए बर्नार्ड शॉ का 'डॉक्टर डायलेमा' नाटक किया गया। इस नाटक के एक प्रवेश में उन्होंने काम भी किया था। इससे उन्हें बर्नार्ड शॉ के नाम की पहचान हो गयी।

यशवंतरावजी को तमाशा देखने का भी शौक था। तमाशा का यश लावनी पर और लावनी के साथही नक्कल के हाजिरजबाब पर और चतुर संभाषण शक्ति पर निर्भर रहता है। नक्काल यह प्राणी मराठी लोकनाट्य में विनोदी पुरुष होता है और ये काम करनेवाले कलावंत लोग बहुत सहजस्फूर्त काम करते हैं। उन में उनका बुद्धिचापल्य और संभाषण चातुर्य दिख पडता है।

यशवंतराव ने अपने मित्रों की सहायता से 'शिव छत्रपती मंडल' शुरू किया। श्री.

भाऊसाहब बटाणे की मदद से उन्होंने यह काम शुरू किया। उनके बडे चिरंजीव शिवाजी बटाणे उनके मंडलके प्रमुख सदस्य के रूप में काम करते थे। बटाणे के मंदिर में हरवर्ष गणेशोत्सव मनाया जाता था। इस उत्सव को कराड में एक प्रतिष्ठा थी। यशवंतराव और उनके मित्रों ने उस उत्सव के लिए एक मेला करने की कल्पना की। स्वयं यशवंतराव उस मेले में वर्ष, दो वर्ष गीत गाते हुए घूमते फिरते थे। उन्होंने इस मेले के लिए कुछ पद लिखकर देने का प्रयत्न किया था। यह बात उन्हें आज भी याद आती है।

यह कहने का कारण यही है कि ब्राह्मणेतर आंदोलन के क्षुद्र दृष्टिकोन में से बाहर निकलकर कुछ किया जाना चाहिए, ऐसा उनके मन में जो आकर्षण था, उसे अब कहीं नया कार्यक्षेत्र मिल गया था।

यशवंतराव ने शुरू किया हुआ शिवजयंती उत्सव आगे बहुत वर्षों तक चलता रहा। उत्सव में व्याख्यान, भजनों का आयोजन किया जाता था।

(१२) वक्तृत्व स्पर्धा

यशवंतराव को तिलक हाइस्कूल में तिलक के संबंध में बहुत पढ़ने को मिला। हाइस्कूल में एक अच्छी प्रथा थी कि तिलक के विचार और जीवन के संबंध में निबंध स्पर्धा और वक्तृत्व स्पर्धा हर वर्ष ली जाती थी। इन दोनों में भाग लेने की यशवंतरावकी बडी उत्सुकता थी। इसलिए तिलक के संबंध में जो भी साहित्य था उन्होंने वह पढ़ डाला।

तिलक हाइस्कूल की तरह पूना के नूतन मराठी विद्यालय में हर वर्ष वक्तृत्व स्पर्धाएँ होती थी। यशवंतराव को उस स्पर्धा में भाग लेने की तीव्र इच्छा थी। १९३१ में पूना में होनेवाली स्पर्धा में यशवंतराव ने भाग लिया। पूना आने-जाने का खर्च था। लेकिन श्री. शिवाजीराव बटाणे ने इस काम के लिए सहयोग दिया। वहाँ छात्र को ऐन वक्त पर विषय देकर दस मिनट बोलने के लिए कहा जाता था।

यशवंतराव को 'ग्राम सुधारणा' यह विषय देकर बोलने के लिए कहा गया। उनका भाषण सुनकर परीक्षक खुश हुए दिखाई दिये। फिर उन्होंने बोलने के लिए यशवंतराव को दस मिनट दिये। भाषण होने के बाद सभी ने उनकी प्रशंसा की। उस स्पर्धा में उन्हें पारितोषिक मिला। १९३२ में यशवंतराव को सजा हुई। उस समय वह पारितोषिक भी जब्त हुआ - सरकार में जमा हुआ।

(१३) यशवंतरावजी का अनेक व्यक्तियों से संपर्क

बचपन से लेकर अन्ततक यशवंतरावजी का अनेक व्यक्तियों से संपर्क आया।

उनका संपर्क क्षेत्र बड़ा व्यापक है। उनका राजनैतिक, सामाजिक, शैक्षणिक, साहित्यिक व्यक्तियों से संपर्क आया। उन सबका विवेचन करना संभव नहीं है। इसलिए उनके संपर्क में आये प्रमुख व्यक्तियों का संक्षिप्त परिचय देना उचित है -

यशवंतराव के बडे भाई को नौकरी देने के लिए पिताजी के मित्र बेलीफ श्री. शिंगटे ने बहुत प्रयत्न किये। उनका नाम कभी भी भुलाया नहीं जा सकता।

जिस अंग्रेज अधिकारीने भाई को नौकरी दी, उसकी मानवता अवर्णनीय है। यशवंतराव के ननिहाल के मकान के मित्र श्री. सखाराम म्हस्के उनके हितचिंतक थे। भाऊसाहब कलंबे गुरुजी सत्यशोधकीय विचारों के प्रचारक थे।

१९२७ के आसपास भास्करराव जाधव बम्बई लेजिस्लेटिव्ह कौन्सिल के उम्मीदवार थे। यशवंतराव ने उनका प्रचार किया था। जाधव चुनकर आये थे।

हरिभाऊ लाड यशवंतराव के पुराणे मित्र थे। वे छोटीसी दुकान चलाते थे। यशवंतराव वृत्तपत्र पढ़ने के लिए वहाँ जाते थे।

श्री. गणपतराव उर्फ भाऊसाहब बटाणे के द्वारा गणेशोत्सव मनाया जाता था। इस उत्सव को बडी प्रतिष्ठा थी। इस उत्सव के लिए बटाणे सभी मदद करते थे।

श्री. साहेबराव कडेपूरकर पहलवान थे और राष्ट्रीय आंदोलन में कार्य करते थे। यशवंतराव और उन में मित्रता हो गयी । सातारा जिले में यशवंतराव के सभी काम का समर्थन करनेवाला वह उनका सहकारी बन गया, यशवंतराव को हमेशा उनकी याद आती है।

२६ जनवरी १९३० को स्वातंत्र्य दिन मनाने का निश्चय हुआ था। इधर कराड में भी झंडा वंदन करने का निश्चय हुआ। झंडा वंदन करने के समय यशवंतराव ने प्रतिज्ञा पत्र तयार किया। हरिभाऊ के नेतृत्व में यशवंतराव और उनके साथी कृष्णा नदी के किनारे पर पहुँचे। वहाँ झंडा वंदन किया। स्वातंत्र्य के लिए प्रयत्न करना चाहिए ऐसी उन्होंने शपथ ली।

२६ जनवरी की सुबह यशवंतराव कभी भी नहीं भूलेंगे। राष्ट्रीय काँग्रेस के तिरंगे झंडे के नीचे यशवंतरावने प्रतिज्ञा वाचन किया। इसलिए उनके मन की शांति बढ़ गयी। उनका राजनैतिक जीवन सच्चे अर्थों में शुरू हुआ।

ढ़ेढ़ (हरिजन) समाज में यशवंतरावजी के एक मित्र थे। उनका नाम था उथले। वे हमेशा यशवंतराव के साथ रहते थे। वे यशवंतराव जैसा बोलते थे। पर वे इस काम के लिए यशवंतराव को कभी भी उनके समाज में नहीं ले गये। यशवंतरावने उनसे एक बार पूछा -

'ऐसा क्यों?'

उन्होंने उत्तर दिया,

'हमारे समाज का जो दुःख है, वह तुम जैसा समझते हो, उसकी अपेक्षा अलग है। महात्मा गांधी, आंबेडकर को अपने साथ क्यों नहीं ले जाते, उन्होंने यह किया तो सब बदल जायेगा।'

लेकिन ये सब प्रश्न हमारी सीमा के बाहर के थे।

काकासाहब गाडगील भाषण के लिए कराड आये थे। उस समय उन्होंने उन्हें प्रथम देखा। काकासाहब ने ब्रिटिश साम्राज्यशाही पर प्रखर आलोचना की थी। उनका भाषण आवेशपूर्ण था। उनके शैलीदार भाषण का लोगों पर परिणाम हुआ। तब उनकी गाडगील से पहचान हो गयी।

यशवंतराव के मत से तर्कतीर्थ के भाषण का वैचारिक प्रभाव सामान्य मनुष्यों पर और विशेषतः युवकों पर अधिक पडा। उन्होंने कहा कि - 'तुम कृष्णा के किनारे पर जहाँ बैठे हो, वह जैसे गर्म हुआ है, वैसे तुम्हारी बुद्धि और मन भी गर्म होना चाहिए।' तर्कतीर्थ शास्त्री ने इसी एक वाक्य से सभा को जीत लिया।

यशवंतरावजी के आंदोलन के दो तीन केंद्र बन गये थे। ये गाँव हैं मसूर, इंदोली और तांबवे। मसूर के राघू आण्णा लिमये, डॉ. फाटक, विष्णुमास्तर निगडीकर, सीतारामपंत गरुड, इंदोली के दिनकरराव निकम और उनके साथी ये प्रमुख कार्यकर्ता थे। तांबवे के काशिनाथपंत देशमुख यशवंतराव के मित्र थे। देशमुख ने अपने आसपास कार्यकर्ताओं को बडा समूह खडा कर दिया था। और उन्होंने जंगल-सत्याग्रह का बडा कार्यक्रम भी किया था। इसलिए वहाँ के कुछ लोग जेल में गये थे।

इस आंदोलन में जो संघटित विद्रोह हुआ था वह बिलाशी में। वह वारणा नदी पर का प्रसिद्ध भाग है। श्री. बाबूराव चरणकर और गणपतराव पाटील के नेतृत्व में लगभग चालीस गाँव में पाटील लोगों ने सरकारी नौकरी के इस्तीफे दिये थे। जंगल सत्याग्रह बडे पैमाने पर हुआ और एक अर्थ से ब्रिटिश सरकार का अंमल समाप्त हुआ ये सब यशवंतराव के संगी साथी थे।

रत्नागिरी में यशवंतरावजी की सावरकर से भेट हुई थी।

सातारा के समर्थ साप्ताहिक के संपादक श्री. अनंतराव कुलकर्णी और यशवंतराव दोनों एक ही शाला में और एक ही वर्ग में पढ़ते थे। वे यशवंतराव के राजनैतिक आंदोलन को समर्थन देते थे। उन्होंने यशवंतराव को संस्कृत भी पढ़ाया।

रावसाहब गोगटे और यशवंतराव दोनों भी मित्र थे। दोनों भी तिलक हाइस्कूल में पढ़ते थे और दोनों भी एकही बेंच पर बैठते थे। गोगटे की पत्नी उषा और यशवंतराव की पत्नी सौ. वेणूताई इन दोनों में मित्रता थी।

माधवराव अणे, माधवराव बागल, किसनवीर, आत्माराम पाटील, पांडुरंग मास्तर, गौरीहर सिंहासने ये सभी यशवंतराव के साथी थे। यशवंतराव को स्वातंत्र्य आंदोलन में इन लोगों की बड़ी मदद हुई है।

तात्या डोईफोडे और यशवंतराव झंडा लगाने के कारण दोनों को अठारह महिनों की सजा हुई। आचार्य भागवत, ह. रा. महाजनी उनके स्नेही थे। मानवेंद्रराय के विचारों की ओर यशवंतराव आकर्षित हुए थे। परंतु उनके विचार यशवंतराव को पसंद नहीं आये। इसलिए वे उनसे दूर हो गये।

समाजवादी विचारों के समर्थक श्री. एस. एम. जोशी और भुस्कुटे के साथ भी उनका स्नेह था।

यशवंतरावजी के मित्र आत्माराम बापू पाटील राय साहब के विचारों को समर्थन देने की मनस्थिति में थे। और यशवंतराव काँग्रेस के विचारों के समर्थक बन गये। फिर दोनों के मार्ग अलग हो गये।

यशवंतराव पूना में लॉ कॉलेज में पढते थे। उन्हें पढाने के लिए पूना के प्रसिद्ध वकील श्री. ल. ब. भोपटकर थे। वे प्रसिद्ध वकील थे। वे यशवंतराव को टॉर्ट विषय पढ़ाते थे । उनका भाषा पर प्रभुत्व था और वे उत्तम शिक्षक थे। पूना के कम्युनिष्ट नेता श्री. विष्णुपंत चितले के साथ यशवंतरावजी का स्नेह था। श्री. चितले मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक थे।

चंद्रोजी पाटील यशवंतराव के स्नेही थे। वे सांगली जिले में कामेरी के थे। उनकी सहायता से कामेरी के के. डी. उर्फ़ केशवराव पाटील से यशवंतरावजी की पहचान हो गयी। उनकी पहचान यशवंतरावजी के दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थी। आगे लगभग सात-आठ वर्ष उन से यशवंतरावजी का प्रगाढ स्नेह था और राजनीति में उन्होंने यशवंतरावजी को बहुत सहयोग दिया।

तासगाव के श्री. विठ्ठलराव पागे के साथ भी यशवंतराव के संबंध थे। वे स्वातंत्र्य सैनिक थे। दोनों के विचार एक साथ जुड गये थे। वे पहले से निष्ठावान गांधीवादी थे। आगे उन्होंने तात्त्विक विचार स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी बड़े होशियार सेनापति हैं। वे काल और साधनों का उचित समय पर चुनाव करेंगे और वे अपने पीछे आने का संदेश देंगे। तब धैर्य न छोड़ते हुए विश्वास से बर्ताव करना चाहिए।

श्री. विठ्ठलराव पागे, स्वामी रामानंद भारती, भाऊसाहब सोमण, श्री. वसंतदादा पाटील, गौरीहर सिंहासने और व्यंकटराव पवार ऐसे अनेक लोगों ने वैयक्तिक सत्याग्रह में भाग लिया। ये सब यशवंतराव के स्नेही थे। श्री.व्यंकटराव पवार ये जिला काँग्रेस के अध्यक्ष थे। वे जेल में गये थे। उसके बाद यशवंतराव जिला काँग्रेस के अध्यक्ष बन गये।

एक बार हेडगेवार व्याख्यान देने के लिए कराड आये थे। उनके विचार सुनकर यशवंतरावजी को लगा कि इन लोगों को एक विशिष्ट वर्ग के लोगों की संघटना बनानी है। तब से वे उन से दूर रहने लगे।

सत्याग्रह के दिन वालचंद गांधी ने रविवार चौक में सभा की व्यवस्था कर रखी थी। उस सभा में यशवंतरावने भाषण दिया। पर उनके भाषण में कोई आक्षेपार्ह नहीं था। इसलिए उन्हें गिरफ्तार नहीं किया। उनके मित्र वालचंदजी उठे और उन्होंने युद्धविरोधी घोषणाएँ दी। इसके बाद तुरंत पुलिस आयी और उन्होंने वालचंद शेठजी को गिरफ्तार किया।

१९३७ में जिला लोकल बोर्ड का चुनाव हुआ। उस चुनाव में धुलाप्पा आण्णा नवले, सखाराम बाजी रेठरेकर और गौरीहर सिंहासने ये यशवंतराव के मित्र चुनाव जीत गये थे। यशवंतरावजी इन सदस्यों के सलाहकार बने। इन सब ने बाबासाहब शिंदे को जिला लोकल बोर्ड का अध्यक्ष बनाने की बात तय की और वे अध्यक्ष बन गये। तबसे शिंदे का यशवंतराव से संबंध आया और धीर धीरे यह संबंध बढ़ गया। उस संबंध का रूपान्तर प्रगाढ़ स्नेह में हुआ।

इससे कूपर सातारा जिले के सर्वाधिकारी थे। पर चुनाव में हार जाने पर उनकी सत्ता समाप्त हुई।

१९४१ में जो चुनाव हुआ उस समय कूपर के सहयोगी अण्णासाहब कल्याणी और सरदार पाटणकर ये दोनों भी कूपर से अलग हुए। फिर अध्यक्षपद के लिए दो उम्मीदवार सामने आये। एक आनंदराव चव्हाण और दूसरे बालासाहब देसाई। इन दोनों में से आनंदराव चव्हाण ये यशवंतराव के विद्यार्थी अवस्था से मित्र थे। आनंदराव और यशवंतराव इन दोनों ने इंटर और बी.ए. की परीक्षा के समय एकत्र अभ्यास किया था। आनंदराव और बालासाहब दोनों का तहसील एक ही था। दोनों की शिक्षा कोल्हापूर में हुई थी।उनके रिश्ते कोल्हापूर परिवार से थे।

फिर अध्यक्ष पद का चुनाव हुआ। हमारे काँग्रेस कार्यकर्ताओं ने बालासाहब देसाई को सहयोग दिया। वे चुनाव जीत गये। बालासाहब को यह बात महसूस हुई। इसी कारण आगे दोनों का सहयोग बढ़ता गया और सातारा जिले में उनका और यशवंतराव का एक गुट माना जाने लगा। इस प्रसंग में यशवंतराव ने आनंदराव चव्हाण को दुःख दिया, इस बात का यशवंतराव को भी बडा दुःख हुआ।

बालासाहब और आनंदराव दोनों भी महत्त्व के आदमी थे। भविष्यकालीन राजनीतिमें दोनों की भी आवश्यकता थी। जो होना था, वह हो गया। सत्ता की राजनीति में कभी कभी ऐसा होता है। उधर सातारा जिले में सभी प्रमुख कार्यकर्ता जेल में थे और

ऐसी हालत में यशवंतराव ने स्थानिक संस्था अपने कब्जे में ली थी। इसलिए किसनवीर, के. डी. पाटील और यशवंतराव ने यह जो कार्य किया था वह प्रशंसनीय था।

१९४१ साल के जिला बोर्ड के चुनाव में जो कुछ नये मनुष्य यशवंतराव के निकट के साथी बने उस में यशवंतराव का श्री. यशवंतराव पार्लेकर के साथ घनिष्ठ प्रेम हुआ था। १९४१ में यशवंतराव पार्लेकर और ये दोनों मित्र हो गये। आगे यशवंतराव को सभी कार्यो में उन्होंने सहायता की।

हरिभाऊ जेल से बाहर आने पर यशवंतराव उनके साथी हुए। इस समय यशवंतराव के जीवन में एक महत्त्वपूर्ण घटना घटी थी। इन सब चर्चाओं और आंदोलनों के बारे में चर्चाएँ चल रही थी। ये सब समझने के लिए यशवंतराव मग्न हुए थे। लेकिन यशवंतराव के विवाह के लिए उनकी माँ ने यशवंतराव को विवाह करने के लिए आग्रह किया।

उन्होंने बार बार आग्रह किया। विवाह प्रसंग में माँ की विजय हुई और मैं विवाह के लिए तैयार हुआ। फलटण निवासी स्व. रघुनाथ मोरे की कन्या वेणूताई के स्थल का पैगाम यशवंतराव के लिए आया था।

यशवंतरावने कहा था कि यह लडकी सातारा आयेगी तो मैं उसे देख लूंगा। मई महिने के प्रारंभ में तय किये समय पर यशवंतराव ने लडकी देखी।

वधु पसंदगी का यशवंतराव का एक दृष्टिकोन था। यशवंतराव के घर में और विशेषकर माँ से मिलती-जुलती रहेगी ऐसी वधु चाहिए ऐसा उनका विचार था। स्व. रघुनाथराव फलटण के होते हुए उनका संपूर्ण परिवार बम्बई में रहता था। एक वर्ष पहले उसका निधन हुआ था। बडोदा के राजघराणे के निजी खाते में वे महत्त्व के गृहस्थ थे। मई महिने के प्रारंभ में तय किये स्थानपर यशवंतराव ने लडकी देखी।

स्व. रघुनाथराव मोरे की फलटण में खेती थी। वे वर्ष में एक बार फलटण आते थे। वे दो महिने फलटण में रहते थे। खानदानी लड़की को अच्छे संस्कार मिले, इसलिए वे चिंता करते थे।

शिक्षित, पर संयुक्त परिवार में दिल लगाकर काम करेगी और परिवार में सभी सदस्यों के साथ प्रेम से बर्ताव करेगी, ऐसी वधु उन्हें चाहिए। सातारा में यादो गोपाल उनके रिश्तेदारों के घर में यशवंतराव ने वेणूताई को देखा। कुछ प्रश्नोत्तरे हुई।

उस समय यशवंतराव ने कहा कि - 'मैं वकील हूँ, फिर मैं राजनैतिक कार्यकर्ता हूँ', यह बात मैंने स्पष्ट कर दी। मेरी बात सुनने पर मुझे विलक्षण सौम्य प्रसन्नता दिखाई दी। दीये के समान चमकदार बड़ी आँखे देखकर मेरे मन ने अनुमति दी।

कराड वापस जाकर यशवंतरावने अपनी अनुमति अपनी माँ से कह दी। मई महिने

के प्रारंभ में ये सब हुआ। और २ जून १९४२ को उनका सौ. वेणूताई के साथ विवाह संपन्न हुआ।

आज जब मैं पीछे मुडकर देखता हूँ, तब एक तरफ से जन आंदोलन की तरफ से अपना मन तैयार करनेवाले यशवंतराव, और यह जन आंदोलन देहलीज पर आते समय यशवंतराव विवाह के लिए कैसे खडे रहे, यह विचार कभी कभी उनके मन में रहता है, परंतु निर्णय हुआ, यह सच है। और उस में से उनका अगला जीवन निर्माण होता रहा। तर्क और जीवन हमेशा हाथ में हाथ डालकर चलते है, यह सच नहीं है। यही उसका अर्थ है।

और एक दृष्टि से जन आंदोलन का अगला तूफान देखना था। उसके लिए आवश्यक वह साथी – यशवंतराव को मिलनेवाली थी। उसका यह एक संयोग था अथवा अर्थ था, ऐसे कहा जाय तो चलेगा।

यशवंतराव के विवाह के लिए हजारों कार्यकर्ता बड़े आनंद से और प्रेम से एकत्र हो गये थे। विवाह के लिए स्वामी रामानंद भारती भी उपस्थित थे। विवाह के लिए उन्होंने भाषण भी दिया। उन्होंने भाषण में कहा –

'यह जन आंदोलन बडा सूचक है।'

यशवंतराव का जो विवाह हुआ, उस में जो भीड थी, उसका वर्णन करना असंभव है। पर इतना निश्चित है कि इतना बडा विवाह कराड में पहले कभी नहीं हुआ था।

श्री. के. डी. पाटील यशवंतराव के स्नेही थे। लेकिन उन्हें इस्लामपूर में बडे प्रसिद्ध वकील श्री. रानडे का सहयोग मिलता था। श्री. के. डी. ने श्री. रानडे के साथ मेरा परिचय कर दिया था। वे प्रवृत्ति से धीर गंभीर थे। कोर्ट के काम में हमेशा यश मिलता रहता था।

१९४२ में कराड में दक्षिण महाराष्ट्र साहित्य संमेलन बडे उत्साह से संपन्न हुआ। कवि बालकृष्ण, पुं. पा. गोखले, पंडित सप्रे, शंकरराव करंबलेकर, कृष्णराव सरडे आदि साहित्यिक उपस्थित थे। कराड के संमेलन में यशवंतराव ने क्रियाशील होकर भाग लिया था। इस परिसंवाद में दो परिसंवाद आयोजित किये थे। श्री. कृ. पां. कुलकर्णी पहले परिसंवाद के अध्यक्ष थे। दूसरे परिसंवाद के अध्यक्ष थे यशवंतरावजी चव्हाण। उनका व्याख्यान का विषय था – 'बहुजन समाज और साहित्य'। दोनों परिसंवाद बडे सुंदर हुए। यशवंतराव का अध्यक्षीय समापन का भाषण व्यासंगपूर्ण था। यशवंतराव का यह भाषण श्री. कृ. पां. कुलकर्णी को बहुत पसंद आया। उन्होंने यशवंतराव को यह बताया भी। उसके बाद यशवंतराव कृ. पां. कुलकर्णी का आत्मचरित्र 'कृष्णाकाठची माती' पढ रहे थे। उन्होंने अपने आत्मचरित्र में यशवंतराव के परिसंवाद में भाषण का

गौरवपूर्ण उल्लेख किया था।

विश्वनाथ उर्फ तात्यासाहब कोरे यह एक उत्कृष्ट सहयोगी कार्यकर्ता थे। उनका और यशवंतराव का जीवनभर संबंध रहा।

१९४२ के आंदोलन में श्री. शांताराम इनामदार ने यशवंतराव को संपूर्ण सहयोग दिया। अदालत का समय समाप्त होने पर दोनों में स्वातंत्र्य की चर्चा होती थी।

७ अगस्त १९४२ को बम्बई में वालिया टँक पर अखिल भारतीय काँग्रेस कमिटी की ऐतिहासिक बैठक हुई। उस बैठक में पंडित जवाहरलाल नेहरूने 'भारत छोडो' का प्रस्ताव रख दिया। सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित हुआ। उन्होंने प्रस्ताव का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि – 'हमारा यह प्रस्ताव किसी को धमकी नहीं है। यह हमारी शत्रुता की भावना नहीं'।

भारत छोडो का अर्थ पूछने के लिए यशवंतराव गांधीजी के पास गये। गांधीजी ने इसका अर्थ स्पष्ट करते हुए कहा – 'हम ब्रिटिशों को हिंदुस्तान से चले जाओ, ऐसा जो कहते हैं, इसका अर्थ अँग्रेज मनुष्य को तुरन्त हिंदुस्तान छोडना चाहिए, ऐसा नहीं है। फिर भी वे हिंदुस्तान में रह सकते है। मेरा कहना इतना ही है कि ब्रिटिश तुरंत अपनी सत्ता का त्याग करे। हिंदुस्तान में जो राज्यकर्ता अंग्रेज लोग हैं, वे हिंदुस्तान में मित्र के रूप में रह सकते हैं।'

अधिवेशन समाप्त होने पर यशवंतराव वापस आ गये। फिर यशवंतराव ने वेणूताई को पत्र लिखकर संपूर्ण परिस्थिति की कल्पना दी। कहा कि – 'मैं एक तूफान में प्रवेश कर रहा हूँ। मैने क्षमा मांगी। उसे क्या लगा होगा यह मैंने पूछा नहीं।'

उधर रोड के पास थोडे अंतर पर मेरे स्नेही श्री. शंकरराव बेलापुरे मेरी राह देखते हुए खडे थे। वे अच्छी तरह मोटर साइकिल चलाते थे। 'मैं आया हूँ' का इशारा करते ही वे मोटर साइकिल लेकर मेरे पास आ गये। उन्होंने मुझसे कहा – 'बैठो पीछे, चलेंगे हम।'

यहाँ से यशवंतराव की घुमक्कडी की शुरूआत थी।

२४ अगस्त को कराड तहसीलपर मोर्चा लेने का निश्चय हुआ। इस मोर्चा का नेतृत्व कराड तहसील में काँग्रेस के प्रमुख बालासाहब पाटील उंडालकर करेंगे। श्री. शांताराम बापू, कासेगावकर वैद्य, सदाशिवराव पेंढारकर और युवक पीढी में नये लडकों की एक सेना कराड शहर में खडी रही। इसका नेतृत्व महादेव जाधव ने किया। बहुत भीड एकत्र हुई थी। कुछ लोग तहसील कचहरी के मैदान में तिरंगा झंडा लेकर गये। पुलिस ने उंडालकर को गिरफ्तार किया। इसके साथ अनेक लोगों को गिरफ्तार किया। किसी तरह का क्यों न हो, अपनी विजय हुई है। इसी भावना से लोग अपने अपने गाँव

गए। हमारे इस मोर्चा का पहला प्रयत्न था और वह सफल हुआ था।

किरवे गाँव के विठ्ठलबुवा मावशीकर और बाबा शिंदे को लेकर यशवंतराव ने भूमिगत कार्यकर्ताओं की बैठक ली और मोर्चा के संबंध में चर्चा की।

कराड के बाद पाटण में मोर्चा हुआ। उसके बाद तासगाँव में मोर्चा हुआ। इस मोर्चा में विठ्ठलराव पागे, कृष्णराव कुऱ्हाडे, गोविंदराव खोत ये प्रमुख लोग थे। ये सब लोग यशवंतराव से संबंधित थे। वहाँ श्री. निकम अधिकारी थे। उन्हें नैतिक दृष्टि से जीत लिया और निकम के सिर पर गांधी टोपी रखकर तहसील कचहरीपर तिरंगा झंडा फहराया और गांधी की जयजयकार करते हुए उत्साह के साथ लोग वापस चले गये।

उसके बाद इस्लामपूर और वडूज इन दोनों स्थानों पर मोर्चे हुए। उन स्थानों पर पुलिस की ओर से बड़ा अत्याचार हुआ। फिर भी यह जनता के मोर्चे देखकर ब्रिटिश सरकार घबरा गयी।

इस्लामपूर के मोर्चे में यशवंतराव भी शामिल हुए थे। श्री. पंड्या नाम के इंजीनियर तज्ज्ञ थे। वे नौकरी के लिए किर्लोस्कर वाडी आये थे। वे भी इस मोर्चे में शामिल हुए थे। वे उत्तर प्रदेश के थे। यशवंतराव ने उसे मना कर दिया था। पुलिस की गोलाबारी में दोनों मनुष्यों की कुर्बानी हो गयी। उस में श्री. इंजिनीयर पंड्या भी एक थे। यशवंतराव को यह बात हमेशा अस्वस्थ करती है। घर में तरुण पत्नी को रखकर इस्लामपूर गये और वे फिर कभी वापस नहीं आये। पांडू मास्तर हमारे जिले के बडे नेता थे और इस्लामपूर के मोर्चे की तैयारी की थी। यशवंतराव प्रत्यक्ष मोर्चे में भाग लेना चाहते थे। परंतु लोगोंने उन्हें मना कर दिया। पुलिस ने पांडू मास्तर और उनके साथियों को गिरफ्तार किया। इसके बाद इन लोगों ने बडे उत्साह के साथ काम करने का निश्चय किया था।

वडूज का मोर्चा होने के पहले यशवंतराव और गौरीहर सिंहासने और अन्य स्वातंत्र्य सैनिक जयराम स्वामी के वडगाव में मिले थे। मोर्चे के नेतृत्व का निर्णय पहले ही हुआ था। श्री. परशुराम घार्गे ये उस तहसील में बहुत बडे सम्मानीय नेता थे। वे ही मोर्चा का नेतृत्व करे यह तय हुआ था।

काँग्रेस की तत्त्व प्रणाली के अनुसार काँग्रेस कार्यकर्ता शांति से मोर्चा निकालेंगे, ऐसा संदेश श्री. बंडोपंत लोमटे ने सरकारी अधिकारी को भेज दिया था। वडगाव के लोगों ने एक जुलूस निकालकर श्री. परशुराम घार्गे और उनके साथियों को बिदा कर दिया।

उस समय की सफर भी मैंने एक मोटर साइकिल के पीछे बैठकर की थी। उस वडूज के मोर्चे का इतिहास अब प्रसिद्ध हुआ है। उस स्थान पर अमानवीय दृष्टि से अनेक मनुष्य मारे गये। उन में परशुराम घार्गे और उनके अन्य साथी प्रमुख थे। परशुराम घार्गे का

हौतात्म्य यह १९४२ के आंदोलन का एक मानबिंदू था। उनका नाम अमर हुआ। कराड, पाटण, तासगाँव, वडूज और इस्लामपूर में जो मोर्चे हुए वे तो आंदोलन के इतिहास के सुनहरे पन्ने हैं। यशवंतराव तो यही मानते हैं।

कुंडल में क्रांतिवीर नाना पाटील के नेतृत्व में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं की बड़ी संख्या थी। उन में जी. डी. बापूने बड़ा काम किया था।

सांगली में वसंतराव पाटील और उनके कार्यकर्ता इसी प्रकार का काम कर रहे थे। उनका कार्य एक पराक्रमी पुरुष जैसा था। उनकी संघटन-कुशलता प्रशंसनीय थी। भविष्य में उसका उन्हें उपयोग भी हुआ।

वालवे तहसील में बरडे गुरुजी ये एक स्वतंत्र प्रवृत्ति के क्रांतिकारी थे। उन्होंने अपनी पद्धति से शिराला पेटा और वालवे के कुछ भाग में काम करने की शुरूआात की थी।

पुणे की सफर में किसन वीर पकडे गये। यशवंतराव की निराशा हुई। उनका संदेश आया कि हम जेल फोडकर बाहर आ जायेंगे। पर यशवंतराव को यह असंभव लगता था।

आगे तीन महिने के बाद श्री. छन्नूसिंग चंदेले, पांडू मास्तर और अन्य मित्रों के साथ किसनवीर जेल फोडकर बाहर आये। जब किसनवीर सातारा जिले में आये, तब उन्हें कराड के आसपास लाने की व्यवस्था यशवंतरावने की।

तासगाँव के डॉक्टर यशवंत सोहनी को कार्यक्रम की रूपरेखा के संबंध में यशवंतराव ने पत्र लिखा था। डॉक्टर खुलेआम सफर करते थे। एक दिन वे पकडे गये और यशवंतराव ने लिखा हुआ पत्र भी जब्त किया गया। पर यशवंतराव ने उसकी चिंता नहीं की। यशवंतराव को यह पत्र देखने को नहीं मिला। कुछ संशोधकने वह पत्र देखने की बात कही है। उस पत्र में क्या था – रेठरे की बैठक में जो चर्चा हुई थी उसका सारांश था। यशवंतराव ने कहा था कि – 'वैयक्तिक हत्या और सार्वजनिक जायदाद, जिनका युद्ध प्रयत्न से कोई संबंध नहीं है, उनका नाश नहीं करना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि यशवंतराव का आंदोलन विधायक स्वरूप का था।'

सरकारने यशवंतराव को पकडने के लिए एक हजार रुपयों का इनाम रखा था। पुलिस उनके पीछे पडी थी। इसलिए वे दो-चार मनुष्यों के संबंध में रहते थे। शांताराम बापू इनामदार यशवंतराव के घनिष्ठ सहयोगी थे। यशवंतराव के सभी कार्यक्रमों का नियोजन शांताराम बापू करते थे।

व्यंकटराव ओगले ने यशवंतराव की संघटना को आर्थिक मदद की। श्री. अण्णासाहब सहस्रबुद्धे विख्यात विधायक कार्यकर्ता थे। उन्होंने महाराष्ट्र में भूमिगत

संघटना को बडा सहयोग दिया था। कराड के श्री. लक्ष्मण कासेगावकर वैद्य और सदाशिव पेंढारकर इन दोनों ने यशवंतराव की भूमिगत संघटना में बहुत बडा काम किया था। श्री. सदाशिव पेंढारकर ने यशवंतराव से कहा था – 'यह अंतिम लड़ाई है, उस में मैंने भाग नहीं लिया तो मेरा जन्म व्यर्थ है।' इस विचार से उन्होंने काम करना शुरू किया था। उस समय वे किर्लोस्करवाडी के कारखाने में एक अधिकारी के रूप में काम कर रहे थे। भूमिगत आंदोलन में यशवंतराव अलग अलग स्थानों में रहते थे। वैसे ही वे सदाशिव पेंढारकर के किर्लोस्करवाडी के घर में रहते थे।

यशवंतराव नाना पाटील से मिलना चाहते थे। लेकिन उनसे मिलना आसान नहीं हुआ। भूमिगत जीवन काल में उनसे मिलकर विचार विनिमय करने की यशवंतराव की इच्छा थी। यशवंतराव उनसे कभी भी नहीं मिल सके। क्योंकि उनके पीछे पुलिस लगी हुई थी। इसी दृष्टि से वे सावधान रहते थे। यह भी उचित था। विचार करके यशवंतराव ने उनसे मिलना छोड दिया।

एक बार कराड में रहना यशवंतराव को मुश्किल हुआ। तब उन्हें कहीं तो बाहर जाना आवश्यक था। इसलिए वे श्री. यशवंतराव पाटील पार्लेकर के घर में एक–दो दिन रहे। दोनों का स्नेह इतना प्रसिद्ध था कि उनके यहाँ रहना बहुत खतरनाक था। इसलिए यशवंतरावजी मसूर–खराडे गाँव की सीमा में जाकर रहे। दत्तोबा काटकर और उनकी पत्नी पार्वतीबाई इन दोनों ने यशवंतराव की रहने की व्यवस्था की। वे स्वातंत्र्य सैनिक थे। १९३० के आंदोलन में दोनों जेल में गये थे। उन्होंने अपने खेत में यशवंतराव के लिए एक झोपडी बना दी थी। दत्तोबा काटकर की उस झोपडी में यशवंतराव कम से कम दस गाँव के प्रमुख कार्यकर्ताओं से मिले थे।

यशवंतराव के स्नेही चरेगाव के श्री. व्यंकटराव माने उन में से एक थे। वे साहसी और देशभक्ति से प्रेरित कार्यकर्ता थे। यशवंतराव ने तो उनका भूमिगत नाम 'शेर' रखा था।

कराड शहर के पास दो मील पर कार्वे नाम का गाँव है। वहाँ गन्ने की खेती है। गन्ने की खेती के लिए आज वह गाँव प्रसिद्ध है। वह गाँव राष्ट्रीय परंपरा का प्रतीक है।

उस गाँव के प्रमुख कार्यकर्ता और यशवंतराव के मित्र श्री. संभाजीराव थोरात ने आंदोलन के प्रारंभ में जेल में जाने की इच्छा व्यक्त की थी। लेकिन यशवंतरावने उन्हें भूमिगत आंदोलन के काम में से मुक्त किया था।

कार्वे में रहनेवाले श्री. आत्माराम बापू जाधव यशवंतराव के मित्र थे। वे भूमिगत आंदोलन में बहुत दिन बहुत होशियारी से काम कर रहे थे। वे बुद्धि से बहुत तेज थे। योजना तय करने में, कौन से समय क्या करना चाहिए, इसकी सूचना करने में माहिर।

इस व्यक्ति का यशवंतराव को बहुत उपयोग हुआ। दूसरे मित्र माधवराव जाधव ने अपना व्यक्तित्त्व आंदोलन में तैयार किया। उन्होंने अपने आसपास सैंकडो कार्यकर्ताओं का जाल तैयार किया था। उन्होंने दिन दहाडे कराड का ऑफिस लूट लिया। आगे १९४४ में वे पुलिस के चँगुल में फँस गये। पुलिस ने उन्हें कराड के जेल में डाल दिया। पर वे जेल फोडकर बाहर आ गये।

श्री. कासेगावकर वैद्य और श्री. सदाशिवराव पेंढारकर इन दोनों ने शिरवडे रेल स्टेशन जलाने का कार्यक्रम तैयार किया। इस काम का नेतृत्त्व श्री. सदाशिवराव पेंढारकर को दिया गया। उन्होंने दस–पाँच कार्यकर्ताओंका सहयोग लिया था। इस में यशवंतराव का भांजा बाबूराव कोतवाल भी था। उस में पहले से राष्ट्रीय वृत्ति थी। लेकिन यशवंतरावने उसे कभी 'तू यह कर' ऐसा नहीं कहा था। उसने स्वयंस्फूर्ति से काम करने का निश्चय किया था। इस में वह काम करता है, इसका यशवंतराव को भी आनंद हुआ। उस समय वह हाइस्कूल विद्यार्थी था। इन सब ने एक शाम के समय शिरवडे रेल स्टेशन पर हमला किया। वहाँ उन्होंने उपस्थित बंधूकधारी अपने कब्जे में लिया और उनकी बंदूकै ले ली और स्टेशन जलाया।

उसी दिन यशवंतराव ओगले वाडी में व्यंकटराव ओगले के घर में थे। श्री. शांताराम बापू और कासेगावकर वैद्य इन दोनों को इसकी कल्पना थी।

एक बंदूकधारी कार्यकर्ता यशवंतराव से मिलने आया था। शिरवडे स्टेशन पर हमला करनेवालों में से एक था। वे कुंडल के रामराव पवार थे। उन्होंने उसकी कुंडल जाने की व्यवस्था की।

यशवंतराव की जो बैठक हुई उस बैठक में कुछ नये लोग थे। उन में कोतवाल नाम के एक गृहस्थ थे। आगे चलकर वे हुतात्मा कोतवाल नाम से प्रसिद्ध हुए।

बम्बई का निवास समाप्त करके यशवंतराव बडे प्रयत्न से सातारा जिले में पहुँचे। वे कराड से मोटर साइकिल पर पीछे बैठकर शिराला गये। वहाँ से चिखली गये। वहाँ आनंदराव नाईक के बागान में वे दो दिन रहे। वहाँ से वे कामेरी के के. डी. पाटील से मिलने के लिए कामेरी गए। वहाँ भूमिगत आंदोलन के बारे में चर्चा हुई।

दिसंबर महिने में जिले में चारों ओर पुलिस का दबाव था। भूमिगत कार्यकर्ता और स्वातंत्र्य सैनिक को पकडे जाने का डर था। इसलिए प्रमुख कार्यकर्ता जिला छोडकर बाहर चले गये। यशवंतराव पहनावा बदलकर पूना चले गये। पूना में रहकर वे सातारा जिले से संपर्क रखते थे। हर सप्ताह में शांताराम यशवंतराव से मिलते थे। पूना में यशवंतराव उनके मित्र बबनराव गोसावी के घर में रहते थे। पूना में सदाशिव पेंढारकर से भेंट हुई। वे बहुत खुशी में थे। इस आंदोलन में कुछ तो महत्त्वपूर्ण काम किया है। परिणामों की उन्हें

कोई परवाह नहीं थी।

१९४३ के जनवरी में यशवंतराव के दिन ऐसे ही चले जा रहे थे।

शिरवडे स्टेशन के अग्निकांड के मुकदमे में प्रायः सभी लोग पकडे गये थे। श्री. सदाशिव पेंढारकर और उनके साथियों पर मुकदमे शुरू थे। इन अभियुक्तों में यशवंतराव का भांजा बाबूराव कोतवाल भी था। इन सभी को सजा हुई। इन सभी लोगों ने यंत्रणाएँ सहन की। वह भी यशवंतराव के लिये और अपनी राष्ट्र-निष्ठा के लिए। सजाएँ होने पर भी ये नहीं डरे थे। विशेषकर श्री आत्माराम बापू जाधव, बाबूराव कोतवाल, बाबूराव काले मालदणकर को पुलिसों ने बहुत यंत्रणाएँ दी। उनकी कहानियाँ सुनकर यशवंतराव के शरीरपर रोंगटे खड़े हो गये थे।

(१४) जीवन के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसंग

यशवंतराव का व्यक्तित्त्व और कर्तृत्व इतना बडा है कि उनके जीवन में अनेक सुख-दुःख के प्रसंग आये। उन सभी का उल्लेख करना असंभव है। लेकिन जो महत्त्वपूर्ण प्रसंग हैं, उनका उल्लेख करना मैं उचित समझता हूँ।

(१५) मैं यशवंतराव चव्हाण हो जाऊँगा

यशवंतराव जब पढते थे तब उनकी शाला में श्री. शेणोलीकर नाम के शिक्षक थे। समयपर व्यवस्थित तथा अच्छे काम करनेवाले शिक्षक के रूप में उनकी ख्याति थी। उन्हें पढाने का और क्रिकेट का शौक था।

उन्होंने एक बार यशवंतराव की कक्षा में लडकों से पूछा,

'तुम्हें हर एक को क्या होना है, वह तुम एक कागज की चिठ्ठी पर लिख कर दो।'

हर एक विद्यार्थीने अपने सामने आदर्श होनेवाले एक एक पुरुष का नाम लिखकर दिया। यशवंतराव ने अपने मन में विचार किया कि किसी तरह बडे पुरुष का नाम लिखकर देना अर्थात स्वयं को धोखा देना है। बडे व्यक्ति अपने कर्तृत्व से बडे हुए हैं। उनके समान हम भी हो जाये, यह विचार तो अच्छा है। लेकिन वैसा निर्णय अवास्तव। इसलिए मैंने मेरी चिठ्ठीपर लिखा -

'मैं यशवंतराव चव्हाण हो जाऊँगा।'

शिक्षक ने सभी लडकों की चिठ्ठियाँ देखी और मेरी चिठ्ठी देखकर वे मेरे पास आये और कहा -

'अरे, तू तो अच्छा अहंकारी दिखता है। तू सार्वजनिक काम में भाग लेता है, यह तो अच्छा है। लेकिन तुम्हें तो कम से कम देश में बडे मनुष्यों का आदर्श अपनी आँखों

के सामने रखना चाहिए।'

यशवंतरावने कहा -

'तुम्हारा कहना तो सही है। लेकिन मुझे जो लगा, वह मैंने लिख दिया।'

मेरी दृष्टि से यह विषय कक्षा में ही समाप्त हुआ। लेकिन उन्होंने टीचर्स रूम में जाकर शिक्षक बंधुओं से इस बात की चर्चा की होगी। क्योंकि पाठक सर ने मुझे पूछा। वे हमारे मुख्याध्यापक थे। मैंने उनसे सच्ची बात कहीं। तब उन्होंने मुझसे कहा -

'इस में अनुचित क्या है? अपना व्यक्तिमत्त्व बढाने का प्रयत्न करने की तुम्हारी इच्छा है, ऐसा उसका अर्थ है, और वह उचित भी है। शेणोलीकर ने तुम्हें कहा होगा, तो उसकी ओर ध्यान मत दो।'

(१६) झंडा फहराने का प्रसंग

यशवंतराव और उनके मित्रों ने झंडा फहराने का निर्णय लिया। दूसरे दिन सुबह आठ बजे यशवंतराव और उनके मित्र हाइस्कूल के मैदान में जो नीम का पेड है उसके आसपास इकठ्ठा हो गये। यशवंतराव ने पेड़ पर चढकर झंडा फहराया। फिर सबने ध्वज-वंदन करके झंडे को सलामी दी। यशवंतराव और उनके मित्रों ने 'वंदे मातरम्' की घोषणाएँ दी और राष्ट्रगीत होने के बाद सब विद्यार्थी अपने-अपने घर गए। परंतु शाला की जाँच के लिए आये हुए एज्युकेशनल इन्सपेक्टर सामनेवाले बहुलेकर के बंगले में मुक़ाम के लिए ठहरे थे। उन्होंने यशवंतराव का झंडा वंदन का कार्यक्रम देखा था। यह कार्यक्रम देखने के बाद उन्होंने प्रधान अध्यापक से पूछताछ शुरू की।

इधर पांडू तात्या डोईफोडे को पुलिस ने गिरफ्तार किया। दूसरे दिन यशवंतराव ११ बजे हाइस्कूल में गए। हाइस्कूल शुरू हुआ और यशवंत अपनी कक्षा में बैठे। हाइस्कूल की तासिका शुरू थी। पर यशवंतराव का उस में ध्यान नहीं था। हाईस्कूल की तासिका समाप्त होने से पहले मुख्याध्यापक एक पुलिस अधिकारी को लेकर यशवंतराव की कक्षा में आए। उन्होंने यशवंतराव को बाहर बुलाकर झंडा वंदन के कार्यक्रम के बारे में पूछा -

यशवंतराव ने कहा - 'हाँ, मैंने यह सब किया और ऐसा करते रहना मेरा निश्चय है।'

पुलिस अधिकारीने मुख्याध्यापक से कहा,

'मैं इस विद्यार्थी को गिरफ्तार करता हूँ और ले जाता हूँ। उसके अभिभावकों सूचना दो।'

और इस प्रकार यशवंतराव की पहली शास्त्रशुद्ध गिरफ्तारी हुई।

पूरे दिनभर पुलिस-कचहरी में यशवंतराव को बिठाकर रखा। वे बीच बीच में यशवंतराव के पास आते और उनसे कुछ जानकारी मिलती है कि नहीं, इसकी पूछताछ करते। लेकिन यशवंतराव कुछ भी नहीं कहते थे। दिनभर प्रयत्न करनेपर भी यशवंतराव की ओर से कुछ अधिक जानकारी नहीं मिलती, यह देखने के बाद रात होते ही उन्होंने यशवंतराव को जेल की एक कोठरी में ढकेल दिया।

यशवंतराव के घर के लोगों को यह खबर मिली थी। पर वे इस संबंध में कुछ नहीं कर सकते थे।

कुछ दिन चले जाने के बाद एक दिन यशवंतराव और तात्या डोईफोडे इन दोनों को मॅजिस्ट्रेट के आगे खड़ा कर दिया। उन्हें उन पर लगाये गए इलज़ाम पढ़कर दिखाये गए। यशवंतराव ने अपने ऊपर लगाए इलजाम स्वीकार किये। फिर मॅजिस्ट्रेट का काम आसान हो गया। उसने तुरंत यशवंतराव को अठारह महिनों की सख्त कैदी की सजा फरमायी और मुकदमे का काम समाप्त हुआ।

एक मिनट के पहले यशवंतराव कच्चे कैदी थे और अब पक्के कैदी बन गये। उस उम्र में अठराह महीने घर से और गाँव से दूर रहने की कल्पना यशवंतराव को थोडी-सी अस्वस्थ करनेवाली लगी।

सजा के दूसरे दिन माँ और घर के सब लोग यशवंतराव से मिलने के लिए आये। उनके साथ उनकी मराठी शाला में एक पुराने शिक्षक भी आये थे। पुलिस ने यशवंतराव को कोठरी से बाहर निकाला और उनके पहरे में उन्हें फौजदार के कार्यालय की ओर ले गये। फौजदार की उपस्थिति में माँ की भेंट हुई। यशवंतराव को देखते ही माँ की आँखों में आँसू आये। यशवंतराव उम्र से छोटे, इसी उम्र में सजा, वह भी दीर्घ अवधि की। इसलिए माँ का रोना स्वाभाविक था। शिक्षक घर के लोगों को दिलासा दे रहे थे। बीच में ही उन्होंने यशवंतराव से कहा -

'फौजदार साहब दयालु हैं। क्षमा मांगी तो छोड देंगे।'

'मास्तर, क्या बोलते हो तुम? क्षमा माँगना! मुआफी मांगने का कोई एक कारण नहीं। तबीयत को संभालो।'

'देव अपने पीठ के पीछे हैं।' माँ ने यह बात कहीं और उठकर चली गयी।

यशवंतराव और माँ की भेंट समाप्त हुई।

'माँ के इस स्वाभिमानी गुण की धरोहर अपने हृदय में सुरक्षित रखकर यशवंतराव अपनी कोठरी में वापस गये। वे अपने मन से निश्चिंत हो गये।'

यशवंतरावने कहा था कि - 'आज जब यह प्रसंग याद आता है, तब माँ का यह बडप्पन मुझे कितना उदात्त मोड़ देकर गया, यह मुझे महसूस होता है।'

जिन्दगी में बहुत वर्ष दुःख की साथ करने पर भी दिलासा देना, दिलदार रहना यह ईश्वर की देन होती है।

यशवंतराव कहते हैं कि - 'मेरी माँ का जीवन हमेशा दीपक की ज्योति के समान लगता है। दीपक जलता है। उसके प्रकाश में मनुष्य विचरते हैं, घूमते हैं। लेकिन लोगों को मेरा उपयोग होता है, यह उस ज्योति को, उस प्रकाश को मालूम नहीं होता। उस दीपक ज्योति का जलना मेरी माँ का जलना है।'

यशवंतराव कहते हैं -'पेड़ पर झंडा फहराने के कारण मुझे सजा हुई।' ऐसे अनेक प्रसंग आगे मेरे जीवन में आये। दुःख के प्रसंग आये, वैसे सुख के भी प्रसंग आये। हर प्रसंग के समय मेरी माँ एक ही वाक्य बोलती रहती थी कि - 'ईश्वर अपने पीठ के पीछे हैं।' यशवंतराव के जीवन की कठिन सफर में उन्हें ईश्वर अपने पीठ के पीछे हैं का अनुभव आता रहा।

ऐसा पुत्र-प्रेम और मातृभक्ति अन्यत्र दुर्लभ है।

(१७) सौ. वेणूताई की गिरफ्तारी

१५ जनवरी को यशवंतराव को कराड से संदेश आया कि १४ जनवरी को अर्थात संक्रांति के दिन कराड पुलिस ने उनकी पत्नी वेणूताई को गिरफ्तार कर कराड के जेल में रखा है। पुलिस वहाँ तक जायेगी ऐसी यशवंतराव की अपेक्षा नहीं थी। वह भी उसके विवाह के बाद पहले संक्रांति के दिन उसे इस प्रकार जेल में जाना पडा, यह बात उसे अच्छी नहीं लगी। इस बात का उसकी तबीयत पर और मनःस्थितिपर क्या परिणाम होगा। यशवंतराव को इस बात की चिंता लगी हुई थी। यशवंतराव के परिवार को आंदोलन का अनुभव था। लेकिन वह जिस घर में से यशवंतराव के घर में आयी थी, वह घर यशवंतराव के घर की अपेक्षा अधिक सुस्थिति में था। उसके पिताजी अभी अभी चल बसे थे। वे बडोदा महाराजा के निजी काम करते थे। उनके विश्वासपात्र गृहस्थ थे। तब उनकी रहन-सहन और जीवन पद्धति उच्च दर्जे की थी। इस पद्धति का विचार करते हुए विवाह के बाद उसे तुरंत जेल में जाना पडा, यह बात मानसिक यंत्रणा देनेवाली थी, ऐसे कुछ विचार यशवंतराव के मन में आ गये। लेकिन यशवंतराव ने स्वयं को समझाया कि प्रत्यक्ष बलिदान करने का काम लोग आंदोलन में करते हैं, तो इस इतनीसी मामूली बात का अपने मनपर बोझ क्यों। इसलिए यशवंतराव ने इस बोझ को दूर कर दिया।

सौ. वेणूताई को पुलिसों ने लगभग छः सप्ताह कराड और इस्लामपूर जेल में रखा था।

आंदोलन समाप्त होनेपर मैंने जब उसे पूछा -

'पुलिसोंने तुम्हारे साथ कैसा बर्ताव किया?'

तब उसने कहा –

'पुलिस जैसे बर्ताव करती है, वैसा बर्ताव किया।'

जब वे पूछताछ के प्रश्न पूछते थे, तब प्रश्न पूछने की पद्धति में उद्धता थी। पर शेष कुछ परेशानी नहीं हुई। जेल का अन्न घर के अन्न जैसा नहीं था। इसलिए उसे जो कुछ थोडा बहुत कष्ट हुआ होगा।

इस पद्धति से हमारे परिवार पर भूमिगत आंदोलन का आघात धीरे–धीरे पड रहा था। श्री. गणपतराव विजापूर जेल में थे। सौ. वेणूताई कराड या इस्लामपूर जेल में थी। और यशवंतराव ऐसे ही कहीं घुमक्कडी करते हुए घूमते फिरते रहे। इसकी कुछ टीस यशवंतरावजी के मन को हमेशा लगी रही।

यशवंतरावजी पुणे शहर और जिले के ग्रामीण क्षेत्र में भूमिगत पद्धति से काम करके नये संपर्क सूत्र जोडने का प्रयत्न कर रहे थे। इस समय एक दिन मई महीने के मध्य में यशवंतरावजी को फलटण से संदेश आया कि सौ. वेणूताई की तबीयत बिगड गयी है और वह मरणोन्मुख है। उस पूरे दिन और रात में यशवंतराव सो नहीं सके। मेरा कर्तव्य क्या है, इसका यशवंतराव अपने मन में विचार करने लगे कि – 'परिवार के लिए मेरी कुछ जिम्मेदारी है कि नहीं, इसी विचार से मैं अस्वस्थ हो गया और दूसरे दिन फलटण जाने का निर्णय लिया।'

यशवंतराव फलटण पहुँचे। यशवंतराव फलटण आनेपर वेणूताई की तबीयत पर अच्छा परिणाम हुआ। उसके मन का धैर्य बढ़ गया। उसकी बीमारी जैसे शारीरिक थी वैसे वह मानसिक भी थी। यशवंतरावने वेणूताई से कहा कि आज का दिन यहाँ रहूँगा और रात में निकलकर जाऊँगा। फलटण में डॉक्टर बर्वे प्रसिद्ध देशभक्त थे। यशवंतरावने उन्हें बुलाया। यशवंतराव को देखकर उन्हें धक्का लगा। यशवंतराव ने उन्हें सभी परिस्थिति और उनकी मानसिक स्थिति की कल्पना दी।

यशवंतराव ने उनसे कहा – 'किसी अच्छे डॉक्टर के पास वेणूताई को सौंपा जाना चाहिए, इसलिए मैं यहाँ आया हूँ।'

डॉ. बर्वे ने यशवंतराव की बात स्वीकार की और उस दिन यशवंतराव वहाँ ठहरे।

यशवंतराव की कल्पना के अनुसार वे वहाँ आने की जानकारी बहुत कम लोगों को होगी। लेकिन कहा नहीं जा सकता। आसपास के घरों में रहनेवाले लोगों में से किसीने देखा होगा। क्योंकि दूसरे दिन वे वेणूताई के पास बैठे थे। उसी दिन दुपहर के समय संस्थान के पुलिसोंने उनके ससुराल के घर को घेरा डाल दिया।

यशवंतराव का छोटा साला बाबासाहब मोरे फलटण में ही था। उसने यशवंतराव

से आकर कहा कि पुलिस आयी हैं। यशवंतराव समझ चुके कि उनकी भूमिगत आयु समाप्त हो गयी। उन्हें एकही चिंता थी कि उनकी गिरफ्तारी का परिणाम वेणूताई की तबीयत पर क्या होता है? क्योंकि पुलिस ने आकर उसके समक्ष यशवंतराव को गिरफ्तार किया था। यशवंतराव ने वेणूताई को समझाया और कहा कि –

'मुझे कुछ नहीं होगा, तुम चिंता मत करो। अब तो तुम अपनी तबीयत की ओर ध्यान दो और फलटण में मत रहो और तुरंत कराड में माँ के पास चली जाओ।'

सौ. वेणूताई की तबीयत अच्छी नहीं थी। लेकिन उन्होंने यशवंतराव की गिरफ्तारी का प्रकार बडे धैर्य से सहन किया और उस रात में फलटण संस्थान ने बाँधे हुए नये जेल में प्रथम राजकैदी के रूप में यशवंतराव का मुकाम हुआ।

आश्चर्य इस बात का है कि उस रात में यशवंतरावजी गहरी नींद में सो गये। यशवंतराव की जिम्मेदारियाँ और चिंताएँ समाप्त हो गयी थी। दस महिनों का उनका भूमिगत जीवन समाप्त हुआ था। अब सरकार के हाथ में जो होगा वह सरकार करेगी। ऐसा विचार उनके मन में आया।

यशवंतराव जेल में हैं, यह समझने के बाद उनकी माँ उनसे मिलने के लिए आयी। यशवंतराव ने जेल के प्रमुख अधिकारियों से प्रार्थना की कि मैं जब मेरी माँ से मिलूँगा तब तुम में से वहाँ कोई पुलिस या अधिकारी उपस्थित न हो। वह दुःखी है, उसे इससे मुक्त होना है। इसलिए वहाँ तिसरा मनुष्य होना ठीक नहीं है। उस जेल के अधिकारी के पास मानवता थी। उसने कहा कि मैं वैसी व्यवस्था करता हूँ। लगभग छः महिनों के बाद यशवंतराव अपनी माँ से मिल रहे थे। दादा की मृत्यु का दुःख उन्होंने रो–रोकर हलका किया था। मेंने उसे समझाया। यशवंतराव की तबीयत अच्छी है यह देखकर माँ खुश हुई। इस दुःख के समय यशवंतराव इतने दिन अपनी माँ से मिले नहीं थे। यशवंतराव के मन में यह जो चुभन थी, वह कम हो गयी।

दो तीन सप्ताह बीत गये और उसके बाद सौ. वेणूताई के आग्रह से वह और यशवंतराव दोनों भी दो दिन के मुक़ाम के लिए फलटण चले गये। आश्चर्य की बात तो यह है कि फलटण में रहते हुए फिर से सातारा जिले के पुलिस अधिकारी प्रतिबंधक स्थानबद्धता कानून का वारंट लेकर आये थे। जिस स्थानपर यशवंतराव को पहले पहल गिरफ्तार किया था, उस स्थान पर आये थे। सौ. वेणूताई को तो धक्का लगा। उसे लगा कि यशवंतराव फलटण आये कि उन्हें गिरफ्तार किया जाता है। सौ. वेणूताई ने यशवंतराव से कहा – 'मैंने तुम्हे फलटण आनेका किसलिए आग्रह किया।' इस प्रकार वह दुःख करने लगी। यशवंतराव ने उसे समझाया और उसके साथ यशवंतराव कराड की ओर निकल पडे। यशवंतराव ने पुलिस अधिकारी से कहा– 'मैं मेरी पत्नी को घर में छोड दूँगा

और वहाँ मैं तुम्हारे कब्जे में आऊँगा। तब तक तुम्हारा प्रबंध मेरे आसपास रखने के लिए मेरा कोई हर्ज नहीं है। उसके अनुसार सब हुआ और फिर येरवडा की सफर शुरू हुई।'

इस समय यशवंतराव को 'ब' वर्ग नहीं दिया गया। येरवडा के कैदियों के लिए जो तीसरा वर्तुल है उसमें से एक बराकी में यशवंतराव को भेज दिया। इस बराकी में यशवंतरावजी को जिले में अनेक कार्यकर्ता, मित्र मिल गये। उन्हें याद आता है कि वहाँ आत्माराम जाधव, हरिभाऊ लाड जैसे अनेक कार्यकर्ता मिले। आत्माराम बापू को जो भयंकर यंत्रणाएँ दी गयी थी, वही यंत्रणाएँ आत्माराम बापू ने यशवंतराव को इसी बराकी में कह दी। यशवंतराव की सामनेवाली बराकी में श्री. ना. ग. गोरे और सहयोगी मित्र थे। यशवंतराव की और उन मित्रों की बीच बीच में भेंट होती थी।

इन तीन महिनों में यशवंतराव का कुछ विशेष पठन नहीं हुआ था। लेकिन उन्हें कार्यकर्ताओं का सहवास तो मिल गया था। उनके साथ गपशप करना, अपने अनुभव कहना, उनके अनुभव सुनना आदि में उनका सारा समय बीत गया। इन तीन महीनों में यशवंतराव की तबीयत अच्छी नहीं रही। घर की ओर से गणपतराव की तबीयत का समाचार आता था। वे डॉक्टर से औषध लेते थे और गृहस्थी चलाने का प्रयत्न कर रहे थे। यशवंतराव के मन में विचार संघर्ष शुरू हुआ था कि मैं मेरे परिवार के लिए कितनी यंत्रणाएँ दूँ? दादा गये, गणपतराव गंभीर बीमारी से बीमार है। सौ. वेणूताई की तबीयत ठीक नहीं है। माँ कुछ बिना बोले सब सहन कर रही थी। लेकिन वह दुःखी है। उन्होंने मुझ से बहुत अपेक्षाएँ की होंगी। लेकिन यशवंतरावने उसकी कुछ भी अपेक्षाएँ पूरी नहीं की। उनके मन में यह जो चुभन है वह उन्हें जीवन भर चुभती रही।

सौ. वेणूताई की तबीयत कभी ठीक रहती, कभी बिगडती। इसलिए वेणूताई को मिरज के अस्पताल में रखा गया। यशवंतराव भी वहाँ गये। एक डॉक्टरने उनकी तबीयत देखी, उसकी जाँच की और थोडे ही दिनों में औषध से वेणूताई की तबीयत अच्छी हुई। यशवंतरावजी को बहुत आनंद हुआ। उतना आनंद उन्हें कभी नहीं हुआ। यशवंतराव की यह पत्नी निष्ठा प्रशंसनीय, प्रेरणादायी और अनुकरणीय है।

(१८) यशवंतराव की करुणा

वडूज जि. सातारा का स्वातंत्र्य आंदोलन – इतिहास में अमर हो गया है। वडूज में जब सब आंदोलनकारियों ने एकत्र होकर मोर्चा निकाला तब अँग्रेज सरकार की पुलिसों ने उन पर अंदाधुंद गोलीबार किया था। उन में छः सात लोग मारे गये। सबके आगे परशुराम घार्गे था।

यशवंतरावने यह सब देखा और वे एक तरफ जाकर छुपकर बैठे थे। उनकी आँखों

से आँसू बह रहे थे। उस समय वहाँ व्यंकटराव आये और उन्होंने यशवंतरावजी से पूछा – 'आपकी आँखों में आँसू क्यों?' तब यशवंतरावजीने कहा – 'व्यंकटरावजी, इन लोगों ने स्वतंत्रता के लिए बलिदान किया है। उन्होंने अपने परिवार तक का विचार नहीं किया है। अब उनके परिवार में लोगों की क्या हालत होगी। वे क्या खायेंगे, और कैसे रहेंगे? उन्हें किसका आधार है, इसी चिंता में मैं हूँ।'

व्यंकटरावने कहा – 'यशवंतराव चिंता मत कीजिए। मैं उन सब हुतात्माओं के परिवार की देखभाल करूँगा। तब उनकी बात सुनकर यशवंतरावजी को अच्छा लगा और उनके दुःख का बोझ भी कम हुआ।'

(१९) देशभक्तों के प्रति यशवंतराव की निष्ठा

अनेक क्रांतिकारकों को जेल में भेज दिया था। वहाँ उन्हें बेहद यंत्रणाएँ दी गयी। नौकरशाही का जिनपर गुस्सा था, ऐसे अनेक क्रांतिकारियों को कोलाहोर के षडयंत्र के जाल में उलझाया था। इसी समय यशवंतराव के भाव-विश्व में क्रांति करनेवाली एक विशेष घटना घटित हो गयी थी। वह घटना है –

'यतीन्द्रदास दास ने शुरू किया हुआ आमरण उपोषण।'

वस्तुतः लाहोर के षडयंत्र से यतीन्द्रदास का दूर से ही संबंध होने का सबूत अँग्रेजों के पास नहीं था। लेकिन २० साल के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के कारण सरकार का उनपर गुस्सा था। पाँच वर्षों में उन्हें चार बार जेल में भेज दिया था। चौथी बार जब मैमनसिंग के जेल में थे, तब उन्हें बहुत यंत्रणाएँ दी गयी, इससे परेशान होकर उन्होंने जेल सुपरिंटेंडेट के साथ संघर्ष किया। इसलिए उन्हें कालकोठरी की प्रखर सजा दी गयी।

राजनैतिक कैदियों के साथ गुनाहगार जैसे बर्ताव किया जाता था यह देखकर सात्विक संताप से यतीन्द्रने जेल में उपोषण शुरू किया था। इससे पहले सरदार भगतसिंग और बटुकेश्वर दत्त इन दोनों ने उपोषण शुरू किया था। उस समय इस उपोषण ने सारे देश का ध्यान आकर्षित किया था। पहले चार-छः दिन बीत जाने पर बहुत चिंता लगी रही। उस समय यशवंतराव की झोपडी कृष्णा नदी के किनारे पर एक खेत में थी। वहाँ से कराड में आकर वे वृत्तपत्र देखते थे कि उपोषण में यतीन्द्रनाथ की तबीयत कैसी है।

क्रांतिकारियों के उपोषण से यशवंतराव अस्वस्थ हुए थे। यतीन्द्रदास की तबीयत उपोषण से कमजोर होती जा रही थी। प्रत्येक दिन यशवंतराव की अस्वस्थता बढ़ रही थी। उस समय अखबार में आनेवाले वर्णन हृदयद्रावक थे। यतीन्द्रनाथ के शरीर पर मुर्दनी छा गयी है, यह बात पढ़कर यशवंतराव अस्वस्थ हो रहे थे। वे बेचैन हो गये थे और घायल हो गये थे। ब्रिटिश सरकार की यह निष्ठुर अमानुषता ने यम को ही लज्जित

करनेवाली है ऐसा उन्हें लगा। जमानत देने की शर्त पर सरकार ने उसकी मुक्तता करने की अनुचित उदारता दिखायी। पर स्वयं यतीन्द्रनाथ ऐसी बदनामी के लिए तैयार नहीं थे। उसकी अपेक्षा उसने इस इहलोक के बंदीवास में से छुटकारा कर लेने की बात सोची होगी।

आखिर वह दुष्ट दिन निकल आया। एक दिन लाहोर के जेल में दोपहर के समय एक के आसपास प्रखर सूर्य को साक्षी रखकर उन्होंने प्राणाहुति दी। मातृभूमि के लिए कण कण से छीजकर उन्होंने तेजस्वी आत्मार्पण किया।

इस घटना से यशवंतराव बेचैन हो गये। उनके बाल मन पर इस घटना का गहरा परिणाम हुआ। देश के लिए प्राणार्पण करनेवाले यतीन्द्रदास मेरे निकट के रिश्तेदार हैं, ऐसे मुझे लगा।

दैनंदिन व्यवहार चल रहे थे। लेकिन यशवंतराव अपने मन में खो गए थे। वे गहरें दुःख में डूब गये थे। कहाँ जाऊँ, क्या करूँ, किसे कहूँ, उन्हें कुछ सुझता नहीं था।

साठवें दिन सारे देश को शोक सागर में डुबाकर उपोषण करनेवाले यतीन्द्रदास का निधन हुआ। उस दिन देवराष्ट्र का छोटा यशवंत अपने वापसी के पथ पर फूटफूटकर रो रहा था। रोते रोते चल रहा था। चलना जरूर था। इसलिए वह चल रहा था और रो रहा था। एक बंगाली कार्यकर्ता के लिए और एक देशभक्त के लिए। जब वे अचेत मन से वे खेत में अपनी झोपडी की ओर चल रहे थे। तब उन्हें वातावरण धुँधला दिखाई दे रहा था।

जब बस्ती पर पहुँचे तब अंधकार हो गया था। पेट में भूख होने पर भी भोजन करने की इच्छा नहीं हुई। वे केवल जमीन पर शांत पडे रहे। वे रात के अंधकार में आकाश में शून्य दृष्टि से देख रहे थे। आकाश में तारकापुंज में यतीन्द्र कहाँ दिख पडते हैं, यह वे पागल जैसे देख रहे थे। लेकिन लगभग ९० दिन अथवा शायद अधिक भी होंगे एक मानसिक क्रांति में से यतीन्द्रदासने धैर्य से यह उपोषण जारी रखा था। राजकैदियों के हक के लिए और ब्रिटिश सत्ता के निषेध करने के लिए उन्होंने जो उपोषण किया था, वह एक बड़ी तपश्चर्या थी। उनकी तपश्चर्या उनकी मृत्यु से पूरी की। यतीन्द्रदास का बलिदान युग-युग के लिए अमर रहेगा।

इतना तो सच है कि इस घटना से यशवंतराव की मनोवृत्ति में बदल हो गया। यशवंतराव देश में घटनेवाली घटनाओं का अर्थ समझ लेने की मनःस्थिति तक पहुँचे थे। जातीय विचारों के संकुचित कांजी हाऊस में से बाहर पडने का उनका विचार पक्का हुआ। उन्होंने निर्णय लिया कि मुझे अपना जीवन देश-कार्य के लिए समर्पित करना चाहिए। उनके बचपन में उन्हें छोटी-छोटी जातियों का और धार्मिक प्रश्नों का थोडा

बहुत आकर्षण था। लेकिन उनके विचार धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहे थे। यह भी उतना सच है। संकुचित वृत्ति से काम करने की अपेक्षा किसी व्यापक दृष्टि से काम करना चाहिए। ऐसे उनके मन का गठन हो रहा था। यतीन्द्रदास की मृत्यु से उनका दृढ निश्चय हुआ और यह प्रश्न यशवंतराव ने अपने आप सुलझाया। क्षण-क्षण से और कण-कण से जिसके लिए देहत्याग करना चाहिए, ऐसे ध्येय और काम इस देश में खूब हैं, उसके लिए तो अपना जीवन है ऐसा उनका विचार था। मुझे मेरे आयु का मतलब समझ गया, ऐसा कहा तो हर्ज नहीं।

(२०) सभी जाति धर्म के प्रति आदर

उस समय श्री. विठ्ठल रामजी शिंदे शैक्षणिक और सामाजिक क्षेत्र में अग्रणी थे। यशवंतराव के मन में उनके बारे में आदर की भावना थी। उनसे मिलना है तो कैसे? अन्त में यशवंतराव अकेले ही पूना गये। सुबह होते ही पूछताछ करते हुए वे श्री. विठ्ठल रामजी शिंदे के घर पहुँचे। श्री. विठ्ठल शिंदे घर में ही थे। नमस्कार करके यशवंतराव ने आने का कारण बताया। वे यशवंतराव की ओर देख रहे थे। पहले पहले वे बहुत नहीं बोले। लेकिन वे बीच बीच में पूछते थे - 'आप कौन है? कहाँ के रहनेवाले, क्या करते हो, घरमें कौन कौन हैं, उनकी स्वीकृति है कि नहीं?' यशवंतराव की बोल-चाल पर बीरीकी से ध्यान था। आखिर कराड आने की अनुमति दी। उसके साथ एक शर्त रखी। उन्होंने कहा -

'मेरे साथ भोजन के लिए हरिजन को भी घर में बुलाना पडेगा।'

मैंने परंतु स्वीकृति दी। तब उन्होंने कहा -

'लेकिन घर में लोगों से पूछा हैं?'

मैंने इन्कार करते हुए कहा -

'सभी जाति के मित्र घर में आते हैं। उस संबंध में माँ की कोई शिकायत नहीं है।'

आखिर हरिजनों के साथ पंगत होगी, इसका विश्वास होने पर उन्होंने अनुमति दी है।

तय किये हुए समय पर वे आये। यशवंतराव को मानो स्वर्ग मिल गया। स्टेशन पर से तांगे से वे गाँव में आये। वे यशवंतराव के साथ घूमे, फिरे। हरिजन बस्ती में आये और कार्यक्रम समाप्त हुआ।

यशवंतराव हररोज शाम के समय सात बजकर तीस मिनट के बाद हरिजन बस्ती में शाला चलाने के लिए जाते थे। उनकी शाला प्रौढ लोगों के लिए थी। उन में से कोई आयेगा, ऐसे मुझे दिख नहीं पडा। फिर वे चार घर में जाकर गये और उनसे शिक्षा के

संबंध में बातचीत की। तब एक वयोवृद्ध मनुष्य को दया आयी और उन्होंने अपने लोगों से कहा –

'अरे लडकों! ये हररोज अपनी ओर आते हैं। तब हम में से कुछ लोगों को पढ़ने के लिए जाना चाहिए।'

दूसरे दिन से पाँच–दस आने लगे। यशवंतरावने अध्यापक का काम किया। सच तो उन्हें इस काम का अनुभव नहीं था। फिर उन्होंने कक्षा चलाने का प्रयत्न किया। उनका यह प्रयोग दो–तीन महिने चला। प्रौढ विद्यार्थियों की संख्या कम हो गयी। उन्होंने बड़े उत्साह से शुरू की हुई शाला अपने आप बंद पड गयी।

यशवंतराव को लगा कि यह सब हक़ीकत कर्मवीर शिंदे को सूचित करनी चाहिए। नहीं तो उन्हें लगेगा कि अपने को धोखा दिया गया। इसलिए मुझे जो अनुभव आया, वह उन्होंने शिंदे को विस्तृत पत्र लिखकर सूचित किया।

(२१) यशवंतराव की नम्रता

एक बूढी फटी हुई साड़ी में कुछ लपेटकर लायी थी। बुढ़ापे के कारण थरथर काँपते–काँपते यशवंतराव से मिलने का प्रयत्न कर रही थी। लेकिन पुलिसों ने उस बूढ़ी को यशवंतराव के पास जाने नहीं दिया। यशवंतरावजी ने यह देखा। उन्होंने उस बूढ़ी को अपने पास बुलाया और पूछा – 'क्यों आयी थी माँ?'

बूढ़ीने उत्तर दिया – 'सभी गाँव यशवंत की प्रशंसा करता है। इसलिए उसे यह फूलों का हार देने की इच्छा है। इसलिए आयी हूँ।' उसने फटी हुई साड़ी में से वह फूलों का हार बाहर निकला और वह हार उसने यशवंतरावजी को दिया और यशवंतरावने वह हार लिया और बूढ़ी के गले में डाल दिया और उन्होंने उसके पैरोंपर मस्तक रखकर नमस्कार किया। उसके बाद उन्होंने वेणूताई से उस बूढी को खाना खिलाने के लिए कहा।

है ऐसी नम्रता किसी बडे नेता के पास?

(२२) यशवंतराव की कृपा, प्रेम और सहानुभूति

बागलाण प्रांत में एक बुढी स्त्री थी। उसका एक लडका था। वह पढा लिखा था। वह नौकरी के लिए जिला अधिकारी कार्यालय में चकरा मार रहा था। लेकिन उसे नौकरी नहीं मिली। इसलिए वह परेशान था। उसे मजदूरी के सिवा मार्ग नहीं था। उसने अपनी बूढी माँ से सारी हक़ीकत कह डाली। उसे काम न मिलने से दो भी माँ बेटे बिना खाये सो जाते थे।

एक दिन वह बूढ़ी बागलाण प्रांत से दिल्ली चली गयी। दिल्ली स्टेशनपर उतरने पर जब वह स्टेशन के बाहर आयी तो चारों ओर रिक्षाएँ और गाडियाँ थी। इससे वह झुंझला गयी। उसने एक रिक्षावाले से पूछा – 'अरं बाबा, आमच्या महाराष्ट्र सायबाचं घर कुठ हाय. त्ये सांग बी अन म्या तुला दोन रुपये देती बग' रिक्षावाले को दया आयी। उसे मालूम था कि महाराष्ट्र का साहब यशवंतराव चव्हाण हैं। उस रिक्षा वाले ने उस बूढ़ी को बंगले के फाटक के सामने छोड दिया और वह चला गया।

छः बजे चव्हाण साहब आये। उन्होंने देखा कि एक बूढी अपने फाटक की तरफ बैठी है। यशवंतराव झुँझला गये। वे गाडी में से नीचे उतरे और बूढ़ीसे पूछा – 'हे माँ, तू कहाँ से आ गयी है?' उसने कहा – 'मैं बागलाण से आयी हूँ।' तुम्हें किससे मिलना है और उनके पास तुम्हारा क्या काम है?

उसने कहा – 'आमच्या महाराष्ट्राचा साहब इथं राहतो म्हणत्यात. आमी उपासीच राहतो बगा. पोरगं शिकलंय, पण जिल्ह्याच्या अधिकारी असतू म्हणं की, त्याच्याकडं पोरगं गेलतं पण त्यानं काय नवकरी दिली नाय. मग आमी जगायचं कसं? का फास घेऊन मरायचं का?' बूढी की बाते सुनकर यशवंतराव उसे बंगले में ले गये। उन्होंने उसे बंगले में दो दिन रख लिया और उन्होंने उस बूढ़ीको चोली साडी पहनाकर सत्कार किया, खिलाया, पिलाया।

उस बूढी के लडके पर अन्याय हुआ था। उस समय यशवंतरावने उस समय नाशिक के संसद सदस्य कहांडोल थे। यशवंतराव ने कहाडोल और नाशिक के जिलाधिकारी को फोन लगाकर इस बूढी के लडके को नौकरी दिलवायी।

यशवंतरावने बूढी से कहा – 'तुम्हारे लडके को नौकरी दी है।' बूढी खुश हुई और उसने यशवंतराव को आशीर्वाद दिया। यशवंतरावने उस बूढी को वापसी का टिकट निकालकर रेल गाडी में बिठाकर नाशिक भेज दिया। जब यह वार्ता अखबार में छपकर आयी तब नाशिक के सभी लोगों को आश्चर्य लगा।

यशवंतराव सर्वोच्च पदपर विराजमान थे। फिर भी उन्होंने सामान्य बूढी को जो सहानुभूति, प्रेम दिखाया वह प्रशंसनीय है।

(३) भारतीय राजनीति में यशवंतरावजी का प्रवेश

(१) पहला चुनाव

१९३७ का साल का चुनाव और १९४६ साल का चुनाव इन दोनों चुनावों में बहुत फर्क है। एक बडा जन-आंदोलन समाप्त हुआ था। द्वितीय महायुद्ध भी समाप्त हुआ था। इस समय उम्मीदवार का चुनाव उच्च स्तर से और सभी के सलाहमशविरे से होना चाहिए। यशवंतराव के अनेक साथीदार भूमिगत हैं और कुछ जेल में हैं। ऐसी परिस्थिति में इसे उम्मीदवारी दो और इसे उम्मीदवारी मत दो, ऐसी चर्चा में कम से कम वे तो भाग नहीं लेंगे और मैं उम्मीदवार हूँ ऐसी बात कहने के लिए यशवंतराव किसी से कहने के लिए नहीं जायेंगे।

चुनाव नजदीक आये थे। इसलिए उम्मीदवारों की चर्चा शुरू होना स्वाभाविक था। स्वामी रामानंद भारती के मत से सभी कार्यकर्ताओं को इकट्टे करके सलाह लेनी चाहिए। भारती के अध्यक्षता में वालवे तहसील में एक गाँव में बडी सभा हुई और बहुत चर्चा हुई। ऐसी बात यशवंतराव ने सुनी थी। यशवंतराव उस सभा में नहीं गये थे। उतावला होकर इस सभा में उपस्थित नहीं रहना चाहिए। ऐसा कुछ विचार यशवंतराव के मन में घर कर गया था और दूसरी बात यह है कि गणपतराव को बीमारी की अवस्था में रखकर चुनाव की राजनीति में भाग लेना, यह कल्पना यशवंतराव को अच्छी नहीं लगती थी। उस सभा में उलट-सुलट, नरम-गरम चर्चाएँ हुई। अन्त में उम्मीदवार के नाम के संबंध में कार्यकर्ताओंने मतदान किया। तब यशवंतराव मिरज में थे। सभा में उपस्थित कार्यकर्ता यशवंतराव से मिलने के लिए शाम के समय मिरज आये। उन्होंने कहा कि - 'सबसे अधिक मत तुम्हारे नाम को मिले हैं। अब तुम आगे पैर रखो और चुनाव की तैयारी में लग जाओ।' यशवंतराव को यही सलाह देने के लिये ये कार्यकर्ता मिरज आये थे। यशवंतराव की 'हाँ' कि 'ना' चर्चा में गणपतराव ने मध्यस्थता की और उन्होंने कहा-

'यदि मेरी बीमारी के लिए तू यह चुनाव नहीं लड़ेगा तो इस अस्पताल में मैं एक क्षणभर भी नहीं रहूँगा। जीवन में कुछ अवसर अपने आप चलकर आते हैं, तब उनका इन्कार नहीं करना चाहिए, उनके सामने जाना चाहिए। ऐसे अवसर फिर आयेंगे, इसका यकीन नहीं होता, दुराग्रह छोड़ दो।'

गणपतराव का शब्द यशवंतरावने स्वीकार किया और उसके बाद उम्मीदवार होने की दृष्टि से यशवंतराव काम में लग गये। यशवंतराव के सभी मित्रों को आनंद हुआ। जिले के प्रमुख नेताओं ने यशवंतराव से पूछा कि अन्य कौन उम्मीदवार होने चाहिए। यशवंतराव के मत से वालवे तहसील की ओर से श्री. के. डी. पाटील को उम्मीदवार के रूप से चुनना चाहिए। उनके नाम को स्वातंत्र्य सैनिकों का समर्थन था। जिला काँग्रेस के पुराने अध्यक्ष श्री. व्यंकटराव पवार ये भी एक उम्मीदवार होने चाहिए। सातारा जिले के दक्षिण भाग के लिए यशवंतराव के नाम के साथ चार नाम स्वीकृत हुए।

पिछले लगभग ४० वर्ष यशवंतराव चुनाव की राजनीति करते हैं। लेकिन इतनी सरल, बिनाखर्च की, तत्त्वनिष्ठ जनता के स्वयंस्फूर्त समर्थन पर आधारित ऐसा कौनसा चुनाव होगा, तो १९४६ का चुनाव है। यह उन्हें स्वीकार करना चाहिए।

(२) १९४६ का चुनाव

१९४२ के आंदोलन के बाद होनेवाला यह पहला चुनाव था। इस आंदोलन का प्रचार यह इस आंदोलन का यश का प्रचार था। लोगों का मन उत्साह से इतना लबालब हुआ था कि हम उम्मीदवार भाषण करने के बजाय केवल नमस्कार करने के लिए लोगों के सामने खड़े रहे तो तालियों की कडकडाहट होती थी। लोगों का प्रेम लबालब भरा हुआ था। हम जहाँ जाते, वहाँ हजारों लोग हमारी राह देखते हुए खड़े रहते थे। यशवंतरावने कहा हम चारों उम्मीदवार प्रचार के लिए एकत्र घूमे,फिरे, उसका भी उचित परिणाम हुआ। यशवंतराव का चुनाव का काम शुरू होने पर श्री. गणपतरावने अस्पताल छोड दिया और सीधे कराड में रहकर वे चुनाव प्रचार के काम में लग गए, यशवंतरावने उनसे कहा भी पर उसका कुछ उपयोग नहीं हुआ। अपना भाई बम्बई विधान सभा के लिए चुनाव लड़ रहा है, इसका ही उन्हें बहुत आनंद हुआ था। उनके उस आनंद में कुछ कमी आये, ऐसी इच्छा यशवंतराव के मन में नहीं थी। इसलिए यशवंतरावने वह प्रश्न वहाँ ही छोड दिया।

पिछले चालीस वर्षों में यशवंतराव ने विधान सभा और संसद के दस चुनाव लडे। कभी थोडे मतों से, कबी लाख मतों से तो कभी बिना विरोध ऐसे सभी चुनाव यशवंतराव ने जीते हैं। हर एक चुनाव में अलग अनुभव, राजनैतिक कसौटियाँ अलग, राजनैतिक पक्ष भी अलग थे। लेकिन १९४६ के चुनाव के समान दूसरा सर्वमान्य चुनाव कभी नहीं हुआ था। यह और नाशिक का लोकसभा का चुनाव छोड़ दिया जाय तो यशवंतराव के सभी चुनाव तूफानी हो गये थे। प्रतिपक्षों ने अपनी अपनी तोफें दाग दी थी। उन्होंने अभद्र और कटुता का प्रचार किया। इन सभी चुनाव में यशवंतराव अपने आप ही प्रचारक थे।

यशवंतराव के ध्यान में आया था कि संभाषण शैली में मिलनसार स्वभाव, सुसंस्कृत, तत्त्वनिष्ठ और प्रांजल प्रचार ये उनकी बडी शक्ति है। इन सभी तूफानों में जनता के आशीर्वादसे और उनके कार्यकर्ता, मित्रों के सहयोग से यशवंतराव अपराजित रह गए। जनतंत्र राजनीति में इसकी अपेक्षा अधिक करने की क्या जरूरी है?

लोकसभा के लिए १९६३ में यशवंतराव नाशिक जिले में से चुनाव लडें तब किसी के विरोध के बिना वे चुनकर आये। इसी कारण से लोगों में प्रचार के लिए जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी और जनसंपर्क भी नहीं हुआ। इस चुनाव में यह एक त्रुटि यशवंतराव को महसूस हुई। नाशिक के लोगों ने यशवंतराव को विरोध किये बिना चुनकर दिया, इसका उन्हें हमेशा अभिमान लगता है। नाशिक के चुनाव के बाद नाशिक में भरी हुई सभा में कवि कुसुमाग्रज ने जो उद्‌गार निकाले थे, वे उद्‌गार यशवंतरावजी कभी नहीं भूलेंगे।

'भूगोल में कृष्णा-गोदावरी संगम नहीं है - पर इतिहास में इस चुनाव के कारण यह संगम हुआ है।'

यशवंतराव और उनके साथीदार चुनाव जीतकर आये। यशवंतरावजीने जीवन के एक नये क्षेत्र में प्रवेश किया था। इस चुनाव से यशवंतराव के जीवन में संपूर्ण बदल हुआ है, यह बात उन्हें स्वीकृत करनी चाहिए। यशवंतराव अपने बंधु की सलाह न मानते हुए थोडा दूर रहने का प्रयत्न करते तो उनकी आयु में यह बड़ी गलती हो जाती। वे इस बात को प्रामाणिकता से स्वीकृत करते हैं।

चुनाव में यश मिलने पर यशवंतरावने माँ के चरणों को स्पर्श कर के नमस्कार किया।

उसके बाद अनेक महिलाओं ने यशवंतराव की आरती उतारी।

यशवंतराव की पत्नी सौ. वेणूताई ने भी यशवंतराव की आरती उतारी। तब यशवंतराव की आँखों में आँसू आये। उन्होंने उससे कहा -

'वेणूबाई, इस यश में तुम्हारा हिस्सा है।'

वह तनिक हँसी और कहा -

'ऐसा बँटवारा नहीं करना चाहिए।'

स्वातंत्र्य लडाई में होनेवाले अनेक मित्र आये और आँखों में आँसू लाकर गले में गला डालकर अभिनंदन करके चले गये।

यशवंतरावने यश के आनंद का अनुभव लिया, वह कुछ और ही था।

जीवन में ऐसे क्षण एकाध बार आते हैं।

(३) पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी

१९४६ के मार्च महिने में चुनाव हुआ था और मार्च की तीस तारीख को काँग्रेस पार्ल मेंटरी बोर्ड की सभा बम्बई प्रदेश काँग्रेस कमिटी के कार्यालय में भरी थी। पक्ष की सभा यह एक औपचारिक सभा थी। श्री. बालासाहब खेर पक्ष नेता चुने गये। उस समय सरदार पटेल भी उपस्थित थे। उन्होंने आशीर्वादात्मक भाषण किया और सभा समाप्त हुई। मंत्रिमंडल बनाने की चर्चा शुरू हुई। उनकी और श्री. बालासाहब खेर की पहचान नहीं थी। इसलिए बालासाहब से मिलने की बात यशवंतराव के मन में नहीं आयी। श्री. भाऊसाहब सोमण हरिजन उम्मीदवार के लिए प्रयत्न करने के लिए आये थे। यही बात उन्होंने यशवंतराव से कहीं थी। श्री. सोमण यशवंतरावके लिए किसी से कह दे, ऐसा प्रश्न ही निर्माण नहीं हुआ। लेकिन श्री. के. डी. पाटील की इच्छा थी कि हमे भी कुछ प्रयत्न करना चाहिए। उनकी और मोरारजीभाई देसाई की येरवडा जेल में पहचान हुई थी। उनके मन में आया कि मोरारजीभाई से मिलना चाहिए। लेकिन यशवंतरावने उन्हें रोक लिया। यशवंतरावने उनसे कहा -

'अपना काम और अपने नाम नेताओं को मालूम होने चाहिए। नहीं तो वे नेता कैसे? आप कृपा करके मेरे लिए प्रयत्न करने के लिए मत जाओ। तुम्हारे लिए प्रयत्न करना है तो जरूर जाओ।'

यशवंतरावने कहा -

'मुझे मंत्रिमंडल में जाने की बिलकुल इच्छा नहीं है। प्रयत्न करना होगा तो तुम्हारे लिए।'

ऐसा ही एक दिन बीत जानेपर यशवंतराव के जिले में से चुनकर आये हुए विधानसभा सदस्य श्री. बाबासाहब शिंदे और शिराला पेटा के निवासी बम्बई में वकालत करनेवाले श्री. माधवराव देशपांडे यशवंतराव की खोज करते हुए माधवाश्रम में आये। श्री. के. डी. पाटील कहीं बाहर गये थे। वहाँ यशवंतराव अकेले ही थे। श्री. बाबासाहब शिंदेने यशवंतराव को अपने साथ चलने का आग्रह किया। उन्होंने कहा -

'श्री. माधवराव देशपांडे तुम्हे ले जाने के लिए आये हैं। उनके साथ हम जायेंगे।'

'किसलिए? कहाँ?' यह यशवंतरावने पूछा। पर उन्होंने उत्तर देने के लिए टालमटोल की। वे गाडी लेकर आये थे और वे उनकी गाडी में ही गये।

यशवंतराव ने उनसे पूछा -

'हम कहाँ जा रहे हैं।'

श्री. माधवराव देशपांडे ने कहा -

'हम उपनगर में चले जा रहे हैं। श्री. बालासाहब खेर ने तुम्हे ले आने के लिए कहा है। इसलिए मैं तुम्हारे पास आया हूँ।'

इस समय तक हम श्री. बालासाहब के बंगले के दरवाजे तक पहुँचे। यशवंतराव कुछ आश्चर्यचकित हो गये थे। वे कुछ झुँझला गये थे। मेरे साथ होनेवाले दो ज्येष्ठ मित्रों के साथ यशवंतराव ने उस घर में प्रवेश किया और हम बालासाहब की बैठक में जाकर खड़े रहे। साधा पोशाख पहने हुए श्री. बालासाहब खेर हमेशा की तरह हँसते हुए, नमस्कार करते हुए आगे आये और कहा -

'आइए चव्हाण, आइए, बैठिए।'

'मैं तुम्हें मंत्रिमंडल में ले नहीं सकता। पर मैंने पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी (संसदीय सचिव) के लिए तुम्हारा चुनाव किया है।'

यह सब यशवंतराव को बिलकुल अनपेक्षित था।

उसके संबंध में हमे क्या बोलना चाहिए, यह यशवंतराव के ध्यान में नहीं आया। उन्होंने कहा, 'ठीक है, मैं घर जाकर वापस आता हूँ। मैं कुछ जल्दी उपस्थित नहीं रहूँगा।'

यशवंतराव जब इस घटना का विचार करते हैं, तब उन्हें पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी का पद दिया गया था। इसलिए यह उन्हें कुछ अच्छा नहीं लगा था। उनका काम और उनकी जानकारी की तुलना से यह मामूली काम है, ऐसी उनकी भावना हुई थी।

वहाँ चर्चा किये बिना हम वहाँ से निकले। यशवंतराव ने बालासाहब खेर के आभार माने। उन्होंने दोनों मित्रों के भी आभार माने।

श्री. बालासाहब शिंदे को यशवंतराव की मनःस्थिति समझी होगी। बाहर आने के बाद उन्होंने यशवंतराव से कहा,

'यशवंतराव, गलती करोगे। इन्कार मत करो। तुम्हारी फुरसत से क्यों न हो, पर आकर उपस्थित रहो।'

बाबासाहब का यशवंतराव पर बहुत लोभ था। यशवंतराव ने उनके भी आभार माने और टॅक्सी कर के माधवाश्रम में आये। तब तक के. डी. भी वहाँ वापस आये थे। यशवंतराव ने सब वृत्तान्त उन्हें कह दिया। श्री. के. डी. ये बड़े व्यवहारी मनुष्य थे। यशवंतराव ने उनके पास उनकी भावना स्पष्ट की। तब उन्होंने कहा,

'तुम्हारी भावना मैं समझ सकता हूँ। पर बाबासाहब शिंदे ने जो सलाह दी है, उसे मानकर चलना चाहिए।'

यशवंतराव को उनकी सभी बातें समझ में आ रही थी। पर पसंद नहीं लग रही थी।

यशवंतरावने कहा,

'मुझे इस संबंध में विचार करना चाहिए। मैं जल्दी से हाजिर नहीं रहूँगा। हम अब वापस जायेंगे।'

श्री.बालासाहब खेर ने नामों की घोषणा की। उस में यशवंतराव का नाम पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी के रूप में प्रसिद्ध हुआ और इस प्रसिद्धी के वातावरण में यशवंतराव कराड पहुँचे।

श्री. गणपतराव की कुछ निराशा हुई दिख पड़ी। यशवंतराव ने उनसे - मुझे क्या लगता है, वह कह दिया। उन्होंने सलाह मान लेनी चाहिए, ऐसा मत व्यक्त किया।

उसके बाद दस दिन यशवंतराव कराड में थे और अन्य मित्रों से चर्चा कर रहे थे। सभी का मनोदय था - 'मुझे जाना चाहिए।'

सौ. वेणूताई के मन में क्या है, यह जानने का प्रयत्न यशवंतराव ने किया।

सौ. वेणूताई ने कहा - 'आज तक इतने बडे कठिन निर्णय लिये, तब आप के मन की द्विधा अवस्था नहीं हुई थी। फिर अब ही ऐसे क्यों?'

यशवंतराव इसका अर्थ समझ गये।

अन्त में यशवंतराव ने अपनी माँ से पूछा - तब माँ ने कहा,

'मुझे तुम्हारी राजनीति समझती नहीं। लेकिन तुम्हें कुछ नया काम करने का मौका आया है, तो अब इन्कार मत करो।'

यशवंतराव के लिये यह वरिष्ठ न्यायालय का आदेश था। इसलिए यशवंतरावने बम्बई जाने का निर्णय लिया।

दूसरे दिन शाम के समय सबसे बिदा ली। और फिर माँ के पैरों पर मस्तक रखकर यशवंतराव घर के बाहर निकल पडे और बम्बई पहुँचे।

यशवंतराव मन में विचार करने लगे कि - 'मेरे जीवन में बडा बदल हुआ है। कृष्णा के किनारे पर मैं बढ़ गया, घूमा, फिरा, संघर्ष किया। अनेक नये काम किये, मित्रता की, अनेक मनुष्यों से संबंध प्रस्थापित किये। बडे अभिमान का आनंद का काल था। अब मैं कृष्णा का किनारा छोड़कर नये क्षितिज की ओर जा रहा हूँ। अब वह क्षितिज रंग बिरंगा दिख रहा हैं। लेकिन प्रत्यक्ष वहाँ पहुँचने तक क्या वैसे रहेंगे? यह बात कौन जाने?'

यशवंतराव ऐसे विचार के धुन में थे। ठीक उसी समय उनके जिले के रिपब्लिकन पक्ष के एक नेता रावसाहब मधाले यशवंतराव के पास आये और कहा,

'कहाँ जा रहे हो?'

यशवंतरावने उनसे कहा -

‘बम्बई।’ नया काम करने के लिए।

उन्होंने आनंद व्यक्त किया और उन्होंने कहा,

‘तुम बहुत अच्छे दिन यह नया काम स्वीकार कर रहे हो।’

यशवंतरावने कहा,

‘मैं पंचांग देखकर नहीं जा रहा हूँ। लेकिन आज कौनसा महत्त्वपूर्ण दिन है?’

उन्होंने कहा – ‘आज १४ अप्रैल का दिन है। डॉक्टर आंबेडकर का आज जन्मदिन है।’

यशवंतरावने कहा –

‘बहुत अच्छा संयोग है।’ मेरे ध्यान में न होते हुए यह दिन चुना गया। यह मेरे जीवन की महत्त्वपूर्ण घटना है, यह मैं मानता हूँ।

और हमारी डेक्कन क्वीन खंडाली की घाटी में से एक के पीछे एक सुरंग छोडते हुए तीव्र गति से आगे जा रही थी।

कभी अंधकार, तो कभी प्रकाश में हमारी सफर आगे बढ़ रही है।

क्या अगले जीवन का यह प्रतीक तो नहीं है?

(४) विशाल द्विभाषिक और संयुक्त महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री

२६ फरवरी १९६१ में रविवार का दिन। यशवंतराव अहमदाबाद के दौरे पर जाने के लिए निकल पडे थे। उसी समय तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी ने उनसे पूछा – ‘यशवंतराव, परसो मैंने दी हुई दो अंग्रेजी पुस्तके क्या आपने पढी है?’ यशवंतराव ने कहा कि मुझे समय ही नहीं मिला। आजकल काम की व्याप्ति इतनी बढ़ी है कि पुस्तके पढ़ने के लिए समय ही नहीं मिलता। ऐसी ही परिस्थिति रहेगी तो मुझे लगता है कि छः वर्षों में मैं अज्ञानी बन जाऊँगा।

यशवंतराव की परिस्थिति ऐसी है कि लोग जब सोने देंगे तब सो जायेंगे, लोक जब भोजन करने देंगे तब भोजन करेंगे।

म. गांधी की इच्छानुसार एक गरीब किसान का बेटा आज महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के पद पर आरूढ हुआ है।

जो अपनी विद्यार्थी अवस्था में शाला की फीस भी भर नहीं सकता था, जिसके शरीर पर कोट और पैरों में जूते डालना भी असंभव था, जिसकी माता को कष्ट मजदूरी करना पडता था ऐसी गरीबी की परिस्थिति बितानेवाला यह ‘यशवंत’ आगे महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री होगा ऐसा किसी के भी सपने में आया नहीं होगा। यशवंतरावजी ने १९३० के गांधी प्रणित असहकारिता के आंदोलन में भाग लिया। किसी की परवाह किये बिना गांधीजी के राजनीतिक आंदोलन में सामील होना अर्थात सभी संकटों को गले लगाना होगा – मतलब फकीरी से दोस्ताना करना था।

गांधीजी की पुकार सुनकर यशवंतराव ने आगे पीछे नहीं देखा। उन्होंने अपने घर और जीवन की परवाह नहीं की। उन्होंने एक के पीछे एक आनेवाले संकटों का मुकाबला किया। १९३२ में उन्हें अठारह महिनों की सजा भुगतनी पडी। उन्होंने १९४१ में वकालत शुरू की। १९४२ के ‘करेंगे या मरेंगे’ की लडाई में वे कूद पडे। आगे वे भूमिगत हुए। बडे भाई की मौत हो गयी। नवविवाहित पत्नी को गिरफ्तार किया गया और वह आगे बहुत बीमार पडी। परंतु यशवंतराव इन दिनों में डगमगाये नहीं। ध्येय से उनका मन विचलित नहीं हुआ।

इस समय उनकी वीर माता ने और सहनशील पत्नी ने बड़ा धैर्य दिखाया। यशवंतराव

के बडप्पन का श्रेय इन दोनों को है।

'मैं महात्मा हुआ इसका कारण मेरी कस्तुरबा' ये उद्‌गार निकलकर गांधीजी ने स्री जाति का बडा गौरव किया था। वैसाही प्रभाव वेणूताई के त्याग का यशवंतराव के मन पर है। वेणूताई के कमजोर तबीयत के बारे में किसीने प्रश्न पूछा - तो यशवंतराव कहते हैं कि उनकी तबीयत खराब होने के लिए मैं ही कारण हूँ। स्रियों के संबंध में उनकी दृष्टि हमेशा अत्यंत सहानुभूतिपूर्ण थी। उऩका उपहास और असुविधा होती है ऐसा दिख पडनेपर उन्हें वह सहन नहीं होता। एक बार ऐसा प्रसंग आया। असेंब्ली हॉल में काम समाप्त कर वे बाहर ही जाने के लिए निकले तब उन्हें दिख पडा कि विधानसभा भवन की प्रेक्षकों की गॅलरी में कुछ महिलाएँ जगह के अभाव में खड़ी हैं। ये देखतेही वे बेचैन हो गये। उन्होंने तुरंत उनके बैठने की व्यवस्था की। जब वे महिलाएँ बैठी, तब उन्होंने कहा -

'हुआ मेरा काम, अब मैं चलता हूँ। इसलिए तो इतनी देर वे ठहरे थे।'

जवाहरलालजी कहते थे कि गांधीजी का संपूर्ण दृष्टिकोन किसानों का था। हिंदुस्तान के किसानों को अर्थात बहुजन समाज के जीवन से एकरूप हो गये थे। बहुजन समाज के विषय में उनका प्रेम इतना अथाह था कि 'ये लोग हैं इसलिए मेरा अस्तित्व है।' ऐसे गांधीजी कहते थे। यशवंतरावजी का विशाल दृष्टिकोन वैसा ही था।

'मुख्यमंत्री पद की जिम्मेदारी यशवंतराव ने किसान, काम करनेवाले लोगों के लिए ली है। तब मैं जिम्मेदारी के काम में फँस गया, गलती की तो किसान फँस जायेगा और मजदूर भी फँस जायेगा।' ऐसे उनके विचार हैं। आज राष्ट्रपिता गांधी होते तो वे यशवंतराव की ओर देखकर प्रशंसा करते और मेरी स्वातंत्र्य लड़ाई में होनेवाला एक तरुण किसान सैनिक महाराष्ट्र राज्य का मुख्यमंत्री पद विभूषित करता है और किसानों की हिमायत लेकर उनके कल्याण की प्रतिज्ञा करता है।

गांधीजी की ईश्वरनिष्ठा अथाह थी। यशवंतराव भी अन्त में ईश्वरी इच्छा पर निर्भर रहकर निश्‍चिंत होते हैं। जब जब एकाध गुत्थमगुत्थी का, अत्यंत कठिन समस्या का प्रश्न निर्माण होता है, तब क्या करना चाहिए और क्या न करना चाहिए, ऐसे समय वे कहते हैं 'ठीक है, मुझे ईश्वर जो सूचित करेगा अथवा जो प्रेरणा देगा वैसा मैं निर्णय लूँगा।'

विदर्भवासियों का यशवंतराव पर प्रेम है। उसके अनेक कारण हैं। एक तो वर्धा सेवाग्राम में महात्मा गांधी का अनेक वर्षं वास्तव्य था। उस काल में सेवाग्राम भारत की राजनैतिक राजधानी बनी थी। नागपूर विभाग में चार जिलो में रहनेवाली जनता गांधीजी के वास्तव्य से, उनकी विचारप्रणाली से विशेष प्रभावित हुई थी। यशवंतराव आज मुख्यमंत्री हैं इसलिए उन पर विदर्भवासियोंका प्रेम दृढ हुआ है। यही नहीं, युग में होकर,

गाधीजी की पुकार सुनकर स्वातंत्र्य के यज्ञकुंड में कूद पडनेवाले यशवंतराव हम में से एक बहादूर सेनानी हैं। इसलिए विदर्भ की जनता का उन पर प्रेम है। राज्य पनर्रचना नहीं होती तो उनके विषय में अत्यादर का, अपनत्व का भाव विदर्भ की जनता में नहीं हो सकता।

पश्‍चिम महाराष्ट्र और विदर्भ का भाग अलग अलग प्रांतों में रहता था। फिर भी राष्ट्रीय आंदोलन की दृष्टि से उन में हमेशा एकात्मता थी। लोकमान्य तिलक की मृत्यु के बाद उनके शिष्यों में दो गुट पडे थे। एक गुट गांधी का नेतृत्व ह्रदय से माननेवाला और दूसरा गुट गांधी का नेतृत्व न माननेवाला। विदर्भ विभाग में गांधीजी का नेतृत्व माननेवाला बडा गुट था। बहुसंख्य जनता गांधीजी के नेतृत्व की ओर आकर्षित हुई थी। महाराष्ट्र में राष्ट्रीय विचार में हुई यह पहली वैचारिक क्रांति थी और वह एक दूसरे की अभिमानी बन गयी। इस क्रांति से पश्‍चिम महाराष्ट्र और विदर्भ में गांधी प्रेमी जनता एक विचारसूत्र में आयी और दूसरी वैचारिक क्रांति राज्य पुनर्रचना काल में हुई। इस विचार क्रांति का झंडा यशवंतराव के हाथ में आया। इस क्रांति की घोषणा दिनांक १ दिसंबर १९५५ में फलटण में हुई। राज्य पुनर्रचना के आंदोलन के काल में यह ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण क्षण है। काँग्रेस की नौका तूफान में फँस गयी थी। काँग्रेस तहस-नहस होने के पथ पर लगी थी। व्यक्तिनिष्ठा श्रेष्ठ कि संस्थानिष्ठा श्रेष्ठ यह प्रश्न सुलझाना था। इस समय यशवंतराव निर्भयता से सामने आये। १ दिसंबर १९५५ में उन्होंने फलटण में घोषणा की कि - 'बम्बई राज्य रचना के बारे में काँग्रेस कार्यकारिणी जो अंतिम निर्णय लेगी, वह निर्णय मैं शिरोधार्य मानूँगा।' संयुक्त महाराष्ट्र और पंडित नेहरू ऐसी समस्या मेरी सामने आयी तो मैं पंडित नेहरू के प्रति निष्ठा रखूँगा। इस में काँग्रेस सुरक्षित रहेगी यही हेतु था। यशवंतराव ने काँग्रेस जनों को प्रसंगोचित मार्गदर्शन किया और उन्होंने महाराष्ट्र का 'पानिपत' नहीं होने दिया।

इस निर्णय से उनके विषय में जनता में बहुत क्षोभ निर्माण हुआ। उन पर गालियों की बौछार हुई। उनका जगह-जगह पर उपहास, अपमान होने लगा। उन्हें राजकीय जीवन से निर्वासित करने के चारों ओर से प्रयत्न शुरू हुए थे। उन्होंने ये सब शांति से और धैर्य से सहन किया। अन्त में वे इस अग्निदिव्य में से पार हो गये और महाराष्ट्र काँग्रेस को संजीवन प्राप्त कर दिया। कन्नमवार और उनके साथी उस समय विदर्भ के पुरस्कर्ता थे। फिर भी यशवंतराव के इस पुरुषार्थ से और बहादूरी से वे प्रभावित हुए और उनके नेतृत्व की ओर आकर्षित हुए। क्योंकि वे भी विदर्भ की अपेक्षा काँग्रेस-निष्ठा और भारत निष्ठा को प्रथम स्थान देनेवाले थे। सारांश यह है कि यशवंतराव के समर्थकों की और काँग्रेस निष्ठावंतों की पलटन इधर पश्‍चिम महाराष्ट्र में और उधर विदर्भ में खड़ी हुई थी।

(१) बम्बई केंद्र शासित

इसके बाद थोडे दिनों में दिनांक १६ जनवरी १९५६ को पंडित जवाहरलाल नेहरूने रेडिओपर भाषण करके 'बम्बई' को केंद्रशासित रखने की बात ज़ाहिर की। यह निर्णय ज़ाहिर होते ही तरंत दूसरे दिन ७ जनवरी को कन्नमवार और उनके साथियोंने स्वतंत्र विदर्भ का आंदोलन स्थगित कर दिया।

जवाहरलालजी की उपर्युक्त घोषणा के बाद महाराष्ट्र काँग्रेस कमिटी की सभा पुना में हुई। उनके निमंत्रण से कन्नमवार और उनके साथी वहाँ उपस्थित हुए। बम्बई अलग करके महाराष्ट्र राज्य स्थापना की शुरूआत हुई थी। बम्बई के सचिवालय में दो बैठके हुई थी। इस अवसर का फायदा उठाकर कन्नमवारने सातारा, कोल्हापूर और सांगली जिले में दौरा किया और काँग्रेस कार्यकर्ताओं की सभाओं में भाषण किये। वहाँ अनेक लोगों ने कन्नमवार से कहा कि – 'आप नये हैं? आप यशवंतराव के पीछे रहने से आप अपना और विदर्भ का भला नहीं कर सकोगे।' सातारा के मुकाम में राजेसाहब निंबालकरने कन्नमवार से पूछा कि 'तुम्हारी और तुम्हारे साथियों की नीति क्या रहेगी।' कन्नमवारने तुरंत उत्तर दिया कि – 'जहाँ यशवंतराव वहाँ मैं और मेरे साथी रहेंगे? फिर यशवंतराव अल्पमत में रहे या बहुमत में। क्योंकि अपनी और हमारी जात एक है। वह भारत और निष्ठावंतों की। यह रिश्ता अपने सब को हमेशा के लिए एक सूत्र में जकड़कर रखने के लिए होगा।'

वे आये, उन्होंने देखा और जीत लिया। किसी के ध्यान में और मन में नहीं था। अचानक १० अगस्त १९५६ को विशाल द्विभाषिक बम्बई राज्य का बिल लोकसभा में पारित हुआ। इच्छा हो अथवा न हो, संसद का निर्णय हम सभी को स्वीकृत करना पडा।

आगे तारीख १ नवंबर १९५६ को विशाल बम्बई राज्य की स्थापना हुई। यशवंतराव इस राज्य के मुख्यमंत्री पद पर आरूढ हुए।

द्विभाषिक राज्य यह भारत में प्रथम श्रेणी का राज्य है, ऐसी जो ख्याति हुई थी उसके लिए यशवंतराव ही कारण हुए। यह राज्य चलाने का कार्य अत्यंत कठिन एवं पेचीदा था। इस द्विभाषिक राज्य के मंत्रीमंडल में एक दूसरे के संबंध दृढ नहीं हो सके। अन्त में आपस के झगडे से यह राज्य टूट गया ऐसा किसी तरहका इलज़ाम यशवंतराव ने अपने ऊपर आने नहीं दिया।

अब द्विभाषिक राज्य का विसर्जन होगा इसलिए गुजराथी लोगों ने यशवंतराव पर गुस्सा निकाल लिया। वे यशवंतराव को वाहियात बोलने लगे।

एक ओर विदर्भ का प्रश्न तो दूसरी ओर दोनों राज्यों के बँटवारा के प्रसंग में गुजराथी बांधवों की अनुमति प्राप्त करने के संबंध में विचारविनिमय चल रहा था। बीच बीच में मतभेदों की चिनगारियाँ उठती थी, पर यशवंतराव ने गुस्सा आने नहीं दिया, तीव्रता बढने नहीं दी।

द्विभाषिक बम्बई राज्य का विसर्जन होने का प्रश्न निर्माण हुआ तब से लेकर अन्त तक यशवंतरावजी ने मोरारजीभाई के साथ अच्छे संबंध रखे थे। मोरारजी भाई के निवास स्थान में रहकर यशवंतराव मोरारजीभाई से कहते थे – 'अब हम गुजराथी भाई-भाई अलग हो रहे हैं, हमे आशीर्वाद दो। पिताजी की हैसियत से हमारी जायदाद का उचित विभाजन करने के लिए आप हमे सहाय्य कीजिए।'

दूसरों का विश्वास संपादन कर काम करवा लेने की कला बहुत कठिन होती है। पर यशवंतराव इस में सफल हुए। बाहर के कुछ लोग यह प्रश्न छूटने के समय अडचने पैदा करने लगे। उनका कहना था कि यह प्रश्न १९६२ के चुनाव के बाद लेना चाहिए। पर यशवंतराव ने ऐसा मौका आने नहीं दिया। सारी बातचीतें सफल की, यशस्वी बनायी।

महाराष्ट्र राज्य निर्मिति के संबंध में अनेक पक्षों या दलों के प्रयत्न हुए हैं। इस में जनता का विशेष श्रेय भी है। लेकिन यशवंतराव जैसा कुशल, प्रसंगावधानी विचारवंत नेता न होता तो आज का यह महाराष्ट्र इतना जल्दी देख सकते कि नहीं इसका शक होता है।

सैंकडों वर्षो से विदर्भ और मराठवाडा का पश्चिम महाराष्ट्र से यातायात नहीं था। इन दो महान खाड़िया और (समुद्र का वह भाग जो तीन ओर खुश्की से घिरा हो। खलीज़ नदी का वह भाग जिस में समुद्र के ज्वार का पानी पहुँचता हैं।) नदियों के कारण विदर्भ के ९० लाख लोग और मराठवाडे के ५० लाख महाराष्ट्रीयन जनता अलग पड़ी थी। अत्यंत प्रयत्न से और परिश्रम से महाराष्ट्र के महान तज्ज्ञ इंजिनिअरने – यशवंतराव ने हाल ही में दो बड़े सेतु बाँधकर महाराष्ट्र की साडे तीन कोटी जनता एकत्र लायी। सभी दृष्टि से परस्पर यातायात की व्यवस्था की। इसलिए यशवंतराव नागपूर को कोलंब पूल के लिए आ सके। महाराष्ट्र स्थिर, मजबूत करने के लिए हम सब को प्रयत्नों की चरम सीमा तक प्रयत्न करना चाहिए। फिर ऐसे कितने भी पत्थरों के मिट्टी के पूल और रास्ते जगह-जगह तैयार हो जायेंगे और जनता के सुख में वृद्धि होगी। अब तुम्हारी अडचन तो हमारी अड़चन समझकर एकता की भावना हम में निर्माण होनी चाहिए।

स्वातंत्र्य प्राप्ति तक बम्बई सांस्कृतिक, धार्मिक और आंदोलन का श्रेष्ठ और प्रमुख केंद्र स्थान था। उस समय के बहुभाषिक बम्बई राज्य के राजधानी में यशवंतराव एक पार्लमेंटरी सचिव का पद स्वीकारने के लिए गये। उन्होंने पार्लमेंटरी सचिव का पद का

स्वीकार किया। यशवंतराव का स्वभाव ऐसा था कि जो सहज मिलता है, उस में संतोष मानना चाहिए। शासन के मुख्य प्रवाह में प्रवेश मिल गया है। इसलिए उन्होंने उस में ही संतोष माना।

(२) मोरारजी गृहमंत्री

उस समय मोरारजी देसाई गृहमंत्री थे। महाराष्ट्र की राजनीति में अपना स्थान मजबूत किये बिना बम्बई राज्य का प्रशासन अच्छी तरह चला नहीं सकेंगे। यह जानकर उन्होंने सामान्य ग्रामीण जनता में नवोदित, कर्तृत्वसंपन्न तरुण को अपने काम की मदद के लिए आवश्यक समझा। इसलिए मोरारजीभाई ने आत्मीयता और नम्र भाषा में यशवंतरावजी की पूछताछ की कि – 'क्या आप गृह विभाग में दाखिल क्यों नहीं होते?' फिर यशवंतराव गृह विभाग में दाखिल होकर गृह विभाग का कारोबार देखने लगे। मोरारजी ब्रिटिश शासन में साहब थे। इस साहब की कृपा संभालकर यशवंतराव ने प्रशासन पर बडी खूबी से कब्जा किया। उत्कृष्ट प्रशासक के रूप में मोररजीभाई की ख्याति थी। यशवंतराव ने मोरारजी के प्रशासन की कुशलता प्राप्त की। मोरारजी स्वभाव से करारी थे। यशवंतराव ने मोरारजी द्वारा सौंपे हुए सभी काम अच्छी तरह से पूरे किये। यशवंतराव ने पुलिस यंत्रणा का प्रमुख विभाग बारिकी से जाँच लिया।

(३) हिंदू-मुसलमानों के दंगे

१९४८-४९ में हिंदु-मुसलमानों के दंगे उमड़कर आये। उस समय चव्हाण ने होमगार्ड की संघटना तैयार की। संरक्षणार्थ सिद्ध ऐसी स्वतंत्र नागरिकों की एक प्रकार की सेना ही उन्होंने तैयार की। नागरी पूर्ति में अनुशासन लाया। उन में जैसे उच्च अभिजात रसिकता थी वैसेही ग्रामीण भाग में डफ़ली-तुरही के मैदानी लोक कला में उन्हें खूब रुचि थी। यशवंतरावने पहल पहल तमाशा लोककला को शासकीय मान्यता प्रदान की।

(४) १९४६ से १९५६ तक विलक्षण संग्राम

१९४६ से १९५६ इन दस वर्षों में महाराष्ट्र में और भारत में राजनीति का रंगमंच विलक्षण संग्राम नाट्य से जल्दी से बदल रहा था। काँग्रेस में दाये-बाये ऐसे गुट निर्माण हुए थे और उन में स्पर्धा शुरू हुई थी। स्वतंत्र भारत की घटना समिति स्वतंत्र और एकात्म भारत की जनतंत्र प्रधान राज्य घटना निर्माण करने में यशस्वी हुई थी। आशिया खंड में एक विशाल जनतंत्र राष्ट्र की अर्थात भारत की निर्मिति हुई। लेकिन यह राज्य घटना

निर्माण होते समय राष्ट्रपिता म. गांधी का एक हिंदुत्ववादी उग्रवाद ने वध किया। उसकी भीषण प्रतिक्रिया महाराष्ट्र के शहरों में और विशेषकर ग्रामीण भागों में उमड़कर आयी। पिछले सौ वर्षों में वृद्धिंगत हुए ब्राह्मण-ब्राह्मणेतर वाद ने हिंसक और विध्वंसक रूप लिया। अनेक शहरों में और सैंकडों देहातों में और तहसील के गाँवों में होनेवाले ब्राह्मणों के घर जलाये गये। लगातर लगभग ६ महिने इन संहारक घटनाएँ शुरू थी। उस में यशवंतराव के नेतृत्व की कसौटी लग गयी। उन्होंने कराड और कराड के आसपास के भागों में स्वयं उपस्थित रहकर ग्रामीण प्रक्षुब्ध होकर घूमनेवाले लोगों को शांत किया।

प्रत्यक्ष काँग्रेस संघटना में महाराष्ट्र में काँग्रेस में से फूटकर निकले हुए बाये गुट का 'शेतकरी कामकरी पक्ष' १९४९ के दरमियान स्थापित हुआ। बहुजन समाज में कुछ अनुभवी नेता काँग्रेस छोडकर इस नये पक्ष का नेतृत्व करने लगे। शंकरराव मोरे, भास्करराव जेधे, दत्ता देशमुख, तुलसीदास जाधव, र. के. खाडिलकर, यशवंतराव मोहिते आदिने इस पक्ष प्रसार के लिए गति लायी। यशवंतराव भी उनकी चर्चा में सामील हुए थे। पक्ष स्थापना के समय यशवंतराव विवेक से दूर हो गये और अंतिमतः वे काँग्रेस में रहे।

(५) पहला सार्वत्रिक चुनाव

१९५२ में भारत का पहला सार्वत्रिक चुनाव हुआ। महाराष्ट्र में काँग्रेस विरुद्ध शेतकरी और कामकरी पक्ष ऐसा मुकाबला हुआ। इस चुनाव में मोरे-जेधे के पक्ष की पराजय हुई। उसके बाद चार-पाँच वर्षों में जेधे-मोरे, तुलशीदास जाधव, खाडिलकर, यशवंतराव मोहिते काँग्रेस में यानी कि स्वगृह में वापस आये।

१९५२ के चुनाव में बालासाहब खेर खड़े नहीं हुए। खेर का शासन समाप्त हुआ। सच्चे अर्थों में वह मोरारजी का शासन था। परंतु अब इस चुनाव के बाद मोरारजी पक्ष नेता के रूप में चुनकर आये। मोरारजीने अपने मंत्री मंडल में यशवंतराव चव्हाण और भाऊसाहब हिरे इन दोनों ग्रामीण जनता के नेता को अपने मंत्री मंडल में समाविष्ट किया। इस काल में महाराष्ट्र प्रांतिक के अध्यक्षपद भाऊसाहब हिरे की ओर चला गया। यह बहुभाषिक बम्बई राज्य था। इस में गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक ये तीन भाषिक प्रदेश समाविष्ट हो गये।

महाराष्ट्र की राजनीति में इतनाही नहीं भारत की राजनीति में भाषिक राज्यों की माँग का आंदोलन बढ गया। भारत के काँग्रेस पक्षीय केंद्रीय सत्ताधारी भाषिक राज्य निर्मिति के संबंध में साशंक मनःस्थिति में थे, परंतु भाषिक प्रदेश राज्यों की अत्यंत गगनभेदी आवाज से होने लगी। आंध्र में इस प्रश्न का तकाजा बढ़ गया। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरूने स्वतंत्र आंध्र राज्य की योजना संसद के सामने रखी और आंध्र

की माँग को स्वीकृत किया। १९४६ से संयुक्त महाराष्ट्र की माँग का आंदोलन शुरू हुआ। इस आंदोलन में महाराष्ट्र के साहित्यकारों ने अगुआई की। साहित्यकारों द्वारा शुरू किया आंदोलन का जनता के आंदोलन में रूपांतर हो गया। इसका आश्चर्यकारक प्रत्यंतर संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन में मिल गया। भारत सरकारने भाषावार प्रांत रचना के लिए फाजल अली आयोग की स्थापना की। उस आयोग की रपट १९५५ के अक्तूबर में प्रसिद्ध हुई। तब महाराष्ट्र के काँग्रेस पक्ष में संयुक्त महाराष्ट्र की माँग का प्रस्ताव एकमत से पारित किया। फाजल अली आयोग ने संयुक्त महाराष्ट्र की माँग को स्वीकृत नहीं किया।

(६) द्विभाषिक बम्बई राज्य

१ नवंबर १९५६ को द्विभाषिक बम्बई राज्य निर्माण हुआ। उस द्विभाषिक बम्बई राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में यशवंतराव चव्हाण ने सत्ता अपने हाथ में ली। उस समय संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन को अत्यंत विशाल, उत्कट और भव्य रूप प्राप्त हुआ था। भव्य मोर्चे और बडी विस्तृत प्रचंड सभाओं से संपूर्ण महाराष्ट्र क्षुब्ध होकर खड़ा हो गया था। मोरारजी देसाई के शासनकाल में, १९५२ से १९५६ तक के कार्यकाल में आंदोलन दबाने के लिए १०५ लोग मारे गये और हुतात्मा हुए।

फाजल अली आयोग महाराष्ट्र की माँग अस्वीकृत करने पर महाराष्ट्र काँग्रेस में गरम और नरम दल ऐसे दो गुट पडे थे। भाऊसाहब हिरे गरम (उग्र) दल के नेता थे। संयुक्त महाराष्ट्र की लडाई बढ रही थी। भाऊसाहब हिरे संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन को समर्थन दे रहे थे। यशवंतराव चव्हाण मन से संयुक्त महाराष्ट्र के माँग का पुरस्कर्ता थे। पर समय आने पर काँग्रेस से फूटकर आंदोलन में सामील होने के लिए उत्सुक नहीं थे। इसलिए मोरारजी देसाई नेता के लिए खडे नहीं हुए। इसलिए उन्होने यशवंतराव को पक्षनेता के रूप में खड़ा किया। यशवंतराव चव्हाण पक्षनेता के रूप में विजयी हुए। यह सारा इतिहास आँखों के सामने होते हुए भी यशवंतराव ने यह कठिन बड़ी जिम्मेदारी लेने पर उन्होंने कहा कि 'मै एक भी गोली नहीं चलाऊँगा। फिर भी राजकारोबार अच्छी तरह चलाऊँगा।' उन्होंने बडी होशियारी और कुशलता से राज्य चलाया। पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे महाराष्ट्र स्थापना के बारे में साशंक होनेवाले वरिष्ठ नेताओं के गले उतार दिया कि गुजराथी, मराठी और कानडी इन तीन भाषिक जनताओं के नेताओं की एक राज्य में रहकर मन से सहकार्य से काम करने की तैयारी नहीं है। अन्त में यशवंतराव ने यह भी कहा कि अगले सार्वत्रिक चुनाव में काँग्रेस महाराष्ट्र और गुजराथ राज्य में नहीं आ सकेगी। इन दो राज्यों में काँग्रेस की पराजय होगी। यह बात वरिष्ठ

नेताओं के गले उतर गयी। वऱ्हाड (विदर्भ), मराठवाडा और कोकण के साथ उत्तर-दक्षिण महाराष्ट्र को मिलाकर मराठी भाषिक राज्य स्थापन करने का विधेयक संसद और राज्यसभा ने स्वीकृत किया। १ मई १९६० को यशवंतराव के नेतृत्व में महाराष्ट्र राज्य की स्थापना हुई। १९४६-६० तक के कालखंड में यशवंतराव चव्हाण की बेरीज की राजनीति सफल हुई। मैत्री, सद्‌भावना, शुद्ध चारित्र्य और व्यावहारिक होशियारी इन सद्‌गुणों के कारण यशवंतराव यशस्वी हुए।

(७) महाराष्ट्र का सर्वांगीण विकास

१९५६ से लेकर १९६२ तक के छः वर्षों के शासन काल में यशवंतरावने महाराष्ट्र के सर्वांगीण विकास की नीव डाली। गरीब मनुष्य को शिक्षा के संबंध में कहीं समस्या न हो, इसलिए उन्होंने शिक्षा विषयक महत्त्वपूर्ण बिल अंमल में लाया। ग्रामीण भागों की दुर्दशा दूर करने के लिए स्थानिक स्वराज्य संस्था को समर्थ बनाने का कानून पारित किया। सहकारी संस्था का विस्तार कर के महाराष्ट्र के कृषि-औद्योगिक अर्थव्यवस्था की नीव डाली। इस अवधी में यशवंतराव की महाराष्ट्र में राजनैतिक कर्तृत्व की कीर्ति सारे भारत में तेजी से फैल गयी।

(८) रक्षामंत्री

१९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया। इस आक्रमण तक 'हिंदी-चिनी भाई-भाई' की भावना में भारतीय राज्यकर्ता नेता गण मग्न थे। इस समय के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सच्चे मित्र कृष्णमेनन थे। उन्हें इस आक्रमण की तनिक भी चिंता नहीं आयी। उनके विरुद्ध लोगों का क्षोभ चरणसीमा तक पहुँचा। संसद ने और राज्यसभ ाने कृष्णमेनन को हटाने की माँग की । यशवंतराव ने महाराष्ट्र के विकास का भविष्य कालीन चित्र अपने सामने रखकर महाराष्ट्र का कारोबार चलाया था। भारत सरकार ने उन्हें रक्षा मंत्री पद स्वीकारने के लिए निमंत्रित किया। उन्होंने निरूपाय होकर महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री पद छोड़ दिया और केंद्र सरकार में रक्षामंत्री का पद स्वीकार किया।

(९) काँग्रेस की पराजय

१९७७ में लोकसभा के चुनाव में इंदिराजी के नेतृत्व में काँग्रेस पक्ष की पराजय हुई। उसके बाद १९८० तक यशवंतराव और भूतपूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी इन दोनों में दुराव आया और १९८१ में इंदिरा गाधी काँग्रेस में प्रवेश किया।

इतना होने पर भी यशवंतरावजी के मन में कभी कटुता की, तिरस्कार की भावना निर्माण नहीं हुई। उनके मन में इंदिरा के प्रति उदार भावना थी। ऐसी उदारता अन्यत्र दुर्लभ है।

यशवंतराव की भूमिका में एक प्रकार की दूरदर्शिता थी। क्योंकि संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति का निर्णय केंद्रीय सरकार लेनेवाली थी। विशेषतः काँग्रेस पक्ष की कार्यकारिणी इस संबंध में निर्णय लेनेवाली थी। निर्णय लेने की जिम्मेदारी बहुत बडे पैमाने पर पंडित जवाहरलाल नेहरू पर थी। यशवंतरावजी पहले से राष्ट्रीय एकता और राष्ट्र के राजनैतिक मुख्य प्रवाह या इस संबंध में अत्यंत सुस्पष्ट मत होनेवाले नेता थे और इसलिए उनकी भूमिका के बारे में गलतफहमी हुई। फिर भी वे अपनी भूमिका के आग्रही रहे। इसलिए उस मंच पर रहकर महाराष्ट्रीय जनता का मनोगत स्पष्ट करने का जब अवसर मिला तब उन्होंने अपना और जनता का मनोगत स्पष्ट किया और अपनी भावनाएँ व्यक्त की। पंडित जवाहरलाल नेहरू को इस प्रश्न के बारे में राजी करके उन्होंने अपने साथ लिया। इसलिए तो सच्चे अर्थों में संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति होने के लिए बहुत बड़ा सहाय्य हुआ। इसका अर्थ संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति के लिए संयुक्त महाराष्ट्र समितिद्वारा किया हुआ जनजागरण और उस में अनेक तरुणों का हौतात्म्य इसका महत्त्व कम नहीं है। समिति ने जनजागरण करने का और जनमत संघटित करने का बडा महत्त्वपूर्ण काम किया। इसलिए दिल्ली को यही बात दर्ज करनी पडी। पंडित जवाहरलाल नेहरू और तत्कालीन काँग्रेस अध्यक्षा श्रीमती इंदिरा गांधी इन दोनों को साथ लेने में चतुरता दिखाई। इसलिए संयुक्त महाराष्ट्र निर्मिति में उनका बहुत बडा हिस्सा है इस बात में दो मत नहीं हो सकते।

(१०) जनतंत्र के समर्थक

यशवंतराव मूलतः जनतंत्र के समर्थक थे। सत्ता का विकेंद्रीकरण करना आवश्यक है। क्योंकि सामान्य मनुष्य को उस में शामिल होने का मौका देना चाहिए। जब ऐसा मौका दिया जाय तो वे सामाजिक प्रश्न सुलझा देंगे। क्योंकि उन्हें सामाजिक प्रश्नों की जानकारी होती है। सत्ता के विकेंद्रीकरण का सूत्र कृति में लाने की दृष्टि से जिला परिषदों के संदर्भ में उन्होंने अपनी यह भूमिका प्रस्तुत की।

जिला परिषद के द्वारा ग्रामीण नेतृत्त्व निर्माण करने की यशवंतराव की यह अपेक्षा बहुत बडे अनुपात में यशस्वी हुई। यह बात हमे निश्चित रूप से माननी पडेगी। महाराष्ट्र के अनेक जिला परिषद में से तैयार हुए तरुण विधान सभा में, संसद में और अनेक स्थानों पर जा सके और अच्छे काम कर सके। इसलिए वे राज्य स्तर पर मंत्री का काम करते

समय चमक गये। यशवंतराव की यह बड़ी विजय थी।

महाराष्ट्र में कारखाने या अन्य सहकारी आंदोलन बडे पैमाने पर बढ़ गये। इनमें सभी का सहयोग, सभीका समान अधिकार यह नीति बड़े पैमाने पर स्वीकृत की गयी। इसका सारा श्रेय यशवंतराव की पुरोगामी विचारधारा को है।

तिलक भवन की बैठक में १९६४ में बैंकों का राष्ट्रीयीकरण होना चाहिए। यह प्रस्ताव यशवंतरावजी की प्रेरणा से महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस समिति ने एकमत से संमत किया था। प्रत्यक्ष रूप से उसका निर्णय १९६९ में हुआ। भारत में वह भूमिका सबसे पहले महाराष्ट्र ने यशवंतराव के नेतृत्व में स्वीकृत की थी।

महाराष्ट्र ने देश के प्रवाह में सतत सहना चाहिए ऐसा उनका दृष्टिकोन था। उनका यह दृष्टिकोन पंडित जवाहरलाल नेहरू के समय से चला आ रहा था। महाराष्ट्र को राष्ट्रीय मुख्य प्रवाह में रखने के लिए १९५६-५७ में उन्हें महाराष्ट्र के अनेक लोगों की नाराजगी सहन करनी पडी थी। उसी पद्धति से इस समय भी अब हमे राष्ट्रीय मुख्य प्रवाह में जाना चाहिए। यह उनकी उस समय के विचारों से सुसंगत भूमिका थी। शरद पवार के साथ काँग्रेस आय में जाना चाहिए। इसलिए उन्होंने छः महिने, एक वर्ष पवार की प्रतीक्षा की। लेकिन पवार की भूमिका में यशवंतराव की भूमिका में बड़ा अंतर था। इसलिए यशवंतराव अपनी भूमिका का पुरस्कार करके आय काँग्रेस में चले गये। इस संबंध में उनपर आलोचना हुई। कुछ लोगोंने कहा कि – 'वे लाभ के लिए, कुछ कमाने के लिए गये हैं। कुछ प्राप्ति और लाभ की अपेक्षा से वे बहुत ऊपर गये थे। कुछ मिलेगा और कुछ लाभ होगा इसलिए वे इंदिरा काँग्रेस में गये ऐसा हेतुपूर्वक इलज़ाम लगानेवाला एक वर्ग है उसे यशवंतराव समझे ही नहीं थे।'

यशवंतराव के प्रशासन कौशल का अवश्य उल्लेख करना चाहिए। १९५६-५७ के समय राज्य में काँग्रेस पक्ष को नाममात्र बहुमत था। एक ओर सर्वश्री एस. एम. जोशी, उद्धवराव पाटील, आचार्य अत्रे जैसे धुरंधर नेता थे। फिर भी उन्होंने निर्विवाद रूप से काम चलाया। अत्यंत कठिन काल में यशवंतरावने देश का गृहमंत्री पद सँभाला। उसी समय अनेक राज्यों में अलग अलग पक्षों की सरकारे थी। देश में अनेक समस्याएँ थी। उसके साथ ही पूर्वीय राज्य का प्रश्न कठिन हुआ था। उस काल में वे प्रभावी संसदपटू के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे अच्छे अच्छे प्रशासक भी हुए। उन्होंने देश को स्वच्छ प्रशासन दिया। उन्होंने सत्ता का दुरुपयोग किया ऐसा इलज़ाम विरोधी पक्ष के लोग भी नहीं लगा सके। प्रभावी प्रशासक के रूप में उनका लौकिक हुआ। नौकरशाही को विश्वास में लेकर वे काम करते थे।

राज्यकर्ताओं को दूसरों का दृष्टिकोन समझ लेना चाहिए। अखबार में होनेवाली

आलोचना से अथवा व्यासपीठ पर से होनेवाले हमले से घबराना नहीं चाहिए और मन में गुस्सा और शत्रुत्व की भावना न रखते हुए दृष्टिकोन समतोल और वृत्ति शांत रखनी चाहिए। इस भूमिका का यशवंतराव को तूफान की स्थिति में बहुत उपयोग हुआ। राज्य किस पक्ष का है, वह कौन चलाता है, इसकी अपेक्षा वह कैसे चलाया जाता है इसे बहुत बड़ा महत्त्व है। चालू काल संक्रमण का है, उसके साथ कसौटी का भी है। जनतंत्र को आह्वान दिये जा रहे हैं। इन आह्वानों का मुकाबला करनेपर भारतीय जनतंत्र टिकेगा, बढेगा ऐसी यशवंतराव की श्रद्धा थी।

एक दिन यशवंतराव ने अपनी याद बताते हुए कहा कि 'मै उस समय डिफेन्स मिनिस्टर था। लेकिन उस समय उस खाते का एक सेना प्रमुख हमेशा यशवंतराव को विरोध करता था। इसलिए वे त्रस्त हो गये थे। इसलिए परेशान होकर एक दिन नेहरू के नाम पर यशवंतराव ने इस्तीफा लिखकर भेज दिया।' पंडित नेहरूने यशवंतराव को रात के नौ बजे बुलाया। वे गये तब नेहरू का गुलाब के समान होनेवाला चेहरा सूर्यबिंब के समान हुआ। अपनी शेरवानी के जेब में से यशवंतराव का इस्तीफे का कागज़ फडफडाते हुए उन्होंने कहा – 'यह क्या बदतमीजी है? मुझे इस्तीफा भेज देता है? किसलिए?' मैंने उसे सब बताया। उन्होंने हँसकर कहा – 'मूर्ख है। वह जो ऑफिसर है न जो तुम्हे परेशान करता है, उसे रक्षा मंत्री होना था। इसलिए मैंने उसे तुम्हारे खाते में भेज दिया। मुझे कह देता तो मैं सब निभा लेता।' लेकिन इसके आगे ऐसा इस्तीफा भेज देने की बेवकूफी मत कर। उन्होंने मेरा इस्तीफा फाडकर मेरे मुँह पर फेंक कर कहा – 'फिर से ऐसी मूर्खता न कर। ऐसे थे प्रधानमंत्री पंडितजी।'

(११) दलितों को न्याय

दलितों को न्याय मिलना चाहिए, उन्हें सामाजिक स्थान प्राप्त होना चाहिए इसलिए यशवंतरावने समझदारी से प्रयत्न किये। हरिजन-गिरीजन लोगों के काम की ओर अधिक ध्यान दिया। 'महार वतन' रद करके हरिजनों की लज्जित जीवन से मुक्तता की। डॉ. आम्बेडकर की बहुत दिनों की माँग पूर्ण की। गिरिजनों के लडकों के लिए आश्रमशालाएँ शुरू की। उन्हें खेती उपजाऊ बनाने के लिए जंगल में जमीन की रिआयते दी। इतनाही नहीं, 'नही' रे कर्ताओं को आगे लाने का प्रयत्न किया। राज्य में नये नये उद्योग शुरू करने के लिए वे उद्योगपतियों से मिले और महाराष्ट्र में उद्योग शुरू करने के लिए प्रवृत्त किया। उन्होंने कानून से औद्योगिक वसाहत निर्माण की। जमीन, पानी, बिजली, शस्त्र आदि की सुविधा उपलब्ध कर कारखाने खडे करने के लिए उत्तेजन दिया। खेती के साथ कारखानों में उत्पादन बढाना चाहिए, मजदूरी भी अधिकाधिक

उपलब्ध होनी चाहिए इसलिए चव्हाणने ये सब जानकर प्रयत्न किये। महाराष्ट्र आज उद्योग क्षेत्र में आगे दिखाई देता है, जगह-जगह पर औद्योगिक वसाहतियाँ खड़ी हैं। उसका बहुत श्रेय यशवंतराव की ओर जाता है।

बालासाहब खेर और मोरारजी देसाई इन दो मुख्यमंत्रियों की तुलना की जाय तो यशवंतराव चव्हाण की भूमिका वास्तववादी और पुरोगामी लगती है। मूलोद्योग, शिक्षा योजना, शराबबंदी का अवास्तव कार्यक्रम, कुटुंब नियोजन, सख्ती की अंग्रेजी शिक्षा, कला, साहित्य आदि ललित कला के संबंध में प्रतिगामी, दुराग्रही भूमिका यशवंतराव चव्हाण नहीं ले सके। सभी प्रश्नों के संबंध में उनका मन खुला था। पुराने अनुभवों का और नये विचारों का स्वागत करने के लिए उनका मन हमेशा तत्पर और उत्सुक रहता था। उनके सभी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रश्नों के संबंध में उनके विचार प्रकट हुए है।

सहकारी आंदोलन के समान शक्कर कारखाने के संबंध में यशवंतराव ने अलग निर्णय लिया और महाराष्ट्र में शक्कर कारखाने के विकास को अलग मोड दिया। १९५७-१९५८ में सांगली जिले में शक्कर कारखाना निकलने के लिए श्री. वसंतदादा पाटील ने अर्जी की थी। परंतु उस समय शक्कर कारखाने को मंजूरी देने की तै की हुई पद्धत थी। गन्ने की फसल कितनी है यह देखकर वह गन्ना कारखाने की जरूरत पूरी करेगा तो कारखाने को इजाजत देने की पद्धत थी। यह निष्कर्ष यहाँ लगाया जाता तो यह कारखाना हीं हो सकता। परंतु इस विभाग में गन्ने की फसल बढने की सुप्त शक्ति बड़ी थी। और उसके आधार पर शक्कर कारखाना उत्तम चलाने का पूर्ण संभव था। ऐसे समय तै की हुई लीक पर न जाते हुए अलग मार्ग से निर्णय लेने की आवश्यकता थी। इसलिए यशवंतराव ने वहाँ स्वतंत्र दृष्टि से निर्णय लिया। उन्होंने वहाँ पहले शक्कर कारखाने की इजाजत दी थी उसके बाद वहाँ गन्ने की वृद्धि होने लगी। हमेशा का जो मार्ग था उसे दूर कर दिया। इसलिए वहाँ भारत में प्रथम श्रेणी का शक्कर कारखाना हो गया। आज इस शक्कर कारखाने से सैंकडों किसानों के जीवन में परिवर्तन आ गया। इसका श्रेय वसंतदादा पाटील के अविश्रांत प्रयत्न को और नेतृत्व को देना पडेगा। इसके सभी कारण यशवंतराव के स्वतंत्र और सर्जनशील कारोबार विषयक निर्णय में खोजने पडेंगे।

(१२) विद्यापीठ की स्थापना

मराठवाडा विद्यापीठ के स्थापना के समय उन्होंने लिया हुआ निर्णय भी उनके अलग कारोबार विषयक नीति की साक्ष देता है। द्विभाषिक राज्य में मराठवाडा हाल ही में सामील हुआ था। इससे पहले अनेक वर्ष मराठवाडा यह हैदराबाद संस्थान के राज्य में

था। इसलिए मराठवाडा की शिक्षा की प्रगति लगभग सौ वर्षं नहीं हो सकी थी। मराठवाडा के शैक्षणिक प्रगति को सहाय्य करना जरूर था। यशवंतराव का यही विचार था कि मराठवाडा को स्वतंत्र विद्यापीठ देना चाहिए। उस समय विद्यापीठ के लिए आवश्यक महाविद्यालय वहाँ नहीं थे। पहले महाविद्यालयों की संख्या बढनी चाहिए और फिर विद्यापीठ अस्तित्व में आना चाहिए। ऐसा विचार कुछ शिक्षा विषयक तज्ज्ञोंने प्रस्तुत किया। इस पद्धति से पुणे विद्यापीठ, नागपूर विद्यापीठ और अन्य कुछ विद्यापीठों की स्थापना हुई थी। परंतु मराठवाडे के संबंध में हम इसी मार्ग से गये तो उसकी शिक्षा की प्रगति में देरी होगी, ऐसा डर यशवंतराव के मन में था। इसलिए उन्होंने वहाँ पहले विद्यापीठ और उसके बाद महाविद्यालय स्थापना का कार्यक्रम स्वीकार करने का निर्णय लिया। उसके अनुसार उन्होंने वहाँ १९५८ में विद्यापीठ स्थापन करने का निर्णय किया। अगले दो-तीन वर्षों में अनेक महाविद्यालय शुरू हुए। तब मराठवाडा विद्यापीठ में अनेक महाविद्यालय निकल पड़े। अब उनकी संख्या साठ थी। विद्यापीठ स्थापन करते समय यशवंतराव नियम और पुराने मार्ग पर से चले जाते तो मराठवाडा की शैक्षणिक प्रगति होने के लिए अनेक वर्षं लग जाते। सैंकडों विद्यार्थी इस विद्यापीठ से उपाधियाँ लेकर बाहर आ रहे हैं। इसका संपूर्ण यश यशवंतराव चव्हाण के निर्णय का है।

यशवंतराव ललित कला के भोक्ता थे। मंत्रालय, संसद गृह, काँग्रेस पक्ष कार्यालय में काम करते हुए उन्होंने अपने कला प्रेम की ओर अनदेखी नहीं की। उनका पठन बहुत था। शास्त्रोक्त संगीत और वे नाटकों के रसिक थे। महाराष्ट्र में संगीतकार, नाटककार और सिनेमा कलाकार, लेखक और कवि दिल्ली में आने पर यशवंतराव की भेंट लिए बिना नहीं जाते थे और यशवंतराव भी उनका खुले दिल से स्वागत करते थे।

(१३) साहित्यिकों की लडाख मोर्चे को भेट

इस संबंध में दो घटनाओं की याद आती है। यशवंतरावने विनंती करने पर महाराष्ट्र में कुछ लेखक और कवियों की एक टुकडी ने लडाख में मोर्चे को भेंट दी। इस टुकडी में स्व. ग. दि. माडगूलकर, स्व. पु. भा. भावे और वसंत बापट आदि समाविष्ट थे। उनके आवेशपूर्ण लेखन से रक्षा विषयक समस्या सामान्य जनता को समझने के लिए मदद हुई। अन्य राज्यों में होनेवाले लेखक और कवियों के ऐसे ही दौरे आयेजित किये गये। उनकी सूचना से ही लता मंगेशकर ने 'ये मेरे वतन के लोगों' यह प्रसिद्ध गीत ध्वनिमुद्रित किया। यह गीत लता मंगेशकर ने १९६३ में गणराज्य दिन के समारोह में नैशनल स्टेडियम पर गाया था। इस ग्रामोफोन रिकार्ड का बिक्री का उत्पन्न राष्ट्रीय रक्षा निधि में जमा कर दिया जाय तब बहुत अच्छा होगा। यशवंतराव की यह इच्छा कवि

प्रदीप, संगीतकार के. सी. रामचंद्र और गायिका लता मंगेशकरने तुरंत पूरी की।

संयुक्त महाराष्ट्र निर्मिति में संघर्ष काल में निर्माण हुआ काँग्रेस विरोधी वातावरण धीरे-धीरे शांत करने में यशवंतराव का राजनैतिक कौशल सफल हुआ। संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति के लिए जो प्रखर आंदोलन हुआ था उसी कारण ही बम्बई के साथ संयुक्त महाराष्ट्र की निर्मिति हो सकी। यह सत्य कभी भी इन्कार नहीं किया जा सकता। संयुक्त महाराष्ट्र निर्मिति के बाद बम्बई, पश्चिम महाराष्ट्र, मराठवाडा और विदर्भ इन सब में भावनात्मक ऐक्य निर्माण करने का ऐतिहासिक कार्य यशवंतराव ने किया। यह सत्य भावी इतिहासकार कभी भी भूल नहीं सकते। डॉ. गोपालराव खेडकर, दादासाहब कन्नमवार, वसंतराव नाईक, नरेन्द्र तिडके, शेषराव वानखेडे, नासिकराव तिरपुडे, शंकरराव चव्हाण, प्रा. चौहान, देशमुख आदि विदर्भ, वऱ्हाड, मराठवाडा में वैसेही पश्चिम महाराष्ट्र में असंख्य सहकारी मित्रों को एकत्र लाकर संयुक्त महाराष्ट्र की भावनात्मक एकता की मजबूत नीव रखने का काम यशवंतरावजी के नेतृत्व में हुआ। उनके नेतृत्व में ही महाराष्ट्र काँग्रेस कमिटी को पुरोगामी विचार और दिशा देने का कार्य कार्यान्वित हुआ। भारत में उस दृष्टि से महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस कमिटी सभी की चर्चा का और कुतूहल का विषय हुआ था। जिला निहाय और प्रांत निहाय कार्यकर्ताओं के असंख्य शिबिर आयोजित किये गये और उस में समता पर आधारित कृषि औद्योगिक समाजरचना निर्माण करने का निर्धार व्यक्त किया था।

यशवंतरावने उनके मुख्यमंत्री पद के शासन काल में सहकारी आंदोलन विषयक एक विधेयक तैयार किया। २८ अक्तूबर १९६० को यह बिल राजपत्र में जाहिर किया। राज्य घटना में मार्गदर्शक तत्त्वनुसार सहकारी आंदोलन का क्रमशः उचित विचार करने के लिए यह विधेयक चव्हाण सरकारने प्रस्तुत किया था। सहकारी कानून के अनुसार इस विधेयक ने कुल मिलाकर दुरूस्तियाँ की थी। इसलिए संस्था स्थापन करने के बारे में लचीलापन आया और परिणामतः सहकारी क्षेत्र समाज के निचले स्तर तक पहुँचकर वह विस्तृत होने के लिए मदद हुई। लोगों ने उसका संपूर्ण फायदा उठाया। सहकारी आंदोलन ग्रामीण क्षेत्र में बडे अनुपात से छा गया। उस में से सहकारी कारखानदारी खडी हुई। हजारों लोगों को ग्रामीण विभाग में धंधा मिल गया। पेट भरने के लिए शहर की ओर भागनेवाले लोगों की भीड़ बडे अनुपात में रोकी गयी और यहाँ की खेती सुधार को प्रेरणा मिल गयी।

किसान महाराष्ट्र का प्राण है। किसान महाराष्ट्र के राज्यकर्ता है। यह बात प्रकट रूप से कहनेवाले यशवंतराव महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री थे। खेती और आवश्यक उद्योग धंदों के लिए व्यक्तियों को प्रशिक्षित करने के लिये खेती विषयक शालाओं की निर्मिति

की। महाराष्ट्र के प्रत्येक देहात में बिजली पहुँचाने के लिए उन्होंने योजना बनायी। खेती क्षेत्र में सीलिंग ॲक्ट बनाया। यह देखकर भारत सरकारने दस-बारह वर्षों के बाद सीलिंग का कानून बनाया यानी कि कमाल जमीन धारणा विधेयक बनाया।

शासकीय कार्य करते समय वे मानवता को नहीं भूले। नवंबर १९६६ में उन्होंने केंद्रीय पदभार संभाला। तब सात-आठ दिनों में दिल्ली पुलिसों ने एकाएक आंदोलन शुरू किया। असंख्य पुलिसोंने उनके निवास स्थान को घेर दिया। इतनाही नहीं तो शाम के समय कुछ पुलिस अहाते में घुसे और उन्होंने घोषणा देने की शुरुवात की। यह सब खेल मन को मनस्ताप देनेवाले था। ये लोग दूसरे दिन भी नहीं गये। साहब ऑफि स के बाहर आये तब उन्होंने संबोधित करके कहा, 'आप अपनी ड्यूटी पर वापस जाओ। आपके प्रश्न मैं समझ सकता हूँ। आप का बर्ताव उचित नहीं है। फिर भी मैं आप के बच्चों की तरफ देखकर कहूँगा कि यदि आप वापस ड्यूटीपर गए तो मैं सब भूल जाऊँगा। किसी ने आप को बहकाया है।'

(१४) लोकप्रिय नेतृत्व

सन १९४२ से १९६२ तक श्री. बालासाहब खेर, श्री. मोरारजी देसाई और यशवंतराव चव्हाण इन तीनों ने महाराष्ट्र के नेतृत्व की जिम्मेदारी संभाली। परंतु यशवंतरावने अपने कार्यकाल में वास्तववादी और पुरोगामी नीति अपनायी। इसलिए उनका नेतृत्व अधिक लोकप्रिय हुआ। इस काल में साहित्य, संस्कृति, समाज सुधार, सहकार, कृषि, शिक्षा, उद्योग आदि के बारे में महाराष्ट्र को प्रगति पथ पर ले जाने का महान कार्य उन्होंने किया। अपने कार्यकाल में सहकार के लिए पूरक योजना, सिंचन प्रकल्प शुरू किये। कोयना जल विद्युत प्रकल्प, मराठवाडा में पूर्णा प्रकल्प, विदर्भ में पारस थर्मल पॉवर स्टेशन ये यशवंतरावने महाराष्ट्र को दिये हुए बडे उपहार हैं। वरली दूध योजना, कोंकण रेल्वे का श्रीगणेशा, भूमिहिनों को जमीन देना आदि योजना का आरंभ उनके कार्यकाल में हुआ। देश में स्थिर पुरोगामी और सभी बारे में जागृत राज्य ऐसी महाराष्ट्र की प्रतिमा निर्माण हुई और वह आज ही कायम है। इसका संपूर्ण श्रेय यशवंतराव के पुरोगामी और वास्तव दृष्टिको है।

जाति पर आधारित ग्रामीण समाजसुधारणा, नष्ट करने का और स्वातंत्र्य, समता, बंधुत्व और न्याय इन तत्त्वोंपर आधारित नवीन ग्रामीण समाज रचना निर्माण करने का क्रातिकारी कार्य उन्होंने किया। यह राज्य 'मराठा' राज्य होगा कि मराठी राज्य होगा यह शक दूर कर महाराष्ट्र राज्य का नाम सार्थक किया। यह राज्य किसी एक विशेष जाति जमाति का न होकर सभी मराठी जनता का राज्य है ऐसा यकीन उन्होंने दिलाया।

यशवंतराव ने अपने कार्यकाल में डगमगानेवाली काँग्रेस को सँभाला और उसे योग्य दिशा दी। उन्होंने काँग्रेस कार्यकर्ताओं की एक बलशाली संघटना बनायी। जगह जगह पर काँग्रेस शिबिर लेकर काँग्रेस कार्यकर्ताओं को समाज बोधन की शिक्षा दी। उन्होंने कार्यकर्ताओं को एक वैचारिक अधिष्ठान प्राप्त कर दिया। वैसेही काँग्रेस संघटना और शासन इन दोनों में सुसंवाद स्थापित किया और तरुण पिढी को काँग्रेस को बलवान करने की दृष्टि से प्रयत्न किया। यशवंतराव की वैचारिक विरासत लेकर आगे हुए शरद पवार जैसे अनेक तरुण उस पिढी के प्रतिनिधि हैं।

इंदिरा गांधी की हत्या के बाद जो परिस्थिति निर्माण हुई थी उसे ध्यान में लेकर यशवंतराव ने राजीव गांधी का समर्थन किया। यशवंतराव को अपनी आयु में कुछ प्राप्त करने की अभिलाषा नहीं थी। जिस स्वातंत्र्य के लिए वे अपने सोलहवे वर्ष में स्वातंत्र्य संग्राम में कूद पडे थे ऐसे समय अपना देश अखण्ड रहना चाहिए ऐसी उनकी दृढ इच्छा थी। काँग्रेस पर उनकी अनन्य निष्ठा थी। काँग्रेस ही उनके जीवन का धर्म बन गया था। उस काँग्रेस की शतसंवत्सरी देखने के लिए वे आज अपने में नहीं है, इतका अफसोस असंख्य काँग्रेस नेताओं को होता रहेगा।

(१५) द्विभाषिक के मुख्यमंत्री

संयुक्त महाराष्ट्र के संबंध में उनकी भूमिका स्वच्छ थी। इस के साथ ही उनकी नेहरू निष्ठा वैचारिक स्वरूप की थी। पं. नेहरू को वे भारतीय संस्कृति का प्रतीक मानते थे। १९५७ का चुनाव होने के बाद फिरसे यशवंतराव मुख्यमंत्री बने।

जुलै १९६१ में पानशेत और खडकवासला बाँध फूटकर पुणे शहर जलमय हुआ। इन शहरों की अपरिमित हानी हुई। यशवंतराव तुरंत पूना गये। यशवंतरावने परिस्थिति का अनुमान लगाया और मदद पहुँचायी। मदद कार्य के लिए स. गो. बर्वे की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की। बाढ़ के बाद १२ दिनों में इस आपत्ति की जाँच के लिए न्या. बावडेकर कमिशन नियुक्त किया। लेकिन थोडे ही दिनों में बावडेकर ने आत्महत्या की। यशवंतराव सरकार पर आलोचना का तूफान उठा। उन्होंने आलोचना का उत्तर दिया और न्या. नाईक की अध्यक्षता में दूसरा कमिशन नियुक्त किया। यशवंतराव का यह जो विकास कार्य चल रहा था इसी बीच यह समस्या खडी हुई थी। यशवंतरावने अपनी कार्यकुशलता से यह समस्या सुलझायी।

(१५) काँग्रेस की प्रचंड विजय

फरवरी १९६२ में महाराष्ट्र विधान सभा का चुनाव हुआ। यशवंतराव के नेतृत्व में

काँग्रेस पक्ष की प्रचंड विजय हुई। यशवंतराव फिर मुख्यमंत्री हुए। यशवंतराव की लोकप्रियता शिखर तक पहुँची। लोक उन्हें 'प्रति शिवाजी' के नाम से संबोधित करने लगे। उन्होंने लोगों से कहा – 'मैं एक कार्यकर्ताओं का प्रतिनिधि हूँ। शिवाजी नहीं, प्रति शिवाजी भी नहीं। मुझे फँसाओं मत, तुम भी फँसो मत।' पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जाहिर सभा में यशवंतराव के राजकारोबार का गौरव किया। सर्वोदयवादी लोकनायक जयप्रकाश नारायण के अनुसार 'यशवंतराव देश में सर्वोत्तम मुख्यमंत्री हैं।'

सोलापूर में 'सुशील रसिक सभा' इस संस्था का उद्घाटन करते समय ना. यशवंतराव चव्हाण ने जुलै १९८४ में किये हुए भाषण में कहा – 'साहित्य में राज्यकर्ताओं का हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए ऐसे कहा जा रहा है। लेकिन राजनैतिक कार्यकर्ताओं को साहित्य में रुचि होगी और यदि वे साहित्य के क्षेत्र में आये तो क्या बिगडेगा?'

महाराष्ट्र में आज वैचारिक लेखन का अभाव दिखाई देता है। उस विषय में खेद व्यक्त करते हुए मा. यशवंतरावने आगे कहा – 'मराठी सारस्वत विविध वाङ्मय प्रकार से समृद्ध हो और मराठी भाषा संपन्न हो इसलिए एक व्यापक वैचारिक बैठक की अब बहुत आवश्यकता है।'

सिंहासन आरूढ हुई अपनी मराठी भाषा में ओजस्वी, प्रभावी छटपटानेवाली साहित्य कृतियों को आकाश तक पहुँचने के लिए गरूड झेप अब फिर से लेनी चाहिए।

शस्त्र की अपेक्षा शब्द और लेखन अधिक प्रभावशाली होता है। यह दुनिया बहुत कठिन है यह ध्यान में लेना चाहिए। एक कवि की कविता मुझे याद आती है। कवि कहता है कि – 'धज्जिया ओढकर सोना बेचने के लिए बैठा तो चिडियाँ भी पास नहीं आयेगी। परंतु सोना ओढकर धज्जियाँ बेचने के बैठा तो भीड़ नहीं हटेगी।' ऐसी अवस्था आज हुई है। इस अवस्था को दूर करने के लिए साहित्यकारों को प्रयत्न करना चाहिए।

(१६) चव्हाण की जीत

केंद्रीय वित्तमंत्री श्री. चिंतामणराव देशमुख नें संयुक्त महाराष्ट्र के प्रश्न पर इस्तीफा दिया। और उनका इस्तीफा २६ जुलै १९५६ को स्वीकृत हुआ। उसके बाद पंद्रह दिनों के भीतर संसद ने द्विभाषिक बम्बई राज्य की कल्पना का समर्थन किया। एक मत से चुनाव हुआ तो नये राज्य के काँग्रेस विधिमंडल पक्ष का नेतृत्व करने के लिए मोरारजी देसाई तैयार थे। परंतु भाऊसाहब हिरे ने मोरारजी भाई के विरुद्ध नेतृत्व पद का चुनाव लडने की घोषणा की तब मोरारजी पीछे हट गये। १६ अक्तूबर १९५६ को हिरे और चव्हाण में चुनाव हुआ। इस चुनाव में यशवंतराव की जीत हुई।

चव्हाणने मुख्यमंत्री के रूप में बम्बई राज्य के सूत्र अपने हाथ में लिये। जाहिर सभा लेना और भाषण करना काँग्रेस के लोगों को असंभव और कठिन हो रहा था। पत्थरों की और जूतों की मार व्यासपीठपर होती थी और नेताओं को हमेशा पुलिस की रक्षा लेनी पडती थी। काले झंडों से नेताओंका स्वागत होता था। लोक पुलिसों का घेरा तोडकर नेताओं की मोटर गाडियों को घेरा डालते थे और संयुक्त महाराष्ट्र की घोषणा देते थे। संतप्त जमाव को काबू में रखने के लिए कष्टप्रद काम पुलिसों को करना पडता था।

मार्च १९५७ में दूसरा सार्वत्रिक चुनाव हुआ। यशवंतरावजी १७०० मतों से विजयी हुए। इस चुनाव में काकासाहब गाडगील, हरिभाऊ पाटसकर, पी. के. सावंत और डी. के. कुंटे जैसे अनेक नेता चुनाव में पराजित हो गये। इस चुनाव के बाद केवल छः महिनों में महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस समिति के नेताओं को संरक्षणात्मक भूमिका लेनी पडी। यशवंतराव ने महाराष्ट्र काँग्रेस में से पुराने नेताओं को बाजू को हटाकर अपने समर्थकों को ले आये। महाराष्ट्र काँग्रेस को बलवान बनाने के लिए उन्होंने विचारपूर्वक योजना बनायी। ३० नवंबर १९५७ को प्रतापगडपर छत्रपती शिवाजी महाराज के पुतले का उद्घाटन करने के लिए पंडित जवाहरलाल नेहरू को बुलाया। महाराष्ट्र काँग्रेस समिति के नेताओं को प्रधानमंत्री के इस भेंट का फायदा लेकर ग्रामीण विभाग में भी बहुत लोगों का हमे समर्थन मिलता है यह दिखाना था। यशवंतराव इस कार्यक्रम में यशस्वी हुए। उन्होंने पंडित नेहरू को यह भी दिखाया कि पश्चिम महाराष्ट्र में काँग्रेस जिन्दी है।

फिर भी उप चुनाव में काँग्रेस हार गयी। बम्बई और मराठवाडा में हुए पराभव से नेताओं को आश्चर्य का धक्का लगा। इसलिए स. का. पाटील ने प्रधानमंत्री को पूर्व निर्णय का पुनःविचार की माँग किये बिना महाराष्ट्र में लोगों के मन जीते जा नहीं सकेंगे यह उन्होंने पहचाना। २३ अगस्त १९५८ के औरंगाबाद में हुई सभा में भाषण करते हुए कहा – 'संस्था का पूर्व निर्णय बदलने के लिए सदस्यों के मन शांति पूर्ण तरीके से मोड दिये जाय तो मेरी कोई बाधा नहीं होगी।' अक्तूबर १९५८ में नेहरू ने हैद्राबाद में अपनी साथियों के साथ चर्चा में बम्बई राज्य के विभाजन का विषय निकाला था। नेहरू के चरित्रकार एम. गोपाल के मतानुसार – 'इस प्रश्न का सर्वांगीण विचार करने के लिए प्रधानमंत्रीने निजी बैठक बुलायी थी।' इस बैठक में पंत, मोरारजी, और यशवंतराव चव्हाण उपस्थित थे। इस संबंध में निर्णय लेनेवालों का दृष्टिकोन जानकर चव्हाण ने उन्हें बताया कि द्विभाषिक राज्य चलाना दिन-ब-दिन कठिन हो रहा हैं। बम्बई मंत्री मंडल में दो गुट पडे थे। यह बात बहुत लोग जानते थे और यशवंतराव बडे प्रयत्न से उन्हें सँभाल रहे थे। इस प्रश्न का अभ्यास करने के लिए काँग्रेस की नयी अध्यक्षा श्रीमती

इंदिरा गांधी की मदद करने के लिए नौ सदस्यों की समिति नियुक्त की थी। पंत इस समिति के अध्यक्ष थे। प्रादेशिक लेन देन की बहुत अडचने निर्माण नहीं हुई। क्योंकि ड़ाग जिला और ठाणे तथा पश्चिम खानदेश में अनेक गाँव गुजरात को देने की बात यशवंतरावने कबूल की थी। विभाजन के समय आर्थिक प्रश्न पर वाद निर्माण हुआ था। इसलिए गुजरात को दस वर्षोंतक अर्थ सहाय्य देने के लिए यशवंतराव तैयार हुए। १ मई १९६० को बम्बई सह नया संयुक्त महाराष्ट्र राज्य अस्तित्व में आया। यशवंतरावने बातचीत से अंतिम ध्येय प्राप्त किया। फिर भी उन्होंने जनता को श्रेय दिया। इस संबंध में विरोधी पक्षने जो आह्वान दिया था राज्यकर्ता पक्ष ने भी विरोधी पक्षके आह्वान को प्रतिसाद दिया। इसलिए अंतिम ध्येय प्राप्त हुआ।

(५) यशवंतरावजी के निर्णय और कार्य

बीसवी शताब्दी में महाराष्ट्र में आधुनकि नेताओं में यशवंतराव चव्हाण का स्थान अग्रगण्य हैं। महाराष्ट्र के मुख्यमत्री पद के साथ ही केंद्र सरकार में रक्षा, अर्थ, विदेश, गृहमंत्री पद से लेकर आंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य करते समय संसार में कूटनीतिज्ञ, राजनैतिक प्रज्ञावंत, अर्थशास्त्रज्ञ, राजनैतिक सत्ताधारी आदि में उनका व्यक्तिमत्त्व निखर उठा। द्विभाषिक महाराष्ट्र को मुख्यमंत्री पद के सूत्र उन्होंने अपनी उम्र के ४२ वे वर्ष में हाथ में लिए। इतनी तरुण उम्र में मुख्यमंत्री पद का बहुमान मिले हुए वे पहले मुख्यमंत्री थे। उनका मुख्यमंत्री पद का कार्य काल खूब मशहूर हुआ।

महाराष्ट्र में जनसामान्य के हित के लिए यशवंतराव ने १९५७ से १९६०-६२ के काल में जो निर्णय लिये, जनता का सहकार्य लिया, प्रशासन को गति दी उसके कारण महाराष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक, औद्योगिक, खेती और शिक्षाविषयक सूरत-शक्ल पूरी तरह से बदल गयी। इसलिए महाराष्ट्र की देश में पुरोगामी और सभी क्षेत्रों में जागृत राज्य के रूप में भारत में प्रतिमा निर्माण हुई और वह आजतक स्थायी रूप से विद्यमान है।

ग्रामपंचायत और उसके संघटनपर उन्होंने अपना ध्यान केंद्रित किया। ग्रामपंचायत यह जनतंत्र की नींव है। ये संस्थाएँ केवल देहातों का नागरी कारोबार चलानेवाली संस्थाएँ नहीं रहनी चाहिए। उनपर देहात में समाज जीवन के सर्वांगीण विकास की जिम्मेदारी है ऐसी यशवंतरावजी की धारणा थी। देहात स्वावलंबी हो, जनतंत्र की स्थापना देहात में हो, इसलिए ग्रामपंचायत, सहकार संस्था और शाला इन्हीं के सहयोग से पुनरुज्जीवन करनेवाला ग्रामपंचायत का कानून उन्होंने बनाया। सत्ता का विकेंद्रीकरण कर के देहाती आदमी को राजनैतिक सबक सिखाने का प्रयत्न यशस्वी हुआ।

पार्लमेंटरी सेक्रेटरी और विविध विभागों के मंत्री के रूप में उनका कार्य अच्छा हुआ। उस में से उनकी प्रशासकीय कुशलता और पुरोगामी विचारधारा का अनुभव आया। उस काल में यशवंतरावजी में होनेवाले गुण विशेष रूप से प्रकट हुए। उस समय राजनैतिक वातावरण तप्त था। संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन जोरों पर था। १ नवंबर १९५६ को द्विभाषिक बम्बई राज्य अस्तित्व में आया। इस विशाल द्विभाषिक राज्य का काँटेरी मुकुट यशवंतरावजीने स्वीकार किया। यह बम्बई राज्य भारत में सभी राज्यों में विस्तार से बड़ा था। परंतु इन सभी में बड़े राज्य का कारोबार उम्र से सब में छोटे

मुख्यमंत्री होनेवाले यशवंतरावजी ने बडी सूझ-बूझ संभालकर सब पर अपना प्रभाव डाल दिया।

लोगों का, लोगों के लिए और लोगोंद्वारा चलाया गया यह राज्य है। लोगों के हित के लिए यशवंतरावजी ने अधिकारों का और काम का विकेंद्रीकरण करने का महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। लोगों की दृष्टि से यह आवश्यक था। मामूली और दैनंदिन काम के लिए लोगों को इस सिरे से उस सिरे तक राजधानी की ओर जाना न पडे, उनका काम जल्दी और बिना कष्ट से हो, इस उद्देश्य से उन्होंने राज्यों का छः विभागों में विभाजन किया। राजकोट, अहमदाबाद, बम्बई, पुणे, औरंगाबाद और नागपूर ये विभागों के मुख्य स्थान बनाये गये।

छः विभाग में विभाजन करते समय सचिवालय के विभाग के काम में भी फेरबदल किया। नियोजन और विकास विभाग का काम देखने के लिए विकास आयुक्त की नियुक्ति की। नागपूर और औरंगाबाद में रेव्हेन्यु ट्रायब्युनल की बेंचेस शुरू की। नागपूर और राजकोट में हायकोर्ट के बेंचेस स्थापन करने का उन्होंने महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। राज्य का आकार और बोझ ध्यान में लेकर सचिवालय में विभागों की और खाते प्रमुखों के कार्यालयों की २५ प्रतिशत वृद्धि करने की एक योजना भी उन्होंने बनायी। कारोबार सुलभ करने की दृष्टि से सरकारी सभी विभाग और उनके कार्यालयों का एकत्रीकरण आवश्यक था। उसके लिए एक स्वतंत्र इमारत की आवश्यकता थी। मुख्यमंत्री पद के सूत्र हाथ में लेने के बाद केवल १२ दिनों में उन्होंने बम्बई में सचिवालय के भव्य छः मंजिले इमारत का शिलान्यास मोरारजीभाई के कर कमलोंद्वारा किया और उसके तुरंत बाद काम का प्रारंभ किया।

सत्ता ग्रहण करने के बाद केवल १५ दिनों में यशवंतरावजीने राज्य में दौरा करके नये राज्य के विषय में जनता के मन में विश्वास निर्माण करने का प्रयत्न किया। विभागीय विकास के कामों को गति देने के लिए उन्होंने सलाहगार मंडल की स्थापना की। राज्य के सभी भागों में औद्योगिक कंपनियाँ थी। उनके उद्योग धंदे की जरूरते पूरी करने के लिए उन्होंने बम्बई राज्य फायनान्शियल (अब का महाराष्ट्र राज्य वित्तीय महामंडल) कार्पोरेशन की स्थापना की। उद्योग विभाग में सभी अधिकारियों की बैठक बुलाकर उन्हें राज्य में सभी सामग्री का ज्यादह से ज्यादा उपयोग कर लेने की आवश्यकता पर बल दिया।

नाट्य कला को उत्तेजन देने के लिए २.१६ लाख रुपयों की योजना बनायी। नाटकों के पुस्तकों को पुरस्कार, उत्साही कलावंतों का नाट्य महोत्सव, खुले नाट्य गृहों की निर्मिति, विपन्न अवस्था में कलावंतों को सहाय्य, संगीत और नाट्य शालाओं को

अनुदान, तमाशों को पुरस्कार आदि बातें महाराष्ट्र में यशवंतरावने शुरू करके प्रशासकीय गुणों के साथ अपनी रसिक और कलाप्रेमी वृत्ति का परिचय उन्होंने जनता को कर दिया।

यशवंतरावने संपूर्ण राज्य का दौरा किया। उन्होंने सभी विभाग में असंतोष कम करने का और सभी के मन जोडने का प्रयत्न किया। अपने विनम्र और मिठास भाषणों से उन्होंने जनता के मन जीते। इनकी यह बड़ी विजय थी। भारत के हित में ही महाराष्ट्र का हित समाया हुआ है। यही बात सभी को समझायी। यह जनतंत्र राज्य चलाने के लिए, समृद्ध करने के लिए उन्होंने सभी लोगों को सहकार्य का आवाहन किया था। यशवंतराव की लोकप्रियता बढ़ रही थी। फिर भी संयुक्त महाराष्ट्र आंदोलन का जोर कम नहीं हुआ था। विरोधी पक्ष की ओर से उनपर आलोचना होती थी। इसके बाद छः महिनों में यशवंतराव को फिरसे चुनाव के सामने जाना पडा। १२ अप्रैल से फिर से यशवंतराव मुख्यमंत्री बने। विशुद्ध, कार्यक्षम, निःपक्षपाती कारोबार का विश्वास देकर उनका कार्यकाल फिर शुरू हुआ।

पंचवार्षिक योजनाएँ शुरू हुई थी। औद्योगिकीकरण के और जमीन सुधार के क्षेत्र में उत्पादन कार्य को प्रेरणा मिलनी चाहिए। उस पद्धतिसे नीति तैयार करना और उसके साथ सभी को न्याय मिला देना सरकारने अपना यह कर्तव्य मान लिया था। यशवंतराव ने औद्योगिकीकरण की एक सर्वंकष योजना बनायी थी। उत्पादन का लाभ मालिक, श्रमिक और जनता इन सभी को हो और उस में समानता और एकसूत्रता हो इस पर उन्होंने बल दिया।

उद्योगधंदों के विकास से देश की अर्थव्यवस्था पर ही नहीं तो देश के सामर्थ्य में भी महाराष्ट्र ने बहुमूल्य योगदान दिया ऐसा उनका दृष्टिकोन था। उद्योगों की वृद्धि केवल शहर में हो जाने से शहर और देहात उन दोनों में खाई अधिक बढती जा रही थी। उसमें से अनेक समस्याएँ निर्माण हो जाती हैं। उसे ध्यान में रखते हुए ग्रामीण जीवनके नागरीकरण को बढावा दिया।

जमीन सुधार से लाखों किसान बांधवों के जीवन पर महत्त्व के परिणाम होते है। यह प्रश्न मनवी और आर्थिक स्वरूप का होने से वह सहानुभूति से और कल्पकता से सुलझाने पर उन्होंने बल दिया। राज्य में प्रत्येक समाज को, प्रदेश को और गुट को उचित और न्याय्य बर्ताव मिलना चाहिए ऐसी नीति उन्होंने अपनायी। ये सब बातें करनेवाले प्रशासन की कार्यपद्धति भी निश्चित की। उन्होंने शासन यंत्रणा को जनता के जरूरतों के संबंध में जागृत रहने की सलाह दी।

लोगों को विश्वास में लेने के लिए उन्होंने जाहीर किया कि जिस समय मुख्यमंत्री

एकाध जिला, तहसील को भेंट देने के लिए आ जायेंगे, उस समय वहाँ के लोग उनकी भेट लेंगे और अपनी अडचनें और समस्याएँ कह देंगे। इसलिए वे एक डेढ घंटे का समय लोगों के लिए सुरक्षित रखते थे। जनता की अडचनें और समस्याएँ सुनने की दृष्टि से इस निर्णय का अनुकूल परिणाम हुआ।

शिक्षा, खेती, अर्थव्यवस्था, उद्योग कारोबार का विकेंद्रीकरण, सहकार, बाँध, नहरे, कला, वाङ्मय, भाषा, साहित्य और संस्कृति, कृषिउद्योग, दुग्धोत्पादन आदि सभी क्षेत्रों में समस्याओं का अभ्यास कर उन्होंने पुरोगामी विचारधारा रखकर उस संबंध में निर्णय लिये और उसका अंमल भी शुरू किया। काम को गति दी और सभी विभागों का लगाम मुख्यमंत्री के नाते अपने हाथ में रख दिया। इसलिए उनका ध्येय साध्य हुआ। वे एक के पीछे एक जनकल्याणकारी निर्णय लेकर उसका अंमल जोर से कर सके।

(१) मुफ्त शिक्षा योजना

शिक्षा विषयक कार्य को गति देने के लिए पुस्तकी शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा तक विविधांगी कार्यक्रम उन्होंने बडी मात्रा में शुरू किये। मूलोद्योग शिक्षा को बढावा दिया। प्रौढ शिक्षा की व्याप्ति बढायी। मुफ्त शिक्षा की योजना राज्य में यशवंतराव ने पहले पहल शुरू की। इसलिए शिक्षा के दरवाजे सभी के लिए खुले हुए। इसका लाभ पिछडी जाति में होनेवाले लोगों को अधिक हुआ। प्रारंभ में जिन पालकों का वार्षिक उत्पन्न ९०० रुपयों की अपेक्षा ज्यादा न हो ऐसे पाल्यों को मुफ्त शिक्षा का नियम लागू किया और जल्दी ही यह उत्पन्न की मर्यादा १२०० रुपयों तक बढा दी। (आज यह मर्यादा ४८०० रुपयों तक है।) इस सुविधा से ग्रामीण भाग में शिक्षा का प्रसार होने के लिए अच्छी गति मिली। इस के साथ ही पाँचवी कक्षा से अंग्रेजी विषय ऐच्छिक किया। ग्रामीण भाग में विद्यार्थियों को अंग्रेजी पढाने की ओर भी ध्यान दिया। मराठवाडा विभाग में शिक्षा का प्रसार होने के लिए उन्होंने शिक्षा विषयक संस्थाओं को मुक्त कर-कमलोंद्वारा अनुदान दिया। उन्होंने मराठवाडा के लिए स्वतंत्र विद्यापीठ की स्थापना की। २३ अगस्त १९५८ को पंडित जवाहरलाल नेहरू के कर-कमलों द्वारा उस विद्यापीठ का उद्‌घाटन हुआ। इस समय पंडित नेहरूने चव्हाण के कार्य का मुक्त कंठ से गौरव किया। दक्षिण महाराष्ट्र के लिए यशवंतरावने अपने कार्यकाल में कोल्हापूर में शिवाजी विद्यापीठ की स्थापना की और १८ नवंबर १९६२ को राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के कर-कमलोंद्वारा शिवाजी विद्यापीठ का उद्‌घाटन हुआ। उसके विकास के लिए यशवंतरावने ५० लाख रुपयों का प्रबंध किया। आर्थिक दृष्टिसे गरीब विद्यार्थियों के लिए इ.बी.सी. की सुविधा देकर या फीस माफ करके उनकी शिक्षा की सुविधा की। आदिवासी

लडकों के लिए निवासी आश्रमशाला की स्थापना की। उच्च शिक्षा के लिए विविध शिष्यवृत्ति की घोषणा की और उनका अंमल उनके कार्यकाल में सुरु हुआ।

यशवंतराव ने सातारा सैनिकी स्कूल की स्थापना करने से नैशनल डिफेन्स अकादमी के लिए शिक्षा की सुविधा इस स्कूल में उपलब्ध हुई। भारत में इसी प्रकार का यह पहला सैनिकी स्कूल था।

आदिवासी लडकों की शिक्षा के लिए उन्होंने एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया। शिक्षा की गंगा आदिवासी के दरवाजे तक पहुँचाने की दृष्टि से उन्होंने आश्रम शाला की योजना बनायी। शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारक अनेक निर्णय यशवंतराव के नेतृत्व ने लिये। यशवंतराव ने कराड और औरंगाबाद में दो नये इंजिनिअरिंग महाविद्यालय खोल दिये। नागपूर में सरकारी इंजिनिअरिंग कॉलेज की स्थापना की। माध्यमिक शाला की फीस वृद्धि के कारण शासकीय तिजोरी पर बोझ पड रहा था। इसलिए यशवंतरावने फीस वृद्धि करने की इजाजत रद्द की।

(२) औद्योगिक उपनिवेश की स्थापना

राज्य में औद्योगिक उपनिवेश स्थापन करने की एक सर्वंकष योजना उस समय बम्बई राज्य सरकार ने बनायी। शासन के साथ नगरपालिका, सहकारी संस्था और निजी उद्योग इन सब ने इस काम में अगुआई करनी चाहिए ऐसी यशवंतराव की धारणा थी। अशासकीय संस्था को औद्योगिक उपनिवेश स्थापित करने के लिए अनुमति देनावाला पहला बम्बई राज्य है। उस समय बम्बई राज्य में १५ औद्योगिक उपनिवेश स्थापन करने का तै किया गया। गंदी बस्तियाँ और बेकारी दूर करने की दृष्टि से घनी लोग वस्ती के शहरों में औद्योगिक उपनिवेश स्थापन करने की यह योजना थी। पानी, नाले, रेल सायडिंग, रास्ते, बिजली आदि सुविधाएँ इन उपनिवेश में करनी थी। कोल्हापूर में उद्यम नगर और पुणे के हडपसर में उपनिवेश की स्थापना करने की योजना प्रत्यक्ष में साकार हो गयी। थोडे ही दिनों में चिंचवड, पिंपरी, भोसरी विभाग में ऐसे उपनिवेश स्थापित की गये हैं। छोटे और घरेलू उद्योग के लिए बॉम्बे स्टेट फायनान्शियल कार्पोरेशन की ओर से कर्ज देने की व्यवस्था की गयी।

(३) सहकार को प्रेरणा

सहकारी क्षेत्र विस्तृत करने के लिए और उनके ग्रामीण जीवन की परिस्थिति में सुधार करन के लिए उन्होंने प्रेरणा दी। खेती के लिए कर्ज की पूर्ति करना, खेती के लिए माल की बिक्री करना, खेती के लिए और घरेलू उपयोग के लिए लगनेवाले वस्तु की

बिक्री, खेती विकास, खेत माल की बिक्री, दुग्ध उत्पादकों की संघटना ऐसे विविध काम यशवंतरावजी के शासन ने, शुरू किये। गृह निर्माण के सहकारी संस्था को प्रेरणा दी। इसलिए सहकारी आंदोलन देहात से शहर तक आ पहुँचा। ग्रामीण भागों में समाज सुधार के लिए उन्हें कर्जपूर्ति की सुविधा उन्होंने सहकारी बँक, भूविकास बँक, प्राथमिक भूविकास बँक के द्वारा कर दी। अगस्त १९५७ में यशवंतरावजी के सरकार ने राज्य में १८ सहकारी शक्कर कारखानों को दर्ज कर के देश में अग्रेसरत्व प्रस्थापित किया। नये शक्कर कारखाने निकालने के लिए शासन ने पूँजी की व्यवस्था की। आज शक्कर कारखानों के संबंध में देश में महाराष्ट्र को अग्रेसरत्व का जो मान-सम्मान मिला है, उसका श्रेय यशवंतरावजी के उस समय की नीति को है। यशवंतरावजी ने सहकार विषयक एक विधेयक तैयार करके वह विधानसभा में संमत कर लिया। इस विधेयक से सहकारी संस्था स्थापन करने में लचीलापन आ गया।

(४) जो खेती में काम करेगा वही उसकी जमीन

किसान ही महाराष्ट्र का प्राण और वही महाराष्ट्र का राज्यकर्ता है। ऐसी यशवंतरावजी की धारणा थी। बम्बई राज्य ने नया काश्तकार कानून स्वीकार कर जो खेती करता है उसकी जमीन होती है इस तत्त्व का स्वीकार किया। इसलिए महाराष्ट्र के खेती क्षेत्र में और जमीन के मालिक के क्षेत्र में प्रचंड क्रांति हुई। इसलिए सर्वसामान्य किसान सरकार की ओर एक अपनत्व की दृष्टि से देखने लगा। १ अप्रैल १९५९ से टुकडेबंदी और टुकडे तोड यह कानून प्रत्यक्ष अमल में लाया। जमीन का क्षेत्र सलग होने की दृष्टि से इन कानून का उचित परिणाम हुआ। कानून बनाकर सरकारने जहागिरदारी पद्धत नष्ट की। खेत जमीन के कमाल धारणापर मर्यादा डालने का (सिलिंग) कानून कर दिया। इसलिए महाराष्ट्र राज्य पुरोगामी है यह सिद्ध हुआ।

(५) सिंचन योजना

महाराष्ट्र की खेती बरसात पर निर्भर है। खेती में फसल पैदा करने के लिए पानी मिलने के लिए हमेशा की व्यवस्था करने की दृष्टि से सिंचन योजना, उसके द्वारा पानी व्यवस्था, पानी की उपलब्धता और बिजली की निर्मिति आदि विविध हेतु से उन्होंने काम का नियोजन किया। इसलिए उन्होंने राज्य में इरिगेशन डिव्हीजन और सब डिव्हिजन स्थापन करके उपलब्ध पानी पूर्ति की सुविधा का निरीक्षण करने के आदेश दिये। उन्होने बम्बई राज्य इरिगेशन बोर्ड की स्थापना की। सिंचन योजना और जल संपत्ति के संबंध में महाराष्ट्र का फिरसे एक बार संपूर्ण निरीक्षण करने के लिए स. गो. बर्वे की

अध्यक्षता में राज्य सिंचन मंडल स्थापन किया।

महाराष्ट्र का भाग्य प्रकाशित करने के लिए कोयना जल योजना का प्रारंभ १ मार्च १९५८ को यशवंतरावके कर-कमलों द्वारा उद्घाटन हुआ। योजना में पहला जनित्र भी १६ मई १९६२ में यशवंतरावके कर कमलों द्वारा शुरू हुआ।

मराठवाडा का क्रांतिकारी परिवर्तन करने के लिए पूर्णा प्रकल्प का प्रारंभ यशवंतराव के कर कमलों से हुआ। विदर्भ में पारस थर्मल पॉवर स्टेशन यह भव्य दिव्य प्रकल्प यशवंतराव के कार्य काल में पूर्ण हुआ। यह प्रकल्प वैदर्भीय जीवन का औद्योगिकीकरण करने की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

(६) सत्ता का विकेंद्रीकरण

यशवंतराव के कार्यकाल में सत्ता के विकेंद्रीकरण का कानून स्वीकृत हुआ था। बलवंत मेहता समिती ने सूचित की हुई विकेंद्रीकरण की सूचनाओं का विस्तृत विचार करने के लिए वसंतराव नाईक की अध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की। इस समिती ने छः सात महिनों में अभ्यास करके अपना अहवाल पेश किया। यशवंतरावने वह अहवाल ७ अप्रैल १९६१ को विधानसभा में रख दिया। यह अहवाल विधेयक के रूप में ८ दिसंबर १९६१ को संमत हुआ। सरकार ने भी यह अहवाल स्वीकृत करने की बात जाहिर की। १ मई १९६२ को प्रत्यक्ष रूपसे जिला परिषद और पंचायत समिति अस्तित्व में आयी। इस प्रकार की योजना अंमल में लानेवाला महाराष्ट्र राज्य पहला राज्य है।

(७) मनोरंजन कर में छूट

नाट्य कला को प्रोत्साहन देने के लिए नाट्य महोत्सव, नाट्य कला के शिबिरों को उन्होंने प्रोत्साहन दिया। अप्रैल १९५७ से चित्रपटों को मनोरंजन कर में छूट देने की नयी पद्धत लागू की। प्रादेशिक भाषा में उत्कृष्ट पुस्तकों को पुरस्कार जाहिर किये। यशवंतरावजी ने शासन की ओर से कलावंतों को शासन की ओर से आर्थिक साहाय्य देने की प्रथा शुरू की। बालगंधर्वो को उनकी विपन्नावस्था में रु. ३०० मासिक मानधन शुरू किया। वैसेही राजकवि यशवंत को 'महाराष्ट्र कवि' उपाधि से विभूषित कर उन्हें आमरण ४०० रुपये मासिक मानधन देने का निर्णय लिया।

(८) महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल की स्थापना

१ मई १९६० को बम्बईसह संयुक्त महाराष्ट्र राज्य की निर्मिती हुई। नागपूर शहर का महत्त्व कायम रखने की दृष्टि से यशवंतरावने विधिमंडल का जाडे का अधिवेशन

नागपूर में कार्यान्वित करने का निर्णय किया। उसका अमल आज तक शुरू है। इस अधिवेशन में २१ दिसंबर १९६० को महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल का उद्‌घाटन यशवंतरावने किया। इस मंडल की स्थापना अर्थात महाराष्ट्र राज्य निर्मिति के बाद सांस्कृतिक क्षेत्र में हुई एक महत्त्वपूर्ण घटना है। साहित्य और संस्कृति की वृद्धि के लिए और संवर्धन के लिए तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्री जोशी की अध्यक्षता में विद्वज्जनों की एक यंत्रणा खडी की।

१७ मई १९६२ को वाई में साहित्य और सांस्कृतिक मंडल ने विश्वकोष कार्यालय स्थापित किया। यशवंतराव ने उस कार्यालय का उद्‌घाटन किया। २३ मई १९६१ को पूना में लोक साहित्य और लोक संस्कृति संमेलन का आयोजन किया।

(९) मराठी राज्य भाषा

महाराष्ट्र राज्य निर्मिति के बाद मराठी भाषा को राज्यभाषा करने का यशवंतराव ने तय किया। उसके लिए भाषा संचालनालय की निर्मिति की गयी। सरकारी कारोबार में मराठी भाषा का माध्यम के रूप में उपयोग करने के लिए तुरंत उपाय किये गये। शासकीय कार्यालय में कारोबार मराठी भाषा में चलाने का निर्णय लिया। सभी तहसील कार्यालय में कारोबार, पत्र व्यवहार मराठी भाषा में करना चाहिए ऐसा निर्णय लिया गया।

(१०) वरली दूध योजना

बम्बई शहर को दूध की पूर्ति करने के लिए वरली दूध डेअरी योजना तैयार की। यह तीन कोटी रुपयों की योजना थी। १९६१ में केवल १८ महिनों में उसका शुभारंभ हुआ। आरे डेअरी में डेअरी टेक्नॉलॉजी संस्था में भारतीय दुग्धालय पदविका अभ्यासक्रम यशवंतराव के कार्यकाल में शुरू हुआ। इस प्रकार का यह भारत में पहला अभ्यासक्रम है। संयुक्त राष्ट्र संघटना के अन्न और कृषि संघटना के द्वारा डेन्मार्क सरकार और भारत सरकार के सहयोग से दुग्ध व्यवसाय के संबंध में दूसरी शिक्षा कक्षा उन्होंने आरे डेअरी में शुरू की।

(११) कोकण रेल का श्रीगणेशा

कोकण विभाग में दिवा-दासगाव मार्ग पर रेल शुरू कर कोकण में रेल लाने का काम यशवंतरावजी का है। दिवा-पनवेल रेल मार्ग का काम उन्होंने भारत सरकार की मंजूरी लेकर अपने कार्यकाल में शुरू किया।

(१२) बौद्धों को सहूलियत

पद दलितों को न्याय देने का एक महत्त्वपूर्ण निर्णय यशवंतरावजी ने लिया। हरिजनों को जो सहूलियते मिलती थी, वही सहूलियते बौद्ध धर्म स्वीकार करनेवालों की बंद कर दी गयी थी। बौद्ध धर्म स्वीकारने पर उनका सामजिक, आर्थिक और शैक्षणिक पिछड़ेपन कम होनेवाला नहीं था। हरिजनों की मिलनेवाली सहूलियते बौद्ध धर्म स्वीकार करनेवालों को मिलनी चाहिए यह माँग यशवंतराव ने स्वीकार की। उन्होंने उन्हें सहूलियते देने के आदेश निकाले। इसलिए रिपब्लिकन पक्ष ने उन्हें धन्यवाद दिये।

नागपूर में जिस स्थान पर डॉ. आम्बेडकर ने बौद्ध धर्म की दीक्षा ली, उस दीक्षा भूमि पर डॉ. आम्बेडकर का स्मारक बनाने का निर्णय लिया। यशवंतराव के मन में डॉ. आम्बेडकर के प्रति आदर था। इसलिए उन्होंने १४ अप्रैल को डॉ. आम्बेडकर के जयंति निमित्त सार्वजनिक छुट्टी जाहिर की। हरिजन और बौद्ध लोगों की समस्याएँ सुलझाने के लिए यशवंतराव ने किये हुए प्रयत्न बहु-मूल्य है। उनका यह कार्य अन्य राज्यों के लिए आदर्शवादी एवं अनुकरणीय है।

(१३) हरिजन (महार) वतन पद्धत नष्ट

महाराष्ट्र में हरिजन वतन पद्धत अस्तित्व में थी। इस पद्धति से समाज का अधःपात हुआ था। उन्हें गुलामी का जीवन जीना पडता था। यशवंतरावने 'बॉम्बे इन्फिरिअर व्हिलेज वॉन्टस ॲबॉलिशन ॲक्ट १९५८' का कानून इस हरिजन वतन पद्धति को प्रतिबंध लगाया। वतन जमीन की तिगुणी किमत लेकर प्रबंधक मालिकों को स्वामित्व का हक वापस कर उनके कब्जे में दी। यह एक बडा ऐतिहासिक कार्य उन्होंने किया।

(१४) भूमिहिनों को जमीन देना

हरिजन वतन पद्धत नष्ट हुई। लेकिन उनका और अन्य पिछडी हुई जाति के पेट का प्रश्न सुलझा नहीं था। यह भूमिहीन वर्ग भूख से तडप रहा था। 'उन्हें रोटी के लिए, पेट के लिए जमीन दो' ऐसी माँग संसद सदस्य दादासाहब गायकवाड ने की। यशवंतराव को यह माँग न्याय और उचित लगी। इसलिए उन्होंने भूमिहिनों को जमीन देने का काम शुरू किया। यशवंतराव का यह निर्णय क्रांतिकारी स्वरूप का था।

(१५) गुडी पाडवा को छुट्टी

महाराष्ट्र राज्य की निर्मिति होने के बाद यशवंतरावने गुडी पाडवा को छुट्टी देने का

निर्णय लिया। सभी लोगों ने उस निर्णय का स्वागत किया। मंत्रियों के बंगलों के नाम अंग्रेज साहबों के थे। उनके स्थानपर सह्याद्री, मेघदूत, रामटेक, वर्षा आदि नाम दिये। इन से महाराष्ट्र को अभिमान लगता है।

(१६) मुख्यमंत्री निधी

आर्थिक अभाव से अनेक सेवाभावी संस्था और संघटनाएँ संकट में पड जाती थी। इसलिए प्रथमतः यशवंतराव ने मुख्यमंत्री निधि की स्थापना की। अनेक सेवाभावी संस्थाओं को इस निधि से मदद मिलती है। इतना नहीं, कोई गंभीर बीमार पडा, किसी के हृदय का ऑपरेशन करना हो, किसी की जलकर मृत्यु हो गयी हो, किसी का घर जला हो इन सब को इस निधि से मदत मिलती है।

(१७) अग्निकांड में पीडित लोगों को कर्ज की मुआफी

म. गांधी के वध के बाद महाराष्ट्र में जो अग्निकांड हुआ। उस में अनेक ब्राह्मणों के घर, दुकाने, कारखाने जल गये। उनके पुनर्वसन के लिए शासन ने उन्हें कर्ज रूप से मदद की। इनकी गृहस्थी तहस-नहस हो जाने से कर्ज का भुगतान करना उनकी शक्ति के बाहर का काम था। महाराष्ट्र निर्मिति का मौका साधकर यशवंतराव ने उस दिन जले हुए पीडित लोगों के कर्ज मुआफ करने की घोषणा की। उसकी इस घोषणा का जोरदार स्वागत हुआ। उपकार की भावना से यह कर्ज मुआफ नहीं किया है, यह कहने के लिए वे नहीं भूले।

(१८) महाराष्ट्र राज्य

महाराष्ट्र राज्य निर्मिति के बाद या मराठी भाषिक राज्य का नाम 'बम्बई राज्य', 'बम्बई महाराष्ट्र राज्य', 'महाराष्ट्र' ऐसी विविध सूचनाएँ आयी थी। यशवंतरावने काँग्रेस व विरोधी पक्ष के सदस्यों को विश्वास में लेकर महाराष्ट्र राज्य यह नाम निश्चित किया। विधान सभा में यह नाम एकमत से सहमत हुआ।

(१९) सीमा प्रश्न पर मध्यस्थता

महाराष्ट्र और म्हैसूर सीमा प्रश्नों के संबंध में चर्चा करते समय यशवंतराव ने अपने मत निर्भयता से कह दिये। इस प्रश्न पर उपाय सुलझाने के लिए मध्यस्थ नियुक्त करने की सूचना उन्होंने स्वीकार की।

महाराष्ट्र का कारोबार स्वच्छ और समयपर करने के लिए किसी भी बात से समझौता नहीं किया। प्रशासन में उन्होंने उत्साह का और विश्वास का वातावरण निर्माण किया। उसे व्यवहारी और मानवता का दृष्टिकोन प्राप्त कर दिया। मुख्यमंत्री काल में उनके कर्तृत्व की प्रतिमा ऊँचाई पर पहुँच गयी। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने जाहिर सभा में यशवंतरावजी का गौरव किया। जयप्रकाश नारायनने उन्हें सर्वोत्तम मुख्यमंत्री कहा। यशवंतराव महाराष्ट्र को पुरोगामी समृद्ध राज्य बनाने में व्यस्त थे। इस समय हिमालय ने मदद के लिए सह्याद्री को पुकारा और महाराष्ट्र का सह्याद्री हिमालय की मदद के लिए चला गया।

विदर्भ में जुलाहों की सूत कताई की सहकारी मिल को नागपूर में शुरू करने के लिए यशवंतरावने ५० लाख रुपये खर्च की योजना को मान्यता दी।

(२०) स्वातंत्र्य आंदोलन में योगदान

स्वातंत्र्य आंदोलन में यशवंतराव स्वयं कूद पडे। क्रांतिसिंह नाना पाटील, यशवंतराव चव्हाण, वसंतदादा पाटील, किसनवीर ये उस समय सातारा जिले में अग्रगण्य लोग थे। परंतु इन सब में यशवंतराव की बौद्धिक ऊँची सबसे ज्यादा थी। इसलिए यशवंतराव का नेतृत्व सतत विकसित होता रहा। अपयश यह शब्द यशवंतराव को कभी भी मालूम नहीं था। और राजनीति में सुसंस्कृत दृष्टि से वादविवाद न करते हुए, गालियाँ न देते हुए सुसंस्कृत दृष्टि से राजनीति की जा सकती है यह बात उन्होंने महाराष्ट्र को दिखायी। और देश में महाराष्ट्र की अलग, उच्च और अच्छी प्रतिमा निर्माण की। स्वातंत्र्यपूर्व काल में लोकमान्य तिलक के कारण महाराष्ट्र देशभर में जैसे परिचित था वैसे स्वातंत्र्योत्तर काल में लगभग तीस वर्षे यशवंतराव के कारण महाराष्ट्र भारत देश में परिचित हुआ। दिल्ली में उत्तर भारतीय लोग यशवंतराव को सह्याद्री का शेर कहते थे। यशवंतराव उचित मनुष्य को चुनते थे। वे अच्छे मनुष्य को अपने पास रखते थे। वे उन्हें समर्थन देते थे। वे राजनीति में अधिक से अधिक सचाई से, ईमानदारी से काम करते थे। यशवंतराव ने निर्मल पद्धति से २५ वर्षोंतक राजकारोबार किया। संयुक्त महाराष्ट्र के आंदोलन में यशवंतरावजी ने महाराष्ट्र की अपेक्षा पं.नेहरू बडे हैं ऐसा विधान किया था। इसलिए उन्हें प्रचंड आलोचना सहन करनी पडी। उन्होंने २५-३० वर्षे राजकारोबार किया। उनके इस विधान के पीछे देश हित की भावना प्रधान थी। इसलिए लोकक्षोभ होने पर भी यशवंतराव ने अपना विधान पीछे नहीं लिया। देश के स्तरपर नेहरू की जैसे औद्योगिक विकास की नीति थी और विज्ञान को बढावा देने की भूमिका थी। नेहरू का जैसे

साहित्य पर, संगीत पर, रसिकता पर प्रेम था वैसेही यशवंतरावजी का साहित्य, संगीत पर प्रेम था। वे साहित्यकारों और संगीतकारों में रममाण हो जाते थे।

(२१) साहित्य और साहित्यकारों के प्रति आदर

यशवंतराव सुसंस्कृत मनुष्य थे। उन्हें साहित्य के बारे में अधिक आकर्षण था। स्व. ग. दि. माडगूलकर, रणजित देसाई, कवि यशवंत, पु. ल. देशपांडे, ना. धों. महानोर, व्यंकटेश मांडगूलकर, श्रीनिवास कुलकर्णी आदि साहित्यकारों के सहवास के लिए लालायित हो जाते थे। समाज के मानस में जो होता है वह साहित्य में अभिव्यक्त होता है, या सामाजिक, राजनैतिक और साहित्यिक मूल्यों का एक दूसरे से अलगाव नहीं किया जाता। ऐसे उनके विचार साहित्यिक महफिल में साहित्यकार सुनते थे। सभी साहित्यिकों को फिर वह नये रूप से आगे आया हुआ लक्ष्मण माने हो वे उससे प्रेम से बर्ताव करते थे। स्व. भाऊसाहब खांडेकर तो उनके हृदय में मर्मस्थान था। भाऊसाहब के 'पांढरे ढग' और 'दोन ध्रुव' इन दोनों उपन्यासों का उनपर बहुत प्रभाव पडा था। गरीबों के बारे में दया अथवा करुणा ने एक आदर्शवादी जीवन जीने की प्रेरणा इन दोनों उपन्यासों ने उन्हें दी। यशवंतराव के कराड में साहित्य संमेलन हुआ था। यशवंतराव भाऊसाहब खांडेकर को धीरे-धीरे साहित्य संमेलन में ले आये थे। यह सब देखने के बाद मुझे ऐसा लगता है कि साहब का मूल स्वभाव साहित्यका है। पर बहुत लोगों की समझ में यह बात नहीं आयी। उनका साहित्य और साहित्यिकों पर का प्रेम यह एक राजनीति का भाग है ऐसा ये लोग मानते हैं। उससे साहब को बडे क्लेष हुए। 'शिवनेरीच्या नौबती, सह्याद्रिचे वारे, ऋणानुबंध' आदि उनके पुस्तकों में उनके साहित्यिक गुणों की प्रचीति आती हैं। अन्त में उनका 'कृष्णाकाठ' प्रसिद्ध हुआ। और फिर सभी को साहित्यिक यशवंतराव का परिचय हुआ। लेकिन उस समय बहुत देर हुई थी। कराड के साहित्य संमेलन में उन्होंने कहा था - 'तुम साहित्यिक लोग जो सेवा कलम से करते हो वह हम राजनैतिक लोग वाणी (वाचा) से करते हैं।'

सत्ता के राजनैतिक जंगल में रहकर उन्होंने सुसंस्कृतता छोडी नहीं। अनेक साहित्यिक और उनके मित्र थे। उन्हें ग्रंथों का लोभ था। शब्दों पर उनका प्रेम था। वे अपने भाषण में बहुत बार समुचित शब्दों का प्रयोग करते थे, यह सुनकर प्रथितयश साहित्यिक भी खुश हो जाते थे। उत्तम शब्द रचना को रसिकता से वे दाद देते थे।

मराठी में मैंने जो उत्तम वक्ता सुने हैं उन में यशवंतराव का बहुत उपर का क्रम लगता है। उनका बोलना बहुत फूर्तीला रहता था। इस गुण के कारण वे सभा जीत लेते थे। वे हजारों लोगों को मंत्रमुग्ध करते थे। समुचित भाषा, मृदु आवाज और समुचित

शब्दरचना के कारण उनका भाषण परिणामपूर्ण होता था।

सत्ता स्थान में रहते हुए साहित्य और संगीत का प्रेम उन्होंने कायम रखा था। पठन की धुन कायम रखी थी। चव्हाण के निवासस्थान में सभी विचारों के साहित्यिक, संगीतकार और नाटककार एकत्र हो जाते थे। दिल्ली देखने के लिए आनेवाले हरिद्वार, ऋषिकेश यात्रा को जानेवाले महाराष्ट्रीय लोग चव्हाण के घर जाकर उनका अतिथि सत्कार लेते थे। उनके घर में कभी भीमसेन जोशी की संगीत की महफिल होती थी, तो कभी गझल-कव्वाली का कार्यक्रम होता था। राजनीति की व्यस्तता में ये सब करते थे, यह देखकर अनेक लोगों को आश्चर्य लगता था। उनके साथही वे विपक्षी लोगों का प्रेम से स्वागत करते थे। वे विपक्षी लोगोंद्वारा की गयी आलोचना का मन में गुस्सा नहीं रखते थे। यशवंतराव का कौशल विलक्षण था। यह नेता, यह राजनीतिज्ञ, यह मंत्री, यह मनुष्य अलग था, न्यायी था। लेकिन काल कठोर होता है। उसके सामने किसी की कुछ नहीं चलती। कालाय तस्मै नमः। यशवंतराव अधिक दिन तक जिन्दा रहते तो ....

(२२) लोककला के प्रति रुचि

यशवंतराव का जीवन सर्वस्पर्शी था। उनके सद्गुणों के अनेक पहलू थे। वे अभिजात और शास्त्रीय संगीत के जैसे रसिक थे वैसे ही वे भावगीतों के प्रेमी थे। नाट्य के प्रति उनकी बडी रुचि थी। कभी कभी वे महाराष्ट्र की कला अर्थात लोकनाट्य भी रसिकता से देखते थे। सर्वसामान्य जनता की प्रिय लावणी भी कभी-कभी देखते थे। वे चित्रकला का भी आस्वाद लेते थे।

(२३) सब की चिंता

दौरे पर होते समय साहब साथ आये हुए सब की स्वयं पूछताछ करते थे। क्या किसीने खाना खाया कि नहीं? क्या किसी को कुछ कम पडा है? इन सब बातों की वे पूछताछ करते थे। इसलिए सिपाही से लेकर अधिकारियोंतक लगता था कि साहब अपने कुटुंब प्रमुख हैं। श्री अनंत शेटे साहब के साथ जलगाँव दौरेपर गये थे। साहब रेल से जलगाँव से बम्बई वापस जानेवाले थे। स्टेशनपर उन्होंने सबकी पूछताछ की थी। श्री. शेटे एक तरफ खडे थे। साहबने शेटे से पूछा - 'अब बम्बई कैसे जाओगे?' तब उनके निजी सचिव श्री. श्रीपाद डोंगरे साहब ने कहा - 'उन्हें मै मेरी गाडी देता हूँ। उसमें से वे बम्बई आ जायेंगे।'

कोयनानगर के समारोह में साहब का भाषण ध्वनिमुद्रित करने के लिए श्री. अनंत शेटे गये थे। साहब का भाषण समाप्त होने पर वे सब वाई गये। वे सब तर्कतीर्थ लक्ष्मण

शास्त्री के घर में ठहरे। शेटे ने तर्कतीर्थ को साहब का ध्वनिमुद्रित भाषण सुनाया। वह सुनकर तर्कतीर्थने उद्गार निकाले – 'वाह! एकदम अप्रतिम भाषण।'

'मंगल देशा पवित्र देशा, महाराष्ट्र देशा, प्रणाम घ्यावा माझा हा श्री महाराष्ट्र देशा' यह गीत साहब को बहुत अच्छा लगता था। शेटे ने वह गीत साहब को अनेक बार सुनाया।

(२४) जनसामान्य लोगों के विषय में आकर्षण

श्री. राजाराम माने कहते हैं कि मेरा गाँव कराडसे केवल दो मील पर होने से यशवंतराव हमेशा हमारे गाँव आते जाते थे। उन्होंने अपने 'कृष्णाकाठ' में 'कार्वे गाँव' का उल्लेख किया है। उस समय वे साइकिलपर से कार्वे गाँव आते थे। तब मै पाँचवी छठवी कक्षा में पढता था। उस समय १९४६ का चुनाव हुआ। उस समय आठ रुपये खेत की लगान भरनेवाला और सातवी पास हुए व्यक्ति को मतदान का अधिकार था। उस समय प्रौढ मतदान पद्धति प्रचलित नहीं थी। उस समय सर्वश्री यशवंतराव चव्हाण, पु. पां. उर्फ बाबूराव गोखले, के. डी. पाटील और व्यंकटराव पवार ये काँग्रेस के उम्मीदवार थे। मतपत्रिका पर उनके क्रमांक १, ३, ४ और ८ थे। तब हमने घोषणा की थी – 'एक, तीन, पाँच, आठ, हमारे मेंबर यही चार।' उस चुनाव में साहब अधिक मतों से विजयी हुए। और फिर वे गृहविभाग के पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी हुए। सर्वसाधारण दृष्टि से एकाध आदमी देहात में से शहर में चला जाता है तो वह साफा बाँधनेवाले आदमी को भूल जाता है। परंतु साहब की बात अलग थी। वे साफेवालेकों कभी नहीं भूले। १९६५-६६ की बात थी। साहब के कर-कमलोंद्वारा गोरेगाव के शास्त्रीनगर वसाहत का उद्घाटन था। उस समय मेरे पिताजी बम्बई में थे। साहब रक्षामंत्री थे। दादा हार लेकर मेरे पत्नी को लेकर सभा स्थानपर गये। वे कडी सुरक्षा के कारण आगे नहीं जा सके। इतने में साहब का ध्यान दादा के साफे की ओर गया और उन्होंने एक इन्सपेक्टर को उन्हें आगे ले आने के लिए कहा। फिर दादाने उनके गले में हार डाल दिया। उन्होंने पूछा कि यहाँ कब आये?

एक चुनाव दौरे की याद है। सातारा मतदार संघ में म्हसवड की सभा देर रात में हुई। ठंडक बहुत थी। एक बूढी स्त्री स्टेज की ओर आने के लिए चेष्टा कर रही थी। परंतु कोई भी उसे आगे जाने नहीं देता था। इतने में साहब का उसकी ओर ध्यान गया। बूढी स्त्री यशवंतराव के पास आयी। उसने फटे हुए कपडे में बांधकर लायी हुई बाजरे की रोटी, मक्खन और चटनी साहब के आगे रख दी और कहा कि – 'बाबा! आधी रात हो गयी थी। कभी खाना खाया होगा किसे मालूम? बूढी की इतनी रोटी खा।' और क्या

आश्चर्य ! साहबने स्टेजपर ही उस बूढी की रोटी खायी।

आज इस याद से मन बेचैन हो जाता है और लगता है कि सामान्य मनुष्य को ऐसा स्नेह कहाँ मिलेगा?

(२५) स्फोटक वातावरण में जनतंत्र प्रथा की रक्षा

राज्य पुनर्रचना के बाद नवंबर १९५६ में नामदार चव्हाण बम्बई राज्य के मुख्यमंत्री हुए। इस नये राज्य में उस समय का वातावरण संतप्त और प्रक्षोभक था। लोगों को अन्याय के अपमान के शब्द चुभते थे। जनसामान्य ही क्या, जनवेत्ता भी विवेक की अपेक्षा भावनावश हो गये थे। सार्वत्रिक चुनाव में काँग्रेस को महाराष्ट्र में अनपेक्षित बहुत बडा अपयश आया था। महाराष्ट्रीय काँग्रेस पक्ष में भी अंतर्गत अग्नि सुलग रही थी। अन्य राज्यों में अच्छा-बुरा, सत्यासत्य, समझ-गैरसमझ अन्य प्रांतों में फैले थे। ऐसे चमत्कारिक वातावरण में ना. यशवंतराव ने नये बम्बई राज्य का नेतृत्व स्वीकार कर लिया था। तब यशवंतराव के सच्चे सुहृदय और हितचिंतक भी उस यश के संबंध में साशंक थे।

ऐसे स्फोटक वातावरण में, धीरोदात्त वृत्ति से, शांति से, पर निश्चय से यशवंतराव ने मार्ग निकाला। काले झंडों का और जूतों का संचलन और अभद्र, अशिष्ट, असंस्कृत अपप्रचार होते हुए भी शांति से, आत्मविश्वास से परिस्थिति का मुकाबला किया और वह परिस्थिति उन्होंने अपने नियंत्रण में कर ली। विपक्षी नेताओं ने भी उनके संबंध में गौरवोद्गार निकाले। पिछले छब्बीस महिनों में उन्होंने जनतंत्र कारोबार की और प्रथा की नींव डाली। जनतंत्र यह एक जीवन-निष्ठा है। व्यक्ति और व्यक्त समुद्र के हृदय में उसकी प्रतिष्ठापना करके इस देश में उसकी विचारपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। इसकी प्रतीति रखकर उनका कारोबार चलाया है।

यशवंतराव संसदीय जनतंत्र के तत्त्वों का प्रत्यक्ष आचार-विचार करते थे। जनतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को, उसके मत को, फिर वह व्यक्ति गरीब हो, धनवान हो, छोटी-बडी हो, स्वपक्षीय हो या विपक्षीय हो उसे कीमत है। वे इस बात को अच्छी तरह जानते थे। वे उसके अनुसार कार्य कर रहे थे।

विपक्षी लोग भी जनता के प्रतिनिधि हैं। यह बात वे जानते थे। इसलिए चव्हाण लेन-देन की तैयारी से विपक्ष नेताओंके साथ विचार-विनिमय करते थे और उन्हें अपने विश्वास में लेते थे। इस प्रकार उनके जनतंत्रनिष्ठ बर्ताव से विपक्ष नेताओं के विरोध की तीव्रता कम हुई। आखिर विपक्ष के नेताओं को उनके नेतृत्व का सम्मान करना पडा। इतने उच्च पद पर रहते हुए भी स्वपक्ष के कार्यकर्ताओं के साथही यशवंतराव विपक्ष के

सामान्य कार्यकर्ताओं को यथासंभव मदद करने के लिए हमेशा तैयार और दक्ष रहते थे।

अहमदाबाद में हुए गोलीकांड की जाँच के लिए उन्होंने कमिशन नियुक्त किया। इससे उनकी जनतंत्र निष्ठा व्यक्त होती है।

(२६) जनता जनार्दन की पूजा

किसी ने विठाईसे प्रश्न पूछा – 'क्या यशवंतराव देवपूजा करते हैं?' श्रीमती विठाईने उत्तर दिया – 'हम कराड में देवपूजा करते हैं। यशवंतराव पूजा नहीं करते। लेकिन देव उनके हृदय में मुँह में हैं।' देवघर में पत्थर–मिट्टी के निर्जीव धातु के देवदेवताओं की पूजा ना. यशवंतराव नहीं करते। लेकिन जनकल्याण की योजनाओं की रूपरेखा तैयार कर उसे पूरा करने के लिए वे रात–दिन कष्ट करते हैं। यही उनकी जनता जनार्दन की पूजा है। विठाई के कहने में सत्यता तो है ही और गहरा अर्थ भरा हुआ है।

(२७) ग्रंथप्रेमी यशवंतराव

ग्रंथ प्रेम यह यशवंतराव की विशेषता थी। उत्कृष्ट ग्रंथों का संग्रह करना यह उनकी विशेषता थी। उनके मलबार हिल के निवासस्थान में उत्तमोत्तम चुने हुए ग्रंथों का एक ग्रंथालय था। उनके ग्रंथ ठीक तरहसे लगाने के लिए एक मनुष्य जाता था। वह यशवंतराव के इस विलक्षण छंद की प्रशंसा करता था।

कभी कभी ऐसा हो जाता कि यशवंतराव अच्छे ग्रंथ पर एक छोटा कागज चिपकाते थे और उस पर स्वहस्ताक्षर में लिखते थे कि – 'यह पुस्तक मैंने पूर्ण पढी है। अच्छी है। आप भी पढिए।' यह शिफारिस अपने मंत्रीमंडल में एकाध मंत्री को की जाती थी। यशवंतराव अपने काम की व्यस्तता में ग्रंथों का पठन कब करते हैं, इस बात का सबको आश्चर्य लगता था।

(२८) जीवन में निर्णायक चुनावी प्रतियोगिता

१९५७ में संयुक्त महाराष्ट्र का आंदोलन चल रहा था। कराड में उस चुनाव में साहब और केशवराव दादा इन दोनों उम्मीदवारों में निर्णायक प्रतियोगिता थी। उस मतदार संघ में धों. म. मोहिते एक सप्ताहभर दादा का प्रचार करने के लिए घूम रहे थे। हमारी छोटी बहन इसी मतदार संघ में कोरेगाव नामक देहात में ब्याही गयी थी। कोरेगाव और कार्वे ये दोनों गाँव काँग्रेसके थे। विपक्षी लोगों को वहाँ प्रवेश नहीं था। हमारी बहन ने एक युक्ति की। उसने छोटे लडके को एक घोषणा पढायी। जहाँ मनुष्य बैठे रहते हैं,

वहाँ वह लड़का जाता और कहता कि – 'बैल बाँधो पेड़ को, मत दो गाडी को।' बहन के पति गाँव के पाटील। वे खूब बेचैन हो जाते थे। पर करेंगे क्या? साहब का दौरा कोरेगाव आया। गाँव के प्रवेशद्वार पर गाँववाले एकत्र हुए। साहब की आरती उतारने के लिए गाँव की सुवासिन तैयार। हमारी बहन गाँव की पाटलीण। इसलिए आरती उतारने का सर्वप्रथम मान उसका। उसे डाटते हुए उसने बहन को गडबड न करने की सलाह दी। छोटा लडका दूर रहे ऐसी व्यवस्था की गयी थी।

साहब आये। बहन ने उनके माथेपर कुंकुम तिलक लगाया। आरती उतारते समय उसने कहा – 'साहब, मैं धों. म. मोहिते की बहन।' परंतु उसके कंधे पर हाथ रखकर साहबने उससे पूछा – 'फिर तू किसे मत दोगी?' उसने ही तुरंत उत्तर दिया – 'मत देते समय तै करूँगी।'

अन्त में इस चुनाव में यशवंतराव विजयी हुए। उसके बाद यशवंतराव आगे ही बढते गये।

(२९) देश–प्रेम, स्वातंत्र्य प्रियता और मित्र–प्रेम

सुबह के ११–३० बजे थे। कराड के तिलक हायस्कूल में पाँचवी कक्षा के शिक्षक विद्यार्थियों को पाठ पढाते थे। गोगटे और यशवंतराव एक ही बेंचपर बैठे थे। इतने में हायस्कूल के अहाते में एक बड़ी भीड़ आयी। 'महात्मा गांधी की जय' ऐसी घोषणा सुनने में आयी। उसने मुझे इशारा किया और 'महात्मा गांधी की जय' ऐसी घोषणा देते हुए वह कक्षा के बाहर चला गया। वह बडे जोर से घोषणा देने लगा। क्षणभर में हायस्कूल के सभी लडके कक्षा छोड़कर बाहर आये। गोगटे कहते हैं कि मेरे पास बैठा हुआ लडका तुरंत नीम के पेड़ पर चढा और उसने पेडपर राष्ट्रीय तिरंगा झंडा फहराया। सबने बडा जयघोष किया और तिलक हाइस्कूल में झंडा फहरा ने के बाद वहाँ ही बड़ी सभा हुई। उसने सभा में उत्कृष्ट भाषण किया। सभी वातावरण राष्ट्र प्रेम से प्रभावित हुआ। उसके भाषण का तरुण मन पर परिणाम हुआ। सभी के मन में राष्ट्र प्रेम का स्फुल्लिंग जागृत किया। इन तरुणों ने मेरे मित्र को अपना नेता माना। वह मित्र अर्थात यशवंतराव चव्हाण जिसने आगे चलकर महाराष्ट्र का नेतृत्व किया और मुख्यमंत्री के रूप में महाराष्ट्र का रथ–सारथ्य किया।

बम्बई के डॉ. बावडेकर के हॉस्पिटल में श्री. बा. म. गोगटे स्लीप डिस्क की वेदना से व्याकुल थे। यह मेरा मित्र यशवंतराव परदेश दौरा करके दिल्ली में आया। उसने सुबह के अखबार में पढा कि उनका मित्र गोगटे बीमार है। यशवंतराव तुरंत बम्बई हॉस्पिटल में जाकर उससे मिले। उस मित्र प्रेम का महत्त्व क्या कहे?

गोगटे कहते हैं कि – 'हर एक चुनाव के समय मैं और उषा हमारे मित्र से मिलने के लिए सातारा जाते थे। जाते समय वे प्रसाद के रूप में शिरा और दाल लेकर जाते थे। भेट होने के बाद तीनों आनंद से खाते थे। तब मेरा मित्र कहता था। मधु, तू और उषा यह परमेश्वर का प्रसाद ही ले आते। दिल्ली में उनके बंगले में से बाहर आते समय मेरे मित्र यशवंतरावने कहा, 'अगले सप्ताह में तुम दोनों शुभ प्रसाद लेकर सातारा आओ।' लेकिन दुर्भाग्यसे यह हुआ नहीं। यशवंतराव ने सातारा के समर्थ साप्ताहिक के संपादक श्री. अनंतराव कुलकर्णी से पत्र लिखा था। यह पत्र १९ मई १९७५ का हैं। यशवंतराव ने उस पत्र में मित्रता का अर्थ कहा है – 'पैंतालीस वर्षों की तुम्हारी और मेरी मित्रता है। वह मित्रता तुमने अब तक सुरक्षित रखी है। तुमने आशा से कुछ नहीं किया। तुमने स्वच्छ और निर्मल भाव से मित्रता की है।' यशवंतरावने 'कृष्णाकाठ' में अनंतराव की मित्रत्व का उल्लेख किया। उस में भी उन्होंने मित्रत्व का गौरव किया है।

श्री. स. का. पाटील बॉम्बे हॉस्पिटल में अत्यवस्थ थे। हम कुछ लोग श्री. ए. आर. सुले के साथ बारी बारी से वहाँ बैठते थे। रात आठ बजे के बाद मैं घर वापस आया था। पाँच छः दिन से पाटील अत्यवस्थ थे। भेट के लिए आनेवाले लोगों को वे पहचान नहीं सकते थे। एक रात में 'नवसंदेश' के संपादक श्री. रमेश भोगटे को यशवंतरावजी का फोन आया कि 'अहमदनगर में श्री. अण्णासाहब शिंदे की लडकी का विवाह है। मैं कल सुबह हवाई जहाज से जाकर आता हूँ। परसो सुबह आठ बजने के पहले रिव्हिएरा में आओ। हम वहाँ से बॉम्बे हॉस्पिटल में जायेंगे।'

उनके कहने के अनुसार गोगटे रिव्हिएरा में गये। दिवाणखाने में बैठकर वे अखबार पढने लगे। इतने में यशवंतरावजी आये। उनके कंधेपर हाथ रखकर वे सीढी उतर गये। हम बॉम्बे हॉस्पिटल में गए। महेश्वर ठाकूर वहाँ ही थे। यशवंतरावजी को लेकर वे और मैं भीतर गया। पाटील की वह दशा देखकर यशवंतरावजी गद्‌गद हो गये। पाँच सात मिनट उन्होंने उसी अवस्था में इधर उधर घूमकर पाटीलजी को निहारा और नजर से उन्होंने मुझे बाहर निकलने के लिए कहा। दरवाजे के बाहर आते ही गद्‌गद हुए यशवंतरावजी अपनी सिसकी काबू में नहीं रख सके। महाराष्ट्र का सिंह आज ऐसा अगतिक होकर पडे यह हमारा दुर्दैव है, दुर्भाग्य है। इन्ही शब्दों में उन्होंने अपना मनोगत व्यक्त किया और दरवाजे के बाहर एकत्र आये लोगों को नमस्कार करके मेरे कंधे पर हाथ रखकर निकल पडे।

यशवंतरावजी पर लिखते समय यह प्रसंग मैंने इसलिए लिखा है कि – 'यशवंतराव और अप्पासाहब पाटील इन दोनों में बहुत शत्रुत्व था। वे एक दूसरे की ओर भी नहीं देखते, ऐसे जो लोग कहते थे उन्हें मालूम होगा कि यशवंतराव जी कितने कोमल हृदय के

थे, कितने भावुक थे।' अप्पासाहब पाटील उम्र से बडे थे और नेतृत्वगुण संपन्न भी थे। ऐसे मराठी मनुष्य के बारे में यशवंतरावजी को बहुत आदर लगता था। उसका दर्शन सर्वसाधारण मराठी मनुष्य को होने के लिए यशवंतरावजी बडे हुए थे। वे ऐसे गुणपूजक वृत्ति के कारण लोकमान्य तिलक के बाद लूले पडे हुए, अपाहिज पडे हुए महाराष्ट्र में काँग्रेस को सच्चा नेतृत्व दिया यशवंतरावजीने और आज बहुजन समाज जिस शान से महाराष्ट्रीय राजनीति में विचरता है वह भी यशवंतराव की दूरदृष्टि के कारण।

(३०) परिवार की जिम्मेदारी

पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी के पद पर रहकर यशवंतरावजी काम कर रहे थे। उनका शरीर बम्बई में और मन कराड में। बम्बई राज्य का कारोबार करते समय उनकी द्विधा मनस्थिति हो गयी थी। परमप्रिय बडे बंधु गणपतराव को क्षय की बीमारी हो गयी थी। उनकी सेवा करते समय उनकी पत्नी को संसर्गजन्य बीमारी हो गयी थी। इन दोनों की सेवा करते समय वेणूताई को क्षय की बाधा हुई थी। १९४७ के दिसंबर महिने में गणपतराव का निधन हो गया था। दो वर्षों में गणपतराव की पत्नी का भी निधन हो गया था। गणपतराव के लडकों की अर्थात भतीजों की जिम्मेदारी यशवंतराव पर आ पडी। क्षय की बीमारीसे वेणूताई की तबीयत बिगड गयी थी। ऐसी आपत्ति के घेरे में यशवंतराव फँस गये थे। मिरज के डॉ. जॉन्सन इस मिशनरी डॉक्टर से वेणूताई की बीमारी दूर हो गयी।

(३१) यशवंतराव की देवी-देवता पर श्रद्धा

लोग साहब को देवता के समान मानते थे। साहब भी देव को मानते थे। साहब प्रवास में हो तो भी मुकाम के आसपास प्रसिद्ध देवस्थान हो तो वहाँ गये बिना नहीं रहते थे। सातारा जिले में और महाराष्ट्र में कोई देवस्थान हो तो वे सौ. वेणूताई को साथ लेकर वहाँ अनेक बार गये हैं। परंतु काशी के विश्वनाथ मंदिर और हरिद्वार की 'हरी की पावडी' का दर्शन कभी चुकाया नहीं। गंगोत्री जाकर गंगा की और शंकर की पूजा करने में कभी नहीं चुके। साहब श्रद्धा की पूजा करने में कभी नहीं चुके। साहब की श्रद्धा हिंदू धर्म की देवी-देवताओंके साथ साथ अन्य धर्म पर भी थी। अजमेर और निजामुद्दीन (दिल्ली) दर्गेपर भी जाते थे। १९७७ के चुनाव के बाद यशवंतरावने वेणूताई से हम आग्रा जायेंगेऐसे कहा । वेणूताई को इसका अर्थबोध नहीं हो सका। तब उन्होंने कहा कि आग्रा के पास फत्तेपूर शिक्री है। वहाँ सलीम खिस्ती का दर्गा है। उसका दर्शन लेने की मेरी इच्छा है। तुरंत दर्गेपर डाली जानेवाली चद्दर, पूजा का साहित्य लाने के लिए मनुष्य

भेज दिया। दूसरे दिन सुबह साहब, सौ. वेणूताई, अनंतराव पाटील ऐसे तीनों फत्तेपूर सिक्री पहुँचे। पंधरा बीस मिनट ठहरकर समाधि का दर्शन किया। सौ. वेणूताई को ९-१० घंटे की सफर करना उनकी तबीयत के लिए असंभव था। लेकिन श्रद्धा के सामने उन्हें उसका महत्त्व नहीं लगता था। साहब सुबह साई बाबा की मूर्ति के सामने और देव के सामने ५-१० मिनट नतमस्तक होकर खडे रहते थे और फिर कमरे के बाहर आते थे।

एक राजनीतिज्ञ आदमी की श्रद्धा प्रेरणादायी है।

(३२) प्रशासक

मुख्यमंत्री मोरारजीभाई की एकांगी भूमिका से लोगों के मन दुःखित हुए थे। उसके बाद यशवंतराव महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बने थे। उन्होंने बंदुकी के जोर पर द्विभाषिक राज्य का कारोबार चलाना अनुचित समझा। समिति के आंदोलन का रेला, लोगों के मत का जोर और यशवंतराव के कारोबार की जोड इन सबके कारण महाराष्ट्र राज्य की स्थापना हुई, तब मराठी मन में नयी आशा की कोंपले फूट पडी। इसलिए कुसुमाग्रज जैसे बडे कवि ने घोषणा की -

''नव्या जीवनाचा नाद
मला ऐकू येत आहे ।।
लक्ष शून्यातून
काही श्रेय आकारात आहे।।''

यशवंतराव ने शक्कर कारखानों की योजना और उसे पूरी करने के लिए सरकार की नीति बनायी और सरकार की ओर से उन्हें मदद भी की। शिक्षा प्रसार के लिए शाला और महाविद्यालय खोल दिये। मराठवाडा और शिवाजी विद्यापीठ की स्थापना की। उन्होंने महाराष्ट्र के सभी क्षेत्रों में उन्नति की नींव डाली। और इसी कारण महाराष्ट्र देश में अग्रेसर हुआ।

(३३) स्वच्छ प्रतिमा का नेतृत्व

एक देदिप्यमान गुण यशवंतराव के पास था। वह गुण यहाँ कहना चाहिए है। आज की राजनीति में यह ज्यादा दुर्लभ गुण है। यशवंतराव से राजनैतिक मतभेद करनेवाला कोई भी मनुष्य यशवंतराव अनाचारी थे ऐसा इलजाम स्वप्न में भी नहीं कर सकेगा। यशवंतराव ने पैसे लिये, यशवंतराव के आदमी खुद के काम के लिए सरकार चलाते हैं, यशवंतराव ने सिफारिश की होगी ऐसा इलजाम कोई भी नहीं कर सका। स्वच्छ प्रतिभासंपन्न नेतृत्व ऐसा लौकिक यशवंतराव ने पिछले २५-३० वर्ष सुरक्षित रखा है और वह भी

आखिर तक। यह बात देखने के लिए आसान लगती है, पर व्यवहार में बहुत बड़ा मुश्किल है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने अच्छा, आदर्श और अनुकरणीय काम किया है। देश के रक्षामंत्री, अर्थमंत्री, विदेशमंत्री आदि विविध और बड़े पदों पर उन्होंने काम किया और वह काम करते समय वे किसी प्रकार के मोह में उलझे नहीं और उसके विरुद्ध कुछ असभ्य वर्णन किसी भी अखबार में छपकर नहीं आया। राजनीति के गढे में रहते हुए भी उन्होंने अपने शरीर पर कीचड़ की जरा भी छींटे नहीं आने दी। उनके मतानुसार सफेद धोती और सफेद कमीज पहनकर राजनैतिक जीवन जीता जा सकता है। यह महाराष्ट्र की राजनीति में सर्वोत्कृष्ट प्रयोग कहा जा सकता है। राजनीति में रहकर इतनी निर्मलता, इतनी साधनशुचिता, इतना सामंजस्य, इतनी शब्दों की मृदुता और चारित्र्य की स्वच्छता आजतक किसी नेता ने दिखाई नहीं और आगे कोई दिखायेगा नहीं। इसलिए यशवंतरावजी का नेतृत्व विलोभनीय और सबको प्रिय था।

(३४) उच्च राष्ट्रीय चारित्र्य

और एक बहुत बडा दुर्लभ गुण यशवंतराव में था। उन्होंने व्यक्तिगत राष्ट्रीय चारित्र्य को जीवन में बडा महत्त्व दिया था। आज की राजनीति में बहुत नेता स्वयं की सुविधा देखते हैं। स्वयं का आर्थिक फायदा कहाँ होता है, इसका वे विचार करते हैं और अपने पश्चात दो पीढियों का प्रबंध करते हैं। यशवंतराव कितने उच्च दर्जा के नेता थे। पिछले चार-पाँच वर्षों में उन्होंने महाराष्ट्र और भारत को उन्नत बनाने में बडा योगदान दिया है। इससे उनके महान कार्य का दर्शन होता है। १९७५-१९८० में उन्होंने इंदिरा गांधी का विरोध करने की भूमिका अदा की। पर उस भूमिका में उन्होंने कभी गंदे बाते नहीं की। पर जिस क्षण को उन्हें लगा कि सारा देश इंदिराजी के पीछे हैं उस क्षण को उन्होंने विचार किया कि अब काँग्रेस पक्ष को शक्ति देनी चाहिए। अतः उन्होंने व्यक्तिगत मान-अपमान एक तरफ रखकर इंदिराजी की सहायता की। उनके मित्रों ने उनकी इस नीति की आलोचना की। यशवंतराव के विचारों की ऊँचाई बहुत बड़ी थी। राष्ट्रीय प्रश्नों को महत्त्व देने की उनकी भूमिका निर्णयात्मक थी। यशवंतराव ने चार वर्षं के पूर्व यह बात स्पष्ट की थी। राष्ट्रीय हित के सामने व्यक्तिगत राग, लोभ तुच्छ होते हैं। यह बात यशवंतराव ने अपनी निर्णायक कृति से दिखा दी। पद मिले अथवा न मिले राष्ट्रीय कर्तव्य में कभी भी कसूर नहीं की। यशवंतराव की राजनैतिक जीवन की महत्ता ऐसे प्रसंगों से सिद्ध हुई हैं। राजीव गांधी प्रधानमंत्री होने के बाद देश के सामने जो आवाहन हैं ऐसे समय समझदारी से और होशियारी से सलाह देनेवाले मनुष्य राजनीति में धीरे धीरे कम हो रहे हैं। ऐसे समय यशवंतराव जैसा तारा उखड जाना यह महाराष्ट्र और देश का

दुर्दैव है। उन्होंने मधुकर भावे से कहा कि कल मैं दिल्ली जा रहा हूँ। लेकिन तबीयत कुछ साथ नहीं देती। यह तो यशवंतराव की आखिर की भेंट थी। पिछले वर्ष डेढ वर्ष वे उदास थे। वे अकेले थे। लेकिन देश के अनेक प्रश्नों को स्वतः को उलझकर मन को उत्साह देने का वे प्रयत्न कर रहे थे। उस में से वे बाहर नहीं आ सके और अंत में एक सुसंस्कृत नेतृत्व को हम सब वंचित हो गये। ऐसा लगता है कि महाराष्ट्र आज निराधार हुआ है। एक कर्तृत्वसंपन्न जीवन का अंत हुआ है। एकाध हरा भरा पेड गिर पडे और सारा प्रदेश रूखा-सूखा लगे वैसे अब महाराष्ट्र के राजनैतिक जीवन का चित्र बन रहा हैं। यशवंतराव की महत्ता यह वादातीत महत्ता थी। अब उनके पश्चात् महाराष्ट्र को सुसंस्कृत, समंजस और मजबूत वैचारिक दिशा देनेवाला नेतृत्व कब निर्माण होगा? नेहरू के चले जाने के बाद देश जैसा निराधार हुआ था वैसी स्थिति यशवंतराव के निधन के बाद महाराष्ट्र भी निराधार हुआ।

(३५) यशवंतराव का निधन

१९७७ में संसदीय चुनाव में इंदिराजी के नेतृत्व में काँग्रेस पक्ष की पराजय हुई। उसके बाद १९८० तक यशवंतराव और भूतपूर्व प्रधानमंत्री इन दोनों में दुराव की भावना पैदा हुई। इससे यशवंतराव को बहुत मनःस्ताप हुआ। १९८१ में उन्होंने इंदिरा काँग्रेस में प्रवेश किया।

इसके बाद उन पर अनेक कौटुंबिक (पारिवारिक) आपत्तियाँ आयी। पुत्रवत परिपालन किया हुआ उनका भतीजा डॉ. विक्रम उर्फ राजा मोटर अपघात में मर गया। ८ मार्च १९८३ को उसकी (डॉ. विक्रम चव्हाण) मृत्यु हुई। डॉ. विक्रम की मृत्यु के बाद १ जून १९८३ में यशवंतराव की पत्नी सौजन्यमूर्ति वेणूताई चव्हाण का निधन हुआ। २ जून १९८३ में सुबह ११-२० बजे बम्बई के गिरगाव चंदनगाव की स्मशानभूमि में उनका दहन किया गया। स्वर्गीय वेणूताई को कुल मिलाकर ६३ वर्षं ३ महिने और एक दिन की आयु मिली। उनकी मृत्यु से यशवंतरावजी को बडा दुःख हो गया। उन्होंने धीरे धीरे अपने शोक को कम कर दिया। वे आठवे वित्त आयोग के अध्यक्ष थे। उन्होंने वह अहवाल शासन के सामने प्रस्तुत किया। वे संसद सदस्य थे। उन पर सौंपे हुए काम अच्छी तरहसे किये। इन चार-पाँच वर्षो के काल में वे शांत थे। वे कहते थे कि - 'अब मुझे कुछ प्राप्त करने की इच्छा नहीं है। जनता जनार्दन के चरणों पर मैंने की हुई सेवा पेश हुई हैं। मेरा शरीर भी थकता जा रहा हैं।' यह कुछ ध्यान में नहीं आया।

वे दिल्ली गये। उन्हें किडनी की बीमारी थी। वे अस्पताल में भरती हो गये। उपचार भी किये गये। पर कुछ उपयोग नहीं हुआ। वहाँ उनका निधन हुआ। निधन की

तारीख थी २५ नवंबर १९८४। शाम के सात बजे ४५ मिनट पर उनकी मौत हो गयी। २७ नवंबर १९८४ को दोपहर के ३-३० बजे कृष्णा-कोयना के संगम पर अग्नि दी गयी। सारे लोग शोकाकुल बन गये थे। यशवंतरावजी ७१ वर्षं ८ महिने १३ दिन जीते रहे।

लोगों को महाराष्ट्र की इस अस्मिता में अपनी छाया दिख पडती थी, शान लगती थी। इसलिए कभी अंधकार तो कभी प्रकाश देखते हुए जीवन की राह चलनेवाले साहबने अचानक अपना मानवी पहनावा उतरकर अनंत में विलीन होने का मार्ग अपनाया। और दस दिशाएँ भी मानवी रूप धारण कर जोर जोर से रोने लगी, ऐसा कहने लगी कि - 'छे, छे, ऐसा नहीं होना चाहिए था।'

अपना नेता कैसा होना चाहिए इसका मूर्तिमान रूप साहब के रूप में इस देश ने देखा है और मुल्क ने इसकी अपूर्वाई का अनुभव भी लिया है।

साहब अचानक देव के घर गये और सारा मराठी मुल्क गद्‌गद हो उठा, 'ऐसे कैसे हुआ?' उसके साद-प्रतिसाद चारों ओर उभर गये और मनुष्य अबोल हुआ।

(६) शासकीय पद और कार्य

(१) पार्लमेंटरी सेक्रेटरी, रसद और पूर्ति मंत्री

१९४६ में यशवंतरावने गृहमंत्री के पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी के रूप में शासन में पदार्पण किया। उन्होंने कुछ दिन तक पार्ल मेंटरी सेक्रेटरी पद पर अच्छा काम किया। इसके बाद १९५२ में मुख्यमंत्री मोरारजीभाई देसाई ने यशवंतराव को अपने मंत्रिमंडल में अन्न और पूर्ति मंत्री के रूप में समाविष्ट किया। उस समय जनता पूर्ति खाने का तिरस्कार करती थी। यह खाता यशवंतरावजी को एक आवाहन था। यशवंतरावजी ने यह खाता सहजता से सँभाला। उस समय रेशनिंग शुरू था। अनाज की परिस्थिति कठिन थी। रेशनिंग से शहर में लोगों की किसी तरह सुविधा होती थी पर ग्रामीण जनता को तकलीफ होती थी। अनाज का उत्पादन और आयात होकर भी वह जनता तक अच्छी तरह पहुँच नहीं पाता था। काला बाजार और जमाखोरी बढ़ गयी थी। खाते के सूत्र लेते ही उन्होंने जनता को विश्वास में लेने की नीति अपनायी। केंद्रीय रसद और पूर्ति मंत्री श्री. रफी अहमद किड़वाई से उन्होंने अनाज के अमल के संबंध में लगातार चर्चा की। उनपर यशवंतराव का प्रभाव पडा। यशवंतरावने नियंत्रण पद्धति में कष्टदायी शर्ते दूर कर ग्रामीण जनता को दिलासा दिया। केंद्र शासन की नयी नीति जाहिर करते हुए व्यापारियों को उचित समझ दी। नयी नीति सफल बनाने के लिए पुष्टिप्रद वातावरण निर्माण किया। चावल छोड़कर अन्य अनाज पर होनेवाले नियंत्रण धीरे धीरे कम कर दिये। कपडा, केरोसिन, शक्कर इन वस्तुओं पर होनेवाले नियंत्रण ढीले कर दिये। इसका यह परिणाम हुआ कि बाजार में अनाज आने लगा। अगले मोसम तक रह गए नियंत्रण भी दूर किये जायेंगे। वे इसी प्रकार का दिलासा देते रहे। उसका उचित परिणाम हुआ। देश में बहुत अनाज उत्पादन हुआ। धीरे धीरे नियंत्रण दूर हुआ और आखिर सरकार को रसद और पूर्ति खाता बंद करना पडा। यह यशवंतराव का कार्य कुशलता का आदर्श है।

शासन ने रसद और पूर्ति खाता तो बंद कर दिया और आगे ....

(२) वन मंत्री

अब यशवंतराव वनमंत्री बने थे। वन की रक्षा और पशु पक्षियों की रक्षा की ओर देखने की उनकी दृष्टि मानवीय थी। जंगल का संवर्धन और उसकी रक्षा इन दोनों का

मानवीय जीवन से संबंध जोडा था। जंगल संपत्ति जंगल में रहनेवाले वन्य पशु-पक्षियों की रक्षा करने की दृष्टि से उन्होंने कानून बनाया। ऐसा कानून बनानेवाला बम्बई राज्य देश में पहला राज्य है। इस कानून की कार्यान्विति करने के लिए उन्होंने प्रबंध किया। प्राणियों की शिकार पर रोक लगा दी। वन्य प्राणियों के लिए उन्होंने कानून बनाकर अभयारण्य की व्यवस्था की।

(३) रक्षा मंत्री

चीन ने २० अक्तूबर १९६२ को भारत पर आक्रमण किया। इसलिए प्रधानमंत्री प. नेहरू पूरी तरहसे काँप गये। ऐसी परिस्थिति में संसद में कृष्णमेनन को रक्षा मंत्री पद से दूर करने की माँग की जाने लगी। इस कठिन समय में प्रधान मंत्री पं. नेहरूने १४ नवंबर १९६२ को रक्षा मंत्री पद पर श्री. यशवंतराव चव्हाण की नियुक्ति की। क्योंकि चीन का आक्रमण अर्थात नैतिक पराजय। यह पराजय पं. नेहरू की नीति की पराजय थी। रक्षा मंत्री बनने पर श्री. यशवंतराव चव्हाण दिल्ली गये। उसके दूसरे दिन चीनने अपनी तरफसे युद्ध विराम कर दिया और १४५०० चौ. मील भारत का प्रदेश हडप लिया। इस घटना का वर्णन करते समय - 'सह्याद्रि हिमालय की रक्षा के लिए चला गया।' १ मई १९६० को स्वतंत्र महाराष्ट्र निर्माण हुआ। उस समय महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण ने पं. नेहरू के समक्ष भाषण किया कि - 'मराठी भाषिकों के पास जो देने सरीखा हे, जो उदात्त है, भारत के लिए उसका त्याग करना पडे तो हम वह त्याग करेंगे। क्योंकि भारत रहेगा तो महाराष्ट्र रहेगा, भारत महान हुआ तो महाराष्ट्र भी महान होगा।' यशवंतरावद्वारा व्यक्त की गयी राष्ट्रीय भावना से पं. नेहरू बहुत प्रभावित हुए। इसलिए तो ऐसे कठिन समय में यशवंतराव पर रक्षा मंत्री पद की जिम्मेदारी सौंपी गयी। रक्षा यह केवल सेना से संबंधित बात न होकर उसे महत्त्वपूर्ण राजनैतिक, आर्थिक और मानसशास्त्रीय पहलू होते हैं, उसे ध्यान में रखते हुए उन्होंने रक्षा विभाग का कार्यभार देखा।

प. नेहरू ने अलिप्तता नीति का स्वीकार किया और उन्होंने रक्षा नीति की ओर आवश्यक ध्यान केंद्रित नहीं किया। इसलिए तो भारत को चीन की ओर से पराजय स्वीकार करनी पडी। इसलिए उन्होंने रक्षा व्यवस्था बलवान बनाने के लिए नेफा और लडाख सीमा को भेंट देकर युद्ध में सूक्ष्म तर सूक्ष्म बातें समझा ली। १९६२ में चीन की ओर से भारत की पराजय हुई। इसलिए सैनिक निराश हो गये थे। तब उन्होंने सीमा भाग में जाकर सैनिकों का मनोधैर्य बढाया।

यशवंतरावने प्राण की बाजी लगाकर महाराष्ट्र की प्रगति की। जब चिनी राज्यकर्ताओं ने भारत को भेंट देकर 'हिंदी-चिनी भाई-भाई' की घोषणाएँ दी और उसके बाद

विश्वासघात से उन्होंने भारत पर अचानक हमला किया उस समय भारत की परिस्थिति बहुत कोमल बनी हुई थी। परंतु उस समय भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने महाराष्ट्र के तत्कालीन मुख्यमंत्री यशवंतराव को दिल्ली बुलाया। उन्होंने यशवंतराव देश का महत्त्वपूर्ण संरक्षण विभाग सौंप दिया। यशवंतराव जब बम्बई से नयी दिल्ली जाने के लिए निकल पडे उस समय यशवंतराव चव्हाण के बम्बई स्थित 'सह्याद्री' निवासस्थान से सांताक्रूझ हवाई अड्डे तक हजारों लोग रास्ते के दुतर्फा खड़े होकर उन्हें बिदा देने के लिए खड़े थे। उस समय सब लोग प्रेम से 'यशवंतराव विजयी भव' ऐसी शुभेच्छा व्यक्त करते हुए ऐसी घोषणा दे रहे थे। लोग 'यशवंत भव, जयवंत भव' ऐसी शुभाशीर्वादात्मक घोषणा दे रहे थे। उसके बाद यशवंतराव दिल्ली पहुँच गये। रक्षा मंत्री के रूप में उन्होंने रक्षा का कारोबार अपने हाथ में लिया। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्होंने रक्षा मंत्री के सूत्र हाथ में लेते ही दूसरे दिन चिनी ने अपनी ओर से युद्ध विराम कर दिया। यह तो यशवंतराव चव्हाण की अपूर्व विजय थी।

भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री यशवंतराव चव्हाण का देहावसान २५ नवंबर १९८४ को हुआ। उनकी मृत्यु से भारतीय रक्षा दल को मिला हुआ एक कार्यक्षम रक्षा मंत्री सबको पीछे छोडकर चला गया। जनरल एस. पी. पी. थोरात कहते हैं कि – 'पिछले चालीस वर्षं उन्हें पहचानता हूँ। इसलिए मैं कह सकता हूँ कि भारतीय सार्वजनिक जीवन में उनका व्यक्तिमत्त्व अद्वितीय था। चीनने भारत पर हमला कर भारत की बदनामी की। उस समय प्रधानमंत्री प. नेहरूने कृष्णमेनन की जगह पर यशवंतराव चव्हाण की नियुक्ति की। रक्षा मंत्री बनने पर यशवंतराव का राष्ट्रीय नेता के रूप में उदय हुआ।'

अक्तूबर १९६२ में भारत और चीन इन दोनों के बीच सीमा निश्चित करनेवाली मॅकमोहन रेषा चिनी सेना ने लाँघकर नेफा में अपर्याप्त साधनसामग्री होनेवाले अपने कुछ थाने पर हमले किये और उन थानों को उध्वस्त कर दिया। उसके बाद चिनी सेना सीधे ब्रह्मपुत्रा नदी की घाटी में उतर आयी। इस आक्रमण से भारत सरकार को आश्चर्य का धक्का लगा। वास्तविक ऐसा हमला होने की सूचना तीन वर्षं पूर्व सरकार को दी थी। चीन नेफा में कुछ मुल्क अपना होने की बात कर रहा था और चीन वह मुल्क कभी भी मुक्त करने का प्रयत्न करेगा ऐसी सूचना सेना ने रक्षा मंत्रालय को अक्तूबर १९५९ में दी थी। पूर्व विभाग के जनरल ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ एस. पी. पी. थोरात थे। उन्होंने स्वयं एक विस्तृत टिप्पणी सेना मुख्यालय की ओर भेज दी थी। प्रस्तुत टिप्पणी में संभाव्य चिनी योजना के संबंध में जानकारी देकर उस हमले का कैसा मुकाबला करना चाहिए इस संबंध में उनकी सिफारिसें दर्ज की थी। थोरात की टिप्पणी से सेना मुख्यालय सहमत था और वह टिप्पणी परंतु कार्यान्विति के लिए रक्षा मंत्रालय की ओर भेज दी

गयी। परंतु अभागे रक्षा मंत्री कृष्णमेननने उस टिप्पणीपर प्रतिकूल अभिप्राय लिखकर उस टिप्पणी को दफ्तर में दाखिल कर दिया।

श्री. थोरात की एक महत्त्वपूर्ण सूचना थी – 'नेफा, सेना के पूर्व विभाग की ओर सौंप देना चाहिए। उसकी जिम्मेदारी आसाम रायफल की ओर न हो। आसाम रायफल यह एक पुलिस दल है और उनके पास लडाऊ की सामग्री नहीं है और उन्हें प्रशिक्षा (प्रशिक्षण) नहीं है। श्री. थोरात की सिफारिस भी खारिज कर दी गयी।' क्योंकि रक्षा मंत्री का मत था – 'चीन भारत पर कभी भी आक्रमण नहीं करेगा।' यह निवेदन करते समय उन्हें यह मालूम होना चाहिए था कि पिछले कुछ महिनों में चिनी सेना ने अनेक बार सीमा भंग किया था। रक्षा मंत्री मेनन और प्रधानमंत्री पंडित नेहरू ये दोनों 'हिंदी चिनी भाई भाई' इस घोषणासे इतने प्रभावित हो गये थे कि थोरात की सिफारिस के अनुसार कार्रवाई करने की बात उनके मन में भी नहीं आयी। लेकिन सीमा भंग के प्रकार बढ़ते गये। इसलिए सभी अखबारवालों ने और संसद ने गंभीर दखल लेने की शुरुवात की। श्री कृष्णमेनन ने 'राष्ट्रीय सुरक्षितता' की दृष्टि से संसद में उत्तर देने से इन्कार कर दिया अथवा संदिग्ध उत्तर दिये। इसलिए संसद सदस्य संतप्त हुए और उन्होंने प्रधानमंत्री पर आलोचना का हमला किया। अन्त में रक्षा की दृष्टि से उन्होंने नेफा, सेना के पूर्व विभाग की ओर सौंपा गया। परंतु नेफा की रक्षा के लिए सेना की टुकडियाँ धीमी गतिसे जा रही थी तब तक १० अक्तूबर १९६२ को चीन ने हमला किया। अपनी रक्षा व्यवस्था इतनी अपर्याप्त थी कि चिनी सेनाने नेफा में आधा मुल्क अपने कब्जे में लिया। इसलिए संपूर्ण देश ने श्री कृष्णमेनन के इस्तीफे की माँग की। प्रधानमंत्री ने श्री. मेनन का समर्थन करने का बहुत प्रयत्न किया। परंतु सारा देश क्षुब्ध हो उठा था। यह देखकर प्रधानमंत्री को लोगों के मत के सामने अपनी गर्दन झुकानी पडी। परंतु मेनन के बाद कौन यह प्रश्न था। बदनाम हुआ रक्षा विभाग स्वीकार करके अपना राजनैतिक भविष्य धोखे में डालने के लिए कोई भी ज्येष्ठ व्यक्ति उत्सुक नहीं था। ऐसे समय प्रधानमंत्री ने दृढता से सूज्ञ निर्णय लिया। उन्होंने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री. यशवंतराव चव्हाण को रक्षा मंत्री पद की जिम्मेदारी स्वीकार करने की बिनंती की। इस सूज्ञ निर्णय के संबंध में पंडितजीका अभिनंदन करना चाहिए। उसके साथ ही यशवंतराव ने अपने राजनैतिक भवितव्यका विचार न करते हुए प्रधानमंत्री की मदद के लिए चले जानेवाले यशवंतराव चव्हाण का भी अभिनंदन करना चाहिए। नवंबर १९६२ में वे दिल्ली गये और धैर्य नष्ट हुए सेना की और नापसंद रक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी स्वीकार ली। सेना में मनोधैर्य पुनः निर्माण करना यह अपना आद्य कर्तव्य है और सेना और रक्षा मंत्रालय के बीच होनेवाले संघर्षों के कारणों को निपटाना यह अपना मुख्य कर्तव्य है। यह बात यशवंतराव के ध्यान में

तुरंत आयी। अपने पूर्व मंत्री का उद्दाम स्वभाव और अहंमन्य वृत्ति यह असंतोष का मूल है यह उन्होंने पहचान लिया। इस बारे में यशवंतराव का स्वभाव बिलकुल विरुद्ध था। उन्होंने अपने सौजन्यपूर्ण व्यक्तिमत्त्व से और सुसंस्कृत वृत्ति से दिल्ली के राजनैतिक जीवन पर अपनी छाप डाल दी। रक्षा मंत्रालय में अभ्यासू वृत्ति और विद्वत्ता इन गुणों के कारण यशवंतराव के बारे में आदर था। सेना के सभी स्तर पर उन्हें मान था। क्योंकि साधारण जवान की अपेक्षा उन्हें लडाई की अधिक जानकारी है ऐसा दावा उन्होंने कभी नहीं किया। उन्होंने अपने कौशल से और संयम से उन्होंने सेना और रक्षा मंत्रालय को नजदीक लाया।

पहला हमला करने के बाद चीन ने अपनी ओरसे युद्ध विराम की घोषणा की और तिबेट में अपने सेना स्थल पर वे वापस गये। फिरसे हमला होने की आशंका होने के कारण यशवंतराव ने अनदेखी नहीं की । इसलिए चीनके विरुद्ध रक्षा व्यवस्था की पुनर्रचना करने का कार्यक्रम उन्होंने अपने हाथ में लिया। ऊंची जगह पर लडने के लिए उपयुक्त हथियारों की सुविधा करना आदि बातों का समावेश था। चिनी सेना के साथ मुकाबला करनेवाले अपनी सेना के पास इनमें से एक भी सुविधा उपलब्ध नहीं थी। यातायात के साधन उपलब्ध न होनेवाले देश में लडाई करना व्यर्थ है। इस बात का उन्हें यकीन हुआ। इसके अतिरिक्त रसद मिलने की अच्छी व्यवस्था न हो तो चढाई की कोई भी योजना सफल नहीं होगी। इस बात की उन्हें प्रतीति थी। ऐसी व्यवस्था न होने से सेना को युद्धभूमि पर भेज देना यानी कि मृत्यु की और पराजय की खाई में (खंदक, गढे में) धकेलना जैसा है। यशवंतराव दौरे पर जाते समय सेना को रसद पहुँचाने की कैसी व्यवस्था है इसका वे स्वयं निरीक्षण करते थे।

रक्षा मंत्री के रूप में नियुक्त होने पर प्रारंभिक काल में यशवंतराव के सामने मुख्य प्रश्न ईशान्य और उत्तर सीमा का था। ऐसा होते हुए भी उन्हें जम्मू काश्मीर और नागालँड में सेना की गतिविधियों की जिम्मेदारी का एहसास था। शांति क्षेत्र में रखे हुए सेना के कल्याणकी और सुस्थिति की वे उतनी ही चिंता करते थे। 'वंचित हुए कुटुंब' के लिए अर्थात लडाई में उलझे हुए अधिकारियों के, जवानोंके कुटुंब के लिए रहने की जगह उपलब्ध कर देने की उन्होंने शुरूआत की। तब तक पूर्व रक्षा मंत्री इस संबंध में कुछ कर नहीं सके। क्योंकि उन्हें वित्तीय सलाहकारों ने इस काम के लिए निधि उपलब्ध नहीं कर दी। पूर्व रक्षा मंत्री ने वित्तीय सलाहकारों के निर्णय का समर्थन किया। लेकिन यशवंतराव ने वित्तीय सलाहकारोंका निर्णय दूर कर दिया। उन्होंने वित्तमंत्री के साथ चर्चा की और उन्होंने यह बात प्रधानमंत्री के पास पहुँचा दी। वे हमेशा कहते थे कि सेना के अधिकारी और सिपाहियों के लिए आप प्रयत्न नहीं करेंगे तो दूसरे कौन करेंगे। इस पर जनरल

एस.पी.पी. थोरात कहते हैं – 'हम हमेशा के लिए कृतज्ञ रहेंगे।'

यशवंतरावने मंत्री पद स्वीकार लेने के बाद नेफा–लड़ाख की भूमि को प्रत्यक्ष भेंट देकर परिस्थिति का निरीक्षण किया। मोर्चे पर लडनेवाले जवान और अधिकारियों से उन्हें दिलासा दिया, उन में आत्मविश्वास निर्माण किया। रक्षा विषयक जो समस्याएँ थी, उन्होंने उनकी जानकारी ले ली।

यशवंतरावने रक्षा विभाग की जिम्मेदारी स्वीकार ली। तब अपने पास स्वनातीत लडाकू हवाई जहाज, भारतीय बनावटी के लिंडर फ्रिगेट, वैजयंता बख्तरबंद गाडियाँ, मिग हवाई जहाज और अन्य आधुनिक शस्त्रास्त्र नहीं थे। उन्होंने रक्षा विभाग की एक पंचवार्षिक योजना तैयार की और वह संसद में मंजूर कर ली गयी। इस योजना में सेना की आठ पहाडी डिव्हिजन, ४५ स्क्वाड्रनका हवाई दल, आरमार के और युद्ध साहित्य उत्पादन केंद्र का नूतनीकरण और सीमा भाग में मार्ग और अन्य मूलभूत सुविधा उपलब्ध करना आदि का अंतर्भाव था।

दृढतापूर्वक प्रयत्न और समर्पण की भावना के द्वारा यशवंतरावने रक्षा व्यवस्था खड़ी करके रक्षा मंत्रालय में और सेना मुख्यालय में अधिकारी और कर्मचारी तथा देश की सीमा का रक्षण करनेवाले सैनिकों में आत्मविश्वास निर्माण किया। अपने साथ काम करनेवाले अधिकारियों को उन्होंने पूर्ण समर्थन दिया और उनका विश्वास संपादन किया। उसका परिणाम १९६५ में पाकिस्तान के साथ हुई लडाई में दिख पडा।

युद्ध सामग्री प्राप्त करने की दृष्टि से उन्होंने अमरिका, रशिया का दौरा किया।

पं. नेहरू के निधन के बाद लालबहादूर शास्त्री प्रधानमंत्री बन गये। उनके मंत्री मंडल में यशवंतराव रक्षा मंत्री हो गये। उन्होंने फिर रशिया का दौरा किया और वह यशस्वी हुआ। १९६५ में पाकिस्तानने शरारत करने की शुरूआत की। यशवंतराव ने सेना को तैयार रहने का आदेश दिया। पाकिस्तान के आक्रमण को साफ उत्तर दिया। भारतीय सेना ने पाक की ऐसी नाकाबंदी की कि अन्त में उन्हें युद्ध विराम घोषित करना पडा। युद्ध की समाप्ति होने पर भी दोनो देशों में शांति स्थापित नहीं हुई थी। उस संबंध में बातचीत करने के लिए यशवंतराव शास्त्रीजी के साथ ताश्कंद गये थे। बातचीत होने पर शांति समझौते पर हस्ताक्षर हुए। उसके बाद शास्त्रीजी विश्रांति के लिए अपने कमरे में गये, वहाँ हृदय विकास का झटका आनेसे उनका प्राणोत्क्रमण हुआ। यशवंतराव उनका पार्थिव देह लेकर भारत में आये। भारत के समर्थ रक्षा–मंत्री के रूप में भारत–पाक युद्ध के फैसले से उनकी प्रतिमा प्रकाशमान बनी। सेना में जवानों के और अधिकारियों के मन में उनके बारे में चरम सीमा का आदर और आत्मीयता बढ़ गयी।

लाल बहादूर शास्त्री के निधन के बाद यशवंतराव को प्रधानमंत्री बनने का मौका

आया था। उन्होंने इंदिरा गांधी को अपना समर्थन दिया। फिर वे इंदिरा गांधी के मंडल मे रक्षा मंत्री हो गये।

१९६३ के अप्रैल महीने में तुलजाभवानी के दर्शन के लिए यशवंतराव गये थे। तुलजापूर की सभा में भाषण करते हुए संरक्षण का अर्थ स्पष्ट करते हुए संरक्षण की व्याख्या स्पष्ट की – 'भारत का रक्षण करना है इसका अर्थ भारत ने जिन नवीन तत्त्वों की हिफाजत की है। जिन तत्त्वों के बल पर अपना स्वातंत्र्य खड़ा किया है। उन तत्त्वों का और स्वातंत्र्य का हमें रक्षण करना है। प्रसंग आया तो हमे अपना प्राण देकर हमे ही अपनी जिम्मेदारी निभानी चाहिए।' इस भाषण से स्पष्ट होता है कि रक्षा मंत्री यशवंतराव ने भारत के लोगों में राष्ट्रवाद, संरक्षण और सामाजिकता के विषय में प्रखरता की हिफाजत करने का प्रयत्न किया है।

रक्षा मंत्री यशवंतराव चव्हाण दो बातों पर पल देते हैं। एक यानी कि हिन्दुस्थान एक राष्ट्र बना हुआ है और कितने भी आर्थिक संकट आये तो हम उनसे मुकाबला कर सकते हैं यह बात भारतीय तरुणों को अन्य राष्ट्रोंके सामने लानी चाहिए। उनकी देशभक्ति की सच्ची कसौटी उनके बर्ताव से लगेगी। केवल नेतापर अथवा पक्ष पर निर्भर न रहकर हर एक सूज्ञ नागरिक को राष्ट्र निर्माण के लिए समर्पित होना चाहिए।

सूज्ञ नागरिक को सरकार पर निर्भर रहना राष्ट्रीय हित का नहीं है। राष्ट्र के सामने विशेषतः अंतर्गत संरक्षण यह कठिन प्रश्न बना हुआ है। यह बात हमे स्वीकार करनी पडेगी। अब राष्ट्रीय संरक्षण यह एक सूज्ञ नागरिकों का भाग है। उसके लिए तत्पर रहना काल की जरूरत है।

ई. स. १९६२ में चीन की ओर से भारत का हुआ मानहानिक पराभव से प्रधानमंत्री नेहरू पूर्णतः वैचारिक दृष्टि से चकरा गये थे। इस समय श्री. यशवंतराव चव्हाण ने रक्षा मंत्री पद के सूत्र अपने हाथ में लिये। यशवंतराव यह एक उत्कृष्ट संरक्षक और विचारक थे। उन्होंने संरक्षण और सामाजिकता के संबंध में जो भाषण किये थे। ये बहुध्रुवीय थे। जागतिक राजनीति के काल में भारतीय नागरिकों के लिए मार्गदर्शक है।

रक्षा मंत्री यशवंतराव ने देश की सुरक्षा के लिए जो अद्वितीय कार्य किया है, वह आधुनिक भारत के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों से लिखा जायेगा। मेरी दृष्टि से यह महाराष्ट्र का सह्याद्रि श्री. यशवंतराव चव्हाण इतिहास का सुनहरा पन्ना है। यशवंतराव के कर्तृत्व के कारण भारतीय जनता हमेशा उनका स्मरण करती रहेगी।

(४) गृहमंत्री

गुलझारीलाल नंदा गृहमंत्री थे। गृहमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल संपूर्ण असफल

हुआ था। मार्क्सवादी कम्युनिस्टों के विरुद्ध आयोजित दमनचक्र उपायों से वे बहुत बदनाम हुए थे। उनके कुछ निर्णय और कृतियाँ बहुत वादग्रस्त थी। वे सब गैरजिम्मेदार ठहरी। जैसे साधुओं के निदर्शनों के प्रकरण में आँसधुआँ, गोलीकांड और जुल्म की नीति आदि कृतियों के कारण उन्हें गृहमंत्री पद से निकालना आवश्यक था। तब उनकी जगहपर कौन? यह प्रश्न जब निर्माण हुआ तब यशवंतराव का नाम सामने आया और श्रीमती गांधी ने यशवंतराव का गृहमंत्री पद के लिए चुनाव किया।

यशवंतराव गृहमंत्री हुए। फिर नयी जिम्मेदारी और नये आव्हान उनके सामने थे। गृहमंत्री पद यह संसद में बडे सम्मान का पद उन्हें मिला। इस काल में देश की परिस्थिति स्फोटक हुई थी। यशवंतरावने शांति और सुव्यवस्था रखकर उसे पूर्व पद पर लाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

कुल मिलाकर यशवंतराव ने गृहमंत्री पद की जिम्मेदारी अच्छी तरह संभाली। यह समय उनके मंत्रिपद का सुनहरा काल था। विपक्ष के भड़िमार को शांति से, उत्तेजित न होते हुए उत्तर देना, दिक्कत के प्रश्न शांति से और सामोपचारसे सुलझना यह उनकी पद्धत थी।

१९६७ के चुनाव के बाद वे इंदिराजी के मंत्रिमंडल में फिर से गृहमंत्री हुए। १९६७ के चुनाव में देश में ९ राज्यों में काँग्रेसेतर विधायक दल की सरकार आयी थी। ईशान्य भारत के राज्यों में अस्वस्थता और फुटीरतावादी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही थी। यशवंतरावने उन भागों का दौरा किया था। वहाँ के जनजीवन और संस्कृति का अभ्यास किया। उसके अनुसार उस प्रदेश में लोगों की माँगे ध्यान में लेकर उनकी कुछ राज्यों में विभाजन करने की शिफारिस की। संसद ने उसे मंजुरी देनेपर उस प्रदेश में अच्छी तरह शांति प्रस्थापित हुई।

गृह विभाग की व्याप्ति बड़ी थी। राष्ट्रीय जीवन के चारों ओर से संबंध था। कानून और सुव्यवस्था अबाधित रखनेसे लेकर आंतरराज्य संबंधों तक प्रत्येक क्षेत्र में असंख्य उलझे हुए प्रश्न निर्माण हुए थे। इस समय यशवंतराव के हाथ में गृह विभाग के सूत्र आये थे। कुल मिलाकर वह वर्ष भारतीय राजनीति में बहुत तीव्र संघर्ष का था। हिंदुओं के और शीखों के जीर्णोद्धारका प्रश्न उभरकर सामने आया था। भाषिक-प्रादेशिक अस्मिता धारदार बनी हुई थी। आत्मदहन की धमकियाँ देकर संत फत्तेसिंग और आठ शीख नेता गृहमंत्रालय को आवाहन दे रहे थे। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और बिहार के विद्यार्थियों का असंतोष दबाने के लिए पुलिस विभाग अमानुष स्तर तक पहुँच गया था। चव्हाण ने कार्य भार लेने पर तीनही दिनों में विद्यार्थियों का जुलूस चलकर आया।

चव्हाणने अपनी शैली से इन प्रश्नों की ओर ध्यान दिया। प्रासंगिक विद्रोह का

दमन यह किसी भी प्रश्न के निर्णायक सुलझाने का मार्ग नहीं हो सकता ऐसी चव्हाण की पक्की नीति थी। विविध समितियाँ नियुक्त कर के हर एक प्रश्न की मूलग्राही चिकित्सा, विषयों का सर्वांगीण दृष्टि से अभ्यास कर निर्णय लिए और उनकी कार्रवाई की। यशवंतराव जब गृहमंत्री थे तब उन्होंने अपनी सत्ता का उपयोग राष्ट्र की पुरोगामी, आर्थिक और सामाजिक उद्देश्य साध्य करने के लिए किया और देश के सामने होनेवाले आवाहनों का बडे सामर्थ्य से मुकाबला किया।

(५) अर्थमंत्री

इंदिरा गांधीने २६ जून १९७० में यशवंतरावजी को अर्थ विभाग सौंप दिया। उन्होंने जब वित्तमंत्री का कार्यभार स्वीकार लिया तब वह काल देश की आर्थिक दृष्टिसे बहुत कठिन था।

अर्थव्यवस्था बिखरी हुई थी। अनेक बातों का अभाव था। अर्थसाधन अपर्याप्त थे। जीवनावश्यक वस्तुओं की कमी, किमतों में वृद्धि आदि प्रश्नों के कारण दिक्कते पैदा हो गयी थी। सुशिक्षित बेरोजगारी, ग्रामीण बेकारी, जमीन सुधार ऐसे असंख्य प्रश्न थे। इसके सिवाय पूर्व पाकिस्तान से भारत में आने वाले निर्वासितों के गिरोह रोकने के लिए आंतरराष्ट्रीय स्तर पर इंदिरा गांधी द्वारा किये गये प्रयत्न असफल हो गये थे। फिर भारत-पाकिस्तान संघर्ष अटल था। बांगला देश की निर्मिति, मध्यपूर्व में सुलगा हुआ अरब-इस्रायली संघर्ष, तेल की बढी हुई कीमतें आदि सब प्रतिकूल घटनाओं से भारत के आर्थिक व्यवस्था पर प्रचंड बोझ पडा हुआ था। केंद्रीय वित्तमंत्री यशवंतराव को इन सब बातों का सामना करना पड रहा था।

उसके साथ ही देशांतर्गत मूल्य वृद्धि पर नियंत्रण रखना आवश्यक था। राजनैतिक दृष्टि से यह बहुत कठिन काम था। यशवंतराव कोई अर्थतज्ज्ञ नहीं थे। परंतु अपने ऊपर सौंपी हुई कोई भी जिम्मेदारी प्रयत्न कर के खबरदारी से पार करने की उनकी वृत्ति से और अनेक तनाव खिंचाव का समन्वय करने के कौशल से वित्तमंत्री के रूप में उनका कार्यकाल संस्मरणीय हो गया।

उस काल में उन्होंने अपनी कल्पना में होनेवाली अर्थ विषयक नीति का हमेशा समर्थन किया। राष्ट्र का विकास बनाने में उनका बहुत बडा उपयोग हुआ। उन्होंने अर्थ विभाग में आमूलाग्र बदल किये। तत्परता से अच्छी तरह कारोबार किया। बैंकों का राष्ट्रीयीकरण, संस्थानिकों के तनखे बंद करना आदि विषयों का सर्वांगीण अभ्यास करके उन्होंने निर्णय लिया, ये निर्णय कार्यान्वित किये। अर्थमंत्री के रूप में उनके द्वारा लिये हुए निर्णय देश की अर्थ व्यवस्था पर दीर्घकाल परिणाम करनेवाले ठहर गये।

(६) विदेश मंत्री

११ अक्तूबर १९७४ में इंदिराजी ने यशवंतराव पर विदेश मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी। इसलिए वे अनेक देशों से भेंट देने के लिए गये थे। इसलिए अनेक विदेश राष्ट्र प्रमुखोंसे, कूटनीतिज्ञोंसे भेंट देकर भारत के विदेश संबंध विषयक चर्चा करनी पडी। उन्होंने अलिप्तता की नीति का समर्थन किया। भारत-अमरिका, भारत-रशिया, भारत-पाकिस्तान, भारत-चीन इन सब में राजनैतिक संबंध सुधार के लिये उन्होंने सतत प्रयत्न किये। उन्होंने विदेश विभाग कौशल से संभाला। उन्होंने भारत को प्रतिष्ठा प्राप्त कर दी। विभिन्न राष्ट्रों के विकास के कार्यक्रम जो अंमल में लाये हैं, उन्होंने उसका प्रत्यक्ष अवलोकन किया। आंतरराष्ट्रीय राजनीति का गहरा अभ्यास, विस्तृत वैविध्यपूर्ण अनुभव और विविध राष्ट्र प्रमुखों से उन्होंने जोडे हुए संबंधों के कारण आंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में यशवंतराव का प्रभाव महसूस हो रहा था। १९७१ में विदेश मंत्री होनेपर पाकिस्तान से युद्ध हुआ। भारत को संरक्षण सिद्ध करने के लिए यशवंतरावने दौरा किया। उसके बाद वे रशिया के दौरे पर गये और संरक्षण समझौता किया। नेहरू-इंदिराप्रणीत विदेश नीति आगे रख दी।

(७) उप प्रधानमंत्री

जुलै १९७९ में उन्हें फिर से मौका आया था, परंतु काँग्रेस संसदीय पक्ष ने चौधरी चरणसिंग को समर्थन देने का निर्णय लिया। यशवंतराव चरणसिंग मंत्रीमंडल में उपप्रधानमंत्री हो गये। परंतु उनकी सरकार अल्पकाल टिकी रही। फिर भी उप प्रधानमंत्री की दृष्टि से यशवंतराव का कार्यकाल प्रशंसनीय रहा।

(८) वित्त आयोग के अध्यक्ष

१९८० में हुए चुनाव के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी फिर से प्रधानमंत्री बन गयी। जनमत का कौल ध्यान में लेकर यशवंतरावजी को आय काँग्रेस में प्रवेश दिया। उसके बाद इंदिराजीने उनकी नियोजन आयोग के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति की। वह काम भी उन्होंने अच्छी तरह किया।

(९) विरोधी पक्ष नेता

१९७७ के चुनाव में इंदिरा काँग्रेस की पराजय हुई और यशवंतराव विरोधी पक्ष नेता बन गये। परंतु यह नयी भूमिका उन्हें अप्रिय लगी। विरोधी पक्ष नेता के रूप में उनका कार्यकाल बहुत ठीक नहीं रहा। अनेक प्रसंगों में उन्हें इंदिरा गांधी का रोष स्वीकारना

पडा। इस काल में राजनीति के दाँवपेंच कम पडने लगे।

यशवंतराव चव्हाण सच्चे अर्थो में महाराष्ट्र के नेता थे। वे महाराष्ट्र प्रशासन में और पक्ष के भी प्रमुख थे। जब वे महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे तब उनका कार्यकाल यशस्वी हुआ। उनके प्रत्येक निर्णय का स्वागत हुआ, परंतु केंद्रीय राजनीति में उनके प्रत्येक निर्णय का स्वागत नहीं हुआ। अनेक प्रसंगों में उन्हें दूसरों के विचार स्वीकार करने पडे। जब वे विभिन्न विभागों के मंत्री थे तब उन्हें स्वतंत्र निर्णय लेना संभव नहीं हो सकता था। इन सब बातों के कारण उनके विचार में और कार्य में बाधा पडी थी।

यशवंतराव अन्ततक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रहते तो सद्य स्थिति में महाराष्ट्र का चित्र अलग दिखाई देता। शायद महाराष्ट्र की अभूतपूर्व प्रगति हो जाती। परंतु यह नियति के मन में नहीं था। मराठी राज्य की स्थापना होने के बाद यशवंतराव केवल दो वर्षं ही महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री रह सके। उन्होंने केवल विकासों की दिशाएँ निश्चित की थी। उन्होंने योजनाएँ बनायी। परंतु उनके मन में महाराष्ट्र के लिए जो योजनाएँ थी वह प्रत्यक्ष कृति में नहीं आयी। अन्ततक उन्हें महाराष्ट्र के बारे में अंतर्मन में आस्था और प्रेम था।

कुल मिलाकर यशवंतराव चव्हाण ने संसदीय सचिव से स्वतंत्र विभाग तक अनेक पद विभूषित किये। इन में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री, भारत के रक्षा मंत्री, गृहमंत्री, विदेशमंत्री, अर्थमंत्री, विरोधी पक्षनेता आदि महत्त्वपूर्ण उच्च पद सँभाले। इन पदों पर रहकर राष्ट्रीय स्तर पर जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया उसके कारण भारत की पहचान संसार में एक महत्त्वपूर्ण राष्ट्र के रूप में ख्याति निर्माण हुई। यह हमारे देश के लिए महत्त्वपूर्ण घटना है।

सारांश – कुछ मनुष्य जन्मतः बडे होते है, कुछ मनुष्य पर बडप्पन लादा जाता है। कुछ अपवादात्मक मनुष्य अपने अंग के गुणों से और कर्तृत्व से बडे होते हैं, ऐसा जगप्रसिद्ध नाटककार शेक्सपियर का एक वचन है। स्वकर्तृत्व से और कार्य से गुणवंत, यशवंत और कीर्तिवंत होनेवाले अपवादात्मक मनुष्यो में यशवंतराव यह एक अग्रगण्य थे।

'जातिवंत नायक हा अष्ट पैलू नव्हे विविध पैलू असलेला असतो' ऐसा ही एक सुभाषित है।

अपने कर्तृत्व और नेतृत्व से यशवंतराव सामान्य में से असामान्य थे। यशवंतराव नाम की व्यक्ति बड़ी थी। विचार से, आचार से बुद्धिमत्ता से, कर्तृत्व से और मनुष्यता से। १९४० से १९८० के दरमियान जो पीढी थी उसका अनुभव उस पीढी को आया है। जिन्होंने यशवंतराव को ४० वर्षो से देखा, उन्होंने उद्‌गार निकाले – 'ऐसा मनुष्य होना असंभव।'

एक छोटेसे देहात में गरीब, अशिक्षित परिवार में उनका जन्म हुआ। आर्थिक विवंचना और गरीबी में उनका बचपन बिता। शिक्षा लेते समय अनेक अडचनें आयी। शिक्षा लेते समय उन्होंने स्वातंत्र्य आंदोलन में भी भाग लिया। ऐसा कर्तृत्ववान विद्यार्थी मनुष्य कराड के मुहल्ले से राजधानी दिल्ली तक जा पहुँचा। उन्होंने महाराष्ट्र में ही नहीं, तो देश में और संसार में कीर्ति, ख्याति प्राप्त की। यह कितना प्रशंसनीय कार्य कर्तृत्व है।

राजनीति में, समाजकारणों में, शिक्षा में, साहित्यकाल में रस लेकर अपना सहयोग देकर यशवंतरावजी ने महाराष्ट्र के विविध क्षेत्रों को रंग, रूप दिया और महाराष्ट्र बडा करने में और आगे ले जाने में अपना महत्त्वपूर्ण हिस्सा उठा लिया। सार्वजनिक जीवन में काम करनेवाली एक नयी पिढी तैयार की और यशवंतराव उस नयी पिढी के शिलेदार बन गये।

शासकीय पदोंपर काम करते हुए उन्होंने अपने कार्य से छाप डाली और प्रगतिशील राष्ट्र रचना का कार्य किया।

माँ मराठी के महाराष्ट्र के इस 'यशवंत' भूमिपुत्र ने आजन्म देश-सेवा के व्रत का पालन किया था। २५ नवंबर १९८४ में उनका निधन हुआ। उनके निधन से कभी भी भर न आनेवाला उनका स्थान रिक्त हुआ था। यशवंतराव एक बडे विचारवंत और नीतिमान, सत्‌शील, तत्त्वशील, पुरोगामी, कर्तृत्व संपन्न कूटनीतिज्ञ और महाराष्ट्र राज्य के शिल्पकार थे। राजनीति में से समाजकारण करनेवाले कर्तृत्व नेता को महाराष्ट्र विन्मुख हो गया।

यशवंतराव रक्षा मंत्री अपने सेनाधिकारियों में, सेना में, सनदी और नागरी अधिकारियों में प्रिय हो गये। रक्ष मंत्री बनने पर उन्होंने संरक्षण शास्र में होनेवाली सूक्ष्म बातों का अच्छी तरह अभ्यास किया। १९७१ के युद्ध के समय रक्षा मंत्री न होते हुए भी प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा शरणागति स्वीकार कर एक तरफा युद्ध विराम घोषित करने के पूर्व अकेले यशवंतराव को बुलाकर प्रथम विश्वास में लेकर अनौपचारिक विचार विमर्श कर उनके नेतृत्व के विषय में अपनी आस्था और आदर प्रकट किया था।

(७) विविध विषयोंपर यशवंतरावजी के विचार

(१) राष्ट्रवाद

प्रामाणिक राष्ट्रवादी विचार ये स्वातंत्र्योत्तर काल में प्रारंभिक २० वर्षों में नेतृत्व का वैशिष्ट्य था। यशवंतराव के विचारों को अनुभवों की साथ थी। उसमें सीधापन और सरलता थी। इसलिए सामान्य मनुष्य को उनके विचार पसंद पडते थे।

१९५७ में नाशिक में महाराष्ट्र सामाजिक परिषद के तिसरे अधिवेशन का उद्घाटन करते हुए यशवंतरावने अपने भाषण में कहा कि – 'भारत एक राष्ट्र बना हुआ है ऐसे अपने नेता चिल्लाकर कहते रहते हैं। राज्य घटना ने भारतीय नागरिकत्व की व्याख्या मंजूर की है। पर उस नागरिकत्व का अनुभव आना चाहिए। हमे राजनैतिक स्वातंत्र्य मिला हुआ है। उसके पीछे सामाजिक मूल्य और सामाजिक प्रेरणा न हो तो वह स्वातंत्र्य व्यर्थ है। पुरानी श्रद्धाओं को चिपककर न रहकर नयी श्रद्धाओं की खोज करनी चाहिए। राजनीति पहले कि समाजकारण पहले यह भाग अप्रस्तुत है। क्योंकि राजनीति समाजकारण का एक भाग है।'

सांप्रत के विज्ञान युग में विज्ञान के विध्वंसक स्वरूप से दुनिया को बचाने के लिए सामजिक परिषद जैसी संस्थाओं को नये मूल्य और नयी प्रेरणाएँ देनी चाहिए।

भारत ने कठिन प्रयत्न करके स्वातंत्र्य प्राप्त किया है। लेकिन अब हमे केवल राजनैतिक स्वातंत्र्य नहीं चाहिए। उसके लिए नये मूल्य, नयी प्रेरणा और नये विचार समाज नेता ही दे सकते हैं। अब आत्मसंशोधन की अधिक जरूरत है। निडर भारतीय नागरिकत्व का पालन पोषण होना चाहिए। निडर भारतीय नागरिकत्व केवल राजनैतिक नेता निर्माण नहीं कर सकते। उसके लिए समाजकारणों की अधिक जरूरत है।

इस विचार से एक सच्चा भारतीय अपने सामने खडा रहता है। आज हमे यह निश्चित रूप से स्वीकार करना पडेगा कि हम लोगों ने भारत का एक जनतंत्र राज्य निर्माण किया है। पर भारत का एक जनतंत्र राष्ट्र निर्माण नहीं हुआ है। राज्य यह भौतिक संकल्पना है। जनसंख्या, भूप्रदेश, शासनसंस्था और सार्वभौमत्व ये चार घटक होनेपर राज्य निर्माण होता है। पर राष्ट्र यह मानसिक अवस्था है। वह प्रत्येक नागरिक के मन में दृढ होना आवश्यक है। 'यह देश मेरा है' ऐसे प्रत्येक भारतीय नागरिक को प्रामाणिकता से लगेगा तो एक राष्ट्र निर्माण होगा। परंतु आज ही आप भारत यह एक राष्ट्र है ऐसा कहने

का साहस कोई नहीं कर सकता। धर्म, जात, पंथ, भाषा के आधारपर छोटे-छोटे घेरे देश में निर्माण हुए हैं और व्यक्ति की निष्ठा इस घेरे के आसपास केंद्रित हुई है। देश के विषय में विचार करने के लिए समय है किस के पास? पहले परिवार, फिर जात, उसके बाद धर्म, प्रदेश, भाषा, फिर समय शेष रहा तो देश!

इस सामाजिक परिषद में यशवंतराव आगे कहते हैं कि – 'जनतंत्र सफल करने के लिए केवल चुनाव की राजनीति उपयोग में नहीं आयेगी। यह बात पक्षीय नेताओं को पहचाननी चाहिए। समाजकारण यह राजनैतिक पूँजी नहीं होनी चाहिए। राजनीतिमें से जातियता को एकसाथ निकाल देना चाहिए। पुराने सडके विचार फेंककर नये विधायक विचार, नयी मानवता का पालन पोषण करना चाहिए। देश की प्रगति की दृष्टि से कदम कदम पर आगे जाना हो तो सामाजिक सुधार की ओर ध्यान देना चाहिए।'

यशवंतराव के विचार केवल राष्ट्रतक सीमित नहीं हैं। आज तो दुनिया जिस वैश्विक वृत्ति से नजदीक आ रही है, राष्ट्र की अर्थव्यवस्था का स्वतंत्र कम महत्त्वपूर्ण हो जाने से संपूर्ण दुनिया की एक अर्थव्यवस्था बन रही है, जिसे हम जागतिकीकरण कहते हैं, उसका विचार यशवंतराव के नेतृत्वने ५० वर्ष पूर्व प्रकट किया था।

वे कहते हैं – 'पंचशील यह तत्त्व संयुक्त राष्ट्र संघटना के समूह हित के तत्त्वों से सुसंगत है। पंचशील तत्त्व का प्रचार हुआ कि सारी दुनिया एकत्र आयेगी, एक परिवार आराम से सुख से रह सकेगा। तथापि यह कल्पना आसानी से स्वीकृत नहीं की जायेगी। क्योंकि उसका स्वरूप ही ऐसा होता है कि उसके लिए मानसिक क्रांति की अधिक आवश्यकता होती है और प्रसंग आने पर कष्ट भी बर्दाश्त करने पडेंगे।' वे आगे कहते हैं – 'विभिन्न राष्ट्रों में समझदारी लाने की दृष्टि से आप को इस कार्य के लिए समर्पित होना चाहिए। यथावकाश युद्ध का पूर्णतः विनाश होगा यानी कि युद्ध नहीं होंगे। संपूर्ण शांति बनी रहेगी। भारत दुनिया को शांति और सहिष्णुता का संदेश पहुँचाने की सहाय्यता करेगा।' भारत की आध्यात्मिक शक्ति के विषय में कितना आत्मविश्वास? और दूरगामी विचार करने की क्षमता। इतनी ऊँचाई पर जाकर विचार और कृति करने की उनकी क्षमता प्रशंसनीय है। इसी संदर्भ में संयुक्त महाराष्ट्र का प्रश्न भी यशवंतराव राष्ट्रीय दृष्टि से हल करना चाहते थे। उनकी यह कृति प्रशंसनीय एवं उचित है। इसके पीछे उनका दृष्टिकोन यही था कि किसी भी तरह से राष्ट्र को हानि न पहुँचे। कितना उदात्त दृष्टिकोन है उनका।

(२) शिक्षा

आज के विद्यार्थियों की शिक्षा का विकास होना चाहिए। वही आज का सच्चा

प्रश्न है। उन में होनेवाला अज्ञान दूर करना चाहिए। ये महत्त्वपूर्ण बदल लाने के लिए पहली दो पंचवार्षिक योजनाएँ हुई। परंतु किसान को सचमुच फायदा नहीं हुआ है। यह सच है कि खेती में सुधार नहीं हुआ उसके लिए किसानों को और उनके लडकों को उच्च शिक्षा मिलनी चाहिए। उसे गँवार रखकर उनका विकास कैसे होगा? नया विचार, नया मनुष्य निर्माण किये बगैर कुछ साध्य नहीं होगा। मैं यह नया सपना देख रहा हूँ। यह तो महाराष्ट्र राज्य का सपना है।

यशवंतरावने शिक्षा क्षेत्र को बडा महत्त्व दिया है। महाराष्ट्र राज्य स्थापन होने के बाद उन्होंने गरीब परिवार में से आये हुए विद्यार्थियों को शिक्षा विषयक फीस की मुआफी की सहूलियते दी। इसके साथ ही ग्रामीण विभाग में शिक्षा संस्था, ग्रामीण विद्यालय और महाविद्यालय स्थापित करने के लिए विशेष सहूलिते जाहिर की। उस समय जिस गति से ग्रामीण विभाग में कॉलेज निर्माण हुए हैं, उससे शिक्षा विषयक दर्जा घट जायेगा और ग्रामीण क्षेत्र में विद्यार्थियों को दुय्यम दर्जा की शिक्षा मिलेगी ऐसी आलोचना की गयी। कुछ विद्वान लोगोंने उथली शिक्षा कहकर आलोचना करके कुछ आक्षेप लिये। यशवंतराव को वह आलोचना मंजूर नहीं थी, उन्होंने स्वीकार भी नहीं किया। पर उन्होंने कहा –'मैं जिस विभाग में रहता हूँ, वहाँ कृष्णा नदी का पात्र उथल है। परंतु कृष्णा नदी जैसे पूर्व की ओर बहती है, वैसे उसका पात्र गहरा बन जाता है। आज जो शिक्षा आप को शायद उथल लगती हो। उस शिक्षा का दर्जा कुछ वर्षो के बाद घटेगा इसके बारे में मेरे मन में शक नहीं है। आज आपने ग्रामीण क्षेत्र में फैला हुआ शिक्षा का जाल देखा तो वहाँ कहने में बहुत तथ्य है। आज कल अनेक वर्ष एस. एस. सी. और हायर सेकंडरी में जो लडके प्रथम श्रेणी में आते हैं, उस में प्रधानतः ग्रामीण विभाग में लडकों का प्रमाण अधिक है। इसके पहले दादर और पुणे के लडके पहले दस–बीस क्रमांक में आते थे, परंतु वह चित्र आज बदल गया है। आज लातूर विभाग में जो विद्यार्थी प्रथम श्रेणी में आते हैं, उनके विषय में संपूर्ण महाराष्ट्र आश्चर्यचकित हुआ है।'

महाराष्ट्र राज्य जनतंत्र समाजवाद की प्रयोगशाला बने इसलिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किये। उसकी नीव डालने का और उस पर इमारत खडे करने का कार्य शिक्षा को करना पडता है यह पहचानने की दृष्टी यशवंतराव को थी। इतिहास का एक जिज्ञासू, अभ्यासू और सृजनशील विचार संपन्न, एक द्रष्टा नेता, प्रशासक होने का भाग्य प्राप्त होने के कारण शिक्षा की अनिवार्यता उन्होंने ध्यान में ली।

२५ अगस्त १९६० में विधानसभा में 'जनतंत्र नियोजन' इस विषयपर महत्त्वपूर्ण विचार प्रकट करते हुए उन्होंने शिक्षा के संबंध में अपने विचार स्पष्ट किये –

(१) माध्यमिक शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया गया।

(२) होशियार और बुद्धिवान विद्यार्थियों को किसी प्रकार की अडचनें न आये। इसलिए उन्हें शिष्यवृत्तिद्वारा मदद की जायेगी। ऐसी भूमिका उन्होंने ली।

(३) इस नीति के प्रभावी अमल के लिए ई.बी.सी. की सहुलियत जाहिर की। महाराष्ट्र राज्य ने स्वतंत्रता से उठायी गयी यह पुरोगामी नीति है।

(४) पिछडे हुए विद्यार्थियों को शिष्यवृत्तियाँ देने की नीति अपनायी।

(५) लोकभाषा यह ज्ञानभाषा होनी चाहिए यह विषय बहुत मूलगामी स्वरूप का होता है।

(६) शिक्षा संस्कृति का प्रवेशद्वार है।

(७) शिक्षाविषयक क्षेत्र में सतत प्रयोगशीलता आती रहे। ऐसी उनकी अपेक्षा थी।

(८) महाराष्ट्र शासन ने निजी संस्थाओं को तंत्र निकेतन और इंजिनिअर्स कॉलेज खोलने की इजाजत दी। यह महाराष्ट्र शासन का निर्णय क्रांतिकारी है। यशवंतरावने इसका स्वागत किया।

(९) विज्ञान तंत्रज्ञान की सहाय्यता से महाराष्ट्र सुजलाम सुफलाम करेंगे ऐसा उनका विश्वास था।

(१०) उद्योग धंदे के विकास के लिए प्रशिक्षा देनी चाहिए। श्रमिक प्रशिक्षित होनेपर औद्योगिक विकास के लिए उसका फायदा होगा। प्रशिक्षित श्रमिक नये तंत्र का, यंत्र का इस्तेमाल करने के लिए प्रवृत्त होगा। इससे नये उन्नति का मार्ग श्रमिक को प्राप्त होगा। इससे गरीबी कम होगी और पेशे के मौके में वृद्धि होगी।

मनुष्य के जीवन में उदात्त मूल्यों का बीजारोपन शिक्षा के द्वारा होता है। विचार सामर्थ्य के साथ ही संवेदनशीलता देने का कार्य ही शिक्षा देती है। क्योंकि शिक्षा में बडी संस्कारक्षमता छुपी है। मनुष्य का मन शिक्षा के संस्कार से अधिक संपन्न किये बिना समाज सच्चे अर्थो से समझ नहीं पाता। व्यक्ति के वैचारिक और भावनिक समृद्धि के लिए शिक्षा जितनी अनिवार्य है, उतनाही वह समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के लिए आवश्यक है। शिक्षा प्रसार केलिए राजकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक महत्त्व होना चाहिए। विषमता के दलदल में रौंदे हुए और जाति–जाति में पीसे हुए समाज को तो शिक्षा के बिना प्रगति का विचार करना संभव नहीं है। ज्ञानभाषा और लोकभाषा एक हुए बिना समाज का जीवन समर्थ और विकसित नहीं होता।

शिक्षा से मनुष्य की बौद्धिक बैठक मजबूत होती है। विचारों में प्रगल्भता आती है और निर्णय लेने के लिए मन को समतुल्यता आती है।

'किसी कारण सुख से चला है कि नहीं यह देखने के लिए जैसे एकाध स्री रसोई

घर में झाँककर देखकर तय करती है वैसे किसी महाविद्यालय की प्रगति वहाँ का ग्रंथालय देखकर की जाती है।'

हिमालय के ऊपर की गंगा जब भगीरथी बनकर भूतल पर आती है, तबही वह लोकोपयोगी बनती है। उसी के अनुसार ज्ञान की गंगा समाज के निचले स्तर तक पहुँचनी चाहिए। ऐसा हुआ तो वह सब के लिए कल्याणकारी होगा।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि उनके शिक्षा विषयक विचार और सामान्य जनों के प्रति होनेवाली आत्मीयता प्रकट होती है। शिक्षा से ही सामाजिक परिवर्तन और नव समाज निर्मिति हो सकती है यह उनके मन की नीति थी। शिक्षा का प्रचंड प्रवाह महाराष्ट्र के प्रत्येक देहात में पहुँच जाना चाहिए। और उन देहातो में नयी पिढी सुशिक्षित होनी चाहिए। शिक्षा के आधार से क्रांति हो सकती है यह उनका विचार था।

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ के उपाधिदान समारोह में यशवंतरावने कहा – 'विद्यापीठ में होनेवाले विद्यार्थियों को स्थानिक प्रश्न समझकर उन्हें सुलझाने चाहिए। संकुचित प्रादेशिक भाव मन में से निकाल देने चाहिए। मराठवाडा जैसे महाराष्ट्र का घटक है वैसे महाराष्ट्र भी यह इस देश का एक घटक है। इस में राष्ट्रीय एकता को महत्त्व देना चाहिए।'

विद्या की उपासना सब को करनी चाहिए। विद्या के सिवाय सभी उद्योग अंधे हैं। यह उनकी सर्व व्यापी कल्पना थी। शिक्षा यह व्यक्ति के विकास का एक साधन है और वह सातत्यपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा के आधार पर मनुष्य बल की कार्यक्षमता बढाकर मानवीय मूल्य और ध्येय का पालन पोषण हो सकता है। इसके लिए उन्होंने प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षा को महत्त्व दिया। उच्च शिक्षा का लाभ सब को होना चाहिए। अशिक्षित युवक की अपेक्षा शिक्षित युवक ये अच्छे हैं। विद्यापीठ ने विद्यार्थियों को मातृभाषा में शिक्षा मिलनी चाहिए। शिक्षा में बुरी प्रथाओं का उच्चाटन यह शिक्षा से हो सकता है। महाराष्ट्र में तरुणों को उच्च शिक्षा के साथ तांत्रिक शिक्षा लेनी चाहिए। क्योंकि इस शिक्षा से राष्ट्र सामर्थ्यवान होगा। अमरिका में महाराष्ट्रीय तरुण तंत्रज्ञोंका समावेश अधिक है यही यशवंतराव चव्हाण के शिक्षा विषयक विचारों की फलश्रुति है। यशवंतराव चव्हाणने महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा और कृषि शिक्षा को महत्त्व दिया। उसके लिए विद्यापीठ की स्थापना की। बहुजन समाज में लडके-लडकियों को सहज सुलभ रीति से शिक्षा लेने के लिए अनेक रिआयते, विशेषतः इ. बी. सी. सहूलियत दी गयी। इसलिए तो बहुजन समाज में अनेक तरुण डॉक्टर, इंजिनीयर, शिक्षक, वकील, वरिष्ठ अधिकारी आदि पदोंपर विराजमान हुए आप देखते हैं।

महाराष्ट्र में अनेक शिक्षा संस्थाओं को सभी अर्थोंसे मदद की है। कर्मवीर भाऊराव

पाटील के द्वारा शुरू की हुई रयत शिक्षण संस्थाओं को आर्थिक मदद की। आगे यशवंतराव इस संस्था के अध्यक्ष हुए। आयु के अंतिम क्षम तक वे इस पदपर कार्यरत थे। इस पदपर रहते हुए तुम्हें सर्वाधिक आनंद कब लगेगा। इस प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि – 'मैं महाराष्ट्र का मुख्यमंत्री हुआ, उसकी अपेक्षा मुझे अधिक आनंद मैं रयत शिक्षण संस्था का अध्यक्ष हुआ तब हुआ। मैं जीवन में राजनीति नहीं करता तो मैं उत्तम साहित्यिक अथवा शिक्षक हो जाता।' इस भावना से यशवंतराव चव्हाण के मन में शिक्षा विषयक जो आत्मीयता थी वह स्पष्ट हो जाती है।

महाराष्ट्र निर्मिति के साथ मराठी भाषा को राजभाषा का दर्जा मिल गया। उच्च शिक्षा के दरवाजे सभी लोगों को खुले हुए ऐसी परिस्थिति में जब उच्च शिक्षा के संदर्भ में भाषा का प्रश्न निर्माण हुआ तब यशवंतराव चव्हाणने कहा कि उच्च शिक्षा मातृभाषा में देना चाहिए। शिक्षा हमे निचले स्तर तक पहुँचाना होगा तो वह विदेशी भाषा में कैसे पहुँच जायेगा? ऐसा मूलभूत प्रश्न प्रकाशित करके उन्होंने उपस्थित किया। देहातों का देश होनेवाला भारत अंधश्रद्ध, निरक्षरता, गरीबी इन में उलझ गया है। ऐसी परिस्थिति में विदेशी भाषा का आधार लेकर उसे ज्ञानामृत पिलाने का तय हुआ तो उनकी दृष्टि से अनाकलनीय बन जायेगा। एक तो उनके सामने अनेक प्रश्न है। ऐसी परिस्थिति में नये प्रश्न बर्दास्त करने की शक्ति उन में कहाँ से आ जायेगी। ऐसी सार्थ भीति वे व्यक्त करते हैं। लोगों को उनकी मातृभाषा में ज्ञान लेने दो यह कहकर लोकभाषा और ज्ञानभाषा एक ही होनी चाहिए। ऐसे वे आग्रह करते हैं।

यशवंतरावने शिक्षा को संस्कृति का प्रवेशद्वार माना है। उससे समाज का सर्वांगीण विकास तो होना चाहिए। लेकिन उसके साथ शिक्षा से राष्ट्र का समग्र सांस्कृतिक परिवर्तन का माध्यम बनाना आवश्यक है ऐसे यशवंतराव को लग रहा था। शिक्षा लेना यह एक भौतिक घटना न होकर शिक्षा से व्यक्ति को सुसंस्कृत और संवेदनशील बनाने का एक साधन है। यशवंतराव इस बात का समर्थन करते थे। मनुष्य सच्चे अर्थों में 'मनुष्य' बनने की प्रक्रिया शिक्षा के संस्कार से होती है। इस विचार पर यशवंतराव की अपार श्रद्धा और विश्वास था।

महाराष्ट्र के शिल्पकार के रूप में यशवंतराव का सामर्थ्य सर्वमान्य है। यशवंतराव के नेतृत्व मिलने के कारण महाराष्ट्र का भाग्य निखर गया। आज के महाराष्ट्र को सच्चे अर्थो ने 'महा-राष्ट्र' बनाने का सम्मान यशवंतरावजी को है।

देश की प्रगति वहाँ की शिक्षा पर निर्भर है यह उन्होंने जान लिया था और शिक्षा ही समाज परिवर्तन का एक प्रभावी साधन है यह पहचान कर यशवंतराव चव्हाण ने महाराष्ट्र के शैक्षणिक वातावरण को गतिमान किया। शिक्षा का प्रचार और प्रसार करने

के लिए उन्होंने अनेक सहूलियते देकर शिक्षा का प्रचंड प्रवाह महाराष्ट्र के प्रत्येक शहर में और प्रत्येक देहात में पहुँचा दिया।

यशवंतराव ने प्रत्येक व्यक्ति को मातृभाषा में शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल दिया। सामान्य मनुष्य को विदेशी भाषा में संभव नहीं है। ज्ञानभाषा और लोकभाषा हुए बगैर समाज का जीवन समर्थ नहीं हो सकेगा। ग्रामीण शिक्षा अर्थात आसपास के विभागों का विकास करने का साधन जब शिक्षा बनेगा तब उसे उपयुक्त शिक्षा कहा जायेगा। शैक्षणिक संबंध में शहर और देहात में दोनों में अंतर कम पड रहा है ऐसा डर उन्हें लगता था, अतः यह अंतर कम करने की जरुरत पर वे अधिक भर देते हैं। कोई भी शिक्षा प्रश्न सुलझानेवाली होनी चाहिए, वह प्रश्न निर्माण करनेवाली हो तो उसका पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

शिक्षा यह जीवनदायी गंगा है। किसान, मजदूर, दलित, पददलितों के दहलीज तक पहुँच जाये। इस दृष्टि से शासकीय नीति यशवंतराव के नेतृत्व में शासन ने रूपरेखा तैयार की। समाज में आर्थिक दुर्बल घटकों को मुआफी शिक्षा, उसके साथ ही बस्ती और काफिले तक शाला-महाविद्यालयों का विस्तार किया गया। उन्होंने एक बार कहा था - Mass Education is silent revoluation गुणवत्ता के नाम पर बहुजनों को शिक्षा इन्कार कर दी गयी थी। इसलिए उन में निराशा फैली थी। यशवंतराव को इतिहास का ज्ञान था। महाराष्ट्र में संत, वीर, पराक्रमी, विद्वान, देशभक्त और राजनीतिज्ञ लोगों की परंपरा है। यशवंतरावने उस परंपरा में अंतर पडने नहीं दिया। परिवर्तनशील महाराष्ट्र को यशवंतराव के रूप से भव्य सपना पडा था। प्रत्येक शहर में और देहात में शिक्षा कैसे पहुँच जायेगी इसके लिए शासकीय नीति अमल में लायी।

मानसिक और बौद्धिक सामर्थ्य के लिए शिक्षा समाज केंद्रित की। इसलिए तो आज ग्रामीण और आदिवासी भाग में विद्यार्थी अभियांत्रिकी, वैद्यकीय, तंत्रविषयक क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं। शिक्षा अंतिम मनुष्य तक पहुँच जाये। इसके लिए उन्होंने लोकाभिमुख निर्णय लिये। देहात में गरीबों के विषय में बहुत प्रेम होने के कारण यशवंतरावने शिक्षण विषयक उपक्रम कार्यान्वित किये। इसलिए उन्होंने सच्चे अर्थों में 'युगांतर' निर्माण किया। स्वातंत्र्य नाम की संकल्पना को मूर्त स्वरूप प्राप्त कर देने के लिए दो बातों की जरूरत है। एक रोटी और दूसरे ज्ञान। वह विकास की चाभी है। यशवंतरावने यह चाभी बहुजनों को सौंप दी। इसी कारण हम यशवंतराव को हम मूलभूत दृष्टि के रूप में पहचानते है।

डॉ. कुमार सप्तर्षी यशवंतराव के विषय में कहते हैं - 'जनता की सामुदायिक विवेक बुद्धिपर दृढ विश्वास होनेवाला प्रज्ञावंत राजनीतिज्ञ, विचारों का सम्मान करनेवाला

और मराठी मनुष्य अपने मनोविश्व का केंद्रबिंदू माननेवाला नेता था। विचारों की राजनीति करनेवाले यशवंतराव को पंडित नेहरू ने सह्याद्रि का महामेरू ऐसी उपाधि दी थी।'

महाराष्ट्र के समाज कारणों में अनेक तत्त्वों के माध्यम से जो क्रांति हो गयी है उन में से शिक्षा क्षेत्र यह एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। महात्मा फुले और सावित्री फुले इन दोनों ने प्रौढ शिक्षा, स्त्री शिक्षा और समाजशिक्षा इनके माध्यम से क्रांतिकारक कार्य का प्रारंभ किया।

यशवंतरावने महात्मा फुले का कार्य आगे चलाया। उद्योग, खेती और शिक्षा ये यशवंतराव के शासकीय नीति की त्रिसूत्री थी।

यशवंतराव शिक्षा की ओर जरूरत के साथ आर्थिक विकास का एक मूलभूत साधन की ओर देखते थे। शिक्षा का महत्त्व विशद करते हुए यशवंतराव कहते हैं - 'शिक्षा का प्रकाश समाज के अन्तिम स्तर तक हम ले जा सके तो महाराष्ट्र की शक्ति इतनी बढेगी तो उसे किसी की कृपा पर निर्भर रहने का कोई कारण नहीं रहेगा। वह अपना और अपने राष्ट्र की रक्षा करेगा।' शिक्षा के संबंध में उनका मूलगामी यही दृष्टिकोन था।

यशवंतराव कहते हैं - 'ज्ञान यह एक शक्ति है। विद्या यह एक प्रकार की ऊर्जा है तो शिक्षा यह जलसिंचन है।'

महाराष्ट्र को इतनी बड़ी शैक्षणिक परंपरा होते हुए भी आज की तरुण पिढी स्थान स्थान पर जातीयवाद करती है इसका मुझे खेद है। इसी प्रकार की जातिभेद की दीवारें तोडकर यशवंतराव को मानवतावाद प्रस्थापित करना था। इसलिए उन्होंने अपने कार्यकाल में सामाजिक, आर्थिक और समता स्थापित करने के कानून बनाये।

अनेक पिढियाँ शिक्षा से वंचित रह गयी थी। इसलिए यशवंतराव उन्हें शिक्षा देने के लिए कटिबद्ध हो गये। जहाँ गाँव वहाँ प्राथमिक शाला स्थापन कर के शिक्षा प्रचार का कार्य बढाया। मुफ्त और सक्ती की शिक्षा, प्राथमिक शाला का खेती विषयक बेसिक जीवन शिक्षा शाला में रूपांतर, प्राथमिक शालाओं की स्वतंत्र इमारते ऐसे दूरदर्शी निर्णय उन्होंने लिये।

माध्यमिक शिक्षा यह अर्थपूर्ण और सर्वस्पर्शी होनी चाहिए। समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में अनेक विध प्रश्नों का उस में विचार होना चाहिए। ऐसी माध्यमिक शिक्षा की व्यापकता बढाने के लिए उन्होंने अनेक निर्णय लेकर जनहित करने का प्रयत्न किया। ग्रामीण भाग में अधिकाधिक विद्यार्थियों को माध्यमिक शिक्षा का अवसर मिलना चाहिए। इसलिए उन्होंने निजी संस्थाओं को हाइस्कूल खोलने की

इजाजत दी। इसके साथही उन्होंने इन संस्थाओं को अनुदान देने की योजना अमल में लायी। माध्यमिक शिक्षा का दर्जा बढाने के लिए ७ मार्च १९६० को पुना में एस.एस.सी. बोर्ड की स्थापना की।

समता पर आधारित समाज निर्माण करने के लिए आर्थिक विकास यह एक महत्त्व का साधन है। इसी प्रकार की समाज रचना का सपना साकार होने के लिए शिक्षा की आवश्यकता है। समाज में अज्ञान, दारिद्र्य, रूढी, परंपरा, सनातनी प्रवृत्तियाँ नष्ट करनी हो तो हर एक मनुष्य को शिक्षा की 'तिसरी आँख' आवश्यक है।

यशवंतरावने गरीब विद्यार्थियों को इ. बी.सी. की सहूलियत देने पर आलोचकों ने कहा कि इस निर्णय से हजारों बेकार निर्माण होंगे। यशवंतरावने इसका उत्तर देते हुए कहा – 'मुझे अशिक्षित बेकारों की फौज की अपेक्षा सुशिक्षित बेकारों की फौज चलेगी। क्योंकि वे देश के प्रश्न ध्यान में लेकर उन्हें सुलझाने का प्रयत्न तो कर सकेंगे।'

वे कहते है कि – 'मनुष्य के पास जो जो अच्छा है उसका गौरव होना चाहिए। विद्या के मंदिर में किसी प्रकार का भेद न होना चाहिए। ज्ञानामृत की प्यास हर एक को होनी चाहिए। समाजवादी समाजरचना में यह तत्त्व प्रमुखता से माना जाना चाहिए।'

केवल शिक्षा की पद्धति में और शिक्षित युवकों की मनोवृत्ति में बदल करना चाहिए। केवल नौकरी प्राप्त करने के लिए अथवा उदरनिर्वाह का उद्योग प्राप्त करने के साधन के रूप में शिक्षा की ओर देखना उचित नहीं है। शिक्षा से युवकों में नौकरी पेशे की निर्माण होनेवाली प्रवृत्ति घातक है। शिक्षा और नौकरी का संबंध जोडना उचित नहीं है।

उच्च शिक्षा के संदर्भ में यशवंतराव कहते है कि – उच्च शिक्षा पर मुट्ठीभर लोगों की वैचारिक वृद्धि रूक गयी तो समाज की अधोगति हो सकती है। इसलिए ज्यादह से ज्यादा लोगों तक उच्च शिक्षा का लाभ पहुँचाना चाहिए। ऐसा हुआ तो जात, धर्म, पंथ आदि संकुचित वृत्ति में से समाज बाहर पडकर सामाजिक जीवन अधिक निर्दोष, साफ, स्वस्थ हो सकेगा।

विद्यापीठीय शिक्षा में, अभ्यासक्रम में कौनसी बातों का समावेश होना चाहिए? संशोधन कार्य किस प्रकार होना चाहिए? इस संबंध में यशवंतरावने कहा – 'तुम जिस कालखंड में रहते हो, जिस प्रदेश में रहते हो उसी कालखंड में और प्रदेश में जो ज्वलंत प्रश्न हैं, उस विभाग की महत्त्वपूर्ण जरूरते हैं। वहाँ घटनेवाली घटनाएँ, वस्तुस्थिति है इन सबका गहरा अभ्यास, संशोधन कार्य होना आवश्यक है। जिस प्रदेश में विद्यापीठ है, विद्यापीठ को उस प्रदेश का अविभाज्य भाग बनना चाहिए।'

ज्ञानभाषा यह मातृभाषा, लोकभाषा हो इसलिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो

यह म. गांधी की भूमिका यशवंतराव को मंजूर थी। उनके मतानुसार यदि शिक्षा निचले स्तर तक पहुँचाना हो तो विदेशी भाषा में देकर नहीं चलेगा। शिक्षा मातृभाषा में देनी चाहिए। ज्ञानभाषा और लोकभाषा एक हुए बगैर समाज, उन्नत विकसित नहीं होगा। भाषा का सच्चा सामर्थ्य विचार करने में हैं। विदेशी भाषा में विचारों की अपेक्षा पाठांतर पर जोर रहता है। हमारे विचारों को चालना नहीं मिल सकेगी तो इसी प्रकार की शिक्षा निकम्मी होती है। भारत में प्राचीन काल से ज्ञानभाषा और मातृभाषा इन दोनों में अलगाव था। इसलिए सामान्य मनुष्य तक ज्ञान अथवा विचार पहुँच नहीं सके।

संक्षेप में शिक्षा से सभी समाज समर्थ हो सकता है। क्योंकि शिक्षा का प्रवास असत्य की ओर से सत्य की ओर, अंधकार की ओर से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर होता है। इसलिए शिक्षा से तुम्हें समर्थ बनाना है और समाज जीवन तुम्हें समर्थ बनवाना है। शिक्षा से समाज जीवन समर्थ बन सकता है।

यशवंतरावने शिक्षा के माध्यम से अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है – 'मैं तीन भाषा का पुरस्कर्ता हूँ जिसे थ्री लँग्वेज फॉर्म्युला कहते हैं। जिस में मातृभाषा के साथ हिन्दी राष्ट्रभाषा, हिन्दी के साथ कुछ काल तक अंग्रेजी भाषा होना आवश्यक है।' यशवंतराव के मतानुसार हमारे देश में उच्च शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा में ही होना चाहिए। क्योंकि विदेशी भाषा में उच्च शिक्षा दी गयी तो समाज अंतिम स्तर तक वह पहुँचेगा तो कैसे?

सच तो यह है कि भाषा यह विचार के पीछे आती है। भाषा का सच्चा सामर्थ्य विचार व्यक्त करने में है। इसलिए भाषा व्यक्त करने से संपन्न होती है। भाषा के विकास से सांस्कृतिक संपन्नता बढती है और इन सब बातों का संक्रमण संवर्धन उच्च शिक्षा से होना चाहिए।

मातृभाषा से शिक्षा दी जाने से मराठी भाषा ज्ञानवाहिनी होगी। उसके लिये उन्होंने वैसे निर्णय लिये। इसलिए उन्होंने महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृती मंडल की स्थापना की। मराठी विश्वकोश निर्मिति का कार्य भी उन्होंने किया।

१९६० में महाबलेश्वर में आयोजित काँग्रेस कार्यकर्ताओं के शिबीर के समारोप प्रसंग में यशवंतराव ने कहा – 'मैं आपसे कहता हूँ कि शिक्षा की ओर केवल सामाजिक जरूरत की दृष्टि से मैं नहीं देखता। मेरे मत से शिक्षा यह एक आर्थिक विकास का एक मूलभूत साधन है। हम में शक्ति निर्माण करने के लिए हमारे पास मनुष्य बल के सिवाय दूसरा कोई साधन नहीं है। हमे इस साधना का विकास करने के लिए उसे शिक्षा की जोड देना है। देहात में बिजली पहुँचे बिना जैसे खेती का विकास नहीं होता वैसे हमारा अनुपजाऊ पडा हुआ मनुष्य बल का यह जो बडा साधन संपत्ति भाग है उस में शिक्षा की

बिजली लिये बिना नवसामर्थ्य नहीं होगा। शिक्षा की ओर देखने का यही मेरा दृष्टिकोन है।'

(३) कृषि

शिक्षा यह समाज परिवर्तन का एक प्रभावी साधन है इस पर उनका दृढ विश्वास था। खेती का शास्त्रीय शिक्षा का दृष्टिकोन लोगों में बढ़ाना चाहिए। पढा हुआ मनुष्य किसान होना चाहिए। तुम्हारी खेती तुम्हारा विचार न रहकर देश का विषय बना हुआ है। तुम्हारी खेती में नहीं पिकेगी तो तुम्हारा नसीब अथवा भाग्य नहीं पिकेगा। यशवंतराव के ये शब्द कितने दूरदर्शी और गहरे हैं जो खेती का विचार करते हैं।

किसान खेती की ओर व्यवसाय के रूप में देखता नहीं, वह उसे जीवन निर्वाह के साधन के रूप में देखता है। व्यवसाय अथवा धंदा करनेवाला मनुष्य धंदे में मिलनेवाला मुनाफे का आर्थिक फायदे के लिए इस्तेमाल करता है। इसलिए खेती व्यापारी तत्त्वों पर करनी चाहिए। ऐसा हुआ तो किसानों का उत्कर्ष हो सकेगा।

खेती के आधुनिकीकरण संबंध में हम बहुत पीछे पडे हैं। इसलिए खेती का विकास नहीं हुआ है। खेती के विकास में कर्ज का प्रश्न, खाद, बीज, पानी पूर्ति का प्रश्न महत्त्व का है। उसका छुटकारा उचित पद्धति से नहीं होता। इसलिए सैकडों वर्षों से खेती का विकास ठहर गया है।

किसान अज्ञानी होने से कोई भी प्रबोधनकारी विचार तुरन्त स्वीकार नहीं करते। यही मनोवृत्ति खेती के तांत्रिक विकास के लिए बाधा बनती है। भारतीय किसानों ने खेती और शिक्षा इन दोनों का संबंध तोड दिया है। किसान और खेती से संबंधित मनुष्य विद्वान हुए बगैर खेती में होनेवाली हानि टल नहीं सकेगी। इसलिए किसान को अकलमंद करने के लिए उसे आधुनिक पद्धति से खेती का ज्ञान देकर उसका अज्ञान दूर करना चाहिए। इसलिए खेतीशास्त्र के अभ्यास के लिए अधिक महत्त्व देना चाहिए। खेती का नया तंत्रज्ञान, शास्त्रीय ज्ञान की प्रत्यक्ष खेती में प्रयोग की जरूरत और परिवर्तन से आनेवाली खेती में आर्थिक समृद्धि यही मूल विषय लेकर परंपरागत खेती की कल्पना दूर हटाने का आव्हान किया। नये प्रयोग का ज्ञान किसान के लडकों तक पहुँच जाना चाहिए। इसलिए कृषि विद्यापीठ की स्थापना पर जोर दिया। यशवंतरावने अगुआई कर के परभणी और अकोला में कृषि विद्यापीठ की स्थापना की। किसान और खेती से संबंधित लोग विद्वान, समझदार नहीं होंगे तबतक भारतीय खेती उपजाऊ नहीं होगी। यह विचार सामने रखकर कृषि शिक्षा पर जोर देने का काम जोश से किया।

यशवंतराव चव्हाण बडे जन नेता थे। सच्चा जन नेता यह एक अर्थ से जन शिक्षक

होता है। उन्होंने जीवन काल तक जन-शिक्षा का कार्य किया। सत्ताधीश होने से पहले, सत्ता पर आने के बाद, सत्ता से दूर जाने के बाद इन तीनों अवस्था में उन्होंने जन-शिक्षा का कार्य सतत किया।

यशवंतराव को कृषि औद्योगिक समाजरचना अभिप्रेत थी। उसके लिए ग्रामीण विभाग में खेती के माल पर प्रक्रिया करनेवाले उद्योग शुरू करने चाहिए। इससे किसानों को बाजारपेठ मिलेगी। उसके साथही उद्योग के लिए लगनेवाला कच्चा माल प्राप्त होगा, वह कच्चा माल बाहर से नहीं लाया जायेगा। वह लाने के लिए परिवहन के खर्च में बचत होगी। लोगों के परिश्रम बचेंगे। इतनाही नहीं तो ग्रामीण विभाग में उद्योग शुरू होने से वहाँ के लोगों को मजदूरी मिलेगी और उन्हें शहर की ओर जाने की जरूरत नहीं पडेगी।

ग्रामीण विभाग में औद्योगिक वसाहत स्थापन करनी चाहिए। यह विचार मूर्त स्वरूप में लाने के लिए एम.आय.डी.सी. की स्थापना कर जिला और तालुका स्तर पर औद्योगिक वसाहत निर्माण की गयी है। इससे विकेंद्रीकरण को मदद हो रही है।

एकाध व्यक्ति के पास ज्यादहसे ज्यादह कितनी जमीन चाहिए इसका सामाजिक समता और न्याय भूमिका की दृष्टि से विचार किया गया। खेती करनेवाला मनुष्य खेती का स्वामी होना चाहिए। अर्थात जो खेती करेगा उसकी जमीन और उस में परिश्रम करेगा उसकी खेती यह तत्त्व स्वीकार किया गया।

भूमिहिन किसान और श्रीमान किसान इन दोनों में होनेवाली विषमता कम करने के लिए एक व्यक्ति के नाम पर कितनी खेती होनी चाहिए और शेष रह गयी जमीन खेती में काम करनेवाले मजदूरों को बाँटकर देनी चाहिए। जब ऐसा होगा तब भूमिहिनों का प्रश्न सुलझ जायेगा। यही विचार यशवंतरावने व्यक्त किया था।

भारत में बहुत बडी मात्रा में जमीन अविकसित रहने से वह अनुत्पादक और अनुपजाऊ रह गयी है। इससे किसानों की और देश की हानि होती है या क्षति होती है। यह हानि टालने के लिए उसकी बोआई होनी चाहिए। सारांश खेती की समस्याएँ स्पष्ट करके उसके संबंध में उन्होंने उपाय सुझाये। तांत्रिक अंगों का विकास करने की जरूरत और महत्त्व है। इसके पीछे उनकी प्रामाणिक लगन दिखाई देती है।

महाराष्ट्र यह कृषि-प्रधान राज्य है। फुले के लेखन से और खुदके अनुभव से उन्हें किसानों की दैन्यावस्था की कल्पना थी। यशवंतराव द्विभाषिक राज्य के मुख्यमंत्री थे। तब उन्होंने खेती विषयक सुधारना का पहला कदम उठाया। खेती के संबंध में स्वातंत्र्य के बाद इ. स. १९५७ का वर्ष महाराष्ट्र में किसानों की दृष्टि से 'युगप्रवर्तक' वर्ष उदय हुआ था। यशवंतराव ने खेती के क्षेत्र में पुरोगामी कदम रखकर प्रत्यक्ष निर्णय किया था। ऐसा निर्णय करनेवाला महाराष्ट्र भारत में पहला राज्य ठहरा था।

१९५६ में नया काश्तकारी अधिनियम (कानून) तैयार किया गया। क्योंकि खेती के क्षेत्र में धनवान और बलवान किसानों का वर्ग तैयार हुआ था। इससे 'स्वामीत्व एक का और कष्ट दूसरों का था। जो खेत में बोआई जोताई करेगा इसकी जमीन।' यह तत्त्व सामने रखकर कानून तैयार किया था। इसके साथ ही खेत जमीन की कमाल धारणा पर मर्यादा डालने का 'सिलिंग' कानून बनाया। सच्चे अर्थों में महाराष्ट्र देश में पुरोगामी है यही बात यशवंतरावने देश को सर्व प्रथम दिखा दी। १९६१ के जनवरी में महाराष्ट्र में खेत जमीन के संबंध में विधेयक सामने आया और इस विधेयक से दूरगामी जमीन सुधारने की नींव डाली गयी। खेती में फसल पैदा करने के लिए खेती के लिए पानी पूर्ति की कायम व्यवस्था करने का कठिन प्रश्न सामने था। महाराष्ट्र में नदियों का और भूरचना का अभ्यास कर के नहरे और बिजली निर्मिति इन दो दृष्टियों से संशोधन करना चाहिए था। उसके लिये यशवंतराव ने शास्त्रशुद्ध पद्धति से योजना बनाने का निश्चय किया था। नहरे, पानी की पूर्ति, पानी की उपलब्धता और बिजली निर्मिति ऐसे अनेक हेतु से उन्होंने इन कामों का नियोजन शुरू किया। विदर्भ और मराठवाडा में नहर योजना के लिए सरकारने एक इरिगेशन डिव्हिजन और पाच सब डिव्हिजन स्थापन किये। खेती के लिए पानी पूर्ति और व्यवस्था के संबंध में सरकार को सलाह देने के लिए बम्बई राज्य इरिगेशन बोर्ड की स्थापना इसी काल में हुई।

कुछ नये बाँधों की, जल विद्युत योजनाओं की और थर्मल पॉवर स्टेशन के काम यशवंतराव ने अपने कार्यकाल में किये। कोयना जल विद्युत योजना का २०७ फीट ऊँचाई के बाँध का कॉंक्रीट का बाँध बाँधने का प्रमुख प्रकल्प है। उसका प्रारंभ १ मार्च १९५८ को यशवंतराव के करकमलोंद्वारा हुआ। वैसे ही मराठवाडा का परिवर्तन करनेवाले पूर्णा प्रकल्प का खर्च १७ कोटी ५० लाख रुपये था। उस प्रकल्प का प्रारंभ भी यशवंतरावने किया। सिद्धेश्वर और एलहरी इन दोनों स्थानों पर बाँध था और कार्यालय वसमत में था। नीरा नदी की घाटी का संपूर्ण विकास करना था। इस उद्देश्य से नीरा नदी पर पीर के स्थान पर वीर बाँध बाँधने की योजना भी उनके कार्यकाल में हुई। उन्होंने इस योजना का दूसरी पंचवार्षिक योजना में समावेश किया और पाँच वर्षो के काल के लिये ४२५ लाख रुपयों का प्रबंध किया और इस योजना से संपूर्ण नीरा नदी की घाटी का क्रांतिकारी परिवर्तन कर दिया। वैसेही विदर्भ में पारस स्थान पर होनेवाला थर्मल पॉवर स्टेशन यह भव्य प्रकल्प यशवंतराव ने अपने कार्यकाल में पूर्ण किया।

(४) सहकार

महाराष्ट्र में अल्पभूधारक किसानों की संख्या अधिक हैं। उस में भी सुखी खेती का

क्षेत्र अधिक। ऐसी अवस्था में किसानों की दैन्यावस्था समाप्त कैसी करनी चाहिए इसका विचार करते हुए यशवंतराव ने किसानों की खेती को जोड व्यवसाय अथवा उद्योग की जोड दिये बगैर पर्यायी व्यवस्था निर्माण नहीं हो सकेगी। यह बात उन्होंने अपने साथियों के गले उतार दी। कपास की पैदावार करनेवाले किसानों को सूत मिल की जोड, दलहन की पैदावार करनेवाले किसानों को तेल मिल की जोड, गन्ने की पैदावार करनेवाले किसानों को शक्कर कारखानों की जोड मिलनेपर किसानों की फसल को निश्चित रूप से बाजारपेठ उपलब्ध होगी, उन्हें पैसे मिल जायेंगे। उसकी खेती के साथ उद्योग धंदों की समृद्धी भी होगी ऐसा उनका विश्वास था। परंतु यह उद्योगधंधा सहकारी तत्त्वों पर चलाना चाहिए। सहकार की भावना बढनी चाहिए ऐसा उनका आग्रह था। उसके लिए उन्होंने समय समय पर अर्थतज्ज्ञ, सहकार के पुरस्कर्ता लोगों से विचार विनिमय किया। सहकार से ही किसान कारखानों का और मिल का मालिक होता है। इससे इस किसान के साथ उस विभाग की आर्थिक स्थिति सुधार के लिए मदद होती है। खेती संलग्न सहकारी कारखानदारी से एक नयी औद्योगिक समाज रचना अस्तित्व में आ सकती है ऐसा उनका विश्वास था।

किसान की गर्दन को कसा जानेवाला सहूकारी पाश या फंदा दूर होना चाहिए। इसलिए उसे जरूरत के समय अर्थ साह्य मिलना चाहिए। इसलिए इस हेतु से महाराष्ट्र में सहकारी आंदोलन मजबूत करने के लिए कृषि औद्योगिक अर्थव्यवस्था का आधार इस आंदोलन से मिलना चाहिए यह उनकी नीति थी।

यशवंतरावने सोच समझकर सहकारी आंदोलन को नयी उर्जित अवस्था दी। राजनीति में सक्रिय होनेवाले नेता और कार्यकर्ताओं को सहकारी आंदोलन यह एक महत्त्व का माध्यम प्राप्त हुआ। परिणामतः सहकारी शक्कर कारखानों की संख्या महाराष्ट्र में बढती गयी। इसके साथ ही ग्रामीण विभाग में अन्य अनेक सहकारी संस्थाएँ स्थापन की गयी। खाद, बीज, विपणन संस्था आदि अनेक संस्थाएँ स्थापित हो गयी। इन सहकारी संस्थाओं के सामने विविध समस्याएँ थी। जैसे अपर्याप्त अर्थसाह्य, नौकरशाही की मनमानी, अत्यल्प लाभ और अन्य अडचनें यशवंतराव ने सुलझाने का प्रयत्न किया। आगे जो सहकारी शक्कर कारखानों का जाल संपूर्ण महाराष्ट्र राज्य में फैला था इन सहकारी संस्थाओं की नींव यशवंतराव ने अपनी दूरदृष्टि से डाली थी, यह बात कोई भी स्वीकार करेगा। शक्कर कारखानों के परिसर में सहकारी सूत मिले, सहकरी कुक्कुट पालन संस्था, दूध उत्पादक संस्था, खेती के माल पर प्रक्रिया करनेवाली अन्य सहकारी संस्था, खरेदी बिक्री संघ ऐसे अनेक उद्योग खडे रहे। उस में से ही आगे सहकारी पतपेढियों का और बैंकों का प्रस्थ बढता गया। इस सहकारी आंदोलन से ग्रामीण भागों

का परिवर्तन हुआ। उस में से ही आगे सर्वांगीण विकास को गति मिलेगी। उसके साथ ही शैक्षणिक सुविधा, स्वास्थ्य सुविधा, यातायात परिवहन अनेक बातों में प्रगति हो गयी। सहकारी संस्थाओं को यशवंतराव ने ठोस स्वरूप का योगदान दिया। राज्य की ओर से सहकारी संस्थाओं को पूँजी और अनुदान के स्वरूप में बहुत अर्थ साह्य उन्होंने किया। उन संस्थाओं के आर्थिक व्यवहार सरकारी निगरानी में लाये गये। किसानों को पतपूर्ति करनेवाली संस्थाएँ सभी स्तर पर निर्माण की गयी।

सहकारी आंदोलन का जाल ग्रामीण भाग में कृषि क्षेत्र को जोडने का यशवंतराव का उद्देश्य मूलगामी स्वरूप का था। इस सहकारी आंदोलन से ग्रामीण और शहरी भाग में लोग घुलमिल जायेंगे। सहकारी संस्थाओं से जो उत्पादन बढ़ा है वह ज्यादहसे ज्यादह क्षेत्र में वितरित किया जायेगा। इससे सच्चे अर्थों में समाजवादी समाज रचना अस्तित्व में आ सकेगी इसपर उनका प्रचंड विश्‍वास था। सहकारी आंदोलन पक्षीय राजनीति से अलिप्त रहना चाहिए और वह सच्चे अर्थों में जनतंत्र बलवान करने का आंदोलन होना चाहिए। यशवंतराव कहते हैं - 'सहकारी आंदोलन यह कुछ एकाध पक्ष का आंदोलन नहीं है। तात्त्विक दृष्टि से यह सहकारी आंदोलन यह मूलतः जनतंत्र का आंदोलन है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए। इस आंदोलन के पीछे यह जो दृष्टिकोन है वह हमे अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए। और जनतंत्र का यह स्वरूप कहीं भी खराब नहीं होना चाहिए इस संबंध में हमे सावधानी बरतनी चाहिए। लेकिन वह खराब हुआ तो वह क्यों खराब हुआ इसकी हमे सतत खोज करनी चाहिए। सामान्य और शोषित समाज के उपयोगी पडना यह तो इस आंदोलन का प्राण है। लेकिन सच्चे अर्थों में हमे यह आंदोलन चलाना होगा तो उसकी ओर हमे जनतंत्र दृष्टिकोन से देखना चाहिए।'

महाराष्ट्र में ग्रामीण किसान और बहुजन समाज के विकास के लिए पंचायत राज और सहकार का रचनात्मक कार्यक्रम कार्यान्वित किया। उनका यह कार्य एक दृष्टि से म. फुले के सत्यशोधक आंदोलन के नजदीकी था, तो दूसरी ओर वे महात्मा गांधी के स्वायत्त देहात की संकल्पना का स्वीकार कर रहे थे।

सहकार के क्षेत्र में महाराष्ट्र में होनेवाली पोषक परंपरा का यशवंतराव ने पूरी तरहसे उपयोग कर लिया। इस में शक्कर कारखानदारी में उन्होंने सहकार का प्रयोग किया। इससे भारत में सबसे ज्यादा सहकारी शक्कर कारखाने निर्माण हुए। इसके सिवाय सहकारी पद्धति से माल की बिक्री, कर्जपूर्ति, गृहनिर्माण, भूविकास बँक आदि उपक्रम उन्होंने शुरू किये। बहुजन समाज की सर्व अर्थ से सुधारना होनी चाहिए। इसलिए उन्होंने बहुविध कार्य किये।

यशवंतराव ने सहकार, पंचायत व्यवस्था और काँग्रेस के तत्त्वज्ञानपर विश्‍वास

रखनेवाली एक पिढी तैयार की। यशवंतराव चव्हाण के प्रारंभिक काल में सहकारी क्षेत्र में पद्मश्री विखे पाटील, धनंजयराव गाडगील, रत्नाप्पा कुंभार, तात्यासाहब कोरे, वसंतदादा पाटील, अण्णासाहब शिंदे, यशवंतराव मोहिते, शंकरराव मोहिते, शंकरराव काले, शंकरराव कोल्हे, काकासाहब वाघ आदि सहकार महर्षी तैयार हुए। इन सब लोगों ने महाराष्ट्र के कोने कोने में सहकार आंदोलन चलाया। इसके साथ ही काँग्रेस के लोकाभिमुख राजनीति को विश्‍वासपूर्वक आधार प्राप्त कर दिया। यशवंतराव चव्हाण के काल में काँग्रेस के सदस्य अधिक प्रगल्भ कृतिशील और रचनात्मक बन गये। ग्रामीण भाग में 'विना सहकार नहीं उद्धार' का उद्‌घोष हुआ। हर एक गाँव में सहकारी सोसायटी ने श्रमिक किसान को आर्थिक आधार दिया। ग्रामपंचायत ने भी इस सहकार को सहकार्य किया और काँग्रेस की राजनीति आगे ले जाने में साह्यता की। ग्रामसफाई, ग्रामीण भाग में जिला परिषद शालाओंने समाज जीवन में परिवर्तन किया। इसका श्रेय यशवंतराव को देना पडता है। क्योंकि वे 'सिस्टर बिल्डर' थे। एक हीं समय में बहुविध आयामों को स्पर्श करने की शक्ति उन में थी। महाराष्ट्र के संतुलित विकास का श्रेय भी उन्हें ही देना पडता है। इस संदर्भ में यशवंतराव चव्हाण कहते हैं - 'समाजवादी दिशा की ओर हमने दो कदम आगे रखे हैं। अब भी सौ-डेढ सौ कदम हमे रखने पडेंगे। सब को समान अवसर मिलना चाहिए। आर्थिक विषमता से होनेवाला शोषण बंद होना चाहिए। कल के महाराष्ट्र राज्य का कारोबार उत्तम, साफ और स्वच्छ होना चाहिए। दुसरी बात यह कि पंचवार्षिक योजना का बालक हिंडोला में कदम दिखाकर नव महाराष्ट्र की प्रगति का यकीन दिलानेवाला चाहिए। तिसरी बात यह कि राजनैतिक, सामाजिक और साहित्यिक इन सभी क्षेत्रों में एकात्म भावना का सभी को प्रयत्न करना चाहिए। तब ही महाराष्ट्र राज्य जनता का राज्य होगा। वह राज्य लोक कल्याण के लिए काम करेगा और भारत के नक्शे में होनेवाले तारों में एक नया तेजस्वी तारा चमक उठेगा।' यशवंतराव चव्हाण का यह लोकसत्ताक, राष्ट्रवाद, विकासवादी और संपूर्ण भारतीय प्रगति का विचार करनेवाला था।

(५) समाजवाद

यशवंतराव का वैचारिक आधारस्तंभ समाजवाद है। काँग्रेस में समाजवादी समाजरचना का संकल्प पक्ष को जाहिर किया जाना चाहिए। इसके लिए उन्होंने सतत प्रयत्न किया। महाराष्ट्र में सामाजिक समता और न्याय कैसे मिल सकेगा इस पर उनका बल था। वह करते समय उनका ध्यान ग्रामीण जनता और उस जनता में गरीब और

निचले स्तर के लोगों तक अलग अलग योजना और उसके फायदे कैसे मिल सकेंगे इसकी ओर था। उस दृष्टि से उन्होंने अपने मन में महाराष्ट्र के बाँधनी का चार सूत्री कार्यक्रम तय कर रखा था।

खेती में अकालग्रस्त भाग का प्रश्न और उनका विकास इनकी ओर उनका ध्यान था। क्योंकि वे उस भाग से आये थे। उस भाग में लोगों के क्लेश और कष्ट इसका उन्हें अच्छा आकलन हुआ था। उसके साथ खेती उद्योग जब तक प्रगत नहीं होता तब तक ग्रामीण विभाग का सच्चा विकास नहीं होता और उस दृष्टि से कृषि का औद्योगिकीकरण और कृषिसंबंधी की दृष्टि से औद्योगिकीकरण जल्दी से जल्दी होना चाहिए इस पर उन्होंने बल दिया था। आज महाराष्ट्र में और विशेषतः दक्षिण महाराष्ट्र में, खेती संबंधी अथवा खेतीपर आधारित जो उद्योगधंदे प्रस्थापित हुए हैं और जिसके कारण तेजी से ग्रामीण विभाग की प्रगति हुई हैं इसका संपूर्ण श्रेय यशवंतराव को है।

इसके साथ ही महाराष्ट्र अलग अलग विभागों में उद्योग धंदे स्थापन करने के लिए जो संस्था यशवंतराव के डेढ वर्ष के कार्यकाल में स्थापन हुई इन सबको हम जानते हैं। उस में सिकॉम, एम.आय.डी.सी., एन. एम.एफ.सी. हैं। इन संस्था का जाल आज सभी ओर फैला हुआ दिखाई देता है।

यशवंतराव की समाजवाद की कल्पना जनतंत्र पर आधारित है। मार्क्सप्रणीत रशिया में समाजवाद जनतंत्र को मारक है। भारत में समाजवाद लाने के लिए यहाँ की परिस्थिति ध्यान में लेनी चाहिए। समाजवादी मार्ग से यह प्रगति साध्य कर सकेंगे। भारत में उसके लिए सार्वजनिक क्षेत्र की निर्मिति और विस्तार करने की नीति फायदेमंद होगी।

सार्वजनिक क्षेत्र के द्वारा देश में लोगों का कल्याण साध्य करना यह भारत में समाजवाद का सच्चा सूत्र है। भारतीय लोगों में जो आर्थिक दरार पडी है उसे कम करना समाजवाद का उद्देश्य है। उसके अनुसार समाज में सभी लोगों को एक समान बर्ताव अथवा समाज और समान प्रकार का मौका निर्माण करना केवल समाजद्वारा संभव है ऐसा मत उन्होंने व्यक्त किया।

समाजवाद में किसी का शोषण न होना यह यशवंतराव को अभिप्रेत था। जिनकी भौतिक और आर्थिक समस्याएँ सुलझी हुई ऐसी समाजरचना यानी कि समाजवाद है। सब को समान मौका देकर उत्पादन में होनेवाला फर्क या अंतर कम करना यही समाजवाद का उद्देश्य है।

आर्थिक विषमता से होनेवाला शोषण बंद करना, हर एक को संधी उपलब्ध कर देना यानी कि समाजवाद है, ऐसी व्याख्या उन्होंने की थी।

समाजवादी समाजरचना निर्माण करना यह तो अपनी राज्यघटना का उद्देश्य है।

भारत का वह निश्चय है, ध्येय है। फिर भी अंतिम मंजिल तक पहुँचने के लिए यशवंतरावने तीन कसौटियाँ स्पष्ट की है –

(१) सबको समान अवसर।

(२) उत्पादन के पीछे की प्रेरणा यह व्यक्तिगत या वैयक्तिक मुनाफे की अपेक्षा समाज के सुख की, समाज के हित की होनी चाहिए।

(३) उत्पादन के साथ वितरण का प्रश्न भी महत्त्व का है। विभाजन होते समय लोगों की जरूरते और उनके विकास की संभावना ध्यान में लेनी चाहिए।

ये कसौटियाँ होनेवाला सच्चा समाजवाद भारत में प्रत्यक्ष ला नहीं सकते इसका एहसास उन्हें था। उसके लिए सार्वजनिक क्षेत्रों पर बल देना आवश्यक है ऐसा मत उन्होंने व्यक्त किया था। सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार अथवा सार्वजनिक उद्योग यही समाजवाद की ओर जाने का एक मार्ग है। सार्वजनिक क्षेत्र में उद्योगधंधे समाजवाद की दृष्टि से रखा हुआ एक कदम है, जिस पर जनतंत्र समाजवादी रचना की जा सकेगी।

जनतंत्र, नियोजन, समाजवाद ये जनकल्याण के एक ही समस्या के तीन अलग–अलग अंग है।

सबको समान मौका मिलना चाहिए। उत्पादन में फर्क कम करनेवाला आर्थिक विषमता से होनेवाला शोषण ठहरानेवाला, प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तिमत्त्व विकसित करने का समान अवसर प्राप्त कर देनेवाला समाजवाद यशवंतराव को अभिप्रेत था।

(६) साहित्य विषयक भूमिका

यशवंतरावने विविध प्रकारों का मन से अभ्यास किया है। इसके साथ ही उन्होंने जीवन विषयक प्रणाली का भी अभ्यास किया है। कार्ल मार्क्स, फ्राईड, म. गांधी, एम. एन. रॉय आदि प्रवृत्तियों का सूक्ष्म अभ्यास करने से यशवंतराव की साहित्य विषयक भूमिका सजग बन गयी थी। आनेवाले नये काल के अनुसार उन्होंने मानवता का पुरस्कार किया। मानवता को कलंक लगने वाली घटनाओं का और वृत्ति–प्रवृत्तियों का साहित्य में से धिक्कार होना चाहिए ऐसे स्वरूप की उन्होंने भूमिका ली थी।

देश, काल स्थिति का विचार करते हुए मानवता यही युग का मंत्र होगा ऐसा उन्हें लग रहा था। उन्होंने अपने साहित्य में मानवीय विकास पर अधिक बल दिया है। जीवन में अंतिम सत्य को अर्थात मानवता के मूल्य को जीवन के विकास को अधिक महत्त्व दिया है।

यशवंतराव साहित्य का अर्थ संकुचित वृत्ति से लेते नहीं। साहित्य के संबंध में उनकी दृष्टि विशाल है। जो साहित्य सर्वसामान्य जनता का हित करता है वह साहित्य। इस

प्रकार वे साहित्य की सादी पर अर्थवाही व्याख्या करते हैं। केवल शब्द ललित्य अर्थात साहित्ययह साहित्य की व्याख्या लेकर उसके अनुसार चलने का काल समाप्त हुआ है। ऐसी सलाह साहित्यिकों को दी है। काल और देश की परिस्थिति की मर्यादा में न रहते हुए साहित्य में सारा जीवन व्याप्त रहना चाहिए। साहित्य ने जीवन के अलग अलग क्षेत्रों से अधिक निकट के संबंध प्रस्थापित किये बिना जनजीवन समझ में नहीं आयेगा। जनजीवन में से साहित्य निर्माण होता है। तब ही उस साहित्य में से समाज मन का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष प्रतिबिंब साहित्य में पडता है। ऐसे साहित्य का परिणाम फिर से समाज मन पर पडता है ऐसा विचार यशवंतराव करते हैं। इतनाही नहीं तो समाज जीवन में घटनेवाले अनेक प्रकार की घटनाओं के संबंध में उत्सुकता और आकर्षण साहित्यिकों को होना चाहिए। समाज वास्तव का और आसपास के समाज का निरीक्षण करना यह साहित्य की जरूरत है। इसके लिए जीवन से संबंधित ऐसे विविध विषयों का अभ्यास और ज्ञान होना चाहिए। इस प्रकार के अध्ययन से ऐसा मजबूत और जिस में जीवन की शक्ति अधिक हो- उत्तम साहित्य निर्माण होता है। साहित्य में मानव का जीना, उसका अस्तित्व टिके रहना, उसकी सुरक्षितता और सुखसमृद्धि ये सभी बातें साहित्य में अभिव्यक्त होनी चाहिए ऐसी उनकी अपेक्षा थी।

यशवंतराव की साहित्य की ओर देखने की दृष्टि व्यापक थी। साहित्यिक विचारवंतों ने प्रकट किया हुआ साहित्य किसी भी रंग का या किसी भी प्रकार का हो तो चलेगा पर आसपास की परिस्थिति का सूक्ष्म अभ्यास करके समाज में सभी स्तर में निर्माण हुई अस्वस्थता का एहसास होनेवाला समाज चिंतन उस में होना चाहिए ऐसा साहित्य निर्माण होना चाहिए ऐसे उन्हें लग रहा था। ऐसा साहित्य समाज में परिवर्तन ला सकेगा और समाज को मार्गदर्शन करेगा, समाज की शक्ति बढायेगा, समाज मन व्यापक करेगा और नयी शक्ति और नया सामर्थ्य निर्माण करेगा ऐसा विश्वास उन्हें था। जिस साहित्य में अन्यायविरुद्ध की चिढ, देश में आर्थिक, सामाजिक विषमता का दारिद्र्य के प्रश्नों का विवरण है, सामान्य मनुष्य का प्रेम है और जिस साहित्य में सामाजिक समता लानेवाले, समाज में सभी घटकों को अवसर देनेवाले लेख हैं वही साहित्य सच्चा साहित्य हो सकता है ऐसे यशवंतराव को लगता है।

मराठी साहित्य यह राष्ट्रीय जीवन से अलिप्त नहीं रह सकता यह बात यशवंतराव को स्वीकार थी। राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक आंदोलन इनके प्रतिबिंब मराठी वाङ्मय में अवश्य आने चाहिए इस विषय में दो मत नहीं थे। साहित्यिकों का तत्त्वज्ञान और विचार उनकी समाजिक परिस्थिति पर तय होता है। 'मनुष्य' का सच्चे अर्थों में भौतिक, सामाजिक परिस्थिति में विकास होता है। 'मनुष्य' ही साहित्य का केंद्र बिंदू है

और इस विषय की अनुभूति में साहित्य निर्माण होना चाहिए ऐसा वे कहते हैं।

लेखक सामाजिक जिम्मेदारी रखकर लेखन करें। सपने में उडान भरनेवाले वास्तविक प्रश्नों की ओर आँखों पर पट्टी बाँधकर रह जाते हैं और सपना देखनेवाले समाज निर्माण करते हैं। एक प्रकार की सामाजिक गुमराही करते हैं। यह यशवंतराव को नहीं चाहिए। सामान्य में सामान्य मनुष्य के प्रश्न, उनका दुःख, वेदना साहित्यिक अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें। संभव हुआ तो वह दुःख दूर होगा यह देखें। साहित्यिक अभी तक भारत के कोने में जीवन, विशेषतः जिनकी ओर साहित्यिक अब तक पहुँचा नहीं ऐसे आदिवासी, दलित स्त्री जीवन का वास्तव चित्रण करके अपने अमर साहित्य के द्वारा भारत में समाज जीवन और संस्कृति का दर्शन कराये। साहित्य धारदार शस्त्र है। वह शस्त्र की अपेक्षा अधिक परिणाम करता है। इसलिए तो यशवंतराव ऐसे साहित्य की निर्मिति की अपेक्षा करते हैं।

यशवंतराव को लगता है कि जनजीवन समृद्ध करने के लिए लेखक अपनी कलम का उपयोग करें। इसके सिवाय शास्त्रीय जानकारी और वैज्ञानिक संशोधन मराठी भाषा में हो ऐसा आग्रही विचार प्रकट किया है। 'ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में मूलभूत संशोधन हाथ में लेने का प्रयत्न जिस भाषा में होता है वही भाषा ज्ञान की भाषा हो सकती है।' यशवंतराव का यह विचार आज हमें स्वीकार करना पडेगा। ऐसे हुआ तो वह भाषा ज्ञानभाषा होगी। 'अमृताचे पैजा जिंकायचे' ज्ञानेश्वर का यह भविष्य कथन सच करना होगा तो शास्त्रीय जानकारी मराठी में उपलब्ध होनी चाहिए। तब ही अन्य भाषा में ज्ञानभंडार खींचकर लाने की शक्ति मराठी भाषा में निर्माण होनी चाहिए ऐसा विचार उन्होंने व्यक्त किया था।

साहित्य संस्कृति 'पॉवर हाऊस' बने। पॉवर हाऊस यह सर्जनशील है। वहाँ दूसरों का उचक्कापन नहीं होता। यह मंडल महाराष्ट्र का जीवन व्यापक, विस्तृत और क्रियाशील माध्यम बने ऐसी इच्छा यशवंतराव व्यक्त करते हैं। सारांश, यशवंतराव साहित्य की भाषा, संस्कृति, साहित्य, साहित्यिकों की ओर उदार दृष्टि से देखते हैं।

यशवंतराव प्रतिभाशाली लेखक थे। शिवनेरीच्या नौबती, सह्याद्रीचे वारे, युगान्तर, ऋणानुबंध, भूमिका, कृष्णाकाठ यह उनकी प्रकाशित ग्रंथ संपदा है। उन्होंने अलग अलग लेखकों के पुस्तकों की प्रस्तावनाएँ लिखी है। उत्कट अनुभूति का आविष्कार उनके साहित्य में दिखाई देता है। बचपन से ही उन्हें पठन की रूचि थी।

साहित्य समाज जीवन का दर्पण है। यह साहित्य उस काल में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रवृत्ति का प्रतिबिंब होता है।

साहित्य थर्मामीटर में पारे के समान संवेदनशील होना चाहिए। उनके मत से

साहित्य की अंतिम प्रेरणा मानवी मूल्यों का एहसास कर देनेवाली चाहिए। यह तो उत्तम लेखक की कसौटी है। सच्चा साहित्यिक समाज से दूर नहीं रह सकता।

यशवंतराव के पास सब साहित्यिक गुण थे। इन गुणों के आधार पर वे साहित्य के क्षेत्र में प्रचंड कार्य कर सकते थे। परंतु उनका संपूर्ण जीवन राजनीति में बीत गया। इसलिए उनके लेखक को न्याय नहीं मिला।

प्रा. ना. सी. फडके लिखते हैं कि – 'भावना में लबालब भरी हुअी, प्रभावी भाषा से सजी हुई लेखन करनेवाली लेखनी सीदी-साधी नहीं है। श्रेष्ठ दर्जे के सच्चे साहित्यिक की है।' यशवंतराव की लेखनी का आस्वाद लेते समय ऐसा लगता है। यशवंतराव के रूप से महाराष्ट्र और भारत को एक प्रथम दर्जे का नेता मिला, पर उन पर पडे हुए नेतृत्व के बोझ से उन में जो श्रेष्ठ साहित्यिक था वह नेतृत्व के बोझ के नीचे दब गया था। इसलिए उनका कर्तृत्व प्रकट नहीं हो सका। इसका बड़ा खेद होता है।

साहित्य के संबंध में यशवंतराव का दृष्टिकोन यह संपूर्णतः जीवनवादी था। वे खांडेकर के 'जीवन के लिए कला' की भूमिका के समर्थक थे। साहित्य जो जनजीवन में से निर्माण होता है और जनजीवन का प्रतिबिंब प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष साहित्य पर और साहित्य का परिणाम जनजीवन पर पडता है। जीवन के विविध अंगों को स्पर्श करनेवाला साहित्य होना चाहिए इस दृष्टिकोन का उन्होंने समर्थन किया।

यशवंतराव ग्रंथप्रेमी, व्यासंगी वाचक थे। उनका खुद का समृद्ध ग्रंथालय था। भेंट के रूप में आयी हुई पुस्तकें पढ़ते थे। पढी हुई पुस्तकों का अभिप्राय लेखक के पास भेज देते थे। वाचक यह अपनी साहित्य क्षेत्र में प्राथमिक भूमिका यशवंतरावने बडी निष्ठा से पार कर दी थी।

यशवंतराव ने जीवनभर वाचन किया था। इसलिए पढे हुए ग्रंथों की आस्वादक समीक्षा करने का सामर्थ्य यशवंतराव को प्राप्त हुआ था। प्रत्येक साहित्य प्रेमी यह आज के जनतंत्र युग में एक नम्र समीक्षक होता है। उन्होंने साहित्य के संबंध में किया हुआ यह विधान उनकी विलक्षण बुद्धि का प्रत्यय देता है।

श्री. बाल कोल्हटकरने यशवंतराव को 'रसिकों का राजा' कहा हैं।

ज्ञानदेव के दरवाजे में पीपल नामका पेड है, जिसे 'सोन्या का पीपल' कहते हैं। इस पीपल के नीचे 'ज्ञानदेवी' को आकार आया और मराठी साहित्य सरिता बहने लगी। यशवंतराव के दरवाजे में रसिकता का पीपल है। इस पीपल के नीचे साहित्य का दरबार भरा है। यशवंतराव इस दरबार के नीचे हिरा बन गए हैं। नेता रसिक होना चाहिए। यशवंतराव प्रज्ञावंत राजनीतिज्ञ थे। वे उदार हृदयी रसिक थे।

(७) जीवनविषयक दृष्टिकोन

यशवंतराव का जीवनविषयक दृष्टिकोन आशावादी और समर्पित वृत्ति का था। वे कहते हैं कि 'चरमसीमा तक समर्पित जीवन होगा तो वह जीर्ण नहीं होता, चंद्र कभी पुराना नहीं होता, सूर्य कभी बूढा नहीं होता। सागर कभी संकुचित नहीं होता। इस में हर एक के जीवन में चरम सीमा का समर्पण है। पर अनंत युग बीत गये तो भी विनाश उनके पास पहुँचा नहीं। काल नें उन्हें घेरा है, पर उनका परिवर्तन कभी नहीं हुआ। स्थित्यंतर नहीं हुआ। वह निःश्वसन सतत चल रहा है।' वे अखंड अपने जीवन में आनंद के क्षण खोजते रहते हैं। उन क्षणों के बारे में वे कहते हैं – 'जीवन में आनंद के क्षण यह सूर्य के कोमल किरणों के समान होते हैं। जंगल में पथ पर से जाते समय गरमी के समय एकाध झरना दिख पडा कि उसका पानी पिते समय कितना आनंद होता है। नाले के किनारे जामून का पेड है। वह पेड जामूनों से ठसाठस भरा हुआ है। उस पेड के चार जामून मुँह में डाल दिये तो कितने मीठे लगते हैं। जीवन में आनंद के क्षण ये ऐसे होते हैं।'

(८) महाराष्ट्र और भारतीय राजनीति में यशवंतराव का स्थान

महात्मा गांधीने १९४२ में शुरू किये हुए 'चले जाओ' के आंदोलन में यशवंतराव शामिल नहीं हुए थे। पर भूमिगत रहकर सातारा जिले की जिम्मेदारी सफलता से पूरी की। उन्होंने कराड, वडूज, पारवा, वालवे, तासगाव में स्थित दफ्तर पर मोर्चे निकालकर वे यशस्वी किये। उसके लिए उन्हें जेल में जाना पडा। ऐसी हालत में किसी प्रकार की शिकायत न करते हुए वेणूबाई ने गृहस्थी चलायी।

१९४५ में जेल में से छुटकारा होने पर नये उत्साह से स्वातंत्र्य काम में लग गये। इसी समय १९४६ में ब्रिटिश सरकारने बम्बई प्रांत के चुनाव लिये। इस चुनाव में यशवंतराव विजयी हुए। उसके बाद वे बालासाहब खेर के मंत्री मंडल में गृह विभाग के संसदीय सचिव बने। जब तक वे इस पद पर थे तब तक सुरक्षा व्यवस्था के लिए होमगार्ड संस्था की स्थपाना की। इतना ही तो उन्होंने महाराष्ट्र में लोककलावंतों की कला को और कलावंतों को आधार देने के लिए तमाशा बोर्ड की स्थापना की। यहाँ से ही उनके राजनैतिक कार्य का आरंभ हुआ। फिर उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा।

यशवंतराव पर महाराष्ट्र के समूचा मराठी मनुष्य प्राण से भी अधिक प्रेम करता है, वह उन्हें आदर्श मानता है। वह उनके लिए सर्वस्व अर्पण करने के लिए तत्पर रहता है। क्योंकि वे उन्हें अपने परिवार में एक प्रमुख व्यक्ति मानते थे। इसलिए उनका नाम न लेते हुए आदर से सारा महाराष्ट्र उन्हें 'साहब' नाम से पहचानता है। उन्हेंने जो कार्य किया था, मन का जो बडप्पन दिखाया था, उसके लिए जनता उन्हें साहब नाम से पुकारती थी। साहब ये जाति धर्म के पार थे। गुणी मनुष्यों की उन्हें लालच थी। साहित्यिक और सांस्कृतिक उपक्रमों को उनका सतत मार्गदर्शन और प्रोत्साहन मिलता था। जरूरतों को सहकार्य और वंचितों को मानसिक और आर्थिक बल देने का वे सतत प्रयत्न करते थे। निराधार लोगों को आधार देने का वे प्रयत्न करते थे। गांधी वध के समय आगकांड के समय जिनका सर्वस्व गया था उनके आँसू पोंछकर पुनः उनका आयुष्य खडा करने का प्रयत्न किया।

(१) दादासाहब गायकवाड

डॉ. बाबासाहब आंबेडकर के बाद महाराष्ट्र में कर्मवीर दादासाहब गायकवाड जैसा

शक्तिमान जननेता दूसरा नहीं था। आंबेडकरी विचार कृति में लाते समय उन्होंने किसी की भी परवाह नहीं की। महाराष्ट्र में दलित शोषितों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार नष्ट करने के लिए मुख्यमंत्री चव्हाण कुछ उपाय योजना करें यही उनकी इच्छा थी। दादासाहब गायकवाड ने देहातों में होनेवाले अन्याय, अत्याचार, अनुपजाऊ खेती का प्रश्न, भूमिहिन, खेतमजदूरों के प्रश्न हल करने के लिए साहब के साथ गहरी चर्चा की। तब साहबने कहा - 'मैं इस राज्य का प्रमुख और बहुजन समाज का प्रतिनिधि हूँ और फुले, शाहू और डॉ. आंबेडकर के विचार परंपरा का आदर करता हूँ।' ये सब करने के लिए प्रयत्न करना मेरा कर्तव्य है। पर आप काँग्रेस के साथ सतत संघर्ष की नीति रखने की बजाय सहयोग की भूमिका ली तो मुझे और काँग्रेस को महाराष्ट्र में दलितों के लिए बहुत कुछ करने का अवसर मिलेगा। आपसे कहना चाहता हूँ कि महाराष्ट्र काँग्रेस यह पुरोगामी विचारधारा की है। कम से कम हम दोनों को महाराष्ट्र में मित्रतापूर्ण सहकार्य का प्रयोग करने के लिए क्या हर्ज है? दादासाहब गायकवाड आर. पी. आय. के प्रमुख नेता थे। विरोधी पक्ष नेता के रूप में वे सर्व परिचित थे।

इस पर दादासाहब गायकवाडने गंभीर विचार और चिंतन करके काँग्रेस के साथ सहयोग करने की नीति अपनायी। तब से महाराष्ट्र में काँग्रेस और आर.पी.आय. की युती हो गयी है। इससे स्पष्ट है कि विपक्ष के मनुष्य भी अपने साथ ले जाने की किमया और दूरदृष्टि यशवंतराव के पास थी।

१९५२ में घटना का अंमल शुरू हुआ और देश में पहला सार्वत्रिक चुनाव हुआ। इस चुनाव में काँग्रेस पक्ष को बडा यश मिला। भारतीय राज्य घटना के द्वारा भाषा वार प्रांतरचना अभिवचन काँग्रेसने देश को दिया था। उसके अनुसार मराठी भाषिकों का राज्य होना चाहिए, वह तो प्रत्यक्ष था ही। महाराष्ट्र का कुछ भाग उदा. वऱ्हाड प्रांत (आज का विदर्भ) मध्यप्रदेश, डांग, उमरगाव और बम्बई गुजराथ में, बेलगाव, निपाणी कारवार, कर्नाटक में, मराठवाडा के कुछ जिले हैदराबाद में ऐसी महाराष्ट्र की विचित्र अवस्था थी। तीन करोड मराठी भाषिकों में से नब्बे लाख लोग इन तीन विभाग में रहते हैं। इसलिए मराठी भाषिक राज्य की माँग मराठी साहित्यिकों ने की। प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू संयुक्त महाराष्ट्र की भूमिका के लिए अनुकूल नहीं थे और बम्बई प्रांत के मुख्यमंत्री मोरारजी देसाई दर्पोक्ति कर रहे थे कि - 'जब तक चंद्र, सूर्य, तारे हैं तब तक बम्बई महाराष्ट्र को नहीं मिलेगी।' तथा 'गुजराथी पूँजी पतियों के विरुद्ध यह मराठी भाषिक जनता की लडाई है।' ऐसी माँग कॉम्रेड डांगे और कम्युनिस्ट नेता कर रहे थे। यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र के समर्थक थे। पर यशवंतराव इस माँग के लिए आक्रमक नीति के विरुद्ध थे। पंडित नेहरू का मन राजी करके महाराष्ट्र निर्माण किया जा सकेगा

ऐसा यशवंतराव का मत था। परंतु मराठी जनमत चव्हाण की इस नरम नीति के पक्ष में नहीं था। इस संघर्ष में बम्बई में १०५ हुतात्माओं का बलिदान हुआ। इसी काल में प्रतापगड पर शिवाजी महाराज की प्रतिमा का अनावरण करने के लिए देश के प्रधानमंत्री आये थे। उस समय मराठी जनताने उग्र निदर्शन करके अपनी भावनाएँ व्यक्त की थी। प्रधानमंत्री के साथ राज्य के प्रमुख यशवंतराव दोनों भी एक ही गाडी में थे। यशवंतरावने नेहरू का मन राजी कर दिया और १ मई १९६० को यशवंतरावजी महाराष्ट्र का मंगल कलश ले आये। वे बम्बई सह संयुक्त महाराष्ट्र के पहले मुख्यमंत्री हो गये।

मुख्यमंत्री यशवंतराव ने आधुनिक महाराष्ट्र के सपने के बारे में कहा है – 'यह नया महाराष्ट्र राज्य मराठी जनता के कल्याण का काम तो करेगा ही। परंतु मराठी भाषिकों के पास जो देने सरीखा है, उनके जीवन में जो अच्छा है, जो उदात्त है, उसका भारत के लिए त्याग करने का समय आयेगा तो हम वह त्याग प्रथम करेंगे... हमारा पहलेसे ही विश्वास है कि भारत रहेगा तो महाराष्ट्र रहेगा। भारत बड़ा हुआ तो महाराष्ट्र बडा होगा। महाराष्ट्र का और भारत का हित जब एकरूप होता है तब भारत भी बड़ा होता है और महाराष्ट्र भी बडा होता है। यह इतिहास महाराष्ट्र के खून खून में समा गया है।'

महाराष्ट्र के सहकारी आंदोलन को यशवंतरावने शक्ति दी। शक्कर कारखानदारी और उसके पूरक उद्योग को प्रेरणा दी। सहकार में से और किसानों में से नये नेतृत्व आगे आया। महाराष्ट्र को कार्यकर्ताओं को मधुमक्खियों का छत्ता कहते हैं। गन्ने की मीठी शक्कर से यह मधुमक्खियों का छत्ता जमाया। ये नेता और कार्यकर्ता विविध सार्वजनिक संस्था, ग्रामपंचायत, जिला परिषद, पंचायत समितियों में नेतृत्व करते हुए दिख पडते हैं। राजनीति का विकेंद्रीकरण और सहकार में संघटन यह चव्हाण प्रणीत राजनीति की विशेषता है।

(२) कराड में साहित्य संमेलन

आपत्कालीन पार्श्वभूमिपर यशवंतराव के मतदार संघ – कराड में १९७६ को अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन भरा था। मराठी साहित्य संमेलन की अध्यक्षा बडी विदुषी दुर्गा भागवत थी। यशवंतराव संमेलन के स्वागताध्यक्ष थे। तब उन्होंने कहा था – 'राजनीति के जूते बाहर रखकर मैं सरस्वती के मंदिर में आया हूँ।' सुप्रसिद्ध दलित साहित्यिक उपराकर लक्ष्मण माने के 'बंद दरवाजा' पुस्तक का प्रकाशन करते समय आये हुए 'भटक्या' लोगों के समूह के सामने कहा कि – 'मैंने ग्यारह वर्ष बंजारा समाज का मुख्यमंत्री महाराष्ट्र को दिया, परंतु तुम्हारी ओर देखकर मुझे समझा कि वह तुम में से नहीं था। वह तुम्हारे मालदार वर्ग में था।'

महाराष्ट्र राज्य निर्मिति के बाद यशवंतरावने वाई में 'मराठी विश्वकोश मंडल'की स्थापना की। तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी को विश्वकोश के संपादन का काम दिया। उन्होंने 'महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडल' की स्थापना करके मराठी भाषा और संस्कृति के विकास को मराठी साहित्य में अनेक अभिजन चव्हाण के मित्र थे। ग. दि. मांडगूलकर को आधुनिक वाल्मिकी कहा जाता है। मांडगूलकर ने चव्हाण के संबंध में लिखा है – 'मराठेशाहीचे तुम्ही पेशवे, सत्येचे स्वामी। तुमच्या मागे राहील जनता नित्य पुरोगामी।।' चव्हाणने कविवर्य ना. धों. महानोर को विधान परिषद पर सदस्य के रूप में नियुक्त किया।

आगे इंदिरा गांधी की भूमिका से १९७७ के चुनाव में काँग्रेस की पराजय हुई। जनता पक्ष सत्ता पर आया। मोरारजी देसाई की सरकार बहुत काल तक टिकी नहीं। चरणसिंग के नेतृत्व में नया मंत्रीमंडल बनाया गया। इस मंत्रिमंडल में यशवंतरावने उपप्रधानमंत्री पद स्वीकार लिया। उनके इस निर्णय पर बडी आलोचना हुई। बहुत लोगों को यह निर्णय पसंद नहीं आया। तब यशवंतराव को लगा कि – 'अपनी कुछ तो गलती हुई है।' इसलिए वे बहुत अस्वस्थ रहते थे। उपप्रधानमंत्री पद स्वीकार करने का धक्का आगे उन्हें बहुत दिन तक खटकता रहा।

(३) यशवंतराव का अपमान

१९७८ में श्रीमती इंदिरा गांधीने फिर से एक बार काँग्रेस पक्ष फोड दिया और अपने नाम पर उसने 'इंदिरा काँग्रेस पक्ष' स्थापन किया। उसी काल में श्रीमती गांधी, तिरपुडे, साठे इन तीनोंने जो भाषण किये थे वे सब यशवंतराव का अपमान करने वाले थे। चव्हाण को तहस-नहस करने के इरादे रचने जाने लगे। इसका परिणाम महाराष्ट्र की राजनीति पर हुआ। ऐसी स्थिति में महाराष्ट्र में काँग्रेस और इंदिरा काँग्रेस ऐसे संयुक्त सरकार की स्थापना हुई। वसंतदादा मुख्यमंत्री और तिरपुडे उपमुख्यमंत्री हुए।

परंतु 'तिरपुडे' तो मुख्यमंत्री सरीखे बर्ताव करने लगे। वसंतदादा को माननेवाले तरुण आमदार, मंत्री बिगड गये। शरद पवार के आसपास बडी संख्या में आमदार एकत्र होने लगे। शरद पवार के 'रामटेक' बंगले पर महाराष्ट्र की राजनीति को दिशा देनेवाली राजनीति क्रियाशील हो उठी। पवार ने दाँव पेंच करके पुलोद सरकार स्थापन किया।

महाराष्ट्र के हित के लिए यशवंतराव इंदिरा काँग्रेस में शामिल हुए। परंतु इनके साथ उनके कार्यकर्ताओं का मन से स्वागत नहीं हुआ। उन्हें अच्छा बर्ताव नहीं मिला। इसके विपरित उनका उपहास होता रहा। उनके पक्ष प्रवेश के प्रसंग में बहुत अडचने पैदा की गयी। उनका जो अपमान किया गया, जो मनःस्ताप दिया गया, वह तो बहुत अशोभनीय

था। १९८१ से १९८५ तक लगभग पाँच वर्ष यशवंतराव को और उनके कार्यकर्ताओं को परेशान कर दिया। उन्हें सम्मान का स्थान, सम्मान का पद तो नहीं दिया गया, पर उनका अपमान कैसे होगा इसका जानबूझकर दिल्ली में से प्रयत्न किया गया। इस बर्ताव से यशवंतराव के स्वास्थ्य पर परिणाम हुआ। उनकी पत्नी सौ. वेणूताई तो बहुत निराश हो गयी। फायनान्स कमिशन का अध्यक्षपद तो यशवंतराव के नेतृत्व को अवसर देनेवाला पद नहीं था।

दिल्ली में शुरू हुआ यह खेल देखकर यशवंतराव सरीखा प्रज्ञावंत राजनीतिज्ञ मनुष्य चुप था। दूसरों को धैर्य देनेवाला यह मनुष्य निराश हुआ वह भी वेणूताई जाने के बाद। फिर भी यह उन्होंने कभी समझा नहीं दिया। वे स्थितप्रज्ञ के समान बर्ताव करते थे। उनकी मानसिक अवस्था खराब हो रही थी। यह बात उनके मित्र जानते थे। पर यशवंतराव के सामने किसी ने बोलने की हिम्मत नहीं की।

इंदिरा गांधी के बाद राजीव गांधी का यशवंतरावजी की ओर देखने का दृष्टिकोन बदलेगा, पर ऐसा नहीं हुआ। उनकी बुद्धिमत्ता, उनका कर्तृत्व, काम करने का अनुभव, कूटनीतिज्ञता जानकर भी राजीव गांधीने यशवंतराव के संबंध में कुछ नहीं किया।

(४) सिंडीकेट और इंडिकेट काँग्रेस

काँग्रेस के बंगरूल अधिवेशन में (१९६९) इंदिराजी के मोरारजी देसाई, स. का. पाटील, अतुल्य घोष, तिजलिंगप्पा से मतभेद हो गये। इसलिए काँग्रेस का 'इंडिकेट काँग्रेस' और 'सिंडिकेट काँग्रेस' में विभाजन हो गया। इंदिरा गांधी ने काँग्रेस के अधिकृत उम्मीदवार श्री. संजीव रेड्डी को पराभूत किया। राष्ट्रपति के चुनाव में यशवंतराव चव्हाण और महाराष्ट्र काँग्रेस ने संजीव रेड्डी को समर्थन दिये जाने के कारण यशवंतराव चव्हाण और इंदिरा गांधी इन दोनों के संबंध बिगड गये। इस परिस्थिति में सिंडिकेट काँग्रेस ने इंदिरा गांधी के स्थान पर यशवंतराव चव्हाण को प्रधानमंत्री पद पर बिठाने की ऑफर दी। परंतु उन्होंने इस बात का इन्कार कर दिया और यशवंतरावने कहा कि – 'प्रधानमंत्री पद आपस में लड़कर प्राप्त किया तो यह देश अच्छी तरह चलाना असंभव होगा। उत्तर विरुद्ध दक्षिण, ब्राह्मण विरुद्ध मराठा, क्षत्रिय, जाट, राजपूत ऐसे गुट बनाकर भारत देश का कारोबार चलाना हितकारक नहीं होगा। विपक्ष को काँग्रेस में और एक फूट चाहिए थी। मैं मेरे हाथ से वह फूट पडने नहीं दूँगा। थोडे समय तक रहनेवाले प्रधानमंत्री पद की अपेक्षा नहीं है और मुझे उसका आकर्षण भी नहीं है।' इससे स्पष्ट होता है कि यशवंतराव कभी भी अवसरवादी राजनीतिज्ञ नहीं थे। उन्होंने हमेशा राष्ट्रहित महत्त्वपूर्ण माना है।

१९७१ में मध्यावधि चुनाव हुए। इस चुनाव में इंदिरा गांधी ने प्रचंड बहुमत

संपादन किया। इस चुनाव में महाराष्ट्र में टिकट का बँटवारा करते समय यशवंतराव को कमजोर करने के लिए 'मराठा' उम्मीदवार विशेषतः पाटील और देशमुख को हटाने के प्रयत्न हुए। इस परिस्थिति में भी यशवंतराव चव्हाण की सहनशीलता, स्थितप्रज्ञ प्रवृत्ति और सच्चाई इन गुणों का प्रत्यंतर आया। वस्तुतः विरोध और संघर्ष यह यशवंतराव का पिंड नहीं था। उनके स्वभाव में समझौते का भाग अधिक था। उनके मतानुसार दिल्ली से संघर्ष करके महाराष्ट्र की प्रगति साध्य नहीं कर सकेंगे। मुख्य प्रवाह से महाराष्ट्र अलग नहीं हो सकेगा ऐसा उन्हें लगता था।

(५) इंदिरा और यशवंतराव अलग

१ जनवरी १९७८ को इंदिरा गांधीने 'इंदिरा काँग्रेस' की स्थापना की। तब से इंदिराजी और यशवंतराव अलग हुए। परस्पर विरोधी दल में काम करने लगे। इंदिरा गांधी ने इंदिरा काँग्रेस के नाम से चुनाव जीते। यशवंतराव को लगा कि काँग्रेस के मुख्य प्रवाहसे हम अलग हो रहे हैं। काँग्रेस एस को जनता ने व्यापक समर्थन नहीं दिया था। इसलिए यशवंतराव नाराज थे। उनके मन में विचार आया कि हम मुख्य प्रवाह से दूर रहकर काँग्रेस की और जनता की अच्छी सेवा नहीं कर सकेंगे। इंदिरा काँग्रेस में शामिल होना चाहिए और मुख्य प्रवाह के साथ रहकर संघटनात्मक कार्य करना चाहिए। यशवंतराव चव्हाण ये एक काँग्रेस पक्ष के एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे। उन्होंने जनहित सामने रखकर राजनैतिक प्रवास किया।

(६) इंदिरा काँग्रेस में प्रवेश

उदात्त हेतु रखकर यशवंतराव ने इंदिरा काँग्रेस में प्रवेश किया। परंतु उनके जीवन के अन्त तक उनकी उपेक्षा होती रही वे बहुत निराश हो गये थे।

सारांश रूप से यशवंतराव चव्हाण के राजनीति काल का सिंहावलोकन करते समय ऐसा कहना पडता है कि – 'यशवंतराव ने अपने संपूर्ण आयुष्य में सत्ता के लिए तत्त्वों से, जनहित से कभी समझौता नहीं किया। उन्होंने अपनी निष्ठा से कभी बेईमानी नहीं की। घरानेशाही की प्रसूतावस्था में बढनेवाला भारतीय जनतंत्र यशवंतराव को न्याय नहीं दे सका। आगे भी दे नहीं सकेगा। क्या राजनैतिक दृष्टि से यशवंतरावने गलती की है? इसका उत्तर है, हाँ! उन्होंने बहुत गलती की, पर उन्होंने गरीबों को उद्ध्वस्त करनेवाली गलतियाँ कभी नहीं की।'

वर्तमान काल में भारत में राजनीति एक प्रकारका धंधा हुआ है। ससंद में सरकार को जबाब पूछने के लिए और लोगों के प्रश्न, समस्या रखने के लिए पैसे लेने वाले

जनप्रतिनिधि (धंधेवाले राजनीतिज्ञ) जनतंत्र के पवित्र मंदिर में स्वच्छंदता से घूमते फिरते हैं। इस प्रदूषित राजनैतिक वातावरण में यशवंतराव चव्हाण के एकनिष्ठ, ध्येयनिष्ठ, तत्त्वनिष्ठ, जनसामान्य के कल्याण की इच्छा करनेवाले, सबके उत्थान की अपेक्षा करनेवाले, मार्गदर्शक, प्राणवायुरूपी विचार ही आज भारत की और महाराष्ट्र की राजनीति को प्रदूषण मुक्त, स्वच्छ और निर्दोष बना सकेंगे।

यशवंतराव चव्हाण का राष्ट्रीय राजनीतिक प्रवास देखनेपर निश्चित ऐसा लगता है कि प्रारंभिक काल बहुत सुनहरा और पूर्वार्ध में जो पूँजी राजनीतिक दाँवपेंच करके चव्हाणने एकत्र की थी उसके बलपर उनकी सफल और प्रभावी केंद्रीय मंत्री के रूप में गणना की गयी और आगे भी होती रही।

(७) यशवंतराव की गलती

चरणसिंग के मंत्रिमंडल में वे उपपंतप्रधानमंत्री हुए यह तो महाराष्ट्र के लिए संतोष की बात थी। पर वे स्वयं कहते हैं – 'चरणसिंग के मंत्रिमंडल में मैं गया, यह तो मैंने मेरे जीवन में बडी गलती की, यह मेरी स्वीकृति सच थी। क्योंकि उन्हें उपप्रधानमंत्री बनाकर इंदिराजी को उनका राजनीतिक खेल समाप्त करना था।' चरणसिंग को प्रधानमंत्री बनाकर चव्हाण जैसे शासकीय और प्रशासकीय अनुभव होनेवाले प्रभावी नेता को पंतप्रधानमंत्री पदसे दूर रखना था। यशवंतराव इंदिरा के साथ कायम रह जाते तो क्रमांक दो पर उनका स्थान अटल रह जाता। अपने बाद इंदिरा यह बात नेहरूने पहले ही तय की थी और इंदिरा के बाद राजीव यह भी इंदिरा का निर्णय था। इसी कारण उस घरानेशाही की सत्ता नष्ट होने तक यशवंतराव को प्रधानमंत्री पद मिलने का अवसर नहीं था। इसलिए ऐसे घरानेशाही का विरोध मराठी नेतृत्व कुशल, राजनीतिक शैली, संघटना कौशल्य के कारण इंदिरा उन्हें प्रमुख मंत्री पद से निकाल नहीं सकती थी। पर मोरारजी सरीखे प्रभावी नेता को इंदिराजीने निकाल दिया। अंत में ऐसा कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय राजनीति में यशवंतराव सफल हुए ही, पर 'सह्याद्रिने तो हिमालय जीता हैं।' यही बात तो सच है।

राजनीति में सत्ता के लिए युती और तत्त्वों की अत्येष्टि यह समीकरण सर्वत्र चलता है। यशवंतरावने जनतंत्र के मूल्यों का, सामाजिक न्याय का और मानवतावाद का मूल्यांकन कभी नहीं किया। नेहरू के निधन के बाद उनके उत्तराधिकारी का प्रश्न आगे आया। पर्याय के रूप में यशवंतराव के नाम की चर्चा हुई। मोरारजी और शास्त्रीजी इन दोनों में से एक पीछे हट जाता तो पर्यायी उम्मीदवार के रूप में यशवंतराव का नाम आगे आ जाता। उसके बाद लालबहादूर शास्त्री प्रधानमंत्री हो गये। यशवंतराव रक्षा मंत्री हो

गये। १९६५ के पाक आक्रमण के समय भारत के देदीप्यमान विजय से देश का सम्मान बढ़ गया। शास्त्रीजी के आकस्मिक निधन से फिर प्रधानमंत्री पद के उत्तराधिकारी का प्रश्न निर्माण हुआ। इस समय यशवंतराव का नाम चर्चा में था। उन्होंने इंदिरा गांधी से कहा कि आप प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होंगे तो मैं आप को समर्थन दूँगा और आप उम्मीदवार नहीं होंगे तो मैं आपके समर्थन की अपेक्षा करता हूँ। अन्त में इंदिरा गांधी प्रधानमंत्री हो गयी और चव्हाण गृहमंत्री हो गये। आगे इंदिरा गांधी के एकाधिकारशाही में तनाव बढ़ता गया। १९६९ में काँग्रेस पक्ष में फूट पडी। मंत्रिमंडल में फेररचना में यशवंतराव को अर्थ खाता दिया गया। उसके बाद उन्होंने विदेशमंत्री पद भी सँभाला।

(८) आपद्‌कालीन स्थिति समाप्त और चुनाव की घोषणा

इंदिरा गाधी के दमनचक्र युक्त महत्त्वाकांक्षी नीति से आपद्‌कालीन स्थिति घोषित की गयी। विदेश मंत्री के रूप में जब रूमानिया में गये थे तब वहाँ के कौन्सिलने कहा – 'प्रधानमंत्री इंदिरा गांधीने भारत में चुनाव जाहिर किया है।' यह सुनकर यशवंतरावने कहा – 'यह समाचार सुनकर मन पर का बोझ हलका हुआ है। क्या सार्वजनिक चुनाव के लिए हम हमेशा के लिए वंचित हो गये?' ऐसा डर अनेक महिने लगा था। उन्होंने वेणूताई से पत्र लिखकर कहा है – 'सभी राजकैदी छूट जायेंगे और चुनाव का वातावरण प्रस्थापित होगा। हवा खुली रहेगी। आज मैं आनंद में हूँ।' आपद्‌कालीन स्थिति के बाद काँग्रेस की पराजय हुई। परंतु अल्पावधि में जनता सरकार गिराने में इंदिरा गांधी सफल हुई। काँग्रेस पक्ष में दूसरी फूट पडी। इंदिरा गांधी के पुनरागमन में यशवंतराव जैसे सात्त्विक, सच्चरित्र नेता को कोई स्थान नहीं था। ज्येष्ठों के बारे में आदर भाव अथवा मार्गदर्शन की अपेक्षा आदि बातों को इंदिरा गांधी की संस्कृति में कोई स्थान नहीं था।

यशवंतराव सच्चे अर्थों में महाराष्ट्र के नेता थे। महाराष्ट्र के प्रशासन में और पक्ष में प्रमुख थे। इसलिए महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री होते हुए उनका कार्यकाल सफल हुआ। उनके प्रत्येक निर्णय का स्वागत हुआ। परंतु केंद्रीय राजनीति में उनके प्रत्येक निर्णय का स्वागत नहीं हुआ। अनेक प्रसंगों में उन्हें दूसरों के विचार स्वीकारने पडे। वे अलग अलग खाते के मंत्री थे। फिर भी वे स्वतंत्रता से निर्णय नहीं ले सकते थे। इन सब बातों के कारण उनके विचारों में और उनके कार्योमें बाधा पैदा हो जाती थी।

यशवंतराव जैसे प्रजा के राजा को महाराष्ट्र कभी नहीं भूलेगा। क्या उनके पश्चात उनके सपनों की पूर्ति हुई? आजकल राजनीतिज्ञोंको टूटे हुए मन, देहात में रहनेवाले किसान, उनकी हुई दूरावस्था, बढ़ती जानेवाली हत्याएँ और दूसरी तरफ हजारों करोडों रुपयों के घोटाले राजनैतिक नेताओं की शान यह सब देखनेपर लगता है कि 'क्या यह

यशवंतराव का महाराष्ट्र है?' क्या यशवंतराव के बाद दिल्ली के दरबार में महाराष्ट्र को सम्मान मिलता है? ऐसे अनेक प्रश्न सामने आते हैं।

यशवंतराव चव्हाण के पश्चात उनके उत्तराधिकारी श्री. शरद पवार दिल्ली की राजनीति में मशहूर हो गये। उन्होंने अपने कार्य से दिल्लीवालों को अपना परिचय करा दिया है। सात समुद्रों के पार इस नेता की चर्चा होती है। उन्होंने महाराष्ट्र और भारत के अनेक क्षेत्रों में काम किया। भविष्य में श्री. शरद पवार के कर्तृत्व को बुद्धिमत्ता को और सभी विषयों की जानकारी रखनेवाले तथा सर्वज्ञ प्रज्ञावंत श्री. शरद पवार को राजनीति में अवर्णनीय काम करने का अवसर मिलेगा तो उनका नाम चिरस्मरणीय रहेगा।

(९) काव्य में यशवंतराव का गौरव गान

(१) यशवंतराव चव्हाण रक्षा-मंत्री का पद सँभालने दिल्ली जा रहे थे। उस अवसर पर महाराष्ट्र कवि यशवंत ने उनके सम्मान में यह कविता लिखी ।

अहा यह अपूर्व संगम, जमुना से मिलने ।
निकल पडी यह सह्यगिरि का कन्या।।
परचक्र की छाया अशुभ
सँवला रही जमुना जल को।
सहाय्य करने संकट में यह
निकड पडी सह्यगिरि की कन्या।।
चीनी नहीं, अरे वह तो दुष्ट कालिया।
लाँघ हिमाद्रि को आया है वह।
मर्दन करने मूर्ति सांवली धन्या
निकल पडी सह्यगिरि की कन्या।।
कृष्णा यह केशरी ध्वजा
स्फुरित हो रही शौर्य भुजा
लेकर घृति-मति और दक्खन की संपदा।
निकल पडी सह्यगिरि की कन्या।।
सरिता कृष्णा स्व-कछार में देख
ज्वार-बाजरों के खिन्न उंठल भालों को
रोक न पायी अपने को वह
निकल पडी सह्यगिरि की कन्या।।
कृष्णा यह वीरों की जन्मदात्री

यह दुर्गा, खल दमन कारिणी
विजय प्राप्ति का संकल्प किये वह
निकल पडी सह्यगिरि की कन्या।।
ज्वलंत कल्लोलिनी कृष्णा यह
कलि काल को धमकाती हुई
कालिंदी रक्षा की कटिबद्धता यह
निकल पडी सह्यगिरि की कन्या।।

(२) विभूषित कर दो 'संरक्षण' पद तुम बनो 'यशवंत'।
सह्याद्रि की हर कगार में गूँज उठी जय ध्वनि
विशाल भारत भर में पहुँची क्षणभर में यह ध्वनि ।।१।।
'यशवंत' के यश, कीर्ति की वार्ता ज्यो ज्यो आई
महाराष्ट्र की भोली जनता हर्षभरित तब हुई ।।२।।
देकर तुम्हें 'संरक्षण' पद दिया श्रेष्ठ यह मान
'पंडित'जीने महाराष्ट्र का कर दिया सम्मान ।।३।।
जल स्फूर्ति प्रद महाराष्ट्र का प्राशन तुमने किया
शिवराजा की पावन भू पर अखंड विचरण किया ।।४।।
धडक उठा दिल मुगलशाही का दम खम देख मराठों का
फहराकर ही रूके अटकपर जो उत्तुंग पता का ।।५।।
भरा हुआ है उन वीरों का साहस तव अंतर में
कण-कण से निःसृत महाराष्ट्र की देशभक्ति तब मानस में ।।६।।
'जिजाबाई' का 'छत्रपती' का कतिपय संतों का
आशीर्वाद दे रहा तुम्हें यह पवन दक्खन का ।।७।।
धन्य जन्म -भू! धन्य मातृ तव ! वेणुताई भी धन्य हुई
तब कार्य रूप में फली फूली उन सबकी पुण्याई ।।८।।
हर हर गरजकर 'संरक्षण' पद विभूषित कर दो 'यशवंत'
सम्मान भरा यह महाराष्ट्र का प्रणाम लो गुणवंत ।।९ ।।

(३) आकाशवाणीवर प्रसारित भाषण में यशवंतरावने कहा -
इस माटी में मैं घुटनों के बल चला,
रँग गया मेरा तन-मन प्राण।
इसने ही मुझे रुधिर ढाला,
रँग दिया मेरा तन-मन प्राण।

(४) अभिमान धरें बलिदान करें,
ऊँची ध्वजा फहराएँ,
उत्तुंग हमारी उत्तर सीमा
इंच इंच पर लड़े।

(५) एक युवा कवयित्रीने इस हिंसा का वर्णन किया है –
हम रक्षा में अभाव में मर रहे थे
असहाय हम तुम्हारे सैनिक थे।
भारत के श्रम, जोश के प्रतीक हम
पर, पशुसे मर रहे थै।
मानो पिंजडों में बंद पशु
निरंतर कत्ल किये जाते थे
मिलता नहीं था साहसपूर्ण सुख।
मात्र एक जलती हुई मशाल
क्रोध और संकल्प का तेल।
जीवित थे जो और जो चल बसे थे
उनके शौर्य की यह होली थी।
क्षतिपूर्ति करना असंभव था
क्षतिपूर्ति का एक ही मार्ग
स्वतंत्रता और निष्ठा की रक्षा।
यही है हमारी विरासत
यही हमारी कब्र पर खुदा हुआ लेख।
घटित हुआ जो यहाँ
जरूरत थी उसकी?
घटित होना ही था यह सब?

कवि यशवंत ने यशवंतराव चव्हाण रक्षा मंत्री बनने पर जो कविता लिखी थी। उसका हिंदी अनुवाद पूना विद्यापीठ के भूतपूर्व प्राध्यापक डॉ. गजानन चव्हाण ने किया है।

(६) यशवंतरावजी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व देखकर अनेक कवियों ने हिंदी-मराठी भाषा में यशवंतराव के गुण गौरव पर अनेक कविताएँ लिखी है। 'नया जीवन' नाम के एक हिंदी कविने लिखा है –
ये मेनन नहीं, ये चव्हाण हैं।

ये स्वीकार नहीं है, ये एक आन हैं।।
'हटो' और 'हटो', इसका नारा नहीं।
'बढो' और 'बढो', इसकी यह शान हैं।।
लडेगा जो इससे, वो पिस जायेगा।
अडेगा जो इससे, वह पिट जायेगा।।
कोई जाके कह दो, ये आयुब से ।
अडेगा जो इससे, वह मिट जाएगा।।

कवि यशवंत, कवि कुसुमाग्रज, कवि ना. धों. महानोर आदि कवियोंने यशवंतरावजी को काव्यांजली समर्पित की है।

यशवंतराव चव्हाण १९५६ से १९६२ तक महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री थे। उन्होंने सांगली के भाषण में कहा था – 'महाराष्ट्र का भाग्योदय मुझे मेरी आँखों के सामने दिखाई देता है। थोडी दूर की मंजिल है, वहाँ तक आपको जानाही पडेगा। मंजिल तक पहुँचने का पथ कठिन है। कष्ट कम नहीं है, लेकिन यश निश्चित है।' आगे चलकर उन्होंने गुणवत्ता को प्रधानता देने की बात तय की थी। 'महाराष्ट्र में गुणों की अवहेलना नहीं की जायेगी। किसी भी क्षेत्र में, सत्ता स्थान में, चुनाव में गुणवत्ता को महत्त्व दिया जायेगा, उस महत्त्व को कायम रखा जायेगा। उसके बिना हम महाराष्ट्र का भला नहीं कर सकेंगे ऐसी मेरी श्रद्धा है।' इस में उनकी राजनीति की दिशा प्रतिबिंबित होती है। इसलिए सच्चे अर्थों में महाराष्ट्र के इस भूमिपुत्र को महाराष्ट्र का 'शिल्पकार' कहना उचित है।

Y. B. Chavan

1, RACE COURSE ROAD
NEW DELHI, 11

माझी पत्नी सौ. वेणूबाई हिच्या स्मरणार्थ मी एक सार्वजनिक न्यास (Public Trust) करणार आहे. [illegible]

[illegible]

यशवंतराव बळवंतराव चव्हाण

7/10/83

तीन गोष्टी कराव्या:–
चांगला विचार, चांगले कृत्य, खरेपण व गोड-भाषा–

तीन गोष्टी स्वाधीन ठेवाव्या:–
आपला राग, आपली जीभ, व आपली इच्छा.

तीन गोष्टींवर भक्ति असावी:–
धैर्य, शांति, आणि परोपकार.

तीन गोष्टी अंगी असाव्या:–
शहाणपणा, चांगुलपणा व सहनशीलपणा.

तीन गोष्टीसाठी झगडावे:–
आपली भूमि, आपला देश, व आपला मित्र.

स्वार्थ आंधळा असतो तो धर्म व संस्कृति जाणत नाही.

सौ. वेणूताई चव्हाण

(वेणूताई यांचे दुर्मिळ हस्ताक्षर)

वन्देमातरम् !

§ कुर्यात् सदा मंगलम् ! §

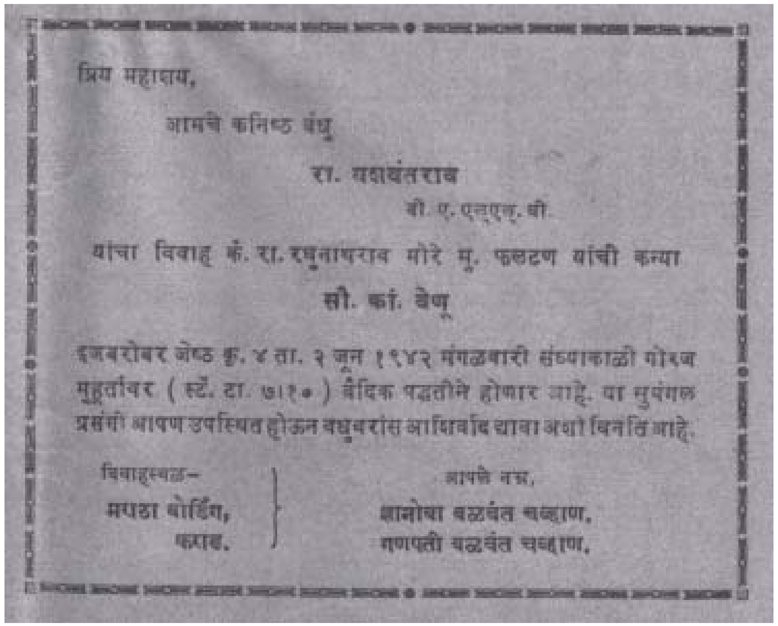
प्रिय महाशय,

आमचे कनिष्ठ बंधु

रा. यशवंतराव

बी. ए. एल्‌एल्‌. बी.

यांचा विवाह कं. रा. रघुनाथराव मोरे मु. फलटण यांची कन्या

सौ. कां. वेणू

इजबरोबर ज्येष्ठ कृ. ४ ता. २ जून १९४२ मंगळवारी संध्याकाळी गोरज मुहूर्तावर (स्टॅ. टा. ७।१०) वैदिक पद्धतीने होणार आहे. या सुमंगल प्रसंगी आपण उपस्थित होऊन वधुवरांस आशिर्वाद द्यावा अशी विनंति आहे.

विवाहस्थळ–
मराठा बोर्डिंग,
कराड.

आपले नम्र,
ज्ञानोबा बळवंत चव्हाण,
गणपती बळवंत चव्हाण,

मा. यशवंतराव चव्हाण का जीवनवृत्त

१९१३	मार्च १२, जन्म सातारा जिले में (अब सांगली जिला) देवराष्ट्र नमक गाँव में।
१९१८-१९	में. पिताश्री बलवंतराव चव्हाण का प्लेग की बीमारी में निधन। सभी शिक्षा के लिए कऱ्हाड में दाखिल।
१९२७	में कराड की केंद्र शाला में से व्हर्नाक्युलर फायनल परीक्षा उत्तीर्ण। कराड में तिलक हाइस्कूल में प्रवेश।
१९२९	८ अप्रैल को भगतसिंग ने असेंब्ली में बम फेक दिया। उस घटना से राजनैतिक जीवन की ओर आकर्षित और भगतसिंग के फाँसी के बाद स्वातंत्र्य लड़ाई के लिये जीवन समर्पित करने का निश्चय।
१९३०-३१	वर्ष के मध्यतक लगभग डेढ वर्ष तक ज्ञानप्रकाश वृत्तपत्र के वार्ताहर के रूप में संपर्क।
१९३०-३३	असहकार के (कानून भंग) आंदोलन में सहयोग और १९३२ में १८ महीनों की जेल की सजा।
१९३३	में जेल में से छुटकारा।
१९३१	में. पुणे के नूतन मराठी विद्यालय की ओर से ली गयी वक्तृत्व स्पर्धा में 'ग्राम सुधारणा' शीर्षक के विषय पर प्रथम क्रमांक का १५०.०० रुपयों का पारितोषिक प्राप्त।
१९३४	मॅट्रीक परीक्षा उत्तीर्ण। कोल्हापूर के राजाराम महाविद्यालय में प्रवेश। (प्राचार्य डॉ. बालकृष्ण और प्राध्यापक ना. सी. फडके का सहवास और मार्गदर्शन।)
१९३८	इतिहास और राजनीति ये विषय लेकर मुंबई विद्यापीठ की बी.ए. उपाधि परीक्षा उत्तीर्ण। पूना के लॉ कॉलेज में प्रवेश।
१९३६	१९३८ में रायवादी विचारों की छाया में।
१९४०	सातारा जिला काँग्रेस के अध्यक्ष।
१९४१	अगस्त में एल.एल.बी. परीक्षा उत्तीर्ण। वकालत के व्यवसाय का प्रारंभ।
१९४२	जून २, कराड में वेणुताई के साथ विवाहबद्ध। (फलटण के मोरे परिवार में कन्या)
१९४२-४३	सातारा जिले में भूमिगत आंदोलन में प्रवेश, संचालन, मार्गदर्शन।

१९४३ में सब में बडे बंधु ज्ञानोबा का निधन।

१९४४ राजनैतिक क्रांति इस विषय पर कविता। (जेल में रहना)

१९४५ जेल में से छुटकारा।

१९४६ मुंबई राज्य के कानून मंडल के चुनाव में (द.सातारा) मतदारसंघ में से चुनाव जीत गये।

१९४६ अप्रैल १४, गृह विभाग के संसदीय सचिव के रूप में नियुक्ति।

१९४७ दिसंबर १५, में मँझले बंधु गणपतराव का निधन।

१९४८ महाराष्ट्र प्रदेश काँग्रेस के सचिव।

१९५१ मँझले बंधु गणपतराव की पत्नी का निधन।

१९५२ कराड मतदारसंघ में से विधान सभा पर चुनाव और नागरी रसद मंत्री के रूप में नियुक्ति।

१९५३ सितंबर २८, श्री. भाऊसाहेब हिरे और नानासाहेब कुंटे के साथ नागपूर समझौते पर पश्चिम महाराष्ट्र की ओर से हस्ताक्षर।

१९५४ मुंबई राज्य पंचायत संघ की स्थापना।

१९५५ अक्तूबर १०, राज्य पुनर्रचना समिति का विवरण प्रसिद्ध हुआ। विदर्भ का अलग राज्य और शेष मराठी प्रदेश और गुजराथी प्रदेश इन दोनों का संयुक्त राज्य सुझानेवाली शिफारिस।

१९५५ दिसंबर १, फलटण में सातारा जिला काँग्रेस कमिटी के सभा में उपोषण, हड़ताल, इस्तीफे ये संयुक्त महाराष्ट्र प्राप्त करने के मार्ग नहीं है। इस आशय का प्रतिपादन करनेवाला प्रस्ताव मंजूर किया गया। 'महाराष्ट्र की अपेक्षा नेहरू श्रेष्ठ और मुंबईसह संयुक्त महाराष्ट्र प्राप्त करने के प्रयत्न में आगे श्री. शंकरराव देव का नेतृत्व स्वीकार करने के लिए मैं तैयार नहीं हूँ'ऐसी बात चव्हाण ने कही।

१९५६ अक्तूबर, संसद ने विदर्भ के साथ विशाल द्विभाषिक मुंबई राज्य की स्थापना करने की बात प्रकट की।

१९५६ नवंबर, विशाल द्विभाषिक मुंबई राज्य की स्थापना और द्विभाषिक राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में चुनाव (उम्र ४३)।

१९५७ अप्रैल, मुंबई विधान सभा के सार्वत्रिक चुनाव में कराड में बहुत बडा संघर्ष होकर विजय और पुनश्च मुख्यमंत्री पद (उम्र ४४)।

१९५७ नवंबर ३०, प्रतापगड पर शिवस्मारक का पंडित जवाहरलाल नेहरू के कर कमलों द्वारा उद्घाटन, द्विभाषिक विरोधी मोर्चा और समारोह शांति से संपन्न हुआ।

१९५८ सितंबर, अखिल भारतीय काँग्रेस की वर्किंग कमिटी पर चुनाव।

१९५८ फरवरी, बेलगाँव-कारवार सीमा प्रदेश महाराष्ट्र में समाविष्ट कर लेने के लिए संयुक्त महाराष्ट्र समिति की ओर से आंदोलन शुरू।

१९५८ दिसंबर, सीमाप्रश्न के संबंध में न्याय माँगने के लिए भारत की राजधानी में संयुक्त महाराष्ट्र समिति की ओर से सत्याग्रह।

१९५९ जनवरी, अ. भा. काँग्रेस के नागपूर अधिवेशन में तृतीय पंचवार्षिक योजना के विषय का प्रस्ताव टूट गया।

१९५९ मार्च, शस्त्रक्रिया और बयालीस दिनों की विश्रांति।

१९५९ अगस्त, द्विभाषिक राज्य का कारोबार यशस्वी होते हुए भी राज्य की जनता में एकात्मता की निर्माण नहीं हुई थी। इसलिए मुख्यमंत्री के नाते से उसे में आगे चला नहीं सकूँगा। ऐसा निर्णय लेकर उन्होंने काँग्रेस श्रेष्ठी को सूचित किया।

१९५९ सितंबर, द्विभाषिक मुंबई राज्य के पुनर्रचना के संबंध में विचार करने के लिए काँग्रेस वर्किंग कमिटी ने नौ सदस्यों की समिति नियुक्ति की।

१९५९ दिसंबर २९, अलिगढ मुस्लिम विद्यापीठ, अलीगढ- ऑननरी डिग्री ऑफ एल. एल. बी. उपाधि।

१९६० जनवरी, द्विभाषिक राज्य की पुनर्रचना कर मुंबईसह मराठी प्रदेश का और गुजराथ प्रदेश का ऐसे दो राज्य निर्माण करने का निर्णय नौ सदस्यीय समिति ने लिया।

१९६० फरवरी १३, (सावरगाव डुकरे) में संपन्न विदर्भ साहित्य संमेलन के उद्घाटक।

१९६० मार्च, बारामती के संसद के उपचुनाव में काँग्रेस दल के सदस्य को बडे बहुमत से चुनकर दिया। महाराष्ट्र राज्य की निर्मिति जनतंत्र पद्धति से और शांति से करने के प्रयत्न पर मराठी जनता ने विश्वास व्यक्त किया।

१९६० अप्रैल, संसद ने द्विभाषिक राज्य की पुनर्रचना कर मुंबईसह महाराष्ट्र और गुजराथ इन दो राज्य निर्माण करने की योजना को मान्यता दी।

१९६० जून, पुणे में प. गोविंद वल्लभ पंत की उपस्थिति में म्हैसूर के मुख्यमंत्री श्री. जत्ती ने सीमा का प्रश्न वाद विषय होने की बात कही। श्री. चव्हाण और श्री. जत्ती इन दोनों को सीमा प्रश्नों का विचार करने के लिए था अपने अपने सरकार को रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए हर एक को दो प्रतिनिधि मिलकर चार सदस्यों की समिति नियुक्ति की जायेगी, ऐसा निवेदन करनेवाला संयुक्त पत्रक।

१९६० अक्तूबर २१, पुणे में महाराष्ट्र काँग्रेस कमिटी की ओर से जाहिर सत्कार।

१९६० नवंबर, आखिल भारतीय काँग्रेस चुनाव मंडल पर चुनाव।

१९६० नवंबर १०, नागपूर करार अमल में लाने के लिए विधान सभा का एक अधिवेशन नागपूर में हर वर्ष होने की शुरूआत।

१९६० नवंबर १९, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृती मंडल की स्थापना।

१९६० दिसंबर, काँग्रेस महासमिति में से चुनाव पद्धति से पहले पहल हुए चनाव में वर्किंग कमिटी पर चुनाव।

१९६१ दिल्ली में ४३ वे अ. भा. मराठी नाट्य संमेलन के स्वागताध्यक्ष।

१९६१ मार्च ३०, विदर्भ की जनता की ओर से नागपूर में ४७ वे जन्म दिन के निमित्त सत्कार समारोह।

१९६२ मे १, पंचायत राज्य योजना का प्रारंभ।

१९६२ सातारा में हुए अ. भा. मराठी साहित्य संमेलन के उद्घाटक।

१९६२ फरवरी, महाराष्ट्र विधान सभा के चुनाव। काँग्रेस ने २६५ में से २१४ सदस्य चुनकर लाये। इस प्रकार काँग्रेस ने बडी सफलता प्राप्त की।

१९६२ अक्तूबर २२, भारत के रक्षा मंत्री के रूप में नियुक्ति।

१९६३ नाशिक जिले में से संसद में विरोध के बिना चुनाव।

१९६३ अमरिका के रक्षा खाते के सचिव मॅक्नॉरा के निमंत्रण मिलने पर अमरिका की भेंट।

१९६३ अगस्त, रशिया की सफर, रशियन पंतप्रधान क्रुश्चेव्ह से चर्चा, मदद का आश्वासन।

१९६४ अगस्त २८, रशिया का दौरा।

१९६४ दिल्ली में महाराष्ट्रीय शिक्षा संस्था के अध्यक्ष पद पर नियुक्ति।

१९६५ जनवरी, नांदेड में संपन्न ४७ वे अ. भा. मराठी नाट्य परिषद - अधिवेशन के उद्घाटक।

१९६५ अगस्त १८, उम्र के ९५ वे वर्ष में विठामाता का निधन - मुंबई।

१९६६ जनवरी, ताश्कंद में शास्त्रीजी - आयुबखान चर्चा में उपस्थित। (कोसिजिन के प्रयत्न के अनुसार।)

१९६६ नवंबर १४, केंद्रीय गृहमंत्री पद पर नियुक्ति।

१९६७ गृहमंत्री पद के सूत्र लेने पर पहले छः महीनों में नये दस राज्यपालों की नियुक्ति।

१९६९ फरवरी २३, कानपूर विश्व विद्यालय ने 'डॉक्टर ऑफ लॉ' उपाधि सम्मानपूर्वक दी।

१९६९ नवंबर, बंगलोर काँग्रेस अधिवेशन के बाद काँग्रेस दल विभाजित हो गया।

१९७० फरवरी १०, औरंगाबाद मराठवाडा विद्यापीठ की 'डॉक्टर ऑफ लॉ' यह उपाधि।

१९७० जून २६, केंद्रीय अर्थमंत्री के रूप में नियुक्ति।

१९७१ विकसनशील राष्ट्रीय परिषद में आर्थिक विकास के संबंध में चर्चा।

१९७२ सातारा संघ में से संसद पर चुन लिये। संसद के ४३ सदस्य चुन लिये गये। (महाराष्ट्र में)

१९७४ दिसंबर १, कोल्हापूर शिवाजी विद्यापीठ की 'डॉक्टर ऑफ लॉ' यह उपाधि।

१९७४ अक्तूबर, केंद्रीय विदेशमंत्री के पद पर नियुक्ति।

१९७५ गियाना, क्युबा, लेबेनॉन, इजिप्त, पेरू, अमरिका, अफगानिस्तान, इराक, कुवैत, फ्रान्स आदि राष्ट्रो की भेंट।

१९७५ दिसंबर, अखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन कराड में संपन्न हुआ था। उसके स्वागताध्यक्ष।

१९७६ जनवरी १७, परभणी मराठवाडा कृषि विद्यापीठ की 'डॉक्टर ऑफ फिलॉसॉफी' यह उपाधि।

१९७६ तुर्कस्थान, अल्जेरिया की भेंट।

१९७६ अक्तूबर ८, सदिच्छा राजदूत के रूप में अमरिका में होस्टन के टेक्सास शहर की ओर से मानपत्र।

१९७७-७८ संसद में विरोधी दल के नेता के रूप में चुन लिये गये।

१९७८ इंदिरा गांधी के साथ मतभेद हो जाने पर संजीव रेड्डी काँग्रेस में प्रवेश।

१९७८	महाराष्ट्र में शरद पवार के नेतृत्व में पुलोद मंत्री मंडल। (यशवंतराव का पुलोद को समर्थन होने की चर्चा)
१९७९	जुलाई, चरणसिंग के संयुक्त मंत्रीमंडल में उपपंतप्रधान और गृहमंत्री।
१९८०	सातारा मतदार संघ में से संसद पर चुन लिये गये। (रेड्डी काँग्रेस के महाराष्ट्र में अकेले विजयी सदस्य)
१९८२	इंदिरा काँग्रेस में प्रवेश।
१९८२	आठवे अर्थ आयोग के अध्यक्ष।
१९८३	जून १, पत्नी सौ. वेणुताई का निधन।
१९८३	अक्तूबर ७, यशवंतराव ने अपना इच्छा पत्र (वुईल) लिखा।
१९८४	जनवरी ९, सौ. वेणुताई चव्हाण स्मारक पब्लिक चॅरिटेबल ट्रस्ट की स्थापना और पंजीयन।
१९८४	फरवरी ७, 'कृष्णाकाठ' आत्मचरित्र का पहला भाग प्रकाशित।
१९८४	मार्च २४, पुणे विद्यापठ की सम्मानीय (डी.लिट्) उपाधि।
१९८४	जून १, सौ. वेणुताई की प्रथम पुण्यतिथि। उसी दिन यशवंतराव ने तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी की उपस्थिति में सौ. वेणुताई स्मारक का भूमिपूजन किया।
१९८४	अक्तूबर ७, उनके 'कृष्णाकाठ' आत्मचरित्र को केसरी मराठा संस्था की ओर से साहित्य सम्राट न. चि. केळकर पारितोषिक।
१९८४	नवंबर २५, शाम के समय ७:४५ को दिल्ली में निधन।
१९८४	नवंबर २७, दुपहर के समय ३:३० बजे कराड के कृष्णा-कोयना के प्रीतिसंगम पर अंत्यसंस्कार।
१९८६	मे ३१, क्षेत्र माहुली, जि. सातारा के रामशास्त्री प्रभुणे प्रतिष्ठान की ओर से सामाजिक न्याय पुरस्कार (मरणोत्तर)।

(९) यशवंतराव चव्हाण व्यक्तित्त्व और कर्तृत्त्वपर उपलब्ध साहित्य (आधारग्रंथ)

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
१.	कृष्णाकाठ	यशवंतराव चव्हाण
२.	विदेश दर्शन (रामभाऊ जोशी संग्राहक - संपादक)	रामभाऊ जोशी (संपा)
३.	हवाएं सह्याद्रि की	यशवंतराव चव्हाण
४.	भूमिका	यशवंतराव चव्हाण
५.	ऋणानुबंध	यशवंतराव चव्हाण
६.	जीवनाचे विश्वरूप	यशवंतराव चव्हाण
७.	युगांतर	यशवंतराव चव्हाण
८.	सह्याद्रीचे वारे	यशवंतराव चव्हाण
९.	शिवनेरीच्या नौबती	यशवंतराव चव्हाण
१०.	वचनपूर्तीचे राजकारण	यशवंतराव चव्हाण
११.	आखिल भारतीय मराठी साहित्य संमेलन, कराड स्वागताध्यक्ष भाषण	यशवंतराव चव्हाण
१२.	महाराष्ट्र-म्हैसूर सीमाप्रश्न	यशवंतराव चव्हाण
१३.	मी आणि माझे वाचक	ग. त्र्यं. माडखोलकर
१४.	यशवंतराव चव्हाण	ना. धों. महानोर
१५.	सोनेरी पाने	भा. वि. गोगटे
१६.	यशवंत गाजते कीर्ती	दुहिता
१७.	शब्दाचे सामर्थ्य	राम प्रधान
१८.	बंधणाचे ऋण	राम प्रधान
१९.	वादल माता	राम प्रधान
२०.	नियतीचा हात	यशवंतराव चव्हाण
२१.	विदेश दर्शन	यशवंतराव चव्हाण
२२.	यशवंतराव चव्हाण विधिमंडलातील निवडक भाषणे खंड १	

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
२३.	गृहदेवता	विद्या देसाई
२४.	यशवंतराव चव्हाण	बाबूराव काले
२५.	यशवंतराव चव्हाण	कायंदे पाटील
२६.	माझ्या आवडत्या पाच व्यक्ति	माधवराव बागल
२७.	यशवंतराव चव्हाण अभिनंदन ग्रंथ	संपा. तर्कतीर्थ लक्ष्मणशास्त्री जोशी
२८.	ओव्या विठाईच्या	रामभाऊ जोशी
२९.	यशवंतराव चव्हाण कर्तृत्व आणि नेतृत्व	शंकर सारडा
३०.	यशवंतराव चव्हाण राजकारण आणि साहित्य	भास्कर ल. भोले
३१.	शालेचे दिवस	मोहन जोशी
३२.	यशवंतराव चव्हाण विविधांगी व्यक्तिमत्त्व	विठ्ठल पाटील
३३.	यशवंतराव चव्हाण	माधवराव बागल
३४.	माझ्या राजकीय आठवणी	हरिभाऊ लाड
३५.	यशवंतराव चव्हाण इतिहासाचे एक पान	रामभाऊ जोशी
३६.	नवमहाराष्ट्राचे शिल्पकार	दत्ताराम बारस्कर
३७.	यशोधन	विनायकराव पाटील
३८.	यशवंत चिंतनिका	य. च. प्र. क. बम्बई
३९.	साहब संध्याकाली भेटणे	अरुण शेवते
४०.	जनमनातील यशवंतराव	नागनाथ हेगे
४१.	यशवंतराव चव्हाण जीवनदर्शन	पंजाबराव जाधव
४२.	यशवंतराव चव्हाण एक स्मरण	
४३.	यशवंतराव चव्हाण रसग्रहणात्मक अभ्यास	राम फकीर
४४.	ऋणानुबंध	नरेंद्र मारवाडे
४५.	ही ज्योत अनंताची	रामभाऊ जोशी
४६.	सह्याद्रीवरील सूर्यास्त	रामभाऊ जोशी
४७.	यशवंतराव चव्हाण	अनिल
४८.	सह्याद्रीचे वारे – एक अभ्यास	प्रा. केशव वसेकर
४९.	कृष्णाकाठ एक आस्वाद	नरेंद्र मारवाडे

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
५०.	मराठी मातीचे वैभव	उत्तम सूर्यवंशी
५१.	भारताचे सुपुत्र यशवंतराव चव्हाण	डॉ. पंजाबराव रामराव जाधव
५२.	महाराष्ट्राचे शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण	विठ्ठल पाटील
५३.	यशवंतरावांच्या प्रस्तावना	विठ्ठल पाटील
५४.	स्मरण साहबांचे	अरुण शेवते
५५.	यशवंतराव चव्हाण जीवनदर्शन	निलकंठराव खाडिलकर
५६.	टॉवर्स	निलकंठराव खाडीलकर
५७.	यशोदर्शन ४६ वा वाढदिवस – निमित्त १९५९	विनायकराव पाटील
५८.	मराठी मनाची नवी क्षितिजे	मा. प. मंगुडकर
५९.	यशवंतराव चव्हाण – प्रेरणा व कार्य	
६०.	महाराष्ट्राचे पहिले मुख्यमंत्री यशवंतराव चव्हाण	
६१.	यशवंताची विठाई	
६२.	यशोदिप	शिवाजीराव चव्हाण
६३.	युगंधर नेते यशवंतराव चव्हाण	बा. ह. कल्याणकर
६४.	यशवंतराव चव्हाण यांचे मौलिक विचार	य. च. प्र. क. बम्बई
६५.	यशवंतराव चव्हाण यांचे निवडक विचारधन	विठ्ठल पाटील
६६.	आठवणीतले यशवंतराव	
६७.	कृष्णाकाठचे वैभव	
६८.	शिवाजी विद्यापीठ दिक्षान्त भाषण	यशवंतराव चव्हाण
६९.	पुणे विद्यापीठ दिक्षान्त भाषण	यशवंतराव चव्हाण
७०.	नागपूर विश्वविद्यालय	यशवंतराव चव्हाण
७१.	प्रत्यक्ष आंदोलन और संसदीय लोकतंत्र	यशवंतराव चव्हाण
७२.	यशवंत विचार अमृत	सी. डी. पवार
७३.	नियतीचा हात	यशवंतराव चव्हाण
७४.	यशवंतराव चव्हाण एक दर्शन	कानेटकर
७५.	विरंगुला	रामभाऊ जोशी
७६.	नापास मुलांची गोष्ट	अरुण शेवते

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
७७.	यशवंतराव चव्हाण झुंजार नेतृत्वाचा शोध व बोध	
७८.	यशवंतराव चव्हाण विचार आणि वारसा	विठ्ठल पाटील
७९.	यशवंतराव चव्हाण	अनंतराव पाटील
८०.	यशवंतराव चव्हाण समग्र साहित्य सूची	विठ्ठल पाटील
८१.	कृष्णा मिळाली कोयनेला खंड १	भा. कृ. उडांबलकर
८२.	कृष्णा मिळाली कोयनेला खंड २	भा. कृ. उडांबलकर
८३.	कृष्णा मिळाली कोयनेला खंड ३	भा. कृ. उडांबलकर
८४.	यशवंतराव चव्हाण सचित्र जीवनदर्शन	प्रा. नारायण शिंदे
८५.	वेणू	प्रा. नारायण शिंदे
८६.	महाराष्ट्राचे मन	पु. रा. बेडरे
८७.	तील आणि तांदूल	ग. दि. माडगूलकर
८८.	यशवंतराव चव्हाण गुण गौरव अंक महाराष्ट्र राज्य १ मे १९७५	
८९.	जडण-घडण	तिलक हायस्कूल, कराड
९०.	यशवंत नियतकालिक	सायन्स कॉलेज, कराड
९१.	आझाद हिंद यशवंतराव चव्हाण विशेषांक स्मरणिका	स्मरणिका
९२.	यशवंतराव चव्हाण झुंजार नेतृत्वाची एक झेप	संपा. के. जी. कदम
९३.	विचार संगम	
९४.	लोकराज्य	
९५.	महाराष्ट्राची मानचिह्ने	एकनाथ साखलकर/ सुभाष भेण्डे
९६.	सहकार सुगंध	एस. आर. पाटील
९७.	महाराष्ट्र संचार स्मृती विशेषांक १९९६	विठ्ठलराव जाधव
९८.	चित्ती असो द्यावे समाधान	द्वा. म. कर्णिक
९९.	साहित्यरंग	म. वि. गोखले
१००.	सत्यातून सहकार्याकडे	माधवराव बागल
१०१.	पाक्षिक ललित खास विशेषांक	द्वा. म. कर्णिक
१०२.	यशवंतराव चव्हाण - आदर्शाच्या प्रकाशात विकसित झालेले व्यक्तिमत्त्व	

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
१०३.	युगंदर नेते यशवंतराव चव्हाण	बा. ह. कल्याणकर
१०४.	यशवंतराव ते विलासराव	मधुकर भावे
१०५.	यशवंतराव ते विलासराव	विश्वास मेंहदळे
१०६.	मी पाहिलेले यशवंतराव	सरोजिनी बाबर
१०७.	यशवंतराव चव्हाण राष्ट्रीय व्यक्तिमत्त्व	भा. कृ. केलकर
१०८.	माझ्या राजकीय आठवणी	हरी पांडुरंग तथा हरिभाऊ लाड
१०९.	राजधानीतील १२ वर्षे	द्वा. भ. कर्णिक
११०.	लोकमानसातील यशवंतराव	रा. गो. प्रभुणे
१११.	यशवंतराव चव्हाण (सचित्र जीवनदर्शन)	प्रा. नारायण शिंदे
११२.	महाराष्ट्राचे मुख्यमंत्री	सोपान गाडे
११३.	पहिली फेरी	राम प्रधान
११४.	यशवंतराव विचार आणि वारसा	व. के. पाटील व वि. वि. पाटील
११५.	सहकार पंढरीचे वारकरी	डॉ. वा. चु. श्रीश्रीमाळी
११६.	शैलिकार यशवंतराव	प्रा. डॉ. शिवाजीराव देशमुख
११७.	यशवंतराव चव्हाण यांचे समीक्षालेखन व भाषणे	प्रा. डॉ. शिवाजीराव देशमुख
११८.	महाराष्ट्रातील सामाजिक विचारमंथन	चंद्रकुमार नलगे
११९.	आधुनिक महाराष्ट्राचे शिल्पकार यशवंतराव चव्हाण	प्रा. अशोक नाईकवाडे
१२०.	बुरखा हरण	रा. तु. पाटील
१२१.	यशवंत स्मृतिसुगंध	रामभाऊ जोशी
१२२.	सह्याद्री	आनंद पाटील
123.	India's Foregin Policy	Yashwantrao Chavan
124.	Wind's Change	Yashwantrao Chavan
125.	The Illustrated Weekly of India 28th June 1981	
126.	Chavan & the Political Integration of Maharashtra	Jayant Lele
127.	Man of Crisis	B. B. Kale
128.	Y. B. Chavan Selected Speeches in Parliament - I	

अ.न.	ग्रंथाचे नाव	लेखक
129.	Y. B. Chavan Selected Speeches in Parliament - II	
130.	Y. B. Chavan Selected Speeches in Parliament - II	
131.	Y. B. Chavan Selected Speeches in Parliament - IV	
132.	Chavan & He Troubled Decad	
133.	Yashwantrao Chavan Selected Speeches 1946-62 - II	
134.	Yashwantrao Chavan A Political Bbography	D. B. Harnik
135.	Yashwantrao Chavan	Chandulal M.
136.	Science of Technology Policy	Yashwantrao Chavan
137.	Inaugral Address	Yashwantrao Chavan
138.	Nagpur University	Yashwantrao Chavan
139.	Indian Horizons	Yashwantrao Chavan
140.	Politics of Commbtement	Yashwantrao Chavan
141.	1965 War Inside Dbary	R. D. Pradhan
142.	Debacle to Revival	R. D. Pradhan
143.	Chavan and the Troubled	T. V. Kunhl Krishnan

लेखक परिचय

नाम – प्रा. डॉ. के. जी. कदम
निवास – प्लॉट नं. ११७/५९, उमा नगरी, मुरारजी पेठ, सोलापूर – ४१३००१
मोबाईल – ९४२०६५९६५८
शिक्षा – एम. ए. (हिन्दी), एम.ए. (मराठी), पीच.डी. (हिन्दी), साहित्य मार्त्तण्ड

कार्य – अध्ययन, अध्यापन, संशोधन, शैक्षणिक सत्र, आरोग्य संवर्धन, प्रौढ शिक्षा, ग्राम स्वच्छता अभियान, वादविवाद स्पर्धा, लोक शिक्षा और जाग्रति, दारूबंदी प्रचार व प्रसार आदि।

प्रकाशित हिन्दी पुस्तके –

(१) श्यामनारायण पाण्डेय : व्यक्तित्त्व और काव्य (शोधप्रबंध), (२) कविश्री बच्चन : व्यक्ति और दर्शन (शोधप्रबंध), (३) कविश्री शिवमंगलसिंह सुमन और उनका काव्य (शोधप्रबंध), (४) शराब से मुक्ति , (५) समीक्षा का स्वरूप, (६) मराठी की श्रेष्ठ कहानियाँ, (७) तूफान के सिर पर, (८) उषःकाल, (९) गुलाब के फूल, (१०) हिन्दी अखबार और सासिकों में १२५ लेख प्रकाशित (११) तूफान के सिर पर।

प्रकाशित मराठी पुस्तके

(१) निवडुंग (आत्मकथा), (२) कथाः सुख दुःखाच्या (कथा संग्रह), (३) चिंतनिका (विचार संग्रह), (४) पोटासाठी (व्यक्ति चित्रे), (५) जीवनाच्या वाटेवरून (कादंबरी) (६) असा समाज अशी माणसे (ललित लेख संग्रह), (७) ऊन आणि सावली (ललित लेख संग्रह), (८) यशवंतराव चव्हाण : झुंजार नेतृत्वाची एक झेप, (९) यशवंतराव चव्हाण आणि त्यांची सहकारी चळवळ, (१०) अग्निशिखा (चरित्रात्मक कादंबरी) (११) कर्मयोगी (चरित्रात्मक कादंबरी)।

सम्मान आणि पुरस्कार

(१) साहित्य मार्त्तण्ड (मथुरा), (२) गुणवंत शिक्षक पुरस्कार – सोलापूर, (३) आदर्श शिक्षक – राज्य पुरस्कार (महाराष्ट्र शासन), (४) कदम वाङमयीन पुरस्कार (५) म. गांधी पुरस्कार, पुणे (६) यशवंतराव चव्हाण वाङमयीन पुरस्कार (महाराष्ट्र साहित्य आणि संस्कृती मंडळ, मुंबई), (७) कर्मवीर भाऊराव पाटील शैक्षणिक पुरस्कार, सोलापूर, (८) साहित्य सागर पुरस्कार, मेहकर, बुलढाणा, (९) आमदार श्री. बबनराव शिंदे साहित्य पुरस्कार, माढा, जि. सोलापूर ।

समर्पण

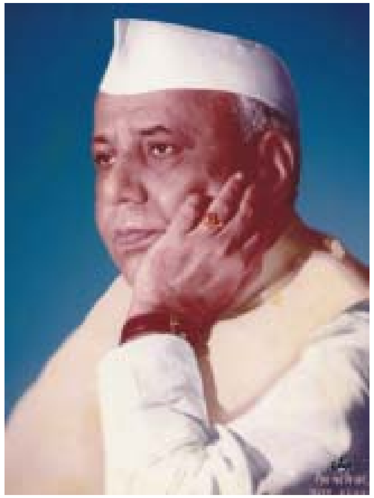

स्व. यशवंतरावजी चव्हाण को सादर समर्पित